सेठिया जैन ग्रन्थमाला पुष्प नं० ७०

श्री गुलाब वीर ग्रन्थमाला रत्नं पञ्चमम्

श्री वीतरागाय नमः

प्राकृत-पाठमाला

कर्त्ता

शतावधानी पं० मुनि श्रीरत्नचंद्जी स्वामी

प्रकाशक—

भैरोदान जेठमल सेठिया

बीकानेर.

वीर संवत् २४५४ विक्रम सं० १९८४ ई० सं १९२७

प्रथमावृत्ति ५००   न्योछावर रु० १

लागत ५०० प्रति की

५०४) छपाई ४२ फार्मा

१६५) कागज रीम ११

१६८) संशोधन

६२॥) सिलाई व कच्ची जिल्द बंधाई =) प्रति

कुल-रु० ८६६॥)

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन लाइब्रेरी (शास्त्रभण्डार)

मोहल्ला मरोटियों का

बीकानेर. (राजपूताना)

शुद्धिपत्र

पृष्ठ,		पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
उपोद्घात	२	३	प्रकृतभाषा	प्राकृतभाषा.
	३	१५	हेमचेन्द्राचार्ये	हेमचन्द्राचार्य
	४	१७	संस्कृत	सांस्कृत
	८	१८	रुप	रूप
	११	१२	प्रदशोनी	प्रदेशोनी
	१२	१६	तै	ते
	१४	२१	अध्यायोंमां	अध्यायोमां
	१५	२	जैनोने	जैनोने
	१५	५	कइंक	कंइक
	१८	१४	प्राकृतरुपावतार	प्राकृतरूपावतार
	१६	२	आणवामां	आपवामां
	२२	१६	--रुपे	-रूपे
	,,	२३	,,	,,
	२३	१	भाषाना	भाषानो
	२७	१	रुपो	रूपो
	,,	२	,,	,,
	३५	२५	गणाव्यो	गणाव्यो
	४१	२१	करता	करतां
	४८	३	रुपो	रूपो
पाठमाला	१	६	वोच्छ	वोच्छं
	१	६	ताथ	तथा
	२	२०	पइहरं	पईहरं
	२	२४	गोरिहरं	गोरीहरं
	३	२	नेमितक	निमित्तक.
	३	१८	गुरुल्लापाः	गुरूल्लापाः
	४	८	पूर्वं	पूर्वं
	११	६	मदन	मदनः
	,,	२१	कइ	कई
	१६	१८	तिग्मम	तिग्मम्
	२०	२२	ररसी	रस्सी

पृष्ठ,	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२१	६	दरिसग	दरिसणं
२५	२४	ग वाउ	गोवाउ
२८	१६	प्रकार	प्रकारे
३८	४	भवभ्रमण	जगत्
४१	१२	कपडा	कपडुं
४२	२१	वयमवलिंअ	वयमवलिअं
४४	२०	उत्तराज्झयण	उत्तरज्झयण
,,	२२	मूलरुपने	मूलरूपने
४५	८	हियअ	हियअं
,,	१२	उत्तराज्झ-	उत्तरज्झ-
४६	१६	साएइ	आसाएइ
४७	२२	संस्कृतसां	संस्कृतमां
४८	१९	रुपो	रूपो
५०	२	जाणवा	जाणवां
,,	४	सात्र	यात्र
,,	१५	नवकारवाली	नवकारवाली
५१	३	सह	सह (सह्)
५१	१३	उत्तराज्झयणम्मि	उत्तरज्झयणम्मि
५३	२४	(स्वाघ्याय)	(स्वाध्याय)
५४	१३	सीग्घं	सिग्घं
५५	५	,,	,,
,,	८	,,	,,
५६	१२	ऋकाराना	ऋकारनो
५७	२०	रुपो	रूपो
५८	११	शणिअं	सणिअं
,,	१२	थाडु	थोडुं
५९	४	दोहितरी-	दोहितरो, दीकरीनो
६०	१८	करो मा	करो मां
६२	३	गच्छाई	गच्छइ
,,	१३	प्रवृत्ति	प्रवृत्ति
,,	२६	(स्खल)	(स्खल्)
६७	१२	थाय ते.	थाय छे.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	१०	हुकुम	हुकम
७०	११	राईणं गोसु	राईणं मगोसु
७२	१९	पढज्जइ	पढिज्जइ
७३	८	(कार्यते इत्यर्थ.)	(कार्यते इत्यर्थः.)
७५	३	सारु	सारुं
७७	५	सस्स	जस्स
,,	७	सिम	सिम्
,,	१७	कीस्सा	किस्सा
७९	१०	वभइ	वयइ
८३	२४	वैसववाणो	वैभववालो
८५	५	पम्हुच्छं	पम्हुट्ठं
,,	७	कंदोहं	कंदोट्टं
८८	८	घणुशब्दवत्	घेणुशब्दवत्
८८	१६	जींदगी	जन्म
९०	२०	घर्म	घर्म
९८	१६	षष्टि	षष्ठि
९९	६	पातरु	पातरुं
,,	२१	मज्झ(मध्य)	मज्झे (मध्ये)
१००	२०	साहुणं	साहूणं
१०१	१०	जणनो	जणना
१०४	२	सावज्झं	सावज्जं
१०७	५	अम्हस्सि	अम्हस्सि
१०८	२०	हिमि को	हिमि, मंको
११०	१२	धनमस्यातीति	धनमस्यास्तीति
११२	६	पिञ्जरमेवं	पिञ्जरमेव
११८	३	पतावान्मात्रम्	पतावन्मात्रम्
१२७	६	सीमावइ	सीयावइ
१२७	१८	दोवारिअं	दोवारिअं
१२८	८	पिपत्तति:	पिपत्तति
१२९	१८	(शिक्ष व्रतिक)	(शिक्षाव्रतिक)
१३०	२	समुप्पज्जिन्था:	समुप्पज्जित्था:
,,	१४	वयासी:	वयासी.

पृष्ठ,	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१३३	४	ककमः	कतमः
,,	१३	विष्वक	विष्वक्
१४३	२५	पृथक	पृथक्
१४५	२३	पितृपतिः	पितृवती
१४७	२२	णिच्छरो	सणिच्छरो
,,	२४	ए=अइ	ऐ=अइ
१५१	४	खीलक	खीलको
,,	२१	शृङ्खलम	शृङ्खलम्
१५३	४	पिठर	पिठरः
१६५	२२	सम्मडिओ	सम्मड्डिओ
१६७	२	उत्थारो	उत्थाहो
१७५	१५	शार्ङ्गम	शार्ङ्गम्
१९६	१७	(स्थामन)	(स्थामन्)
२०१	१०	तामोतरोः	तामोतरो.
२०३	२३	नियमावालिनी	नियमावलिनी
२०७	१५	सयुंक्त	संयुक्त
२२६	११	(पाराहृद्)	(पाराहृद)
२३२	१९	पोहो	बोहो
२४४	१६	ऐ	ए
२४५	१०	कज्जाणि	कज्जाणि
,,	१३	णिरिविखआणि	णिरिक्खिआणि
,,	२०	वीहइ	वीहह
२४७	६	अधम्मकज्जाणि	अ धम्मकज्जाणि
२५१	६	देखे	देखाय
२६९	६	आन्माथी	आत्मार्थी

उपोद्घात.

प्राचीन आर्य पुरुषोनो अनुभव जे भाषाना गर्भमां

भाषाना प्रकारो.

व्यवस्थित थयां छे अने हजारो वर्ष व्यतीत थया छतां टकी रह्यो छे, ते भाषानुं स्वरूप जाणवाने जिज्ञासु के मुमुक्षु वर्गने इच्छा थाय ए स्वाभाविक छे. भारतवर्षना आर्यतत्त्वोने वहन करनारी मुख्यत्वे बे भाषा छे, संस्कृत अने प्राकृत. अनुयोगद्वार-सूत्रमां कह्युं छे के "सक्कया पागया चेव पसत्था इसि-भासिया" षड्भाषाचन्द्रिकाकार लक्ष्मीधर कहे छे के "भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृती चेति भेदतः" । संस्कृत भाषाना बे प्रकार छे. वैदिक संस्कृत अने लौकिक संस्कृत, अथवा प्राचीन

संस्कृतभाषा

संस्कृत अने अर्वाचीन संस्कृत. ऋग्वेदादिनी भाषा वैदिक अथवा प्राचीन संस्कृत अने भारत रामायणादिनी भाषा लौकिक संस्कृत अथवा अर्वाचीन संस्कृत छे. खासकरीने कौमार अने पाणिनीय आदि ए व्याकरणो रची भाषाने संस्कार पमाडी नियमबद्ध करी त्यारथी संस्कृतनाम प्रसिद्धिमां आव्युं होय अने वैदिकभाषाने ते विशेषण पाछलथी लगाडवामां आव्युं होय ए वधारे संभवित लागे छे अने ए रीते संस्कृत शब्दना अर्थनी बराबर उपपत्ति थाय छे. रूपक परिभाषामां कह्युं छे के—

"कौमारपाणिनीयादि-संस्कृता संस्कृता मता" संस्कृत- भाषा मुख्यत्वे साहित्यमांज वपराएली होवाथी तेमां विशेष फेरफार न थतां एक रूपे रही तेथी तेना अवांतर प्रकारो न

पड्या किन्तु वैदिक अने लौकिक ए बे भेदमांज अटकी रही. संस्कृत सह चारिणी बीजी भाषानुं नाम प्राकृत भाषाछे.

प्राकृतभाषा

प्राकृतशब्द 'प्रकृतिशब्दने तद्धित प्रत्यय अण् लगाडवाथी बन्यो छे. प्रकृतिशब्दनो अर्थ स्वभाव या निसर्ग थाय छे. तेथी प्राकृतशब्दनो शक्यार्थ स्वाभाविक अथवा नैसर्गिक थाय छे. शब्दार्थ प्रमाणे प्राकृत भाषानो अर्थ स्वाभाविक भाषा या नैसर्गिकभाषा थाय छे. अर्थात् जे भाषा ने काप कूप करी संस्कारित न बनावी होय किन्तु जे प्रमाणे साधारण लोकोमां बोलाती होय ते प्रमाणे जेनुं स्वरूप कायम रह्युं होय ते प्राकृतभाषा. प्राकृतशब्दनो साधारण अथवा असंस्कृत अर्थ पण कोषमां बतावबामां आव्यो छे. आ उपरथी संस्कार पाम्या वगरनी साधारण लोकोनी बोलाती जे भाषा ते प्राकृत भाषा एवो फलितार्थ थाय छे. आ एक मत छे. आ मत प्रमाणे प्राकृतभाषा संस्कृतभाषा नी पुत्री नही पण माता छे अर्थात् प्राकृत भाषा संस्कृत मां थी जन्म पामी नथी पण संस्कृत भाषा (वैदिक भाषा शिवायनी अर्वाचीन संस्कृत-भाषा) प्राकृत-भाषामांथी संस्कार पामी उत्पन्न थइ छे. उपर जणाव्या प्रमाणे संस्कृत नाम जो पाछल नुं होय तो वैदिक भाषा पण वेदना समय नी बोलाती भाषा होवी जोइए अने तेने 'संस्कृत ए विशेषण लगाडवा करतां प्राकृत ए विशेषण लगाडवुं वधारे उचित भासे छे. अर्थात् वेदनीभाषा ने प्राचीन संस्कृत कहेवा करतां प्राचीन प्राकृत कहीए तो वधारे बन्धबेसतुं थाय. तेथी अर्वाचीन प्राकृत नी माता पण होइ शके. आ बाबतमां युष्मत् शब्दना प्रथमा बहुवचननां रूपो आपणुं वधारे

ध्यान खेंचे छे. वैदिक युष्मे अने अस्मे रूपो प्राकृतनां तुम्हे अने अम्हे नी साथे गाढ सम्बन्ध दर्शावे छे ज्यारे संस्कृतनां यूयं अने वयं तद्दन अलग पडी जाय छे.

मतान्तर

आ मतनी सामे एक बीजो मत उपस्थित थाय छे ते एम कहे छे के "प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्" प्रकृति एटले संस्कृत, तेमां उत्पन्न थएल के तेमांथी उतरी आवेल ते प्राकृत. अर्थात् संस्कृत भाषामांज थोडो थोडो विकार थतां प्राकृत भाषा बनी आवो अर्थ करी प्राकृत भाषाने संस्कृतभाषानी पुत्री तरी के मानी तेना प्राकृतिक के नैसर्गिक अर्थने उडावी दे छे म्होटे भागे ब्राह्मण पंडित समाजमां आ मत वधारे प्रचलित छे; तेनुं कारण ते समाजनुं संस्कृत भाषा प्रत्येनुं मान छे. हिंदुधर्मनां घणाखरां पुस्तको संस्कृत भाषामां ज होवाथी तेमनी संस्कृत भाषा तरफ वधारे मानबुद्धि रहे ते स्वाभाविक छे। पण सवाल ए थाय छे के हेमचन्द्राचार्ये आ मतनो केम आदर कर्यो? तेणे पोताना व्याकरणमां प्राकृत भाषाने संस्कृत भाषामांथी उत्पन्न थएली मानी तेनुं शुं कारण? आ प्रश्ननो जवाब एम आपी शकाय के हेमचन्द्रना समय पहेलां केटलाक वखतथी जमानानुं वलण संस्कृत-भाषा तरफ वळी चुक्युं हतुं. तेनी असर जैनसमाज उपर पण पुरे पुरी थइ हती. अत एव जैन आचार्योए सूत्र उपरनी टीकाओ बांधता धर्मघोषनी माफक मूल आगमनी भाषामां न लखतां संस्कृत भाषामां लखी. सूत्रो उपर भाष्य अने निर्युक्ति रचाइ त्यां सुधी प्राकृत भाषानो आदर रह्यो पण चूर्णी अने टीकाना समयमां वलण बदलायुं. हेमचंद्रना

पड्या किन्तु वैदिक अने लौकिक ए बे भेदमांज अटकी रही. संस्कृत सह चारिणी बीजी भाषानुं नाम प्राकृत भाषा छे.

प्राकृतभाषा

प्राकृतशब्द 'प्रकृतिशब्दने तद्धित प्रत्यय अण् लगाडवाथी बन्यो छे. प्रकृतिशब्दनो अर्थ स्वभाव या निसर्ग थाय छे. तेथी प्राकृतशब्दनो शक्यार्थ स्वाभाविक अथवा नैसर्गिक थाय छे. शब्दार्थ प्रमाणे प्राकृत भाषानो अर्थ स्वाभाविक भाषा या नैसर्गिकभाषा थाय छे. अर्थात् जे भाषा ने काप कुप करी संस्कारित न बनावी होय किन्तु जे प्रमाणे साधारण लोकोमां बोलाती होय ते प्रमाणे जेनुं स्वरूप कायम रह्युं होय ते प्राकृतभाषा. प्राकृतशब्दनो साधारण अथवा असंस्कृत अर्थ पण कोषमां बताववामां आव्यो छे. आ उपरथी संस्कार पाम्या वगरनी साधारण लोकोनी बोलाती जे भाषा ते प्राकृत भाषा एवो फलितार्थ थाय छे. आ एक मत छे. आ मत प्रमाणे प्राकृतभाषा संस्कृतभाषा नी पुत्री नही पण माता छे अर्थात् प्राकृत भाषा संस्कृत मांथी जन्म पामी नथी पण संस्कृत भाषा (वैदिक भाषा शिवायनी अर्वाचीन संस्कृत-भाषा) प्राकृत-भाषामांथी संस्कार पामी उत्पन्न थइ छे. उपर जणाव्या प्रमाणे संस्कृत नाम जो पाछल नुं होय तो वैदिक भाषा पण वेदना समय नी बोलाती भाषा होवी जोइए अने तेने 'संस्कृत ए विशेषण लगाडवा करतां प्राकृत ए विशेषण लगाडवुं वधारे उचित भासे छे. अर्थात् वेदनीभाषा ने प्राचीन संस्कृत कहेवा करतां प्राचीन प्राकृत कहीए तो वधारे बन्धबेसतुं थाय. तेथी अर्वाचीन प्राकृत नी माता पण होइ शके. आ बाबतमां युष्मत् शब्दना प्रथमा बहुवचनना रूपो आपणुं वधारे

ध्यान खेंचे छे. वैदिक युष्मे अने अस्मे रूपो प्राकृतनां तुम्हे अने अम्हे नी साथे गाढ सम्बन्ध दर्शावे छे ज्यारे संस्कृतनां यूयं अने वयं तद्दन अलग पडी जाय छे.

आ मतनी व्हामे एक बीजो मत उपस्थित थाय छे ते एम कहे छे के "प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्" प्रकृति एटले संस्कृत, तेमां उत्पन्न थएल के तेमांथी उतरी आवेल ते प्राकृत. अर्थात् संस्कृत भाषामांज थोडो थोडो विकार थतां प्राकृत भाषा बनी आवी अर्थ करी प्राकृत भाषाने संस्कृतभाषानी पुत्री तरी के मानी तेना प्राकृतिक के नैसर्गिक अर्थने उडावी दे छे म्होटे भागे ब्राह्मण पंडित समाजमां आ मत वधारे प्रचलित छे; तेनुं कारण ते समाजनुं संस्कृत भाषा प्रत्येनुं मान छे. हिंदुधर्मनां घणाखरां पुस्तको संस्कृत भाषामां ज होवाथी तेमनी संस्कृत भाषा तरफ वधारे मानबुद्धि रहे ते स्वाभाविक छे।

मतान्तर

पण सवाल ए थाय छे के हेमचन्द्राचार्ये आ मतनो केम आदर कर्यो? तेणे पोताना व्याकरणमां प्राकृत भाषाने संस्कृत भाषामां थी उत्पन्न थएली मानी तेनुं शुं कारण? आ प्रश्ननो जवाब एम आपी शकाय के हेमचन्द्रना समय पहेलां केटलाक वखतथी जमानानुं वलण संस्कृत-भाषा तरफ वली चुक्युं हतुं. तेनी असर जैनसमाज उपर पण पुरे पुरी थइ हती. अत एव जैन आचार्योए सूत्र उपरनी टीकाओ बौद्धना धर्मघोषनी माफक मूल आगमनी भाषामां न लखतां संस्कृत भाषामां लखी. सूत्रो उपर भाष्य अने निर्युक्ति रचाइ त्यां सुधी प्राकृत भाषानो आदर रह्यो पण चूर्णि अने टीकाना समयमां वलण बदलायुं. हेमचंद्रना

समयमां अने त्यार पछी आजसुधी पण हजी ते वलण केटलेक अंशे चालु छे. ए असरथीज हेमचंद्रे पोताना सिद्धहेम व्याकरणमां मुख्य स्थान संस्कृत ने आप्युं. सात अध्यायो संस्कृत भाषा माटे अने एक ज अध्याय प्राकृत भाषा माटे रोकवामां आव्यो. जो हेमचंद्राचार्यने संस्कृत-भाषा जेटलुं प्राकृत भाषा माटे मान के वलण होत तो सामान्य प्राकृत अथवा आर्ष-प्राकृत नुं संस्कृतानुगत नहि पण स्वतंत्र व्याकरण रच्या विना रहेत नहि. संस्कृतना पठन पाठने लोकोनुं वलण संस्कृत तरफ वाल्युं हतुं. आनी असर एटले सुधी थइ के प्रकृतिशब्दनो अर्थ संस्कृत भाषा कोइ पण कोषमां न होवा छतां उक्त महाशयोए प्रकृति शब्दनो अर्थ संस्कृत स्वीकार्यो. एटलुं तो कहेवुं जोइए के प्रकृति शब्दना शक्यार्थ स्वभाव निसर्ग वगेरेने कोराणे मुकी लाक्षणिक अर्थ कल्पवो ए प्राकृत भाषा ने अन्याय आपवा बराबर छे. आना करतां प्रकृति शब्द ने बदले संस्कृत भाषा वाची संस्कृत शब्द ज राख्यो होत अने तेने तद्धित प्रत्यय लगाडी 'संस्कृते भवं तत आगतं वा सांस्कृतं' एम संस्कृत शब्द बीजी भाषा माटे वापर्यो होत तो शुं खोटुं हतुं? प्रचलित प्राकृत शब्द ने नवीन संस्कृत शब्दमांथी बाद न करी शकाय तो प्रचलित प्रकृति शब्दना अर्थने नवीन कल्पित अर्थमांथी केम बाद करी शकाय ए विचार संस्कृत तरफना पक्षपातने दूर करी न्याय-बुद्धिथी करीए तोज प्राकृतशब्दने खरो इन्साफ आपी शकाय. प्राकृतभाषा संस्कृतमां थी उत्पन्न थएली छे एवो अभिप्राय बंधायानुं एक कारण ए छे के प्राकृत व्याकरण रचनाराओए

रहेलाइनी खातर संस्कृतशब्दो लइने तेनां प्राकृतरूपो बताव्या तेमां जे फेरफार जणायो तेज मात्र नियमोथी सिद्ध कर्यो. बाकीने माटे संस्कृतवत्— कही संस्कृतनी भलामण आपी एटले प्राकृत व्याकरणने सदाय संस्कृत व्याकरणने आधीन रहेवुं पड्युं अने तेथी प्राकृत भाषा संस्कृतजन्य छे ए अभिप्राय वधारेने वधारे मजबूत थतो गयो. प्राकृत पाठमालामां पण तेज पद्धतिनुं अनुसरण कर्युं छे, ते एट-लामाटे के भाषानुं ज्ञान मेलववा उपरांत व्याकरणोनी तु-लना करवामां कोइने गुंचवण उभी न थाय. अर्द्धमागधी-आर्षभाषानुं व्याकरण के जे नवीन तैयार करवामां आव्युं छे, तेमां उक्त पद्धतिनुं अनुसरण न करतां प्राकृतभाषानी स्वतंत्रता बनाववाने स्वतंत्रपणे प्राकृत रूपोनी सिद्धि करी छे।

लोकभाषा—प्राकृत भाषाने साहित्यमां स्थान मलवानो

प्राकृतभाषा ना प्रकारो

युग महावीर स्वामी अने गौतम बुद्धना समयथी शरु थाय छे. बन्नेनी जन्म-भूमि मगध देश अने मातृभाषा मागधी हती. परन्तु उप-देश भाषा महावीर स्वामिनी अर्द्धमागधी अने गौतमबु-द्धनी पाली हती. अर्द्धमागधी मगध अने शूरसेन देशनी सरहद उपर ते वखते जे भाषा बोलाती तेनुं नाम अर्द्धमागधी. मगधदे-शनो अर्द्धभाग ते भाषाए रोक्यो हतो माटे तेनुं नाम अर्द्ध-मागधी पड्युं होय ए ऐतिहासिक दृष्टिए ठीक लागे छे. केटलाक एवो अर्थ करे छे के अर्द्ध शब्दो मागधी भाषाना अने अर्द्ध शब्दो बीजी भाषाना म-ल्या तेथी तेनुं नाम अर्द्धमागधी. परन्तु जैन साहित्य तपा-सतां ते विभाग प्रमाणे शब्दो मली शकतां नथी. अलबत

आ हिसाब अकारान्तशब्दोना प्रथमाविभक्तिना एकवचन-मांज मात्र मेलववा बेसीए तो मली शके, केमके प्रथमाना एकवचनमां महाराष्ट्रीय अने शौरसेनी भाषामां ओकार थाय छे अने मागधी भाषामां एकार थाय छे.

जैन आगममां ओकार वाला प्रयोगो अने एकार वाला प्रयोगो लगभग अर्धो अर्ध होवानो संभव छे ते उपरथी प्रकृत नामनी घटना करीए तो थइ शके छे. "शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्द्धमागधी" "राक्षसी श्रेष्ठिचेटानुकर्ष्या-देरर्द्धमागधी" ए भरते कहेली अर्द्धमागधी ते मात्रनाटकमां ज वपराएली अर्द्धमागधी प्रकृत अर्द्धमागधी थी तद्दन भिन्न छे. ते तेना आ एक प्रयोग उपरथी समजी शकाशे. "अज्जवि णो शामिणीए हित्तिम्बादेवीए पुस्त घडुक्क अशोएशा उवशमदि"

प्राकृत भाषानो बीजो विभाग पाली नामथी प्रसिद्धिमां आव्यो. पालीशब्दनो मूल अर्थ पंक्ति श्रेणि इत्यादि थाय छे. बौद्ध साहित्यमां धर्मशास्त्रना

पाली भाषा

कोई पण वचना उद्धृत करता वखते के समजावती वखते आचार्यो ते वचन पंक्तिने माटे पाली शब्दनो प्रयोग करता हता, तेमज मूलग्रंथना अर्थमां पण ते शब्दनो उपयोग करता तेथी पाछलना समयमां ते धर्मशास्त्रोनी भाषा पाली नामे ओलखावा लागी. आनुं बीजुं नाम मागधी पण छे. ते नाम देशना नाम उपरथी पड्युं छे. एथी स्पष्ट थाय छे के ते भाषा मगधदेशमां बोलाती हती. नाटकोमां मागधी समान जे प्राकृतभाषा आवे छे. ते अर्द्धमागधी अने पालीथी तद्दन भिन्न छे तेमां र नो ल अने स नो श

थाय छे जे उपरनी बे भाषा मां नथी थतुं—जेम संस्कृत निर्झर-शब्द पाली अने अर्द्धमागधीमां निज्झर अने नाटकनी मागधीमां निज्झल थाय छे. आ भेदने लइने कोइ २ जैन साहित्यनी भाषा ने जैन मागधी, बौद्ध-साहित्यनी भाषा ने पाली मागधी अने नाटकनी मागधीने प्राकृत मागधी पण कहे छे. प्राकृत भाषाना आ साहित्य-प्रवेशयुगने मागधी युग कहीए तो ते खोटुं नथी कारण के मगधदेशमांज तेने प्राथमिक साहित्य स्थान प्राप्त थयुं छे. उपरनी बे प्राचीन भाषामांनी अर्द्धमागधी भाषानुं कोई खास व्याकरण उपलब्ध नथी. जो के चंडनुं प्राकृत लक्षण थोडेक अंशे ते भाषानो स्पर्श करे छे अने हेमचंद्रे कोई कोई स्थले पोताना प्राकृत व्याकरणमां आर्षभाषा तरीके तेनी नोंध लीधी छे. पण पूर्ण व्याकरण एके नथी. पाली भाषा ना त्रण व्याकरण मुख्य छे कच्चायन, मोग्गलायन अने सद्दनीति. कच्चायनने आधारे रूपसिद्धि, महानिरुत्ति, चूल-निरुत्ति, निरुत्तिपिटक तथा बालावतार वगेरे व्याकरणो रचायां छे.मोग्गलायनने आधारे पयोगसिद्धि,मोग्गल्लानवुत्ति, सुसद्दसिद्धि तथा पदसाधनी वगेरे ग्रंथो रचाया छे अने सद्दनीतिने आधारे एक चुल्लसद्दनीति नामे ग्रंथ रचायो छे.आ बधामां कच्चायन प्राचीन छे. तथापि तेना करतां रूप-सिद्धि मोग्गल्लानवुत्ति, पदसाधनी तथा पयोगसिद्धि वधारे उपयोगी छे. सद्दनीति ए पूर्वोक्त बधा करतां श्रेष्ठ छे. रूप-सिद्धि व्याकरण म्होटुं नहि तेम न्हानुं नहि छतां बधा विषयोनो तेमां समावेश करवामां आव्यो छे एटले विशेष उपयोगी छे एम कहेवाय छे के कच्चायन बुद्धना समकालीन

हता अने ते कच्चायन थेरे कच्चायन व्याकरण रच्युं. तेना उपर घणी टीकाओ अनुटीकाओ थई छे. रूपसिद्धि अने बालावतार बन्ने कच्चायनना सूत्रो लईने रचाया छे. बालावतार सिंहलमां साधारण रीते प्रचलित छे.

पाली भाषामां बौद्धना हीनयानपंथनां महावंश जातको वगेरे धर्म पुस्तको उपरांत अशोकना शिलालेखो लखाया छे. हिमालय थी विंध्य अने सिंधुना किनाराथी गंगाना मुखसुधी अशोकना समयमां प्राये आ भाषा बोलाती हती एम शिलालेखो उपरथी साबित थाय छे. इ. स. पूर्वे त्रीजीशताब्दीथी मांडीने इ. स. नी बीजी शताब्दीसुधीना शिलालेखो घणो भाग उपर कहेल भाषामां छे ।

शिलालेखो

अर्द्धमागधी अने पाली साहित्य रचना पछी प्राकृतना मध्य युग नो प्रारम्भ थाय छे. आ मध्य युगमां महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश वगेरे भाषाओ प्रादुर्भाव पामे छे. जे भाषा बोलाती न होय किन्तु केवल साहित्यमां वपराती होय ते भाषा मांथी बीजी भाषा न जन्मे अर्थात् तेनुं परिवर्त्तन न थतां एक ने एक रूप रहे एटले अवान्तर प्रकारो न थाय तेमज जे भाषा बोलाती होय पण साहित्य-बद्ध थई न होय तेमां परिवर्तन थाय छतां अवान्तर प्रकारो न थाय कारण के परिवर्त्तन वखते पूर्व रूपो नष्ट थयां होय छे एटले जूनी भाषा नो लोप अने नवी भाषा नी उत्पत्ति थाय छे. जे भाषा बोलाती होय अने साहित्यबद्ध थई होय तेना अवान्तर प्रकारो संभवे. कालना प्रवाह साथे बोलाती भाषानुं कालभेदे अने देशभेदे परिवर्त्तन थतां तेमां नवीनता आवे छे

मध्यप्राकृतयुग

अने साहित्यमां एने ए रूपे रहे छे. वधारे फेरफार थतां बोलाती भाषा साहित्यनी भाषाथी जुदी पडे छे. आ नियम प्रमाणे बोलाती प्राकृत भाषा साहित्य निबद्ध थया पछी तेना प्रकारो पडवा मांड्यां अने जुदां जुदां नामो धारण करवा मांड्यां.

महाराष्ट्री

मध्यमयुगनी प्राकृतभाषामां महाराष्ट्री प्राकृत मुख्य छे. शौरसेनी वगेरे बीजी प्राकृत भाषा करतां आ वधारे प्रसिद्धिमां आवी, ते एटले सुधी के बीजी-भाषाओ ज्यारे पोत पोताना विशेषणोथी ओलखावा लागी। जेम शौरसेनीप्राकृत मागधीप्राकृत इत्यादि, त्यारे महाराष्ट्री प्राकृत महाराष्ट्री विशेषण विना शुद्ध प्राकृत शब्दथी ओलखावा लगी. काव्यादर्श--१-३५ मां दंडी कहे छे के "महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतंविदुः" आजसुधी पण प्राकृत भाषा तरीके महाराष्ट्री प्राकृतनोज व्यवहार थाय छे प्राकृत व्याकरणकारोए मुख्यपणे महाराष्ट्री प्राकृतभाषानाज नियमो रच्या छे. शौरसेनी आदि बीजी भाषाओना सामान्य नियमो माटे महाराष्ट्री प्राकृत भाषानी भलामण आपी छे. बीजी भाषाओना मात्र विशेष नियमोज बताव्या छे.महराष्ट्री प्राकृतनीज सामान्य भाषा तरीके गणना करी छे. महाराष्ट्री भाषा पण अर्द्धमागधी अने पाली भाषानी पेठे बोलाती अने साहित्यनी भाषा हती. मध्ययुगमां गोदावरीना विशाल प्रदेश उपर महाराष्ट्र देशमां ते भाषा बोलाती हती. अकारान्त नामने छेडे प्रथमा एकवचनमां एकार नहीं पण ओकारज आवे ए महाराष्ट्रीनुं खास लक्षण छे अने तेथीज ते अर्द्धमागधीथी जुदी पडे छे. बे स्वर वचे

आवता असंयुक्तव्यंजनोनो लोप करवामां बीजी वधी भाषाओ करतां आ भाषा आगल वधेली छे. अर्द्ध-मागधी अने पालीमां नकारनो णकार विकल्पे थतो ते महाराष्ट्रीमां नित्य थयो एटले नकारनो सर्वथा अभाव थयो. अर्वाचीन मराठी भाषा आ भाषा उपर थी उतरी होय एम संभवे छे. महाराष्ट्री प्राकृतमां रचायलां काव्यो महाराष्ट्रीनी बहार पण घणा वखणाता हता. सेतुबंधकाव्य गउडवहोकाव्य वगेरे महाराष्ट्री प्राकृतमां रचाएलां छे. कालिदास आदिना संस्कृत नाटकोमां पण महाराष्ट्रीनो उपयोग थयो छे. ते नाटकोमां स्त्रीपात्रो शौरसेनी प्राकृत बोले छे छतां तेमनां गीतो महाराष्ट्री प्राकृतमां होय छे.

महाराष्ट्री प्राकृतनो ब्राह्मण ग्रन्थकारो करतां जैनश्वेताम्बर ग्रन्थकारोए वधारे आश्रय लीधो छे. सुरसुन्दरीचरिय, पउमचरिय, कुमारपालचरिय, कुमारपालप्रबन्ध, समराइच्चकहा, सुपासनाहचरिय वगेरे अनेक ग्रन्थो महाराष्ट्री प्राकृतमां रचाया छे, पण आ ग्रंन्थोनी भाषामां जैन आगमनी भाषानी छाया पड्या विना रही नथी—एटले के अर्द्धमागधी नी माफक नकारनो क्वचित् णकार अने क्वचित् नकारनो नकारज राख्यो छे के जे महाराष्ट्री प्राकृत ने संमत नथी, उद्धृत अकारनी यकार श्रुति पण महाराष्ट्री प्राकृतमां नथी छतां उपरना जैन ग्रंथोमां यकारश्रुति छे. आ बाबत वररुचि अने हेमचन्द्रना व्याकरणनी तुलनामां स्पष्ट पणे दर्शावी छे. खास करीने आ बे बाबतमां जैनमहाराष्ट्रीप्राकृत महाराष्ट्रीप्राकृतथी जुदी पडे छे.

जैनमहाराष्ट्री

" शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते "

शौरसेनी

मध्ययुगनी महाराष्ट्री समकालीन बीजी प्राकृत भाषा शौरसेनीना नामथी प्रसिद्ध थइ हती. मथुरानी आसपासना प्रदेशो जे शूरसेन नामथी ओलखाता, ते प्रदेशमां आ भाषा बोलाती. शूरसेनप्रदेशना नाम उपरथी भाषानुं नाम शौरसेनी पड्युं. दिगम्बरीओनुं धर्मसाहित्य शौरसेनी भाषामां रचायुं छे. कालीदासना संस्कृतनाटकोमां विदूषको तथा स्त्रीपात्रो आ भाषा बोले छे. राजशेखरकविनी कर्पूरमंजरी नाटिकामां तो खुद राजा पण आ प्राकृत बोले छे.

" मगधोत्पन्नभाषां तां मागधीं संप्रचक्षते "

मागधी

पूर्व तरफना प्रदेशोनी भाषा मागधी प्राकृत हती. पूर्वोक्त पाली अने अर्द्धमागधीथी आ मागधी भिन्न छे. आ मागधी कोई धर्मसाहित्यमां निबद्ध थएली नहीं पण संस्कृत नाटकना हलका पात्रोमां बोलाती भाषा छे. र नो ल, स नो श अने प्रथमाना एक वचनमां अकारान्त नामने छेडे आवतो एकार आ भाषानां खास लक्षणो छे. मागधी प्राकृतमां दकार कायम रहे छे अने ज ने स्थाने य थाय छे. मृच्छकटिकमां शकार जे भाषा बोले छे ते शुद्ध मागधी छे. मागधीनुं मूल शौरसेनी छे. एटले तेमां शौरसेनी शब्दो तो आवे छे, परन्तु ते उपरांत केटलेक स्थले महाराष्ट्री शब्दो पण आवे छे. अभिज्ञानशकुंतलामां रक्षिपुरुष तथा धीवरनी भाषा मागधी छे. वेणीसंहार तथा उदात्तराघवमांना राक्षसनी भाषा पण मागधी छे. मुद्राराक्षस वगेरेमां पण एनो उपयोग थयो छे.

'पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत्' मध्ययुगनी चोथी भाषा पैशाची छे. पाण्ड्य आदि देशो पिशाचना नामथी प्रसिद्ध छे. ते आ प्रमाणे—

पैशाची

पाण्ड्यकेकयबाह्लीक-सिंहनेपालकुन्तलाः ।
सुदेष्णचोलगान्धार-हैवकन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशाः स्यु-स्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् ॥

आ देशोमां बोलाती भाषानी पैशाची संज्ञा छे. आ भाषामां पण साहित्य रचना थई हती. गुणाढ्यकविनी बृहत्कथा पैशाची भाषामां रचाइ हतो. बृहत्कथा आजे लुप्त थइ छे तथापि तेनो सार लई क्षेमेन्द्रकविए बृहत्कथामंजरी रूपे तेनो संस्कृत अनुवाद कर्यो, ते विद्यमान छे. ते पण संक्षिप्त होवाथी सोमदेवभट्टे तेनो बीजीवार अनुवाद करी विस्तारथी कथासरित्सागरनामा ग्रंथनी रचना करी जे हाल मोजुद छे. महाराष्ट्रीमां नकारनो सर्वत्र णकार थइ गयो हतो तेथी विपरीत णकारनो नकार आ भाषामां पुनरुज्जीवित थयो. गुजराती भाषामां ल ने स्थाने ळ वपराय छे ते पैशाचीमांथी आव्यो होय एम जणाय छे.

मध्ययुगनी पांचमी भाषा चूलिका पैशाची छे. वर्गना त्रीजा अक्षरने स्थाने प्रथमाक्षर अने चोथा अक्षरने स्थाने द्वितीयाक्षर बनाववामां आ भाषा पैशाचीथी जुदी पडे छे. बीजी बधी बाबतमां पैशाचीने मलती आवे छे. एटलामाटे वररुचि आदि केटलाक व्याकरणकारोए आने पैशाचीमां अन्तर्गत करी तेने जुदी गणत्रीमां नथी लीधी अने तेना खास नियमो जुदा दर्शाव्या नथी. आ भाषानुं साहित्य पण हाल उपलब्ध जणातुं नथी.

चूलिका पैशाची

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः ।
शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितमिति ॥ दण्डी .

मध्ययुगनी छठी, भाषा अपभ्रंश छे. संस्कृत नाटकमां आहिर आदिनी भाषा अपभ्रंश छे. दंडिना मत प्रमाणे संस्कृत शिवायनी बधी भाषाओ अपभ्रंश छे. पण ते व्याजबी नथी. संस्कृतनी माफक बीजी भाषाओमां पण साहित्यरचना थइ छे. व्याकरणो पण थयां छे. खास जुदां २ नामो धारण कर्यां छे. ते बधी भाषाओने अपभ्रंश केम कही शकाय? अपभ्रंश भाषा ए प्राकृत भाषा नो अवान्तर विभाग छे. एटलुं खरुं के बोलाती भाषामां विकार थवानां वधारे संभव छे. तेथी ते साहित्य शृंखलाथी जुदी पडीने अपभ्रंश नाम धारण करी जुदी भाषा तरीके ओलखाइ होय अने तेथी अर्वाचीनयुगनी अपभ्रंशना अनेक भेद थया होय ते संभवित छे. तथापि मध्यमयुगनी अपभ्रंश भाषा के जेने व्याकरणकारो ए छठी भाषा तरीके नियमबद्ध करेली छे. ते एकज प्रकारनी छे. तेमां साहित्यरचना पण थई छे. मार्कंडेयना व्याकरणमां नागर, व्राचड अने उपनागर एम त्रण भेद अपभ्रंशना जणाव्या छे. ते पण मुख्य त्रण भेद; अवांतरभेदतो जेटला देश तेटला छे. पण आ भेदो अर्वाचीन युगनी अपभ्रंशना होय एम जणाय छे.

(अपभ्रंशभाषा)

प्राकृत व्याकरणो.

उपर कहेल मध्यम युगनी छ भाषाओ उपर अनेक व्याकरणो थयां छे. तेमां सौथी प्राचीन चंडनुं प्राकृतलक्षण नामनुं व्याकरण छे.

(चंडनुं प्राकृत लक्षण)

ते खास करीने प्राचीन युगनी सामान्य प्राकृतभाषानुं व्याकरण छे. प्राकृत भाषाना अवान्तर भेदो पड्या नहोता ते वखतनुं ते व्याकरण होवुं जोइए. ते अमिश्रित रह्युं नथी. पाछलना सुधारकोए ते व्याकरणने महाराष्ट्री प्राकृतनुं व्याकरण बनाववाने केटलोक उमेरो कर्यो छे. डो. होर्नले चंडना मूलसूत्रो अने पाछलथी उमेरायला सूत्रोनुं केटलीक जुनी प्रतो मेलवी, मुकाबलो करी पृथक्करण कर्युं छे. इ० सन् १८८० मां कलकत्तामां छपायेल पुस्तकमां बंनेनुं पृथक्करण दर्शाव्युं छे.

वररुचिनो प्राकृत प्रकाश

चंडना व्याकरण पछी मध्ययुगनी प्राकृत भाषाओ उपर सौथी पहेलुं वररुचि नुं प्राकृत प्रकाश नामे व्याकरण छे. तेमां वररुचिए सूत्रो रच्यां छे अने भामहे तेना उपर वृत्ति बनावी छे. वररुचिना प्राकृत प्रकाशमां चार भाषाओज आवे छे, उपर कहेल छ भाषाओ पैकी चूलिका पैशाची अने अपभ्रंश ए बे भाषा तेमां नथी गणावी. ते उपरथी एम जणाय छे के तेना समयमां पैशाचीथी चूलिका पैशाची जुदी नहि पडी होय अने अपभ्रंश ने स्वतंत्र भाषा तरीके गणवामां नही आवी होय.

हेमचंद्रनुं सिद्धहेम

त्यार पछी हेमचंद्राचार्यनुं सिद्धहेम व्याकरण उपस्थित थाय छे. तेमां सात अध्यायोमां संस्कृत व्याकरण अने आठमा अध्यायना चार पादोमां प्राकृत भाषानुं व्याकरण छे. हेमचंद्रे उपर कहेल छए भाषाओनो समावेश कर्यो छे. हेमचंद्रनो समय बारमी शताब्दी छे. ते पहेलां छए भाषाओ प्रगट थई चुकी हती

एम जणाय छे. हेमचंद्रे सूत्रो अने वृत्ति बन्ने पोतेज बनाव्या छे. जैनोंने तो ते माननीय छे पण जैनेतरोए पण तेनो सत्कार कर्यो छे. वररुचिना व्याकरणमांनी प्राकृत भाषा ज्यारे शुद्ध महाराष्ट्री प्राकृत छे, त्यारे हेमचंद्रनी प्राकृत भाषा कइंक जैन आगमनी छाया मिश्रित थवाथी जैन महाराष्ट्री प्राकृत कही शकाय.

त्रिविक्रमनुं प्रा० व्या०

हेमचंद्राचार्य पछी त्रिविक्रमनुं प्राकृत व्याकरण आवे छे. त्रिविक्रम दिगंबर जैन छे. तेणे सूत्रो अने तेनी वृत्ति बन्ने बनाव्या छे. षड्भाषाचंद्रिकाकार लक्ष्मीधर कहे छे के त्रिविक्रमे वृत्तिज बनावी छे, सूत्रो वाल्मिकीनां छे. आना माटे बे मत छे. केटलाक कहे छे के सूत्रो पण त्रिविक्रमनां छे अने केटलांक वाल्मिकीनां कहे छे. प्रो० कमलाशंकर त्रिवेदी कहे छे के आ वाल्मिकी रामायणना कर्ता नही पण ए बीजा छे. आ व्याकरणमां पण पूर्वोक्त छए भाषानो समावेश करवामां आव्यो छे, भाषाओनो क्रम पण हेमचंद्रनी माफक ज छे. त्रिविक्रमे सूत्रोनो अनुक्रम पाणिनीयनी अष्टाध्यायी उपर काशिकावृत्तिनी माफक जालवी राख्यो छे. त्रिविक्रमनो समय बारमी अने पंदरमी शताब्दी वचेनो छे, केमके हेमचंद्रना ग्रन्थनो त्रिविक्रमे उल्लेख कर्यो छे. अने त्रिविक्रमना ग्रंथनो कुमारस्वामिए रत्नायणमां उल्लेख कर्यो छे, हेमचंद्रनो समय बारमी सदी अने कुमारस्वामीनो समय सोलमी सदी छे ए बेनी वच्चे त्रिविक्रनो समय छे.

षड्भाषा चंद्रिका

जे सूत्रो पर त्रिविक्रमे वृत्ति करी छे तेज सूत्रो उपर लक्ष्मीधरे वृत्ति करी छे तेनुं नाम छे षड्भाषाचंद्रिका. लक्ष्मीधरे सूत्रोनो अनुक्रम

जालव्यो नथी पण भट्टोजी-दीक्षिते सिद्धांत-कौमुदीमां जेम पाणिनीयना सूत्रोनो क्रम फेरव्यो छे तेम लक्ष्मीधरे पण फेरव्यो छे. आ वृत्ति घणी विस्तृत छे. नामनां रूपो अने धातुनां रूपो हेमचंद्र करतां घणा वधारे आप्यां छे. देशी शब्दोनो पण तेमां समावेश कर्यो छे. लक्ष्मीधरनो समय त्रिविक्रम पछीनो छे, कारणके षड्भाषाचंद्रिकामां लक्ष्मीधरे त्रिविक्रमनो उल्लेख कर्यो छे.

प्राकृत रूपावतार

लक्ष्मीधरनी माफक सिंहराजे उक्त सूत्रो उपर वृत्ति रची छे. तेनुं नाम प्राकृत रूपावतार छे. सूत्रोनो अनुक्रम षड्भाषाचंद्रिकानी माफक छे. षड्भाषाचंद्रिका जेवी विस्तारवाली आ वृत्ति नथी पण संक्षिप्त छे, तथापि तेमां रूपाख्याननी बाबतमां खास न्यूनता रही जती नथी. सिंहराजे जरूरीआत पुरतां सूत्रो नी योजना करी छे.केटलांक सूत्रो छोडी दीधां छे. इ.हल्श (E. Hultzsca) आ पुस्तक सन् १९०९मां कलकत्ता-एशियाटीक-सोसायटी तरफथी प्रकाशित कर्युं छे. तेमां दरेक सूत्रनी स्हामे हेमचंद्रना सूत्रनी सरखामणी करी तेना सूत्रो नां अंको पण आप्या छे. विद्यार्थीने माटे आ व्याकरण घणुं सगवडवालुं छे. आ व्याकरणमां युष्मद् अस्मद् वगेरे शब्दोनां रूपो बीजां व्याकरणो करतां घणां वधारे आप्या छे, तेमां केटलेक स्थले रूपोमां कृत्रिमता जणाइ आवे छे.

आ उपरांत अप्पय-दीक्षित रचित प्राकृत मणिदीप, हृषीकेश कृत प्रा० व्या० प्राकृतमंजरी के जे वररुचिना सूत्रो उपर पद्यमयवृत्ति छे. ते मुद्रित छे तथा केटलाएक अमुद्रित छे. प्राकृतमणिदीप अने प्राकृतमंजरी केवल महाराष्ट्री प्रा.

कृत भाषानांज व्याकरण छे. डोक्टर ओफ्रेस्टना केटेलोगस् केटेलोगोरममां षड्भाषाना नामे बीजा त्रण ग्रंथो गणाव्या छे.

१ षड्भाषा चन्द्रिका—भामह-कविकृत.

२ षड्भाषामंजरी.

३ षड्भाषासुबंतादर्श.

प्रोफेसर एस. आर. भंडारकर संस्कृत हस्तलिखित ग्रंथोनी शोधमां नीकल्या ते वखतनी बीजी मुसाफरीना हेवालमां षड्भाषा विचार नामनो ग्रंथ होवानुं जणावे छे अने तेमां संस्कृत सहित बीजी पांच भाषानो विचार छे.

लक्ष्मीधर दुर्गाचार्यकृत षड्भाषारूपमालिका नामनुं पुस्तक होवानुं जणावे छे.

आ शिवाय शेषकृष्ण रचित प्राकृतचंद्रिका नामे पुस्तक छे तेमां अपभ्रंश शिवाय पांच भाषानो विचार कर्यो छे. छठी अपभ्रंश भाषानुं सूचन कर्युं छे. पण वधारे विचार नथी कर्यो कारण के जुदा जुदा घणा देशोनी ते भाषा छे.

आ बधां व्याकरणो करतां वधारे भाषाओनो विचार मार्कंडेयना प्राकृतसर्वस्वमां छे. तेमां एकंदर सोल भाषाओनो संग्रह छे. ते आ प्रमाणे—

तत्र भाषाविभाषाप-भ्रंशपैशाचभेदतः,
चतुर्विधं तत्र भाषा विभाषाः पञ्चधा पृथक् ।
अपभ्रंशास्त्रयस्तिस्रः पैशाच्यश्चेति षोडश ॥ १ ॥
महाराष्ट्री शौरसेनी प्राच्यावन्ती च मागधी ।
इति पञ्चविधा भाषा युक्ता न पुनरष्टधा ॥ २ ॥
शाकारी चैव चाण्डाली शावर्याभीरिका तथा ।
टाक्कीति युक्ताः पञ्चैव विभाषा न तु षड्विधाः ॥ ३ ॥

नागरो व्राचडश्चोप- नागरश्चेति ते त्रयः ।
अपभ्रंशाः परे सूक्ष्म-भेदत्वान्न पृथङ्मताः ॥ ४ ॥
कैकेयं शौरसेनं च पाञ्चालमिति च त्रिधा ।
पैशाच्यो नागरा यस्मात्तेनाप्यन्या न लक्षिताः ॥ ५ ॥
इति षोडशधा भाषा मया प्रोक्ता प्रयत्नतः ।

परंतु आ सोल भाषा त्रीजा अर्वाचीन युगना मिश्रण थी बने छे. प्राकृत पाठमालामां मात्र मध्यमयुगनी भाषाओनो विचार करवामां आव्यो छे ।

पाठमालानी रचना

प्राकृत पाठमालानी रचना करवामां उपर जणावेल व्याकरणो पैकी नीचेनां व्याकरणोनी सहाय लेवामां आवी छे—

१ चंडनुं प्राकृतलक्षण. २ वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश. ३ हेमचंद्रना सिद्धहेमनो आठमो अध्याय. ४ लक्ष्मीधरनी षड्भाषाचन्द्रिका. ५ सिंहराजनुं प्राकृतरूपावतार. खास करीने हेमचंद्रना प्राकृत व्याकरणनुं वधारे अनुसरण कर्युं छे. जे रूप षड्भाषाचंद्रिका के प्राकृतरूपावतारनुं वधारे शुद्ध लाग्युं ते तेमांथी लीधुं छे. कये २ ठेकाणे कयां २ व्याकरणो जुदां पडे छे तेनो खुलासो दरेक पाठमां करी तफावत तुलनामां दर्शाव्यो छे. सरखामणीमां चंडना प्राकृत लक्षणनो पण उपयोग कर्यो छे. वररुचिना प्राकृत प्रकाशमांथी पाठमालामां कई लेवामां आव्युं नथी पण हेमचंद्रादि करतां तेमां केटली न्यूनता छे अने तेना करतां हेमचंद्रादिमां केटलो वधारो थयो छे तेनी मात्र सरखामणी करी छे. पाठमालामां भाषाओना नाम व्याकरणमां दर्शावेल भाषाओना नाम मुजबज राखवामां आव्या छे.

छ भाषामां मुख्य भाषा महाराष्ट्री प्राकृत, ते पण जैनम-हाराष्ट्री प्राकृत ने अनुसार रूपो आपवामां आव्यां छे. पाठमालामां प्रथम प्राकृत भाषाना सामान्य नियमो उदाहरण सहित थोडी सामान्य नियमावलि आपवामां आवी छे. त्यार पछी २१ पाठोमां प्राकृत नाम अने धातुनां रूपाख्यानोनी सिद्धि दर्शावी छे.

ते पण विद्यार्थिनुं मगज कंटाळी न जाय अने धीमे २ कठण प्रयोगो सरळ थता रहेलाइथी समजी शकाय तेवो उद्देश ध्यानमां

पाठोना क्रमनी योजना

राखी एक पछी एक एम कहडते क्रमे योजवामां आव्या छे. एक पाठ नामनो अने एक पाठ धातुनो एम वाराफ-रती नाम अने धातुनो विचार करवामां आव्यो छे. जेमके पहेला बोधपाठमां अकारान्त तथा आकारान्त पुल्लिंग नामो; बोधपाठ ३ जा मां इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त पुल्लिंगनां नामो, बोधपाठ पांचमामां अका-रान्त, इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंगनां नामो; बोधपाठ ७ मा मां आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त स्त्रीलिंग नामो; बोधपाठ ९ मा मां ऋकारान्त त्रणे लिंगनां नामो;बोधपाठ ११ मा मां व्यञ्जनान्त त्रणे लिंगनां नामो; बोधपाठ १३ मामां अकारान्त सर्व-नामो; बोधपाठ १५ मामां एतद्, इदम् तथा अदस् सर्वनामो; बोधपाठ १७ मामां संख्यावाचक शब्दो;बोधपाठ १९ मामां युष्मद् तथा अस्मद् सर्वनामोनां रूपो अने बोधपाठ २१ मामां लिंगपरिवर्तन अने अव्ययो दर्शाववामां आव्यां छे. बोधपाठ बीजामां अकारान्त धातुओनो वर्तमानकाल;बोध-

पाठ ४ थामां अकारान्त शिवाय स्वरान्त धातुओनो वर्तमानकाल; बोधपाठ ६ ठामां प्रेरकभेद तथा उपसर्गो ;बोधपाठ ८ मामां आज्ञार्थ तथा विध्यर्थ काल; बोधपाठ १० मामां केटलांक कृदन्तो; बोधपाठ १२ मामां भावकर्म;बोधपाठ १४ मामां भूतकाल तथा कर्मणि भूतकृदंत; बोधपाठ १६ मामां भविष्यकाल; बोधपाठ १८ मामां सर्वकालना साधारण प्रत्ययो; बोधपाठ २० मामां तद्धित अने बोधपाठ २२ मामां कारकसमासादि अवशिष्टविधिनो विचार दर्शाववामां आव्यो छे. प्राकृत भाषामां देश्यशब्दोनो पण समावेश थाय छे तेथी केटलाएक बोधपाठोमां देश्यशब्दो अने देश्य क्रियापदो बताववामां आव्या छे. आ बधा बोधपाठोथी मलेलुं ज्ञान अपूर्ण रही न जाय ए हेतुथी २२ मा पाठमां एक गद्यकथा योजवामां आवी छे. के जेना वांचनथी शीखेला नियमो ताजा थई बराबर उपस्थित रहे. त्यारबाद विशेष नियम सिद्ध प्राकृत नामना विशेष आदेशो आप्या छे. त्यारपछी केटलाएक धातु ने विशेष आदेशो थाय छे. ते दर्शाव्या छे. अहिंसुधीमां प्राकृत भाषाना नियमो समाप्त थाय छे. त्यारपछी परिशिष्ट तरीके बीजी पांच भाषाओना छ पाठो गोठव्या छे. तेमां पहेला पाठमां शौरसेनी भाषाना खास नियमो उदाहरण सहित दर्शाव्या छे. तेमज बोधपाठ २ जामां मागधी भाषा,बोधपाठ ३ जामां पैशाची अने चूलिका पैशाची, बोधपाठ-४-५-६ मां अपभ्रंश भाषाना खास नियमो बताव्या छे. उक्त छ पाठोमां नवीन वाक्यो ने बदले कुमारपाल- चरित्रमांथी ते ते भाषा ने लगती गाथाओ लई योजवामां आवी छे. ।

एकंदर २८ बोधपाठो छुए भाषाना छे. दरेक बोधपाठ

शब्दकोष

मां आवी गयेला शब्दोनो तथा गाथा अने कथा मां आवेला कठिण शब्दोनो समावेश शब्दकोषमां करवामां आव्यो छे. तेनी साथे अव्ययो तथा धातुओनो पण संग्रह करवामां आव्यो छे. कोई २ ठेकाणे आगला बोधपाठमां आवी गयेल शब्दोनुं विद्यार्थिने विस्मरण थवानो संभव होवाथी वाक्यरचनामां मुश्केली थाय अने शब्द शोधवामां कालक्षेप थाय-ते न थवा पामे एटला माटे ते शब्दो छेवटना शब्दकोषमां गोठववामां आव्या छे. आथी विद्यार्थिने जल्दी शब्दार्थनी उपस्थिति थता ते झडपथी वाक्ययोजना करी शके

प्रथम २० पाठमां विद्यार्थिने प्राकृत भाषानो गुजराती

वाक्य रचना

अनुवाद अने गुजराती भाषानो प्राकृत अनुवाद करतां आवडे एटला माटे बंने भाषानां वाक्यो नवां तैयार करी योज्यां छे ते ते बोधपाठमां आवेला नियमने अनुसरीनेज वाक्य रचना करवानी होवाथी संपूर्ण स्वतंत्रताने अभावे साहित्य ग्रंथ जेवी सर्वांगसुंदरता वाक्य रचनामां नहीं आवी शकी होय एटलुंज नही पण कोई ठेकाणे वाक्योमां कृत्रिमता पण कदाच प्रतीत थशे, पण तेना माटे अन्य उपाय न होवाथी ते चलावी लीधा विना छुटको नथी. पाछलना छ बोधपाठोमां तो हेमचंद्रना कुमारपाल चरित्रमांथी तैयार पद्यो लेवामां आव्या छे अने ते स्वतंत्रपणे रचाएलां छे एटले तेमां उपरनो सवाल उपस्थित थतो ज नथी.

दरेक बोधपाठमां आपवामां आवेलां वाक्यो वनां

प्रा० गु० अनुवाद

शके तेटलां सरल बनाव्यां छे छतां शरुआतना विद्यार्थिने कदाच कठिण लागे के न समजाय तेथी तेनी सरलता माटे दरेक पाठनां प्राकृत वाक्योनो गुजराती अनुवाद अने गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद करी आपवामां आव्यो छे अने ते पाठमां न योजतां अलायदुं पुस्तकने छेडे राख्युं छे. ते एटलामाटे के विद्यार्थी पोतानी बुद्धिथी बनी शके तेटलो अनुवाद करी ले अने ते आपेला अनुवाद साथे सरखावी ले. जे भाग न समजाय तेज तेमां जोइने नक्की करी ले. आ स्थले विद्यार्थिने एटलो सूचना आपवी योग्य धारीए छीए के वाक्यो नुं भाषांतर करती वखते एकदम पुस्तकमां आपेल भाषांतर तरफ नजर न दोडावतां पोतानी जाते भाषांतर करीने पछीज आपेला भाषांतर साथे सरखामणी करी शुद्ध अशुद्ध तपासी लेवुं.

उपसंहार

आ पाठमाला आजथी चौद वर्ष पहेलां प्राकृतमार्गोपदेशिका रुपे कच्छ मांडवीमां तैयार करवामां आवी हती दरम्यान पंडित बेचरदास जीवराज तरफथी एक प्राकृत मार्गोपदेशिका छपाई व्हार पडी एटले आ मार्गोपदेशिका एमने एम राखी मुकवामां आवी. त्यारपछी संवत् १९८० नी सालमां बीकानेरना शेठ अगरचंदजी भेरोदानजी ने ते कोपी बनाववामां आवतां तेमणे ते पुस्तकने छुए भाषानी पाठमाला तरीके योजी आपवामां प्रेरणा करी तेथी उक्त मार्गोपदेशिकाने प्राकृत- पाठमालारुपे फेरवी घणा सुधारा वधारा साथे तैयार करी छे आज काल संस्कृत भाषानी पेठे प्राकृत भाषा युनिवर्सिटीमां दाखल थई छे. पण संस्कृत

करतां तेनुं साहित्य ओछुं होवाथी ते भाषाना विद्यार्थिओ पूरो लाभ लई शक्ता नथी अने तेथी जैनधर्मना प्राचीन तत्त्वोना अभ्यासथी तेओ वंचित रहे छे. आ पाठमाला लोक भाषामां एटलामाटे तैयार करी छे के संस्कृत जाणनारा तेमज न जाणनारा पण तेनो लाभ लई शके. अंते पाठकवर्गने एटली भलामण आपवी उचित छे के आ पाठमाला थी पुरातनी भाषाओनो अभ्यास करी आने लगती अर्द्धमागधी भाषामां रचाएल जैन आगमना तत्त्वोनुं दोहन करी पोताना आत्माने अने समाजने तेनो लाभ आपे. सुज्ञेषु किं बहुना?

मुनि रत्नचन्द्र.

सं. १९८१ फाल्गुनवदी-१

तुलना.

सामान्य नियमावलि—
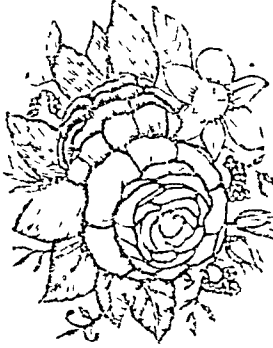
प्राकृतप्रकाशमां स्वरथी पर अनादि असंयुक्त न ना नित्य अने आदि असंयुक्त न ना विकल्प णने बदले सर्वत्र न नो ण कर्यो छे. वररुचि प्रमाणे प्राकृतमां न ने स्थानज नथी. क्, ग्, च्, ज् इत्यादिनो लोप थतां शेष (अवशिष्ट) रहेता अवर्णनो अवर्णथी पर होयतो लघुप्रयत्नवालो य थाय छे ए नियमनो वररुचिना प्राकृतप्रकाशमां अभाव जणाय छे. ए उपरथी सिद्ध थाय छे के जैन महाराष्ट्री प्राकृतमां आवा प्रयोगो रूढ थयेला होवाथी हेमचंद्रे पोताना व्याकरण मां आ नियमो दाखल कर्या हशे. उपरि लोपः कगडतद्-पषसाम् ॥३।१। ए सूत्रमां ड्, ग्, क् (जिह्वामूलीय), तथा प् (उपध्मानीय) गणाव्या नथी. स्वरथी पर अनादि असंयुक्त फ् ना भ् तथा ह् आदेश ने बदले मात्र भ् आदेश कर्यो छे. जेमके— सेभालिआ (शेफालिका), सभरी (शफरी), सभलं (सफलम्), परन्तु सेहालिआ, सहरी, सहलं आप्या नथी. व्यञ्जन पर छतां ङ्, ञ्, ण् तथा न् ना अनुस्वारने बदले व्यंजन पर छतां न् तथा ञ् नो अनुस्वार उपरांत म् कर्यो छे. जेमके— विंझो, विम्झो (विन्ध्यः), वंचणीअं, वञ्चणीअं (वञ्चणीयम्), स्प ना फ आदेश उपरांत क्वचित् सि आदेश थाय छे एम कह्युं छे. जेमके— पाडिसिद्धी (प्रतिस्पर्द्धी). हेमचन्द्र पाडिसिद्धी तथा पडिसिद्धीने प्रतिसिद्धि शब्दथी सिद्ध करे छे. ऋतु आदिमां त नो द कर्यो छे. परन्तु हेमचन्द्रनुं एवुं कहेवुं छे के ते तो शौरसेनी तथा मागधीमां थाय छे;

प्राकृतमां तेम करवुं उचित नथी. प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेला सामान्यनियमो जणाव्या नथी:—

१, २, ३, ४, ५, ९, १३, १५ (ख), २२, २३, २५, २६, २८ (अंतर्गत व्= व्, ह्= घ् (विकल्पे); ३६ अंतर्गत दीर्घथी पर होय तो, अनुस्वारथी पर होय तो; ३९ अन्तर्गत त्व्=च्, थ्व्= छ्, द्=ज्,ध्व्= झ्, र्ह=भ्,(विकल्पे), ग्म्=म् (विकल्पे); ४०, ४५, ४६.

षड्भाषाचन्द्रिकामां थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले ॥ १।४।२३। ए सूत्रनी वृत्तिमां ह्रस्वथी पर होवानुं लक्ष्मीधरे जणाव्युं नथी. नियम ३९मामां क्ष्म्ना प् ने बदले ज्ञ नो प् जणाव्यो छे. नियम ३९मामां श्न,ष्ण,स्न, ह्न,ह्ल,क्ष्ण, ना ण्ह् उपरांत त्स्न् नो ण्ह् जणाववानो रही गयो छे एम धारीने लक्ष्मीधरे जणाव्यो छे. परन्तु ज्योत्स्ना शब्दना संयुक्त त्स्न् मांना ऊर्ध्व त् नो नियम ३२ मां थी लोप थाय छे, अने पछी जे स्न् शेष रहे छे, तेनो ण्ह् थाय छे, एटले त्स्न् जणाववानी जरूर नथी. नियम ३६मामां अनुस्वार थी पर होय तो पण शेष तथा आदेशना द्वित्व नो निषेध कर्यो छे, परन्तु दीर्घान्न ॥ १।४।८७। ए सूत्रमां अनुस्वारनो निषेध कर्यो नथी, नियम ४३ मांथी सिद्ध थता तणुवी, लहुवी, गरुवी, बहुवी, पुहुवी तथा मउवी शब्दमांना वीने बदले लक्ष्मीधरे ई कर्यो छे. नीचे आपेला सामान्य नियमो जणाव्या नथी.(जो के त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां आपेला छे). १३ अन्तर्गत निर् ना इ नो नित्य दीर्घ थाय छे; १४ अंतर्गत ऐनो ए अने औ नो ओ थाय छे; ४४ अंतर्गत प्रावृष् शरत् तथा तरणि शब्द प्राकृतमां पुल्लिंगमां वपराय छे.

प्राकृतरूपावतारमां नीचे आपेला सामान्य नियमो जणाव्या नथीः—
११, १३ अंतर्गत निर् ना इनो नित्य दीर्घ थायछे; १५(ख) २३ अंतर्गत स्वर छे पर जेने एवा अन्तर्, निर् अने दुर् एटलाना अंत्य व्यंजननो लोप नथी थतो; २७, २८ अंतर्गत ठ्=ड्,ड्=ल्,(प्रायः)फ्=भ्, तथा ह् (प्रायः), ष्=छ्, ह्=घ् (विकल्पे); ३६ अंतर्गत त्व्=च्, थ्व्=छ्, द्व=ज्,ध्व्=झ्, क्म् तथा ड्म्=प्, ह्व=भ् (विकल्पे),स्म्=म्,(विकल्पे)ह्ल्=ल्ह्
४०, ४५

बोधपाठ १ लो—

चण्ड पोताना प्राकृतलक्षण नामना व्याकरणमां प्र०ए० मां जिणे रूप वधारे आपे छे,परन्तु पं० ब० मां जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ,जिणाहि,जिणेहि एटलां रूपो आपवामां आव्यां नथी,अने ष० ब० मां जिणाहं तथा जिणाह रूपो वधारे आपवामां आव्या छे. वररुचि पोताना प्राकृतप्रकाशमां तृ० ए० मां जिणेणं, तृ०ब० मां जिणेहि, जिणेहिं,पं०ए०मां जिणत्तो,जिणाहिन्तो,पं० ब० मां जिणत्तो जिणाओ, जिणाउ,जिणाइ, जिणेहि, ष० ब० मां जिणाणं, स० ब० मां जिणेसुं ,सं० ए० मां जिणो, जिणा, एटला रूपो आपता नथी. लक्ष्मीधर पोतानी षड्भाषाचन्द्रिकामां सं०ए० जिणा रूप आपता नथी. सिंहराज पोताना प्राकृतरूपावतारमां सं० ए मां जिणा आपता नथी. प्राकृतशब्दरूपावलि मां सं०ए० मां जिणा नथी

बोधपाठ २ जो—

प्राकृतलक्षणमां गच्छए, गच्छन्ते, गच्छिरे, गच्छसे,

गच्छिसो, गच्छिहु, गच्छिम, एटलां रूपो आपवामां आव्यां नथी. गच्छिहत्था ने बदले गच्छिहत्थ छे. ए पक्षवालां रूपो नथी. प्राकृतप्रकाशमां प्र० ब० मां गच्छन्ते, गच्छिरे एटलां रूपो आपवामां आव्यां नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां प्र० ब० मां गच्छिरे ने बदले गच्छइरे रूप आप्युं छे. उ० ए० गच्छिमि रूप वधारे छे. प्राकृतरूपावतारमां प्र० ब० मां गच्छिरे ने बदले गच्छइरे रूप आप्युं छे.

बोधपाठ ३ जो—

प्राकृतलक्षणमां प्र० ब० मां इसउ, इसओ ने बदले इसीउ, इसीओ रूपो आप्यां छे. द्वि० ब० मां इसीउ, इसीओ रूपो वधारे आप्यां छे. तृ० ब० मां इसीहिं नथी. पं० ब० मां इसित्तो, इसीओ, इसीउ रूपो आपवामां आव्यां नथी. सं० ब० मां इसउ, इसओ ने बदले इसीउ, इसीओ रूपो आप्यां छे. प्राकृतप्रकाशमां प्र० ब० मां इसउ, इसी रूपो नथी अने इसओ ने बदले इसीओ रूप छे. द्वि० ब० मां इसी रूप नथी. तृ० ब० मां इसीहि इसीहिं रूपो नथी. स० ब० मां इसीसुं रूप नथी. पं० ए० ब० तथा ष० ब० नां रूपो आपवामां आव्या नथी. सिद्धहेममां तृ० ब० मां इसीहि, इसीहिं तथा गुरुहि, गुरुहिं रूपो आपवामां आव्यां नथी. अने पं० ए० मां इसित्तो, गुरुत्तो तथा पं० ब० इसित्तो, इसीउ, गुरुत्तो रूपो आपवामां आव्यां नथी. प्राकृतरूपावतारमां सं० ब० मां इसउ तथा इसओ रूपो नथी. प्राकृतशब्दरूपावलिमां पं० ए० ब० मां इसित्तो तथा गुरुत्तो नथी. अने सं० ब० मां गुरवो, गुरुणो रूपो नथी.

बोधपाठ ४थो—

प्राकृतप्रकाशमां रूपो आपवामां आव्यां नथी.

बोधपाठ ५ मो—

प्राकृतलक्षणमां प्र० तथा द्वि०ए० मां अच्छि तथा धणुँ रूप वधारे छे. प्राकृतप्रकाशमां प्र० ब० मां नेत्ताणि, नेत्ताइं नेत्ताइँ, अच्छीणि, अच्छीइं, अच्छीइँ, धणूणि, धणूइं, धणूइँ रूपो नथी. परन्तु नेत्ताइ, अच्छीइ, धणूइ रूपो छे. षड्-भाषाचन्द्रिकामां प्र०तथा द्वि०ए०मां अच्छि तथा धणुं रूप वधारे छे. प्राकृतरूपावतारमां सं० ए०मां नेत्तो रूप वधारे छे. मार्गोपदेशिकामां प्र०ए० मां अच्छि, तथा धणु रूप नथी.

बोधपाठ ६ ठो—

प्राकृतलक्षण तथा प्राकृतप्रकाशमां अ तथा आव आदेश नथी कर्यां, प्राकृतरूपावतार तथा मार्गोपदेशिकामां पाठावेइ. कारावेइ रूपो नथी.

बोधपाठ ७ मो—

प्राकृतलक्षणमां ष० ब० मां मालाहं मालाह रूपो वधारे छे. प्राकृतप्रकाशमां द्वि० ब० मां माला, बुद्धी; प्र० तथा द्वि० ब० मां वाणीआ. वाणी; तृ० ए० मां मालाअ; तृ०ब० मां मालाहि, मालाहिँ बुद्धीहि, बुद्धीहिँ रूपो नथी. सिद्धहेममां पं० ए० तथा ब० मां मालत्तो, बुद्धित्तो रूपो नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां सं० ए० मां मालो रूप वधारे छे. प्राकृतशब्दरूपावलिमां तृ० ए० मां बुद्धिणा रूप वधारे छे. अने बुद्धीअ, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीए; पं० ए० तथा ब० मां बुद्धित्तो; सं० ए० मां बुद्धि रूपो नथी.

बोधपाठ ८ मो—

प्राकृतप्रकाशमां गच्छहि. गच्छामु. गच्छिसु. गच्छे-

ज्जसु, गच्छेज्जहि, गच्छेज्जे, गच्छ, रूपो नथी. सिद्धहेममां उ० ए० हसमु, हसिमु; गच्छमो, गच्छिमो रूपो नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां उ० ए० तथा ब० नां रूपो आप्यां नथी प्राकृतरूपावतारमां सिंहराज पोतानी वृत्तिमां कहे छे के उ० ए० ना मु प्रत्यय पहेलां अकारनो ओकार तथा इकार न करवो, परन्तु उ० ब० ना मो प्रत्ययना साहचर्यथी मु पण बहुवचननोज लेवो.

बोधपाठ ९ मो—

प्राकृतप्रकाशमां प्र० ए०मां कत्ता रूप नथी. अने सं० ए० नुं रूप ज आप्युं नथी. सिद्धहेममां सं० ए० मां कत्तारा रूप नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां सं० ए० मां कत्तारो रूप नथी; अने पिअरो पिअर रूपो वधारे छे. प्राकृतरूपावतारमां सं० ए० मां कत्तारा ने बदले कत्ता रूप छे. अने पिआ रूप वधारे छे. प्राकृतशब्दरूपावलिमां सं० ए० मां कत्तारा रूप नथी.

बोधपाठ १० मो—

प्राकृतप्रकाशमां तुआण, तुआणं, इअ प्रत्ययो नथी. सिद्धहेममां इअ प्रत्यय नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां प्रत्ययोज आप्या नथी. प्राकृतरूपावतारमां इअ प्रत्यय नथी.

बोधपाठ ११ मो—

प्राकृतप्रकाशमां सं० ए० मां राअं वधारे छे. सं० ब० राइणो, प्र० तथा द्वि० ब० मां राइणो: प० ब० मां राइणं विगेरे, स० ब० मां राईसुं; तृ० ए० मां अप्पणिआ, अप्पणइआ रूपो नथी. सिद्धहेममां सं० ए० मां राअ रूप नथी अने राअं रूप शौरसेनीमां थाय छे एम कह्युं छे. षड्भाषा-

चन्द्रिकामां पं० तथा ष० ए० मां रायाणाणो, रायाणो रूपो वधारे छे. प० ए० मां अप्पणो ने बदले अप्पाणो रूप छे. प्राकृतरूपावतारमां ष० ए० मां अप्पणो ने बदले अप्पाणो रूप छे. मार्गोपदेशिकामां ष० ए० मां राअणो ने बदले राआणो छे.

बोधपाठ १२ मो—

प्राकृतप्रकाशमां ह्व आदेश नथी आप्यो.

बोधपाठ १३ मो—

प्राकृतप्रकाशमां तद् शब्दने प्र० ए० मां विभक्ति सहित सो आदेश नित्य कर्यो छे, एटले स रूप नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां तद् शब्दने प्र० ए० मां विभक्ति सहित स आदेश नथी कर्यो. प्राकृतरूपावतारमां सव्व शब्दना स० ए० मां सव्वे रूप वधारे छे.

बोधपाठ १४ मो—

प्राकृतप्रकाशमां सीं, हीं प्रत्ययो तथा अहेसि रूप आप्यां नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां सीं, हीं, हीअ ने बदले सि, हि, हिअ प्रत्ययो छे. प्राकृतरूपावतारमां सीं ने बदले सीअ प्रत्यय छे.

बोधपाठ १५ मो—

प्राकृतप्रकाशमां से, सिं आदेशो मात्र तद् शब्दने ज कर्या छे, एतद् तथा इदं शब्दने कर्या नथी. एतद् शब्दना प्र० ए० मां इणं, इणमो रूपो नथी आप्यां. प्राकृतरूपावतारमां एतद् शब्दना तृ० ए० मां णएण रूप नथी.

बोधपाठ १६ मो—

प्राकृतप्रकाशमां मोच्छ, सोच्छ, छेच्छ, भेच्छ आदेशो

जणाव्या नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां उ० ए० मां स्सं ने बदले हिस्सं प्रत्यय आप्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां उ० ए० मां काहं ने बदले काइहं रूप छे.

बोधपाठ १७ मो—

प्राकृतप्रकाशमां त्रिशब्दनो तृ० पछी ती ने बदले ति आदेश कर्यों छे. दोण्णि ने बदले दोणि आदेश कर्यों छे. बे, वेण्णि, दुण्णि, तिण्णि आदेशो जणाव्या नथी. प्र० ब० मां चउरो आदेश नथी, कारण के नित्य दीर्घ कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां वेण्णि ने बदले बेण्णि आदेश कर्यो छे. अने आगलनां रूपोमां पण वे ने बदले बे राख्यो छे. त्रि शब्दनो तृ० पछी ती ने बदले ति आदेश कर्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां द्वि शब्दना प्र० ब० मां वे ने बदले बु आदेश कर्यो छे . अने आगल नां रूपोमां पण वे ने बदले बु राख्यो छे.

बोधपाठ १८ मो—

प्राकृतप्रकाश, सिद्धहेम, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतरूपावतारमां समान प्रत्ययो होवाथी कांइ नोंधवा जेवुं नथी.

बोधपाठ १९ मो—

प्राकृतलक्षणमां एकदम थोडां रूपो छे. अने प्राकृतप्रकाशमां पण थोडां रूपो छे. ए बतावी आपे छे के असलमां थोडां रूपो हतां, परन्तु पाछलथी वधेलां सिद्धहेममां युष्मद् शब्दना प्र० ब० मां तुब्भ, द्वि० ब० मां तुब्भ, तुम्ह, तृ० ब० मां उब्भेहिं रूपो नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां युष्मद् शब्दना तृ० ब० मां हिं ने बदले सर्वत्र हि छे; पं० ए० मां तहिन्तो ने बदले तुहिन्तो आदेश छे; ष० ब० मां तुने बदले

त्वा आदेश छे; स० ए० मां तुव, तुम, तुह, तुम्ह, तुब्भ, तुज्झ आदेशो नथी जणाव्या. अस्मद् शब्दना तृ० ब० मां अम्हेहिं, अम्हेहिँ, अम्हाहिं, अम्हाहिँ रूपो वधारे छे; स० ए० मां अम्हे, ममे रूपो वधारे छे, अने अम्हस्सिं, अम्हत्थ, अम्हहिं, ममस्सिं, ममत्थ, ममहिं रूपो नथी. प्राकृतरूपावतारमां युष्मद् शब्दना तृ० ब० मां हिं ने बदले सर्वत्र हि छे; पं० ए० मां तइने बदले तुइ आदेश छे; पं० तथा स० मां टाप् प्रत्यय लगाडीने स्त्रीलिंगनां वधु रूपो कर्यां छे; स० ए० मां तुवे इत्यादि रूपो वधारे छे. अस्मद् शब्दना स० ए० मां ममे, अम्हे रूपो वधारे छे.

बोधपाठ २० मो—

प्राकृतप्रकाशमां इमा प्रत्यय नथी; इत्त ने बदले इन्त प्रत्यय छे; मा प्रत्यय वधारे छे; इर, मण प्रत्ययो नथी. परिमाण अर्थमां किं (इदं शब्द जणाव्यो नथी) विगेरे शब्दोने एत्तिअ, एहह बे ज प्रत्ययो लागे छे. बाकीना तद्धित प्रत्ययो जणाव्या नथी. सिद्धहेममां इत्तिल ने बदले एत्तिल प्रत्यय छे; पर तथा राज्ञ शब्दने अनुक्रमे क तथा इक्क प्रत्यय लगाड्या छे. ओ ने बदले दो प्रत्यय छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां इत्त ने बदले इन्त प्रत्यय छे; अने मा प्रत्यय वधारे छे; ओने बदले दो प्रत्यय छे; स्सिअं ने बदले सिअ प्रत्यय छे; नवल्लो, एकल्लो, आदेशो नथी. प्राकृतरूपावतारमां मा प्रत्यय वधारे छे. हणुमा, पारिक्कं, राइक्कं विगेरे आदेशो नथी; तुम्हेच्चअं, अम्हेच्चअं, आदेशो नथी; सव्वंगिओ पहिओ, अप्पणअं आदेशो नथी; एक्कसि विगेरे आदेशो नथी; भाव अर्थमां इल्ल, उल्ल प्रत्ययो नथी; नवल्लो, इक्कल्लो, उपरिल्लो

आदेशो नथी; मीसालिओ आदेश नथी; विज्जुला, पत्तलं, पीअलं, अन्धलो आदेशो नथी.

बोधपाठ २१ मो—

प्राकृतप्रकाशमां पुल्लिंगमां वपराता नकारान्त तथा सकारान्त शब्दोमांथी शिरस् तथा नभस् शब्द साथे दामन् शब्दने वर्ज्यो नथी. पुल्लिंगमां वपराता प्रावृष् तथा शरत् साथे तरणि-शब्दने गणाव्यो नथी. पुल्लिंगमां विकल्पे वपराता अक्षि-पर्याय तथा वचन आदि शब्दोनो पण उल्लेख कर्यो नथी. स्त्रीलिंगमां विकल्पे वपराता इमान्त शब्दोनो उल्लेख कर्यो नथी, अने अञ्जलि आदि शब्दोमांथी पृष्ठ प्रश्न तथा अक्षि ए त्रण शब्दो ज गणाव्या छे. निश्चय, वितर्क, संभावन तथा विस्मयना अर्थमां वपराता हु ने बदले हुं तथा खु ने बदले क्खु अव्ययो जणाव्या छे. सूचना आदि अर्थमां वपराता अव्वोने बदले अव्वो अव्यय जणाव्यो छे. अने संभावनना अर्थमां अइ ने बदले पण संभाषणना अर्थमां अइ तथा वले अव्ययो जणाव्या छे. इव अर्थमां वपराता मिव ने बदले स्मिव अव्यय जणाव्यो छे. संभाषण, रतिकलह तथा आक्षेपना अर्थमां वपराता हरे ने बदले हिरे अव्यय जणाव्यो छे. कुत्साना अर्थमां स तथा आमंत्रणना अर्थमां अज्ज अव्ययो विशेष जणाव्या छे. प्राकृतप्रकाशमां नीचेना नियमो जणाव्या नथी:—

१, २, ४, ६, ८,

षड्भाषाचन्द्रिकामां पुल्लिंगमां वपराता प्रावृष्, शरत् तथा तरणि शब्दोनो उल्लेख कर्यो नथी. नपुंसक लिंगमां विकल्पे वपराता गुण आदि शब्दोमां कण्ठ शब्द वधारे

जणाव्यो छे. नियम २ जामां जणावेला ऊ ने बदले उ आदेश कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां नीचेनो नियम जणाव्यो नथीः—

११

प्राकृतरूपावतारमां पुल्लिंगमां वपराता प्रावृष् तथा शरत् साथे तरणि शब्द गणाव्यो नथी. पुल्लिंगमां विकल्पे वपराता अक्षि पर्याय तथा वचन आदि शब्दो नो पण उल्लेख कर्यो नथी. आनन्तर्यना अर्थमां णवरिने बदले णवरिअ जणाव्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां नीचेना नियमो जणाव्या नथीः—

२, ६.

आदेशावलि (शब्द).

प्राकृतप्रकाशमां शरत् शब्दना सरअ आदेशने बदले सरद आदेश कर्यो छे. नूपुर शब्दमां ऊ ना इ तथा ए विकल्प आदेशने बदले मात्र ए आदेश नित्य कर्यो छे. लृतः क्लृप्त इलिः ॥१।३३। ए सूत्रमां क्लृप्त शब्द गणाव्यो नथी. शीकर शब्दमां क् ना भ् तथा ह् विकल्प आदेशने बदले मात्र भ आदेश नित्य कर्यो छे. हेमचन्द्रना प्रत्यादौ डः ॥८।१।२०६। ए सूत्रमां गणावेला शब्दोमांथी प्रतिसरवेतसपताकासु डः ॥२।८। ए सूत्रथी मात्र त्रण शब्दोज गणाव्या छे. गर्भिते णः ॥२।१०। ए सूत्रमां अतिमुक्तक शब्द गणाव्यो नथी. दोलादण्डदशनेषु डः ॥२।३५। ए सूत्रमां दष्ट, दग्ध, दण्ड, दर, दाह, दम्भ, दर्भ, कदन तथा दोहद शब्दो गणाव्या नथी. तेमज विकल्प आदेशने बदले नित्य आदेश कर्यो छे. वसनिभरतयोर्हः ॥२।४०। ए सूत्रमां वितस्ति,

कातर तथा मातुलिंग शब्दो गणाव्या नथी. उत्तरीयानीय-योर्ज्जो वा ॥२।१७। ए सूत्रमां तीय तथा कृद्य प्रत्ययो गणाव्या नथी. प्रथमशिथिलनिषधेषु ढः ॥२।२८। ए सूत्रमां मेथि तथा शिथिर शब्दो गणाव्या नथी. परुषपरिघपरिखासु फः ॥२।३६। ए सूत्रमां पारिभद्र शब्द गणाव्यो नथी. लाहले णः ॥२।४०। ए सूत्रमां लाङ्गल तथा लाङ्गूल शब्द गणाव्या नथी. वली ण आदेश विकल्पने बदले नित्य कर्यो छे. षट्-शावकसप्तपर्णानां छः ॥२।४१। ए सूत्रमां शमी तथा सुधा शब्द गणाव्या नथी. गर्दभसंमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु र्दस्य ॥३।२६। ए सूत्रमां विच्छर्द, कपर्द, मर्दित शब्दो गणाव्या नथी, अने गर्दभ शब्दमां ड आदेश विकल्पने बदले नित्य कर्यो छे. भिन्दिपाले ण्डः ॥३।४५। ए सूत्रमां कन्दरिका शब्द गणाव्यो नथी. क्मस्य ॥३।४६। ए सूत्रमां ड्म् जोडा-क्षर गणाव्यो नथी. स्नेहे वा ॥३।६४। ए सूत्रमां अग्नि शब्द गणाव्यो नथी. कालायसे यस्य वा ॥४।३। ए सूत्रमां किसलय तथा हृदय शब्द गणाव्या नथी. भाजने जस्य ॥४।४। ए सूत्रमां दनुज तथा राजकुल शब्द गणाव्या नथी. हेमचंद्रना वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् ॥८।१।३५। ए सूत्रमां गणावेला शब्दोमां थी-पृष्ठाक्षिप्रश्नाः स्त्रियां वा ॥४।२०। ए सूत्रथी मात्र त्रण शब्दोज गणाव्या छे. अत् पथिहरिद्रा-पृथिवीषु ॥१।१३। ए सूत्रमां प्रतिश्रुत्, मूषिक तथा बिभी-तक शब्द गणाव्या नथी. ओतोऽद्वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥१।४०। ए सूत्रमां अन्योन्य, आतोद्य, शिरोवेदना, मनोहर तथा सरोरुह शब्द गणाव्या नथी. लोपोऽरण्ये ॥१।४। ए सूत्रमां अलाबु-शब्द गणाव्यो नथी. सदा आदि शब्दोमां

आ नो इ विकल्पे थाय छे, तेमां तदा तथा यदा शब्दो वि-
शेष गणाव्या छे, जे हेमचन्द्रे इत्यादि करी छोडी दीधा छे,
प्राकृतप्रकाशकारे वृश्चिक शब्दने ऋनो इ, श्चनो ञ्छ् तथा
इ नो उ एवा आदेश करी विञ्छुअ तरीके सिद्ध कर्यो छे,
ज्यारे हेमचन्द्रे तेने विञ्चुअ तथा विञ्छिअ तरीके सिद्ध
कर्या छे. प्राकृतप्रकाशकारे मयूरने मोर, दावाग्निने दावग्गि,
तथा दवग्गि, चाटुने चाडु तथा चड्डु, सूर्यने सूर, ऐरावतने एरावण
आदेश कर्या छे, ते संबंधमां हेमचन्द्र कहे छे के मोर, दा-
वाग्गि तथा दवाग्गि चाडु तथा चड्डु, सूर, एरावण ए शब्दोज संस्कृत
छे, अने ते बीजा नियमोथी सिद्ध थई जाय छे, एने माटे
स्वतंत्र आदेश करवानी जरूर नथी. वररुचिए अंकोलशब्द
ने, हेमचन्द्रे अंकोठ शब्दने अने त्रिविक्रमे अंकोट शब्दने
अंकोल्ल आदेश कर्यो छे, परन्तु संस्कृतमां त्रणे शब्दो एक
ज अर्थमां वपराय छे. वररुचिए हरिद्रा शब्दने हलद्दा
आदेश नित्य कर्यो छे, परन्तु हेमचन्द्रे हलद्दा तथा हलिद्दा
एम विकल्पे कर्यो छे. वररुचि ज्यारे दिवस शब्दना आदेश
तरीके दिअहो तथा दिअसो जणावे छे, त्यारे हेमचन्द्र
दिवहो तथा दिवसो जणावे छे. वररुचि आम्र तथा ताम्र
शब्दने अम्ब तथा तम्ब आदेश करे छे. त्यारे हेमचन्द्र
अम्ब तथा तम्ब आदेश करे छे. वररुचि एम कहे छे के
उत्सुक तथा उत्सव शब्दमां त्स् नो छ नथी थतो, त्यारे
हेमचन्द्र कहे छे के त्स् नो छ विकल्पे थाय छे. वररुचि
प्रमाणे उस्सुओ तथा उस्सवो. हेमचन्द्र प्रमाणे उच्छुओ
ऊसुओ तथा उच्छवो, ऊसवो प्राकृतप्रकाशमां सिद्धहेमना
नीचेनां सूत्रो जणाव्या नथी:—

(१) क्षुधो हा ॥८।१।१७।

(२) आयुरप्सरसो वा ॥८।१।२०।

(३) ककुभो हः ॥८।१।२१।

(४) धनुषो वा ॥८।१।२२।

(५) ओत्पद्मे ॥८।१।६१।

(६) इदुतौ वृष्टिवृष्टपृथङ्मृदङ्गनप्तृके ॥८।१।१३७।

(७) अयौ वैत् ।८।१।१६९।

(८) रुदिते दिनाण्णः ॥८।१।२०९।

(९) स्वप्ननीव्यो र्वा ॥८।१।२५९।

(१०) ऋक्षे वा ॥८।२।१९।

(११) एतः पर्यन्ते ॥८।२।६५।

(१२) आश्चर्ये ॥८।२।६६।

(१३) अतो रिआररिज्जरीअं ॥८।२।६७।

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेमनां नीचेनां सूत्रो जणातां नथी (जोके त्रिविक्रमना प्राकृतव्याकरणमां आपेला छे):–

(१) एच्छय्यादौ ॥८।१।५७।

(२) श्यामाके मः ॥८।१।७१।

(३) उदोद्वार्द्रे ॥८।१।८२।

(४) आहते ढिः ॥८।१।१४३।

(५) वा कदले ॥८।१।१६७।

(६) यमुनाचामुण्डाकामुकातिमुक्तके मोऽनुनासिकश्च ॥८।१।१७८।

(७) अंकोठे ल्लः ॥८।१।२००।

(८) गर्भितातिमुक्तके णः ॥८।१।२०८।

(९) यष्ट्यां लः ॥८।१।२४७।

(१०) ध्वजे वा ॥८।२।२७।

(११) इन्धौ झा ॥८।२।२८।

(१२) अनंकोठात्तैलस्य डे ल्लः ॥८।२।१५५।

(१३) त्वादेः स्सः ॥८।२।१७२।

(१४) प्यादयः ॥८।२।२१८।

(१५) वैतत्तदः ॥८।३।३।

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेम करतां नीचेनां सूत्रो वि-
शेष आपेलां छे:—

(१) णिस्साणं णिस्सिअं ॥१।२।४७।

(२) वा पुआयपाद्याः ॥१।२।११०।

(३) लो जठरवठरनिष्ठुरे ॥१।३।७७।

(४) स्मरक्रूवोरीसरकारो ॥१।३।१००।

(५) दव्वींकरनिवहौ दव्विर अणिह वो ॥१।४।१२०।

(६) गहिआद्याः ॥१।४।१२१।

(७) वरइत्तगास्तूनाद्यैः ॥२।१।३०।

(८) सोर्लुक् ॥२।२।९।

प्राकृतरूपावतारमां सिद्धहेम करतां थोडां सूत्रो आप्यां
छे, परन्तु ए व्याकरणनो मुख्य-विषय रूपावतार होवाथी
ग्रन्थकारे सामान्य तथा विशेष नियमो वाळां केटलांक सूत्रो
इरादा पूर्वक छोडी दीधेलां लागे छे. आ कारणसर ते व्या-
करणमां नहि जणावेलां सूत्रोनी यादी अत्रे आपवी
योग्य धारी नथी.

आदेशावलि (धातु)—

प्राकृतप्रकाशमां भृ धातुना क्त प्रत्यय पर रहेतां हू आ-
देशने बदले हु आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व भू धातुना पहुप्प

आदेश ने बदले पम्भव आदेश कर्यो छे. दू धातुना णिअन्त दूम आदेशने बदले सामान्य दूम आदेश कर्यो छे. तृप् धातुना थिप्प आदेशने बदले थिम्प आदेश कर्यो छे. स्था, ध्यै तथा गै धातुना ठा, झा तथा गा आदेशनो बहुवचनमां निषेध कर्यो छे, अने मात्र ठाअ, झाअ तथा गाअ आदेश वपराय छे एम कह्युं छे. ग्रस् धातुना घिस आदेशने बदले विस आदेश कर्यो छे. लिह् धातुना भावकर्ममां लिब्भ आदेशने बदले लिज्झ आदेश कर्यो छे. ग्रह् धातुना भावकर्ममां घेप्प आदेशने बदले गाहिज्ज तथा गहिज्ज आदेश कर्यो छे. मृज् धातुना लुह तथा पुस आदेशने बदले लुभ तथा लुप आदेश कर्या छे. मस्ज् धातुना वुड्ड आदेशने बदले वुड्ढ आदेश कर्यो छे. दृश् धातुना निअच्छ आदेशने बदले णिअक्क आदेश कर्यो छे. शक् धातुना चय आदेशने बदले वअ आदेश कर्यो छे. प्राकृतप्रकाशमां सिद्धहेम करतां नीचेना आदेशो विशेष कर्या छेः—

णुद्— णोल्ल; पद्— पाल; घ्रा— पा, पाअ; जल्प्— जम्प; चर्च्— चम्प.

षड्भाषाचन्द्रिकामां गम् तथा दृश् धातुना आदेशोमां पाठान्तर छे. अवपूर्व तृ धातुना ओह आदेशने बदले ओहर तथा ओरसने बदले ओसर आदेश कर्यो छे. उद् पूर्व वा धातुना ओरुम्मा आदेशने बदले ओरुम्म तथा वसुआ आदेशने बदले अवसुअ आदेश कर्यो छे. स्वप् धातुना कमवस आदेशने बदले कमव तथा लिस आदेशने बदले सलिस आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व विश् धातुना रिअ आदेशने बदले रिह आदेश कर्यो छे; वळी रिंग आदेश विशेष कर्यो

छे. प्लव् धातुना णिअन्त ओम्वाल आदेशने बदले रोम्वाल आदेश कर्यो छे. नड् धातुना णिअन्त आहोड आदेशने बदले राहोड आदेश कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेम करतां नीचेना आदेशो विशेष कर्या छे:–

दीप्– डीप्प, वि+रुध्– उत्तंघ, जुगुप्स्– जप्प तथा दुगुच्छ, स्खल्–मुल्ल.

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेमनां नीचेनां सूत्रो जणाव्यां नथी(जोके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां आपेलां छे):–

(१) क्वे हूः ॥८।४।६४।

(२) राजेरग्घछज्जसहरीररेहाः ॥८।४।१००।

(३) घटेर्गढः ॥८।४।११२।

(४) समो गलः ॥८।४।११३।

(५)छिदेर्दुहावणिच्छल्ल णिज्झोड णिव्वरणिल्लूरलूराः ॥८।४।१२४।

(६) व्यापेरोअग्गः ॥८।४।१४१।

(७) समापेः समाणः ॥८।४।१४२।

प्राकृतरूपावतारमां ज्ञा धातुना णव्व आदेशने बदले णप्प आदेश कर्यो छे, प्लव् धातुना णिअन्त ओम्वाल तथा पव्वाल आदेशने बदले ओव्वाल तथा पव्वाल आदेश कर्या छे. दृश् धातुना दक्खवने बदले दक्खाव आदेश कर्यो छे. विपूर्व स्मृ धातुना वीसर आदेशने बदले विसर आदेश: कर्यो छे; अने विम्हर आदेशजूदो न करतां स्म= म्ह ना आधारे सिद्ध कर्यो छे. त्वर् धातुना जअड आदेशने बदले जअढ आदेश कर्यो छे. पृथक् करवाना अर्थमां कृ धातुना णिव्वड आदेशने बदले णिव्वढ आदेश कर्यो छे. भारवी

दबायेलाना अर्थमां नम् धातुना णिसुढ आदेशने बदले णिसुड्ड आदेश कर्यो छे. भष् धातुना भक्क आदेशने बदले बुक्क आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व भू धातुना पक्षे पभव आदेशने बदले पक्षे पहव आदेश कर्यो छे.

परिशिष्ट.

बोधपाठ १ लो—

प्राकृतप्रकाशमां अनादि थ ना विकल्प ध ने बदले अनादि असंयुक्त थ नो ध नित्य कर्यो छे. त्त्वा प्रत्ययना इय तथा डूण विकल्प आदेशने बदले मात्र इअ आदेश नित्य कर्यो छे. कृ तथा गम् धातुथकी क्त्वा प्रत्ययना अडुअ विकल्प आदेशने बदले अदुअ आदेश नित्य कर्यो छे. भू धातुना हकारना विकल्प भकार आदेशने बदले भू धातुने भो आदेश नित्य कर्यो छे, परन्तु भविष्यकालना प्रत्ययो पर रहेतां भो आदेश नथी कर्यो. एव अव्यय ना य्येव आदेशने बदले जेव्व आदेश कर्यो छे. प्राकृतने बदले शौरसेनीमां नीचेना आदेशो कर्या छेः—

कृ—कर, स्था—चिट्ठ, स्मृ—सुमर, दृश्—पेक्ख, अस्—अच्छ, स्त्री—इत्थी, आश्चर्य—अच्चरिअ, व्यापृत—वावड, गृध्र—गिद्ध, सर्वज्ञ—सव्वण्ण, इङ्गितज्ञ—इंगिअण्ण, इव—विअ.

प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेलुं सिद्धहेम करता विशेष छेः—

(१) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ तथा कन्या शब्दना ण्य, ज्ञ तथा न्य नो ञ्ञ विकल्पे थाय छे. जेमके—बम्हञ्ञो, विञ्ञो, जञ्ञो, कञ्ञा.

(२) नपुंसकलिंगना प्र० तथा द्वि० ब० मां णि प्रत्यय लागे छे, अने पूर्व स्वर नो दीर्घ थाय छे.

(३) दा धातु ने भविष्यकालना उ० ए० मां विभक्ति सहित दइस्स आदेश थाय छे.

(४) अस् धातुने भविष्यकालना उ० ए० मां विभक्ति सहित स्सं आदेश थाय छे.

(५) अस्मद् शब्दने प्र० ब० मां वअं तथा अम्हे आदेश थाय छे.

(६) सर्वनामना स० ए० ना प्रत्यय तरीके स्सिं आदेश थाय छे. जेमके सव्वस्सिं (सर्वस्मिन्), इदरस्सिं (इतरस्मिन्)

(७) धातु थकी भाव, कर्ता तथा कर्ममां परस्मैपदना प्रत्ययो लागे छे. जेमके—सासाअसि (श्वासायसे), वन्दामि (वन्दे), कामिअदि (काम्यते)।

(८) धातुना रूपमां उपान्त्य स्वरनो एकार थाय छे, जेमके—करेदि

(९) आज्ञार्थना नि नो मि थाय छे, जेमके—करवामि (करवाणि) गच्छामि (गच्छानि).

परिशिष्ट बोधपाठ १लो—

प्राकृतप्रकाशमां नीचेनी कलमो जणावी नथी:—

(१) र्य ने स्थाने विकल्पे य्य थाय छे. (३)

(२) मध्यम पुरुषना ह प्रत्यय तथा इह शब्दना हकार नो विकल्पे धकार थाय छे. (९)

(३) अकारान्त धातुने आत्मनेपदनो दे प्रत्यय लागे छे. (८)

(४) भविष्यकालना (प्राकृतना) हिने स्थाने स्सि थाय छे (१०)

(५) अंत्य मकारथी पर णाकार आगम विकल्पे थाय छे, इकारके एकार पर होय तो. (१४)

(६) नकारान्त शब्दथी संबोधनना एकवचननो लोप अने नकारनो अनुस्वार विकल्पे थाय छे. (५)

(७) भवत् अने तेना जेवा भगवत् आदि शब्दना अंत्य व्यंजननो प्र०ए०मां अनुस्वार थाय छे, अने एकवचनना प्रत्ययनो लोप थाय छे. (६)

(८) इन प्रत्ययांत शब्दोना नकारनो सं०ए०मां विकल्पे आकार थाय छे. (७)

षड्भाषाचन्द्रिकामां अम्महे ने बदले अम्हे तथ य्येव ने बदले एव्व आदेश कर्या छे. नियम १४ मो विकल्प ने बदले नित्य कर्यो छे.

प्राकृतरूपावतारमां तस्मात् ना ना आदेश उपरांत नो आदेश कर्यो छे. एवना य्येव आदेशने बदले य्येव्व आदेश कर्यो छे. क्त्वा प्रत्ययनां दूण आदेशने बदले दृण आदेश कर्यो छे. कृ तथा गम धातु थकी क्त्वा प्रत्ययना अडुअ आदेशने बदले अडुअ आदेश कर्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां प्राकृतने बदले शौरसेनीमां नीचेना आदेशो कर्यो छेः—

गम्- गच्छ, इष्- इच्छ. यम्-जच्छ, आस्-अच्छ.
प्राकृतरूपावतारमां हीमाणहे अव्यय शौरसेनीमां वपराता होवानुं जणाव्युं नथी.

नोधपाठ २ जो—

प्राकृतप्रकाशमां असंयुक्त स् ना श् उपरांत ष् नो श् कर्यो छे. अनादि क्षना जिह्वामूलीय ✕ कने बदले ह्क थाय छे. अकारान्त शब्दोने प्र० ए० मां ए प्रत्यय उपरांत इ तथा ० (लुक्) प्रत्ययो लगाड्या छे. ष०ए० मां स्स प्रत्ययने बदले श्श प्रत्यय लगाड्यो छे. अस्मद् शब्दना प्र० ए० तथा ब० मां हगे ने बदले मात्र प्र० ए० मां ज हके, हगे, अहके आदेशो कर्या छे.

प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेलुं सिद्धहेम करतां विशेष छेः—

(१) हृदय शब्दने हडक्क आदेश थाय छे.

(२) र्य तथा र्ज नो य्य थाय छे.

(३) क्त प्रत्ययान्त शब्दोने प्र०ए० मां इ, ए, ० (लुक्) तथा उ प्रत्यय लागे छे.

(४) संबोधनमां अ दीर्घ थाय छे, जेमके-- पुलिशा आगच्छ, माणुशा आगच्छ.

(५) कृ, मृ तथा गम् धातुथकी क्त प्रत्ययने स्थाने ड प्रत्यय लागे छे. जेमके—कडे, मडे, गडे.

(६) क्त्वा प्रत्ययने स्थाने दाणि आदेश थाय छे.

(७) शृगालने शिआल तथा शिआलक आदेश थाय छे.

प्राकृतप्रकाशमा बोधपाठ २ जो—

प्राकृतप्रकाशमां नीचेना नियमो जणाव्या नथीः—

(१) रेफनो ल थाय छे. (१)

(२) ग्रीष्म शब्द सिवाय संयुक्त ष् नो स् थाय छे(२)

(३) ट्ट तथा ष्ट नो स्ट थाय छे. (३)

(४) स्थ तथा र्थ नो स्त थाय छे. (४)

(५) द्यनो य्य थाय छे. (५)

(६) न्य, ण्य, ज्ञ तथा ञ्ज नो ञ्ञ थाय छे. (६)

(७) अनादि लाक्षणिक तथा अलाक्षणिक छ नो श्च थाय छे. (७)

(८) अकारान्त शब्दना ष० ब० मां आहं प्रत्यय लागे छे. (१०)

(९) व्रज धातुना जकारनो ञ्ञ थाय छे. (१२)

(१०) प्रेक्ष् अने आचक्ष्ना क्षनो स्क थाय छे. (१३)

षड्भाषाचन्द्रिकामां पुल्लिंग शब्दोना ष० ए० मां स्स प्रत्ययने बदले श्श प्रत्यय लगाड्यो छे. ष्ट तथा ष्ठ ना स्ट ने बदले स्थ कर्यो छे. तिष्ठना चिष्ठ आदेशने बदले चिष्ट आदेश कर्यो छे. संयुक्त स् तथा ष् अनादि होय तो ज स् थाय छे एम कह्युं छे.

प्राकृतरूपावतारमां पुल्लिंग शब्दोना ष० ए० मां स्स प्रत्ययने बदले श्श प्रत्यय कर्यो छे. ष० ब० मां आहँ प्रत्यय नित्यने बदले विकल्पे कर्यो छे. तिष्ठ ना चिष्ठने बदले चिष्ट आदेश कर्यो छे. प्राकृतने बदले मागधीमां भ्रुकुटि तथा पुरुष शब्दना रेफना उकारनो इकार कर्यो छे. जेमके—

भिउडी, पुरिसो.

बोधपाठ ३ जो—

प्राकृतप्रकाशमां चूलिकापैशाचीना नियम ने पैशाचीना नियम तरीके गण्याव्यो छे, ए उपरथी सिद्ध थाय छे के वररुचिना समयमां पैशाची तथा चूलिकापैशाची वच्चे भेद गणातो नहि होय. स्नना सिन आदेशने बदले सन आदेश कर्यो छे.

र्यना रिय आदेशने बदले रिअ आदेश कर्यो छे. ज्ञना ञ्ञ आदेश ने बदले ञ्ज आदेश कर्यो छे. सामान्य न्यना ञ्ञ आदेशने बदले मात्र कन्या शब्दना न्यनो ञ्ज आदेश कर्यो छे. राजन् शब्दना राज्ञ इत्यादि रूपोमां ज्ञना चिञ् विकल्प आदेशने बदले तृ० ए०, पं० ए०, ष० ए० तथा स० ए० ना प्रत्ययो पर रहेतां राचि आदेश विकल्पे कर्यो छे.जेमके—राचिना,रञ्ञा;राचिनो,रञ्ञो,राचिनि,रञ्जि.त्त्वा प्रत्ययना तून आदेशने स्थाने तूनं आदेश कर्यो छे. जेमके— दातूनं, कातूनं. हृदय शब्दना हितपक आदेशने बदले हित-अक आदेश कर्यो छे.प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेलुं सिद्ध-हेम करतां विशेष छे:—

(१) र्यनो च्च थायछे. जेमके— कच्चं(कार्यम्).

(२) इवने पिव आदेश थाय छे.जेमके—कमलं पिव.

प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेला नियमो जणाव्या नथी:—

प्राकृतप्रकाशमा —बोधपाठ ३ जो

(१) ण्य नो ञ्ञ थाय छे. (७)

(२) त्त्वा ने स्थाने त्तून तथा त्थून आदेश थाय छे.(१५)

(३) दकारनो तकार थाय छे,अने तकारनो तकारज रहे छे. (२)

(४) लकारनो लकार अने श् तथा ष् नो स थाय छे(३)

(५) दु नो विकल्पे तु आदेश थाय छे. (४)

(६) भावकर्ममां थना क्य प्रत्ययने इय्य आदेश थाय छे. (१४)(क)

(७) कृ धातुने क्य प्रत्यय सहित कीर आदेश थाय छे. (१४)(ख)

(८) यादृश जेवा शब्दोमां दृ ने स्थाने ति आदेश थाय छे. (५)

(९) अकारान्त नाम थकी पंचमी ना एकवचन तरीके आतो अने अतु प्रत्यय थाय छे. (९)

(१०) तद् तथा इदम् शब्दने तृतीयाना एक वचनना प्रत्यय सहित पुल्लिंग तथा नपुंसक लिंगमां नेन अने स्त्री-लिंगमां नाए आदेश थायछे. (१०)

(११) निबादि प्रथम पुरुषना एकवचन इ तथा एने स्थाने ति आदेश थाय छे. (११)

(१२) अकारान्त धातुथी पर इ तथा एने स्थाने ति तथा ते आदेश थाय छे. (१२)

(१३) भविष्यकालमां इ तथा ए सहित प्राकृतना हिने बदले मात्र एय्य प्रत्यय थाय छे. (१३)

(१४) [चूलिका पैशाचीमां] रनो लू विकल्पे थाय छे. (२)

षड्भाषाचन्द्रिकामां ष्ट ना सटने बदले सिट आदेश कर्यो छे. ष्ट्वा ना ट्ठून आदेशने बदले ट्टून आदेश कर्यो छे. शेषं शौरसेनीवत् एम कह्युं नथी.

प्राकृतरूपावतारमां ष्ट ना सट आदेशने बदले सिट आदेश कर्यो छे. क्त्वा प्रत्ययना तून आदेशने बदले तूनं आदेश कर्यो छे. ष्ट्वा ना ट्ठून आदेशने बदले ट्टून आदेश कर्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां नियम चोथो जणाव्यो नथी.

बोधपाठ ४—५—६ ट्टो.

षड्भाषाचन्द्रिकामां अकारान्तपुल्लिंग शब्दना द्वि० ए० मां जिणो; द्वि० व० मां जिणि, जिणे; तृ० ए० मां जिणे;

तृ० ब० मां जिणे; स० ब० मां जिणासु, जिणासु रूपो वधारे छे. सं० ब० मां जिणा, जिणा रूपो नथी. इकारान्त पुल्लिंग शब्दना प्र० ब० मां इसिहो, इसीहो; ष० ब० मां इसि, इसी रूपो वधारे छे. स० ब० नो हुं प्रत्यय स०ए० मां आप्यो छे. सं० ब० मां इसि , इसी रूपो नथी. वर्त्म ना विच्च आदेश ने बदले विच्चु आदेश कर्यो छे. विषण्ण ना वुन्न आदेश ने बदले उन्न आदेश कर्यो छे . परस्पर ना अवरोप्पर आ-देशने बदले अवरोवर आदेश कर्यो छे. सर्वादि शब्दो ना ष० ए० मां हां प्रत्ययने बदले हुं प्रत्यय आप्यो छे. स्त्रीलिं-ग नामना स० ए० मां हि प्रत्ययने बदले हिं प्रत्यय आप्यो छे. किम् शब्दना ष० ए० मां किहे ने बदले किह आदेश कर्यो छे. तद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्रं ने बदले त्रुं आदेश कर्यो छे. यद् शब्दना प्र० तथा द्वि०ए०मां ध्रुं ने बदले ध्रुं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ब० मां तुम्हइं ने बदले तुम्हइ आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्द ना द्वि० तृ०, तथा स० ए० मां पइं ने बदले एइं आदेश कर्यो छे. अस्मद् शब्द ना तृ० ब० मां अम्हेहिं ने बदले अम्हेहि आदेश कर्यो छे. अस्मद् शब्द ना पं० तथा ष०ए० मां मज्भु ने बदले मज्झ आदेश कर्यो छे. यत्र तथा तत्र शब्दने अनुक्रमे जइ तथा तइ आदेश वधारे कर्या छे. क्त्वा प्रत्ययना इवि आदेशने बदले ए आदेश कर्यो छे. क्त्वा तथा तुम् प्रत्ययना एवि तथा एविणु आदेशने बदले एपि तथा एपिणु आदेश कर्या छे. तादर्थ्यमां रेसि तथा रेसिं ने बदले तेसि तथा तेसिं आदेश कर्या छे. विनाना विणु आदेशने बदले विण आदेश कर्या छे. अवश्यम् ना

अवसें तथा अवसने बदले अवासें तथा अवास आदेश कर्या छे. एकशः ना एक्कसिने बदले एगसि आदेश कर्यो छे. इदानीम् ना एम्वहिं ने बदले एव्वहि आदेश कर्यो छे. एवमूना एम्व ने बदले एम आदेश कर्यो छे. एवमेवना एम्वइ ने बदले एमइ आदेश कर्यो छे. प्रत्युतना पच्चलिउ ने बदले पच्छलिउ आदेश कर्यो छे. नहिना नाहिं ने बदले नाहि आदेश कर्यो छे. प्रायशः ना पग्गिम्व तथा प्राइम्व ने बदले अनुक्रमे पग्गिम तथा प्राइम आदेश कर्या छे. कुतः कहन्तिहु ने बदले कहुतिहु आदेश कर्यो छे. चेष्टानुकरणमां घुग्घ ने बदले घिग्घि आदेश कर्यो छे. तद्धितमां त्तण उपरांत प्पण आदेश कर्यो नथी. तव्य प्रत्ययना इएव्वउं, एव्वउं तथा एवा ने बदले एव्वइ, एप्पइ तथा एव्व आदेश कर्या छे. वर्तमान कालना उ० ए० मां उं ने बदले उ प्रत्यय कर्यो छे. भूधातुना हुच्च ने बदले बहुच्च आदेश कर्यो छे. व्रज् धातुना वुज ने बदले वज आदेश कर्यो छे. ग्रह् धातुना गृण्ह् ने बदले गण्ह् आदेश कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिका मां सिद्धहेमना नीचे आपेला सूत्रो जणाव्या नथी (जोके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां ते आपेला छे):—

सुपा अस्दासु ॥८।४।३८१।
आपद्विपत्संपदां द इः ॥८ ४ ४००।
कथंयथातथां थादेरेमेमेहेधा डितः ॥८ ४।४०१।
गौणादीनां बहुल्लादयः ॥८ ४।४२२।
योगजाश्चैषाम् ॥८।४।४३०।
स्त्रियां तदन्ताड्डीः ॥८।४ ४३१।
आन्तान्ताड्डाः ॥८।४।४३२।

तृ० ब० मां जिणे; स० ब० मां जिणसु, जिणासु रूपो वधारे छे. सं० ब० मां जिण, जिणा रूपो नथी. इकारान्त पुल्लिंग शब्दना प्र० ब० मां इसिहो, इसीहो; ष० ब० मां इसि, इसी रूपो वधारे छे. स० ब० नो हुं प्रत्यय स०ए० मां आप्यो छे. सं० ब० मां इसि , इसी रूपो नथी. वर्त्म ना विच्च आदेश ने बदले विच्चु आदेश कर्यो छे. विषण्ण ना वुन्न आदेश ने बदले उन्न आदेश कर्यो छे . परस्पर ना अवरोप्पर आ-देशने बदले अवरोवर आदेश कर्यो छे. सर्वादि शब्दो ना ष० ए० मां हां प्रत्ययने बदले हुं प्रत्यय आप्यो छे. स्त्रीलिं-ग नामना स० ए० मां हि प्रत्ययने बदले हिं प्रत्यय आप्यो छे. किम् शब्दना ष० ए० मां किहे ने बदले किह आदेश कर्यो छे. तद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्रं ने बदले त्रुं आदेश कर्यो छे. यद् शब्दना प्र० तथा द्वि०ए०मां ध्रुं ने बदले द्रुं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ब० मां तुम्हइं ने बदले तुम्हइ आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्द ना द्वि० तृ०, तथा स० ए० मां पइं ने बदले एइं आदेश कर्यो छे. अस्मद् शब्द ना तृ० ब० मां अम्हेहिं ने बदले अम्हेहि आदेश कर्यो छे. अस्मद् शब्द ना पं० तथा ष०ए० मां मज्झु ने बदले मज्झ आदेश कर्यो छे. यत्र तथा तत्र शब्दने अनुक्रमे जइ तथा तइ आदेश वधारे कर्या छे. क्त्वा प्रत्ययना इवि आदेशने बदले ए आदेश कर्यो छे. क्त्वा तथा तुम् प्रत्ययना एवि तथा एविणु आदेशने बदले एपि तथा एपिणु आदेश कर्या छे. तादर्थ्यमां रेसि तथा रेसिं ने बदले तेसि तथा तेसिं आदेश कर्या छे. विनाना विणु आदेशने बदले विण आदेश कर्या छे. अवश्यम् ना

अवसें तथा अवसने बदले अवासें तथा अवास आदेश कर्या छे. एकशः ना एक्कसिने बदले एगसि आदेश कर्यो छे. इदानीम् ना एम्वहिं ने बदले एव्वहि आदेश कर्यो छे. एवमूना एम्व ने बदले एम आदेश कर्यो छे. एवमेवना एम्वइ ने बदले एमइ आदेश कर्यो छे. प्रत्युतना पच्चलिउ ने बदले पच्छलिउ आदेश कर्यो छे. नहिना नाहिं ने बदले नाहि आदेश कर्यो छे. प्रायशः ना पग्गिस्व तथा प्राइम्व ने बदले अनुक्रमे पग्गिम तथा प्राइम आदेश कर्या छे. कुतः कहन्तिहु ने बदले कहुतिहु आदेश कर्यो छे. चेष्टानुकरणमां घुग्घ ने बदले घिग्घि आदेश कर्यो छे. तद्धितमां त्तण उपरांत प्पण आदेश कर्यो नथी. तव्य प्रत्ययना इएव्वउं, एव्वउं तथा एवा ने बदले एव्वइ, एप्पइ तथा एव्व आदेश कर्या छे. वर्तमान कालना उ० ए० मां उं ने बदले उ प्रत्यय कर्यो छे. भूधातुना हुच्च ने बदले बहुच्च आदेश कर्यो छे. व्रज् धातुना वुज ने बदले वज आदेश कर्यो छे. ग्रह् धातुना गृण्ह ने बदले गण्ह आदेश कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिका मां सिद्धहेमना नीचे आपेला सूत्रो जणाव्या नथी (जोके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां ते आपेला छे):—

सुपा अम्हासु ॥८।४।३८१।

आपद्विपत्संपदां द इः ॥८।४।४००।

कदिस्थैरोर्नान्च्चारलाघवम् ॥८।४।४१०।

शीघ्रादीनां वहिल्लादयः । ८।४।४२२।

योगजाश्चैपाम् ॥८।४।४३०।

स्त्रियां तदन्ताड्डीः ॥८।४।४३१।

आन्तान्ताड्डाः ॥८।४।४३२।

अस्येदे ॥८।४।४३३।
लिंगमतंत्रम् ॥८।४।४४५।
शौरसेनीवत् ॥८।४।४४६।
व्यत्ययश्च ॥८।४।४४७।
शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ॥८।४।४४८।

प्राकृतरूपावतारमां नामने स्वार्थमां अ, डड, डुल्ल, डडअ, डुल्लअ, डुल्लडड उपरांत अडड, अडुल्ल, डडडुल्ल, अडडडुल्ल, अडुल्लडड, डडअडुल्ल, डुल्लअडड, डडडुल्लअ, डुल्लडडअ, आदेशो कर्या छे. अन्यथानो अनु तथा सर्व नो साह् आदेश विकल्पे ने बदले नित्य कर्यो छे. स्त्रीलिंग नामना पं० तथा ष० ब० मां हु ने बदले हुं आदेश कर्यो छे. स्वार्थमां स्त्रीलिंग शब्दोने डी तथा डा आदेश उभय कर्या छे। स्त्रीलिंग नामना स० ए० मां हि ने बदले अ, आ, इ तथा ए आदेश कर्या छे. तद् शब्दना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्रं ने बदले त्रुं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्दना द्वि०, तृ० तथा स० ए० मां पइं ने बदले पइं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्दना पं० तथा ष० ए० मां तुज्झने बदले तुज्झु आदेश कर्यो छे. दृश धातुना प्रस्स आदेश ने बदले पस्स आदेश कर्यो छे.

पण्डित बहेचरदास जीवराज दोशी ना अपभ्रंश व्याकरणमां नपुंसक लिंगवाला अच्छि शब्दना प्र० ए० मां अच्छी रूप नथी. धणु शब्दना प्र० ए०मां धणू रूप नथी. मालइिआ शब्दना प्र० तथा द्वि० ब० मां मालइिआ तथा मालइिअ रूपो वधारे छे. बुद्धि शब्दना प्र० तथा द्वि० ब० मां बुद्धि तथा बुद्धी रूपो वधारे छे. ईकारान्त ऊकारान्त

तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोमां पण तेज प्रमाणे रूपो वधारे छे. तद् शब्दना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्रं आदेश वधारे छे. यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां ष० ए० मां अनुक्रमे जहे तहे तथा कहे आदेश विकल्पे कर्या छे. भविष्यकालमां प्राकृतना हिने बदले स उपरांत शौरसेनी नो स्सि आदेश वधारे आप्यो छे.

श्री वीतरागाय नमः ।

प्राकृत-पाठमाला

मंगलाचरणम् ।

(आर्या)

णविऊण गिरिसमधीरं गुणगंभीरं जिणं महावीरं ।
वोच्छं भवियहियट्ठं सरलं पाययपाढमालं ॥१॥

प्राकृतवर्णमाला.

स्वर.

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ.

व्यंजन.

क्, ख्, ग्, घ्; च्, छ्, ज्, झ्; ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्; त्, थ्, द्, ध्, न; प्, फ्, ब्, भ्, म्; य्, र्, ल्, व्, स्, ह्.

अनुस्वार (ं), सानुनासिक (ँ).

नोंध—ङ् ञ् स्वतंत्र आवता नथी, परन्तु अनुस्वारनो परसवर्ण थतां संयुक्त ङ् तथा ञ् आवे छे.

प्राकृत नियमावलि

संधि—

हे० १-५   १ प्राकृतमां एक पदना बे स्वरोनी संधि थती नथी. जेमके—मुद्धाइ, मइइ. परन्तु जूदा जूदा पदना बे स्वरोनी संधि विकल्पे थाय छे.[1] जेमके—विसम आयवो विसमायवो, वास इसी वासेसी, दहि ईसरो दहीसरो, साउ उअयं साऊअयं ।

हे० १-६   २ इवर्ण तथा उवर्णनी विजातीय[2] स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके--देहि अहिअं, महु अहिअं

हे० १-७   ३ एकार तथा ओकारनी कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके—देवीए आसणं, पंचालाओ आगओ ।

हे० १-८   ४ उद्वृत्त[3] स्वरनी प्रायः[4] कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके--पईवो, निसाअरो,

---

१ क्वचित् एक पदमां पण संधि विकल्पे थाय छे. जेमके—बिइओ बीओ, काहिइ काही ।

२ इवर्णना इ, ई तथा उवर्णना उ, ऊ सजातीय अने बाकीना स्वर विजातीय गणाय छे ।

३ लुप्त थयेला क् ग् च् इत्यादि व्यंजननो जे अवशिष्ट स्वर रहे छे ते उद्वृत्त स्वर कहेवाय छे ।

४ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके—कुम्भआरो कुम्भारो, सुउरिसो सूरिसो । क्वचित् नित्य थाय छे. जेमके--सालाहणो. चक्काओ ।

रयणीअरो ।

हे० १-९ ५ तिबादि[1] स्वरनो कोई पण स्वर साथे संधि थतो नथी. जेमके—होइ इह ।

स्वर विकार—

हे--१--१० १--४०

६ प्राकृतमां जूदा जूदा पदना बे स्वरने योगे प्रायः एक स्वर नो लोप थाय छे. जेमके—

त्रिदशेशः	तिअसीसो	अम्हे एत्थ	अम्हेत्थ
निःश्वासोच्छ्वासौ	निसासूसासा	जइ इमा	जइमा
		जइ अहं	जइहं

हे० १-४

७ समासमां प्रायः ह्रस्व स्वरनो दीर्घ[2] तथा दीर्घ स्वरनो ह्रस्व[3] थाय छे. जेमके--

अन्तर्वेदिः	अंतावेई	नितम्बशिलास्खलितवीचिमालस्य — निअंबसिलखलिअवीइमालस्स
सप्तविंशतिः	सत्तावीसा	

---

१ धातुथी पर इ. सि. मि विगेरे वर्त्तमानकालादिना प्रत्ययो तिबादि कहेवाय छे ।

२ क्वचित् नथी थतो. जेमके—जुवइअणो (युवतिजनः) क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके--भुआयन्तं भुअयन्तं (भुजायन्त्रम) पईहरं पइहरं (पतिगृहम) वेलूवणं वेलुवणं (वेणुवनम्)

३ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके—जउँणायडं जउणायडं (यमुनातटम्), णईसोत्तं णइसोत्तं (नदीस्रोतः) गोरिहरं गोरीहरं (गौरीगृहम्) वहूमुहं वहुमुहं (वधूमुखम)

हे० १--६८.

८ घञ् नैमित्तिक वृद्धिथी थयेला आकारनो प्रायः विकल्पे अ थाय छे. जेमके--

प्रवाहः	पवहो पवाहो	प्रकारः	पकारो वा पयरो पयारो
प्रहारः	पहरो पहारो	प्रस्तावः	पत्थवो पत्थावो

हे० १--४३

९ श् ष् तथा स् नी साथे पहेला या पछी जोडायेला य् र् व् श् ष् तथा स् नो लोप थया पछी बाकी रहेला श्[1], ष्[2] तथा स् नी पहेलानो स्वर दीर्घ थाय छे. जेमके—

आवश्यकं	आवासयं	मनश्शिला	मणासिला
विश्राम्यति	वीसमइ	शिष्यः	सीसो
अश्वः	आसो	वर्षः	वासो
विश्वसिति	वीससइ	कस्यचित्	कासइ
दुश्शासनः	दूसासणो	निस्सहः	नीसहो

हे. १–८४.

१० जोडाक्षरनी पूर्वे दीर्घस्वरनो ह्रस्व थाय छे. जेमके—

आम्रम्	अंबं	गुरूल्लापाः	गुरुल्लावा
ताम्रम्	तंबं	चूर्णः	चुण्णो
विरहाग्निः	विरहग्गी	नरेन्द्रः	नरिन्दो
आस्यम्	अस्सं	म्लेच्छः	मिलिच्छो
मुनीन्द्रः	मुणिन्दो	अधरोष्ठम्	अहरुट्ठं
तीर्थम्	तित्थं	नीलोत्पलम्	नीलुप्पलं

---

१ क्वचित् नथी थतो, जेमके—गओ (गगः)

२ श तथा ष संस्कृतनी अपेक्षाए समजवा.

हे. १-८५.

११ जोडाक्षरनी पूर्वे आदि इकारनो प्रायः विकल्पे एकार थाय छे. जेमके—

पिण्डम्	पेण्डं	पिण्डं	विष्णुः	वेण्हू	विण्हू
धम्मिल्लम्	धम्मेल्लं	धम्मिल्लं	पिष्टम्	पेट्ठं	पिट्ठं
सिन्दूरम्	सेन्दूरं	सिन्दूरं	बिल्वं	बेल्लं	बिल्लं

हे. १-११६.

१२ जोडाक्षरनी पूर्वे आदि उकारनो ओकार थाय छे, जेमके—

तुण्डम्	तोण्डं	मुस्ता	मोत्था
मुण्डम्	मोण्डं	मुद्गरः	मोग्गरो
पुष्करम्	पोक्खरं	पुद्गलम्	पोग्गलं
कुट्टिमम्	कोट्टिमं	कुण्ठः	कोण्ठो
पुस्तकः	पोत्थओ	कुन्तः	कोन्तो
लुब्धकः	लोद्धओ	व्युत्क्रान्तम्	वोक्कन्तं

हे. १-१३. १-९३. १-११५.

१३ निर् तथा दुर् उपसर्गना रेफनो विकल्पे लोप थाय छे अने लोप थाय छे त्यारे निर् ना इ नो नित्य, तथा दुर् ना उ नो विकल्पे दीर्घ थाय छे. जेमके—निस्सहं नीसहं [निस्सहम्] दुस्सहो दूसहो दुसहो [दुस्सहः].

हे. १-१२६. १-१४८. १-१५९.

१४ आदि ऋ नो अ. ऐ नो ए अने औ नो ओ थाय छे, जेमके—

१ क्वचित् नथी थतो जेमके—चिन्ता

घृतम्	घयं	वैद्य:	वेज्जो
तृणम्	तणं	कैतव:	केढवो
कृतम्	कयं	वैधव्यम्	वेहव्वं
वृषभ:	वसहो	कौमुदी	कोमुई
मृग:	मओ	यौवनम्	जोव्वणं
धृष्ट:	धट्ठो	कौस्तुभ:	कोत्थुहो
शैल:	सेलो	कौशाम्बी	कोसम्बी
त्रैलोक्यम्	तेलुक्कं	क्रौंच:	कोंचो
ऐरावण:	एरावणो	कौशिक:	कोसिओ
कैलास:	केलासो		

हे- १·१४०.

१५ (क) केवल आदि ऋ नो रि थाय छे. जेमके—

ऋषि:	रिसी	ऋक्ष:	रिच्छो
ऋद्धि:	रिद्धी		

हे-१-१३४

(ख) गौण शब्दने छेडे आवता ऋ नो उ थाय छे जेमके—माउमण्डलं, माउहरं, पिउहरं माउसिआ, पिउसिआ, पिउवणं, पिउवई.

व्यञ्जन विकार—

हे-१-२३.१-२४

१६ अन्त्य म् नो अनुस्वार थाय छे. परंतु स्वर पर होय तो विकल्पे थाय छे. जेमके—

जलम्	जलं	वत्सम्	वच्छं
फलम्	फलं	गिरिम्	गिरिं

ऋषभमजितं च वन्दे- उसभमजिअं च वन्दे, उसभं अजिअं च वन्दे।

हे-१-२५.

१७ ङ् ञ् ण् तथा न् कोई पण व्यंजननी पहेला होय तो अनुस्वार थाय छे. जेमके—

पङ्क्तिः	पंती	षण्मुखः	छंमुहो
पराङ्मुखः	परंमुहो	उत्कण्ठा	उक्कंठा
कञ्चुकः	कंचुओ	सन्ध्या	संझा
लाञ्छनम्	लंछणं	विन्ध्यः	विंझो

हे० १-३०.

१८ अनुस्वारनो तेना पछी आवेला अक्षरना वर्गनो छेल्लो अक्षर विकल्पे थाय छे. जेमके—

सन्ध्या	सञ्झा	संझा	उत्कण्ठा	उक्कण्ठा	उक्कंठा
पङ्कः	पङ्को	पंको	चन्द्रः	चन्दो	चंदो
कञ्चुकः	कञ्चुओ	कंचुओ	कलम्बः	कलम्बो	कलंबो

हे० १- ११.

१९ संस्कृतशब्दनो अन्त्य व्यञ्जन प्राकृतमां प्रायः लोपाय छे[1]. जेमके—

यावत्	जाव	यशस्	जस
तावत्	ताव	जन्मन्	जम्म

---

१ पद विभक्तिनी अपेक्षाए अन्त्य परंतु वाक्य विभक्तिनी अपेक्षाए अनन्त्य होवाथी समासना विकल्पे थाय छे. जेमके

सद्भिक्षुः	सभिक्खु	सब्भिक्खु	एतद्गुणाः	एअगुणा
सज्जनः	सज्जणो	सजणो	तद्गुणाः	तग्गुणा

शाखा	साहा	साधुः	साहू
मुखम्	मुहं	बधिरः	बहिरो
मेघः	मेहो	सभा	सहा
जघनम्	जहणं	स्वभावः	सहावो
नाथः	नाहो	नभः	नहं

हे० १—१९८, १—१९९, १—२०२, १—२२८, १—२३१, १—२३६, १—२३७, १—२६०, १—२६४.

२८ स्वर थकी पर अनादि तथा असंयुक्त ट् नो ड्, ठ् नो ढ्, ड् नो ल्, न् नो ण्, प् तथा ब् नो व्, फ् नो भ् तथा ह् सर्वत्र श् तथा ष् नो स् थाय छे. अने अनुस्वारथी पर ह् नो घ् विकल्पे थाय छे. जेमके—

ट्=ड्[1]

नटः	नडो	घटः	घडो
भटः	भडो	घटति	घडइ

ठ्=ढ्

मठः	मढो	कुठारः	कुढारो
शठः	सढो	पठति	पढइ
कमठः	कमढो		

थतो जेमके—

सर्षपखल:	सरिसवखलो	प्रनष्टभय:	पणट्ठभओ
प्रलयघन:	पलयघणो	अग्नि:	अग्गी
जिनधर्म:	जिणधम्मो	नभ:	नभं

१ क्वचित् नथी थतो जेमके—अटति अडइ

तीर्थंकरः	तित्थयरो	वितानम्	विआणं
नगः	नओ	रसातलम्	रसाअलं
नगरम्	नयरं	गदा	गआ
शचिः	सई	मदनः	मयणो
रजतम्	रययं	रिपुः	रिऊ
सुपुरुषः	सुउरिसो	लावण्यम	लायण्णं
दयालुः	दआलू	विबुधः	विउहो
वियोगः	विओओ		

हे- १- १७९.

२५. अवर्ण थी पर अनादि प् नो लोप नथी थतो. जेमके—

शपथः	सवहो	शापः	सावो

हे० १--१८०.

२६ उद्वृत्त अवर्ण नो अवर्ण थकी पर होय तो य थाय छे[1]. जेमके—

शकटम्	सयढं	प्रजापतिः	पयावई
मृगाङ्कः	मयंको	पातालम्	पायालं
कचग्रहः	कयग्गहो	नयनम्	नयणं

हे० १--१८७.

२७ स्वरथकी पर अनादि तथा असंयुक्त ख् घ् थ् ध् तथा भ् नो प्राय: ह् थाय छे[2]. जेमके—

१ क्वचित् अवर्णथी पर न होय तो पण य थाय छे. जेमके—पियइ (पिवति)

२ स्वरथकी पर अनादि तथा असंयुक्त होवा छता क्वचित् नथी

शाखा	साहा	साधुः	साहू
मुखम्	मुहं	बधिरः	बहिरो
मेघः	मेहो	सभा	सहा
जघनम्	जहणं	स्वभावः	सहावो
नाथः	नाहो	नभः	नहं

हे० १—१९६, १—१९९, १—२०२, १—२२८, १-२३१, १—२३६, १—२३७, १—२६०, १—२६४.

२८ स्वर थकी पर अनादि तथा असंयुक्त ट् नो ड्, ठ् नो ढ्, ड् नो ल्, न् नो ण्, प् तथा ब् नो व्, फ् नो भ् तथा ह् सर्वत्र श् तथा ष् नो स् थाय छे. अने अनुस्वारथी पर ह् नो घ् विकल्पे थाय छे. जेमके—

ट्=ड्[1]

नटः	नडो	घटः	घडो
भटः	भडो	घटति	घडइ

ठ्=ढ्

मठः	मढो	कुठारः	कुढारो
शठः	सढो	पठति	पढइ
कमठः	कमढो		

थतो जेमके—

सर्षपखलः	सरिसवखलो	प्रनष्टभयः	पणट्ठभओ
प्रलयघनः	पलयघणो	अस्थिरः	अथिरो
जिनधर्मः	जिणधम्मो	नभः	नभं

१ क्वचित् नथी थतो जेमके—अटति अटइ

ड्=ल् (प्रायः)

वडवामुखम्	वलयामुहं	तडागम्	तलायं
गरुडः	गरुलो	क्रीडति	कीलइ

न्=ण्

कनकम्	कणयं	वचनम्	वयणं
मदन	मयणो	नयनम्	नयणं

प्=व् (प्रायः)

उपसर्गः	उवसग्गो	कपिलम्	कविलं
प्रदीपः	पईवो	कपालम्	कवालं
काश्यपः	कासवो	महिपालः	महिवालो
उपमा	उवमा		

---

१ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके—

वडिसम्	वलिसं	वडिसं
दाडिमम्	दालिमं	दाडिमं
गुडः	गुलो	गुडो
नाडी	णाली	णाडी
नडम्	णलं	णडं
आपीडः	आमेलो	आवेडो

क्वचित् नथी थतो जेमके--

निविडम्	निविडं
गौडः	गउडो
पीडितम्	पीडिअं
नीडम्	नीडं
उडुः	उडू
नडि	नडी

२ क्वचित् नथी थतो. जेमके—

कपिः	कइ	रिपु.	रिऊ

फ्=भ् तथा ह् (प्राय[1])

सफलम् सभलं सहलं	शफरी सभरी सहरी
शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ	गुफति गुभइ गुहइ

ब्=व्

शबलः सवलो

श् तथा ष्=स्

शब्दः	सद्दो	षण्ढः	सण्ढो
कुशः	कुसो	निकषः	निहसो
शुद्धम्	सुद्धं	शेषः	सेसो

ह्=घ् (विकल्पे[2])

सिंहः	सिंघो	सीहो	संहारः	संघारो	संहारो

हे० १-२२९.

२९ असंयुक्त आदि न् नो ण् विकल्पे थाय छे. जेमके—

नरः	णरो	नरो	नदी	णई	नई
नयति	णेइ	नेइ			

१ क्वचित् मात्र भ् थाय छे. जेमके—

रेफः रेभो शिफा सिभा

क्वचित् मात्र ह् थाय छे. जेमके—

मुक्ताफलम् मुत्ताहलं

२ क्वचित् अनुस्वारथी पर न होय तो पण थाय छे. जेमके—

दाहः दाघो

हे० १-२४५.

३० पदनी आदिमां आवेला य् नो ज् थाय छे.

जेमके—

यशः	जसो	याति	जाइ
यमः	जमो		

हे० १-२०६.

३१ प्रति उपसर्गना त् नो ड् थाय छे. जेमके-

प्रतिपन्नम्	पडिवन्नं	प्रतिमा	पडिमा
प्रतिभासः	पडिहासो	प्रतिपद्	पडिवया
प्रतिहारः	पडिहारो	प्रतिकरोति	पडिकरइ
प्रतिस्पर्द्धी	पाडिप्फद्धी		

हे० २-७७.

३२ कोईपण जोडाक्षरमां क् ग् ट् ड् त् द् प् श् ष् स् ≍क् (जिह्वामूलीय) तथा ≍प् (उपध्मानीय) पहेला आव्या होय तो तेओनो लोप थाय छे. जेमके-

१ उपसर्ग जोडावाथी अनादि बनेला य् नो पण ज् थाय छे. जेमके—

संयमः संजमो। संयोगः संजोगो। अपयशः अवजसो

क्वचित् नथी थतो. जेमके—प्रयोगः पओओ.

२ क्वचित् नथी थतो. जेमके—

प्रतिसमयम	पइसमयं	प्रतिष्ठानम्	पइट्ठाणं
प्रतीपम्	पईवं	प्रतिष्ठा	पइट्ठा
सम्प्रति	संपइ	प्रतिज्ञा	पइण्णा

भुक्तम्	भुत्तं	सुप्तः	सुत्तो
सिक्थम्	सित्थं	गुप्तः	गुत्तो
दुग्धम्	दुद्धं	श्लक्ष्णम्	लण्हं
मुग्धम्	मुद्धं	निश्चलः	निच्चलो
षट्पदः	छप्पत्रो	श्च्योतति	चुअइ
कट्फलम्	कप्फलं	गोष्ठिः	गोट्ठी
खड्गः	खग्गो	षष्ठः	छट्ठो
षड्जः	सज्जो	निष्ठुरः	निट्ठुरो
उत्पलम्	उप्पलं	स्खलितः	खलिओ
उत्पातः	उप्पाओ	स्नेहः	नेहो
मद्गुः	मग्गू	दुःखम्	दुक्खं
मुद्गरः	मोग्गरो	अन्तःपातः	अंतप्पाओ

नोंध—उपला सर्व उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयुं छे.

हे० २-७८०

३३ कोईपण जोडाक्षरमां म् न् तथा य् छेडे आव्या होय तो तेओनो लोप थाय छे. जेमके—

युग्मम्	जुग्गं	लग्नः	लग्गो
रश्मिः	रस्सी	श्यामा	सामा
स्मरः	सरो	कुड्यम्	कुड्डं
स्मेरम्	सेरं	व्याधः	वाहो
नग्नः	नग्गो		

नोंध—उपला उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयुं छे.

हे० २-७९.

३४ कोईपण जोडाक्षरमां ल् ब् व् तथा र् पहेला के पछी आव्या होय तो तेओनो लोप थाय छे. जेमके-

उल्का	उक्का	श्लक्ष्णम्	सण्हं
वल्कलम्	वक्कलं	विक्लवः	विक्कवो
शब्दः	सद्दो	चक्रम्	चक्कं
अब्दः	अद्दो	वर्गः	वग्गो
लुब्धकः	लोद्धओ	ग्रहः	गहो
पक्वम्	पक्कं पिक्कं	रात्रिः	रत्ती
ध्वस्तः	धत्थो		

नोंध—उपला उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयुं छे.

हे० २-८३.

३५ ज्ञ् मांना ञ् नो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

ज्ञानम्	जाणं	णाणं	मनोज्ञम् मणोज्जं मणोण्णं
सर्वज्ञः	सव्वज्जो	सव्वण्णू	अभिज्ञः
आत्मज्ञः	अप्पज्जो	अप्पण्णू	प्रज्ञा
दैवज्ञः	दइवज्जो	दइ[illegible]	
इङ्गितज्ञः	इंगिअज्जो इं[illegible]		

हे० २-८९.

३६ पदनी आदिम
पर न होय एवा रेफ
तथा आदेश व्यंजननुं

प्रान। ? क्वचित् नथी थतो

सम्प्रति २ क्वचित् नथी थतुं.

कल्पतरुः	कप्पतरु	रक्तः	रग्गो
मूर्खः	मुक्खो	कृत्तिः	किच्ची
दष्टः	डक्को	रुक्मी	रुप्पी
यक्षः	जक्खो		

हे० २-९२.

दीर्घ थी पर होय तो?

क्षिप्तः	छूढो	लास्यम्	लासं
निःश्वासः	नीसासो	आस्यम्	आसं
स्पर्शः	फासो	प्रेष्यः	पेसो
पार्श्वम्	पासं	अवमाल्यम्	ओमालं
शीर्षम्	सीसं	आज्ञा	आणा
ईश्वरः	ईसरो	आज्ञप्तिः	आणत्ती
द्वेष्यः	वेसो	आज्ञापनम्	आणवणं

अनुस्वार थी पर होय तो?

त्र्यस्रम्	तंसं	विन्ध्यः	विंझो
सन्ध्या	संझा	कांस्यालः	कंसालो

हे० २-९३.

रेफ तथा हकार होय तो?

सौन्दर्यम्	सुन्देरं	विह्वलः	विहलो
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं	कार्षापणः	कहावणो
पर्यन्तः	पेरन्तो		

हे० २-९०.

ते वर्गना बीजा के चोथा अक्षरने द्वित्वनो प्रसंग आवे छे. त्यारे बीजानी पूर्वे वर्गनो पहेलो अक्षर, अने चोथानी

हे० २-७९.

३४ कोईपण जोडाक्षरमां ल् ब् व् तथा र् पहेला के पछी आव्या होय तो तेओनो लोप थाय छे. जेमके-

उल्का	उक्का	श्लक्ष्णम्	सण्हं
वल्कलम्	वक्कलं	विक्लवः	विक्कवो
शब्दः	सद्दो	चक्रम्	चक्कं
अब्दः	अद्दो	वर्गः	वग्गो
लुब्धकः	लोद्धओ	ग्रहः	गहो
पक्वम्	पक्कं पिक्कं	रात्रिः	रत्ती
ध्वस्तः	धत्थो		

नोंध—उपला उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयुं छे.

हे० २-८३.

३५. ज्ञ् मांना ञ् नो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

ज्ञानम्	जाणं	णाणं	मनोज्ञम्	मणोज्जं	मणोण्णं
सर्वज्ञः	सव्वज्जो	सव्वण्णू	अभिज्ञः	अहिज्जो	अहिण्णू
आत्मज्ञः	अप्पज्जो	अप्पण्णू	प्रज्ञा	पज्जा	पण्णा
दैवज्ञः	दइवज्जो	दइवण्णू	आज्ञा	अज्जा	आणा
इङ्गितज्ञः	इंगिअज्जो	इंगिअण्णू	संज्ञा	संजा	सण्णा

हे० २-८९.

३६ पदनी आदिमां न होय अने दीर्घ के अनुस्वारथी पर न होय एवा रेफ तथा हकार सिवायना शेष (अवशिष्ट) तथा आदेश व्यंजननुं द्वित्व थाय छे. जेमके—

---

१ क्वचित् नथी थतो जेमके–विण्णाणं (विज्ञानम्)

२ क्वचित् नथी थतुं. जेमके - कसिणो (कृष्णः कृत्स्नो वा)

सम्प्र.

कल्पतरुः	कप्पतरु	रक्तः	रग्गो
मूर्खः	मुक्खो	कुत्तिः	कित्ती
दष्टः	डक्को	ककुत्सो	ककुधो
यक्षः	जक्खो		

हे० २-९२.

दीर्घ थी पर होय तो?

क्षिप्तः	छूढो	लास्यम्	लासं
निःश्वासः	नीसासो	आस्यम्	आसं
स्पर्शः	फासो	प्रेष्यः	पेसो
पार्श्वम्	पासं	अवमाल्यम्	ओमालं
शीर्षम्	सीसं	आज्ञा	आणा
ईश्वरः	ईसरो	आज्ञप्तिः	आणत्ती
द्वेष्यः	वेसो	आज्ञपनम्	आणवणं

अनुस्वार थी पर होय तो?

त्र्यस्रम्	तंसं	विन्ध्यः	विंझो
सन्ध्या	संझा	काम्पिल्यः	कंपिल्लो

हे० २-९३.

रेफ तथा हकार होय तो ?

सौन्दर्यम्	सुन्देरं	विह्वलः	विहलो
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं	कार्षापणः	कहावणो
पर्यन्तः	पेरन्तो		

हे० २-९०.

३७ वर्गना बीजा के चोथा अक्षरने द्वित्वनो प्रसंग आवे छे, त्यारे बीजानी पूर्वे वर्गनो पहेलो अक्षर, अने चोथानी

पूर्वे त्रीजो अक्षर आवे छे. जेमके—

व्याख्यानम्	वक्खाणं	यक्षः	जक्खो
व्याघ्रः	वग्घो	अक्षि	अच्छी
मूर्च्छा	मुच्छा	मध्यम्	मज्झं
निर्झरः	निज्झरो	पृष्टिः	पट्ठी
कष्टम्	कट्ठं	वृद्धः	वुड्ढो
तीर्थम्	तित्थं	हस्तः	हत्थो
निर्धनः	निद्धणो	आश्लिष्टः	आलिद्धो
गुल्फम्	गुप्फं	पुष्पम्	पुप्फं
निर्भरः	निब्भरो	विह्वलः	भिब्भलो

हे० २-९०.

३८ समासमां शेष तथा आदेश व्यंजननुं द्वित्व विकल्पे थाय छे. जेमके—[1]

नदीग्रामः	नइग्गामो	नईगामो
कुसुमप्रकरः	कुसुमप्पयरो	कुसुमपयरो
देवस्तुतिः	देवत्थुई	देवथुई
हरस्कन्दौ	हरक्खन्दा	हरखन्दा
आलानस्तम्भः	आलाणक्खंभो	आलाणखंभो

हे० २-१३, २-१५, २-२१, २-२४, २-२६, २-३०, २-३४, २-४२, २-४५, २-५२, २-५३, २-५७, २-६१, २-६२, २-७४,

---

१ क्वचित् शेष तथा आदेश व्यंजन सिवायने पण द्वित्व विकल्पे थाय छे. जेमके—

सपिपासः	सप्पिवासो	सपिवासो	अदर्शनम्	अद्दंसणं	अदंसणं
बद्धफलः	बद्धप्फलो	बद्धफलो	प्रतिकूलम्	पडिक्कूलं	पडिकूलं
प्रमुक्तम्	पमुक्कं	पम्मुक्कं	त्रैलोक्यम्	तेल्लोक्कं	तेलोक्कं

२-७८, २-७६.

३९ नीचे आपेला जोडाक्षरोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे.

क्ष्=ख्	
क्षयः	खओ
लक्षणम्	लक्खणं
स्क् तथा ष्क्=ख्	
पुष्करम्	पोक्खरं
निष्कम्	निक्खं
स्कन्धः	खंधो
अवस्कन्दः	अवक्खन्दो
त्य्= च्	
सत्यम्	सच्चं
प्रत्ययः	पच्चओ
त्व्= च्	
ज्ञात्वा	णच्चा
श्रुत्वा	सोच्चा
थ्व्= छ्	
पृथ्वी	पिच्छी
दु=ज्	
विद्वत्	विज्जं
ध्व्= झ्	
बुद्ध्वा	बुज्झा

ह्रस्व थकी पर थ्य्, श्च्, त्स् तथा प्स्= छ्	
पथ्यम्	पच्छं
मिथ्या	मिच्छा
पश्चिमम्	पच्छिमं
पश्चात्	पच्छा
उत्साहः	उच्छाहो
चिकित्सति	चिइच्छइ
जुगुप्सति	जुगुच्छइ
अप्सरा	अच्छरा
द्य्, य्य् तथा र्य्= ज्	
वैद्यः	वेज्जो
द्युतिः	जुई
जय्यः	जज्जो
शय्या	सेज्जा
कार्यम्	कज्जं
मर्यादा	मज्जाआ
ध्य् तथा ह्य्= झ्	
वध्यते	वज्झए
ध्यानम्	झाणं

---

१ क्वचित् क्ष् नो छ् तथा झ् विशेष थाय छे. जेमके— क्षीणं छीणं झीणं

गुह्यम् गुज्झं
नह्यते णज्झइ

र्त् = ट्

वर्तुलम् वट्टुलं
नर्त्तकी नट्टई

ष्ट् = ठ्

यष्टिः लट्ठी
मुष्टिः मुट्ठी
सृष्टिः सिट्ठी
अनिष्टम् अणिट्ठं

म्न् तथा ज्ञ् = ण्

निम्नम् निण्णं
प्रद्युम्नः पज्जुण्णो
ज्ञानम् णाणं
संज्ञा सण्णा

स्त् = थ्

स्तोत्रम् थोत्तं
स्तोकम् थोअं
प्रस्तरः पत्थरो
प्रशस्तः पसत्थो

क्म् तथा ड्म् = प्

कुड्मलम् कुप्पलं
रुक्मिणी रुप्पिणी
रुक्मी रुच्मी, रुप्पी

ष्प् तथा स्प्[1] = फ्

शष्पम् सप्फं
निष्पेषः निप्फेसो
स्पन्दनम् फन्दणं
प्रतिस्पर्द्धा पाडिप्फद्धी

ह्व् = भ् (विकल्पे)

जिह्वा जिब्भा जीहा

न्म् = म्

जन्म जम्मो
मन्मथः वम्महो
मन्मनः मम्मणो

ग्म् = म् (विकल्पे)

युग्मम् जुम्मं जुग्गं
तिग्मम् तिम्मं तिग्गं

---

१ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके—

बृहस्पतिः बुहप्फई बुहप्पई

क्वचित् नथी थतो. जेमके- निस्पृह निप्पहो । परस्परम् परोप्परं ।

ष्म् क्ष्म् स्म तथा ह्म्=म्ह्

कुश्मानः	कुम्हाणो	अस्मादृशः	अम्हारिसो
कश्मीराः	कम्हारा	विस्मयः	विम्हओ
ग्रीष्मः	गिम्हो	ब्रह्मा	बम्हा
ऊष्मा	उम्हा	सुह्माः	सुम्हा

श्न् ष्ण् स्न ह्न् ह्ण् क्ष्ण्=ण्ह्

प्रश्नः	पण्हो	प्रस्नुतः	पण्हुओ
शिश्नः	सिण्हो	वह्निः	वण्ही
विष्णुः	विण्हू	जह्नुः	जण्हू
जिष्णुः	जिण्हू	पूर्वाह्णः	पुव्वण्हो
कृष्णः	कण्हो	अपराह्णः	अवरण्हो
उष्णीषम्	उण्हीसं	श्लक्ष्णम्	सण्हं
ज्योत्स्ना	जोण्हा	तीक्ष्णम्	तिण्हं
स्नातः	ण्हाओ		

ह्ल=ल्ह्

कह्लारम् कल्हारं । प्रह्लादः पल्हाओ

हे० ८–२७५.

४० क्ष जोडाक्षरना [illegible] विकल्पे ख-

ख्य अथवा [illegible]) थाय छे. जेमके

गुल्मम् गुम्मं गुलुम्मं । [illegible]

[illegible]

हे० २-१०५.

४१ र्श् तथा र्ष् जोडाक्षरना अन्त्य व्यंजननी पूर्वे इ विकल्पे लागे छे.[1] जेमके—

आदर्शः	आयरिसो	आयंसो	वर्षम्	वरिसं	वासं
सुदर्शनः	सुदरिसणो	सुदंसणो	वर्षा	वरिसा	वासा
दर्शनम्	दरिसण	दंसणं	वर्षशतम्	वरिससयं	वाससयं

हे० २-१०६.

४२ जे जोडाक्षरने छेडे ल् आव्यो होय ते जोडाक्षरना अन्त्य व्यंजननी पूर्वे इ लागे छे.[2] जेमके—

क्लृन्नम्	किलिन्नं	श्लोकः	सिलोओ
क्लिष्टम्	किलिट्ठं	क्लेशः	किलेसो
श्लिष्टम्	सिलिट्ठं	ग्लानम्	गिलाणं
प्लुष्टम्	पिलुट्ठं	म्लानम्	मिलाणं
प्लोषः	पिलोसो	क्लाम्यति	किलम्मइ
श्लेषः	सिलेसो	क्लान्तम्	किलन्तं
शुक्लम्	सुक्किलं		

हे० २-११३.

४३ उकारान्त ङी प्रत्ययान्त तन्वी जेवा शब्दना जोडा-

---

१ क्वचित् नित्य थाय छे. जेमके—

परामर्शः	परामरिसो	आमर्षः	आमरिसो
हर्षः	हरिसो		

२ क्वचित् इ नथी लागतो. जेमके—

क्लमः	कमो	शुक्लपक्षः	सुक्कपक्खो
प्लवः	पवो	उत्प्लावयति	उप्पावेइ
विप्लवः	विप्पवो		

क्षर छूटा थाय छे, अने तेमां अन्त्य व्यंजननी पूर्वे उ लागे छे.[1] जेमके—

तन्वी	तणुवी	बह्वी	बहुवी
लघ्वी	लहुवी	पृथ्वी	पुहुवी
गुर्वी	गरुवी	मृद्वी	मउवी

लिंगपरिवर्त्तन—

हे० १—३१, १—३२.

४४ दामन्, शिरस् तथा नभस्[2] सिवायना सकारान्त तथा नकारान्त शब्दो अने प्रावृष्, शरत् तथा तरणि शब्द प्राकृतमां पुल्लिंगमां वपराय छे.[3] जेमके—

यशः	जसो	नर्म	नम्मो
पयः	पओ	मर्म	मम्मो
तमः	तमो	प्रावृट्	पाउसो
तेजः	तेओ	शरत्	सरओ
उरः	उरो	तरणिः	तरणी
जन्म	जम्मो		

हे० १-३३.

४५ 'अक्षि' पर्याय अने वचनादि शब्दो प्राकृतमां

१ क्वचित अन्यत्र पण थाय छे. जेमके- सूक्ष्मम् सुहुमं

२ दामं (दाम), सिरं (शिरः), नहं (नभः)

३ नीचे आपेला शब्दो क्वचित नपुंसकलिंगमां पण जोवामां आवे छे—

[illegible]	[illegible]	शर्म	सम्मं
[illegible]	[illegible]	चर्म	चम्मं
[illegible]	[illegible]		

विकल्पे पुल्लिंगमां वपराय छे. जेमके—

अक्षि	अच्छी	अच्छि	विद्युत्	विज्जू	विज्जू
चक्षुः	चक्खू	चक्खुं	कुलम्	कुलो	कुलं
नयनम्	नयणो	नयणं	छन्दः	छन्दो	छन्दं
लोचनं	लोअणो	लोअणं	माहात्म्यम्	माहप्पो	माहप्पं
वचनम्	वयणो	वयणं	दुःखम्	दुक्खो	दुक्खं

हे० १-३४.

४६ गुण आदि शब्दो प्राकृतमां विकल्पे नपुंसकलिंगमां वपराय छे. जेमके—

गुणः	गुणं	गुणो	मण्डलाग्रः	मण्डलग्गं	मण्डलग्गो
देवः	देवं	देवो	कररुहः	कररुहं	कररुहो
बिन्दुः	बिन्दुं	बिन्दू	वृक्षः	रुक्खं	रुक्खो
खड्गः	खग्गं	खग्गो			

हे० १-३५.

४७ इमान्त तथा अंजलि आदि शब्दो प्राकृतमां विकल्पे स्त्रीलिंगमां वपराय छे. जेमके—

गरिमा	गरिमा	गरिमा	चौर्यम्	चोरिआ	चोरिअं
महिमा	महिमा	महिमा	कुक्षिः	कुच्छी	कुच्छी
धूर्त्तिमा	धुत्तिमा	धुत्तिमा	बलिः	बली	बली
अंजलिः	अंजली	अजली	निधिः	निही	निही
पृष्ठम्	पिट्ठी	पिट्ठं	विधिः	विही	विही
अक्षि	अच्छी	अच्छि	रश्मिः	रस्सी	रस्सी
प्रश्नः	पण्हा	पण्हो	ग्रन्थिः	गण्ठी	गण्ठी

निर्लज्जिमा निल्लज्जिमा निल्लज्जिमा

बोधपाठ १ लो.

(नामविभक्तिः)

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो.

विभक्ति.	एकवचन.	बहुवचन.
प्रथमा	ओ	आ
द्वितीया	म्	आ, ए
तृतीया	एण, एणं	एहि, एहिं, एहिँ.
पंचमी	त्तो, आओ, आउ, आहि, आहिन्तो, आ.	त्तो, आओ, आउ, आहि, आहिन्तो, आसुन्तो, एहि, एहिन्तो, एसुन्तो.
षष्ठी	स्स.	आण, आणं
सप्तमी	ए, म्मि	एसु, एसुं
संबोधन	०, ओ, आ	आ.

जिण शब्दनां रूपो.

प्र०	जिणो	जिणा

---

१. प्राकृतमां कारकादि विभक्तिओ प्रायः संस्कृतकारकना नियम मुजब थाय छे, पण ते चोक्कस नहि. केटलेक स्थले द्वितीया तथा तृतीयाने स्थाने सप्तमी, पंचमी ने स्थाने तृतीया अने सप्तमी ने स्थाने द्वितीया थाय छे. चतुर्थी विभक्ति तो छेज नहि तेने स्थाने षष्ठी थाय छे, अने कोई जग्याए चतुर्थीनुं एकवचन संस्कृत तुल्य पण थाय छे.

२. प्राकृतमां नाम विभक्ति के धातुविभक्तिमां द्विवचनना प्रत्ययो छेज नहि. द्विवचनने स्थाने [illegible] बहुवचन आवे छे ते माटे द्विशब्दनां रूपो [illegible] छे.

[illegible] प्रत्ययोनां [illegible] जिण [illegible] थाय छे.

द्वि०	जिणं^४	जिणा, जिणे
तृ०	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ
पं०	जिणत्तो, जिणाओ जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणा.	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि, जिणाहिन्तो जिणेहिन्तो, जिणासुन्तो, जिणेसुन्तो
ष०	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं.
स०	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु, जिणेसुं.
सं०	हे जिण, जिणो, जिणा.	जिणा

आकारान्तपुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो.

प्र०	ओ	आ
द्वि०	म्	आ
तृ०	ण, णं.	हि, हिं, हिँ.
पं०	त्तो, आओ, आउ, आहिन्तो,	त्तो, आओ, आउ, आहिन्तो, आसुन्तो.
ष०	स्स	आण-आणं,
स०	म्मि	आसु, आसुं.
सं०	०, ओ.	आ-

गोवा शब्दनां रूपो.

प्र०	गोवो	गोवा
द्वि०	गोवां	,,
तृ०	गोवाण, गोवाणं	गोवाहि, गोवाहिं, गोवाहिँ
पं०	गोवत्तो. गोवाओ गोवाउ, गोवाहिन्तो	गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहिन्तो, गोवासुन्तो.
ष०	गोवस्स	गोवाण, गोवाणं.

---

४. जिण+म नियमावलिनी १६ मी कलम प्रमाणे अनुस्वार थाय छे.

सेवा करनार, श्रावक

२१ णियम (नियम)-कायदो, मर्यादा

२२ समण (श्रमण)-साधु

२३ गुण (गुण)-गुण.

२४ णर (नर) माणस.

बोधपाठ २ जो.

(धातुविभक्ति.)

वर्तमानकालना प्रत्ययो.

पुरुष.	एकवचन.	बहुवचन.
प्रथम	इ	न्ति, न्ते, इरे.
मध्यम	सि	ह, इत्था.
उत्तम	मि	मो, मु, म.

१. संस्कृतना व्यंजनांत धातुओ प्राकृतमां अकारान्त बने छे.

२. अकारान्त धातुओ पछी प्रथम तथा मध्यम पुरुषोना एकवचनना प्रत्ययो इ तथा सिना अनुक्रमे ए तथा से थाय छे.

सूचना—

१. परस्मैपद तथा आत्मनेपदना खास जुदा प्रत्ययो नथी. जोके अकारान्त धातुओना ए तथा से प्रत्ययोने अने न्ते, इरे, इत्था विगेरेने आत्मनेपदना प्रत्ययो तरीके गणीए तो गणी शकाय. पण शिष्ट प्रयोगोमां तेवो खास नियम पाळवामां नथी आव्यो. किन्तु परस्मैपदी धातुओने पण उक्त प्रत्ययो लागेल जोवामां आवे छे, तेथी आ प्रत्ययो परस्मैपद तथा आत्मनेपद उभयने साधारण छे.

२. धातुनुं कोई गणकार्य विशिष्ट थतुं नथी, तेथी गणविभाग दर्शावनानी जरूर नथी.

३. न्ते, इरे तथा इत्था, ए त्रण प्रत्ययो कात्यायनप्रणीत प्राकृतप्रकाशमां नथी.

प्र० पु० गच्छइ, गच्छए. गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छिरे.
म० पु० गच्छसि, गच्छसे. गच्छह, गच्छित्था.
उ० पु० गच्छामि, गच्छमि. गच्छामो, गच्छिमो, गच्छमो
एवं मुमयोरपि.

पक्षे 'गच्छेइ' इत्यादि. सर्वत्र अकार नो एकार थाय छे.

सर्वनाम—

तुमं (त्वं) तुं	तुब्भे (यूयं) तमे.
अहं हुं	अम्हे (अस्मान्) अमने.
तुम्हे (युष्मान्) तमने.	अम्हे (वयं) अमे, आपणे

अव्ययो

ण नहीं. अ (च) अने. वा अथवा.

वाक्यो.

१ तित्थअरा मोक्खं गच्छन्ति। २ आयरिओ मग्गं अइच्छइ। ३ तुमं पत्थावं बुज्झसि। ४ उवज्झायो मोक्खमग्गं वयइ। ५ वयं वीरस्स गुणा बुज्झामो। ६ णरो गुणेहि पमोअं लहए। वयं धम्मेण वड्ढिमो। ८ तुब्भे समणस्स धम्मं रक्खित्था। ९ किविणा लोहेण णारए पडन्ति। १० खत्तिओ जणे किलेसाओ रक्खइ। ११ तुब्भे अहम्मेहिन्तो अम्हे रक्खह। १२ अहं धम्मस्स पहे वसामि। १३ तुमं गिहासमम्मि वसेसि। १४ अहिअ लत्तो लोहत्तो वा वयं ण वयामु। १५ तुमं समणोवासअ णं णियमे पढसे।

१ अमे धर्मने रस्ते जईए छीए। २ तमे महावीरना धर्मने जाणो छो। ३ क्रोधथी माणस नरक मेलवे छे। ४ हुं तमने कहुं छुं। ५ तमे मोक्षने मार्गे जाओ छो। ६ तमे जाणता नथी। ७ तुं अधर्मथी नरकमां पडे छे। ८ कंजुस धर्मनुं रक्षण करतो

नथी । ९ क्लेशथी क्रोध वधे छे । १० आचार्य साधुनो धर्म पाले छे । ११ अमे क्षत्रियोनो धर्म समजीए छीए । १२ माणसो धर्मथी खुशाली मेलवे छे । १३ तमे अवसर जाणो छो.

बोधपाठ ३ जो.

(नामविभक्ति–चालु)

इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंगशब्दोना प्रत्ययो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	इ	अउ, अओ, णो, इ.
द्वि०	म्	णो, इ.
तृ०	णा	हि, हिँ, हिं.
पं०	णो, त्तो, इओ, इउ, इहिन्तो.	त्तो, इओ, इउ, इहिन्तो, इसुन्तो.
ष०	णो, स्स.	ण, णं.
स०	म्मि.	इसु, इसुं.
सं०	०, इ.	अउ, अओ, णो, इ.

उदाहरण—इसि (ऋषि) शब्दनां रूपो.

प्र०	* इसी	+ इसउ, इसओ, इसिणो, इसी.
द्वि०	इसिं.	इसिणो, इसी.

* इसि+इ=इसी. इत्यादि स्थले सजातीय होवाथी [illegible] (सिद्धहेम संस्कृतमां [illegible]) दीर्घ [illegible] छे.

+ इसि+अउ=इसउ. इत्यादि स्थले, विजातीय होवाथी संधि न थई किन्तु पूर्वस्वरनो लोप थयो.

तृ०	इसिणा.	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ.
पं०	इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिन्तो.	इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिन्तो, इसीसुन्तो.
ष०	इसिणो, इसिस्स.	इसीण, इसीणं.
स०	इसिम्मि.	इसीसु, इसीसुं.
सं०	हे इसि, इसी.	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी.

नोंध—उकारान्त शब्दोना प्रत्ययो पण एवीज रीते छे. फक्त इकारने बदले उकार आवे छे. अने प्रथमाना बहुवचनमां एक 'अवो' आदेश वधारे थाय छे.

गुरु शब्दनां रूपो.

प्र०	गुरू	गुरओ, गुरउ, गुरवो, गुरुणो, गुरू.
द्वि०	गुरुं.	गुरुणो, गुरू.
तृ०	गुरुणा.	गुरूहि, गुरूहिं गुरूहिँ.
पं०	गुरुणो, गुरुत्तो, गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ, गुरूओ, गुरूउ, गुरूहिन्तो, गुरूसुन्तो. गुरूहिन्तो.	
ष०	गुरुणो, गुरुस्स. गुरूण, गुरूणं.	
स०	गुरुम्मि.	गुरूसु, गुरूसुं.
सं०	हे गुरु, गुरू.	गुरओ, गुरउ, गुरवो, गुरुणो, गुरू.

नोंध—पुल्लिंगमां दीर्घ ईकारांत अने दीर्घ ऊकारान्त गामणी खलपू आदि शब्दो क्विवन्तज होय छे. प्राकृतमां तेने ह्रस्व थाय छे, एटले तेनां रूपो इसि शब्द अने गुरु शब्दनी माफकज थाय छे.

सद्दो (पुल्लिंग)

गुरु (गुरु) धर्ममार्गने बतावनार.
रिसि इसि (ऋषि) धर्मगुरु; साधु, मुनि
साहु (साधु) आत्मकार्यसाधक
मुणि (मुनि) मौनव्रतधारी साधु, यति
तरु (तरु) झाड
सिस्स सीस (शिष्य) चेलो, अनुयायी.
विणय (विनय) नम्रता, विवेक.
भोअ (भोग) इंद्रियविषय.
मूल (मूल) आद्यभाग. आदि कारण.
संजम, संअम (संयम) संयम
आणंदाराम (आनन्दाराम) आनन्दरूप बगीचो.
गिरि (गिरि) पर्वत
कोहग्गि (क्रोधाग्नि) क्रोधरूपी अग्नि.
अरि (अरि) शत्रु, दुश्मन.
सिसु (शिशु) बालक
हत्थि (हस्ति) हाथी.
करि (करि) हाथी.
भाणु (भानु) सूर्य.
निवास (निवास) रहेठाण
बाल (बाल) बालक, अज्ञानी.
सर (शर) बाण.
कर (कर) हाथ
मोअअ (मोदक) लाडवो
पाअ (पाद) पग
सिहर (शिखर) टोंच, टुंक
गिम्ह (ग्रीष्म) गरमीनी ऋतु

विसेसणो—

पसत्थ (प्रशस्त) श्रेष्ठ, प्रशंसापात्र. | **समत्त (समस्त)** सघळु, बधुं.

धातुओ—

इच्छ (इष्) इच्छा करवी, [illegible]
गिज्झ (गृध्) आसक्त थवुं, [illegible]
चर (चर्) [illegible]
खिव (क्षिप्) फेंकवुं.
वह (वह्) [illegible]
रम (रम्) [illegible]

णव(नम्)पगे लागवुं, प्रणाम करवो	तव(तप्)तपवुं,प्रकाशवुं.

वाक्यो

१ गुरवो सिस्साण मोक्खमिच्छन्ति। २ तुमं गुरुणो विणयमिच्छसि। ३ रिसओ भोएसु ण गिज्झन्ति। ४ इसओ तरूणं मूले वसन्ति। ५ साहुणो संजमेणमाणंदारामे चरन्ति। ६ मुणिस्स णिवासो गिरिम्मि पसत्थो। ७ मुणी गुरुं णवइ। ८ वालो कोहग्गिणा तवइ। ९ अरउ सरे खिवन्ति। १० सिसू (दोसु)×करेसुं मोअअं वहइ। ११ हत्थी पाएहिं तरुणो खिवइ। १२ करिणो गिरिस्स सिहरम्मि रमन्ते। १३ भाणू गिम्हम्मि तवइ।

१ अमे ऋषिओने नमीए छीए. २ सूर्य पर्वतना शिखर उपर तपे छे. ३ तमे लाडवामां आसक्त बनो छो. ४ तुं पर्वतनी टुंक उपर फरे छे. ५ अमे ऋषिओना पंथमां रमीए छीए. ६ हाथीओ झाडोने फेंके छे. ७ अमे भोगमां आसक्त थता नथी. ८ साधुओ संयमने वहन करे छे.

× हे. (द्विसंख्यावाचक)

णव(नम्)पगे लागवुं, प्रणाम करवो	तव(तप्)तपवुं,प्रकाशवुं.

वाक्यो

गुरवो सिस्साण मोक्खमिच्छन्ति । २ तुमं गुरुणो विणयमिच्छसि । ३ रिसओ भोएसु ण गिज्झन्ति । ४ इसओ तरूणं मूले वसन्ति । ५ साहुणो संजमेणमाणंदारामे चरन्ति । ६ मुणिस्स णिवासो गिरिम्मि पसत्थो । ७ मुणी गुरुं णवइ । ८ बालो कोहग्गिणा तवइ । ९ अरउ सरे खिवन्ति । १० त्तिरु (दोसु)×करेसु मोअअं वहइ । ११ हत्थी पाएहि तरुणो खिवइ । १२ करिणो गिरिस्स सिहरम्मि रमन्ते । १३ भाणू गिम्हम्मि तवइ ।

१ अमे ऋषिओने नमीए छीए. २ सूर्य पर्वतना शिखर उपर तपे छे. ३ तमे लाडवामां आसक्त बनो छो. ४ तुं पर्वतनी टुंक उपर फरे छे. ५ अमे ऋषिओना पंथमां रमीए छीए. ६ हाथीओ झाडोने फेंके छे. ७ अमे भोगमां आसक्त थता नथी. ८ साधुओ संयमने वहन करे छे.

× द्वि. (द्विसंख्यावाचक)

बोधपाठ ४ थो.

(धातुविभक्ति—वर्त्तमानकाल—चालु).

अकारान्त सिवायना स्वरान्तधातुओ.

१. धातुना अन्त्य उवर्णनो अव अने ऋवर्णनो अर थाय छे. जेमके—ण्हु—ण्हव, हु—हव, सू—सव, च्यु—चव, मृ—मर, तॄ—तर, जॄ—जर.

२. धातुना इवर्ण अने उवर्णनो गुण थाय छे.

इ नो गुण ए अने उ नो गुण ओ थाय छे.

३. चि, जि, श्री, श्रु, हु, स्तु, पू, धू अने लू एटला धातुओने अंते ण आगम अने दीर्घनो ह्रस्व थाय छे.

धातुओ.

+पिअ (पा) पीवुं	हुण (हु) हवन करवुं, होमवुं
ठा-चिट्ठ (स्था) उभा रहेवुं. स्थिर थवुं.	थुण (स्तु) स्तुति करवी.
*चे-चिण (चि) चणावुं. भेळवुं. एकठुं करवुं	भव-हव-हो (भू) होवुं. थवुं
	पुण (पू) पवित्र करवुं

जय-जिण (जि) जीत मेलववो.

णे (नी) दोरी जवुं, लई जवुं.

भा-भीह (भी) डरवुं, बीवुं

किण (क्री) खरीदवुं

सुण-हुण (श्रु) सांभलवुं

धुण-धुव (धू) धुणावुं, कंपवुं

लुण (लू) लणवुं, कांपवुं, छेदवुं

कुण-कर (कृ) करवुं.

हर (हृ) हरवुं चोरवुं लईजवुं

उदाहरण--पा धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	पिअइ, पिअए.	पिअन्ति, पिअन्ते, पिइरे.
म०	पिअसि, पिअसे.	पिअह, पिइत्था
उ०	पिआमि, पिअमि.	पिआमो, पिअमो, पिइमो.

एवं मुमयोरपि.

एकारपक्षे पिएइ इत्यादि.

चि धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	चिणइ, चिणए.	चिणन्ति, चिणन्ते, चिणिरे.
म०	चिणसि, चिणसे.	चिणह, चिणित्था.
उ०	चिणामि, चिणमि.	चिणामो, चिणमो, चिणिमो.

एवं मुमयोरपि.

पुनः

प्र०	चेइ	चेन्ति, चेन्ते, चेइरे.
म०	चेसि	चेह, चेइत्था.
उ०	चेमि.	चेमो, चेमु, चेम.

एकारपक्षे चिणेइ इत्यादि.

श्रु धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	सुणइ, सुणए	सुणन्ति, सुणन्ते, सुणिरे.
म०	सुणसि, सुणसे.	सुणह, सुणित्था
उ०	सुणामि. सुणमि	सुणामो, सुणमो सुणिमो
		एवं मुमयोरपि

पुनः

प्र०	हुणइ, हुणए.	हुणन्ति, हुणन्ते, हुणिरे.
म०	हुणसि, हुणसे.	हुणित्था, हुणह.
उ०	हुणामि, हुणमि.	हुणामो, हुणमो, हुणिमो
		एवं मुमयोरपि.

एकारपक्षे सुणेइ हुणेइ इत्यादि.

भू धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	भवइ, भवए.	भवन्ति, भवन्ते, भविरे.
म०	भवसि, भवसे.	भवह, भवित्था.
उ०	भवामि, भवमि.	भवामो, भवमो, भविमो,
		एवं मुमयोरपि

पुनः

प्र०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
म०	होसि.	होह, होत्था.
उ०	होमि	होमो, होमु, होम.

एकारपक्षे भवेइ इत्यादि

कृ धातुना रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	कुणइ, कुणए.	कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे.
म०	कुणसि, कुणसे.	कुणह, कुणित्था.
उ०	कुणमि, कुणमि.	कुणामो, कुणमो, कुणिमो
		एवं मुमयोरपि.

पुनः

प्र०	करइ, करए.	करन्ति, करन्ते, करिरे.
म०	करसि, करसे.	करह, करित्था.
उ०	करामि, करमि.	करामो, करमो, करिमो.
		एवं मुमयोरपि

एकारपक्षे कुणेइ, करेइ इत्यादि.

४. गुण अने आदेशादि विधान पछी जो धातु स्वरान्त रहे छे. तो तेमांना अकारान्त सिवायना स्वरान्त धातुने विकल्पे अकारनो आगम थाय छे. अकारागमपक्षे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ, इत्यादि रूपाख्यान थाय छे.

शब्दो—पुल्लिंग.

भमर (भ्रमर) भमरो.

पुप्फरस (पुष्परस) फूलनुं सत्व.

अलि (अलि) भमरो.

पराअ (पराग) फूलना रजकणो.

णिव (नृप) राजा.

कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.

जव (यव) जव, धान्यविशेष.

पंडिअ (पंडित) विद्वान्.

धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्मनी निष्ठावालो.

अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी.

देह (देह) शरीर.

अग्गि (अग्नि) अग्नि.

भविअजण (भव्यजन) लायक माणस

संसार (संसार) भवभ्रमण

दुग्गुण (दुर्गुण) अवगुण, दोष.

वाणिअ (वणिज्) वेपारी, वाणीओ.

आवण (आपण) दुकान, बजार.

बोह (बोध) उपदेश.

बम्हण (ब्राह्मण) ब्राह्मण.

जिण (जिन) तीर्थंकर.

पलाय (दे०) चोर.

धअ (ध्वज) ध्वजा, पताका.

किंकर (किङ्कर) नोकर, चाकर.

केआर (केदार) खेतर, घासनुं बीड.

वावार (व्यापार) उद्योग.

वाउ (वायु) वायरो.

तेण, थेण (स्तेन) चोर, लुटारो.

गिहत्थ (गृहस्थ) गृहस्थ, साहुकार.

रह (रथ) रथ.

कुसल (कुशल) डाह्यो माणस, चतुर.

किसीवल (कृषीवल) खेडुत.

वाक्यो—

१ भमरो पुप्फरसं पिअइ। २ तुमं गिरिणो सिहरम्मि चिट्ठसि। ३ अहं साहुस्स गुणे चिणामि। ४ अली पराअं चेइ। ५ णिवो अरी जयइ। ६ तुब्भे कोहसत्तुं जिणित्था। ७ अहं भविअजणे मग्गं णेमि। ८ तुमं संसाराउ बीहसि। ९ अम्हे दुग्गुणाहिन्तो भामो। १० तुमं वाणिअस्स आवणाओ किणसि। ११ वयं मुणीणं बोहं सुणामु। १२ बम्हणा अग्गिम्मि जवा हुणन्ति। १३ अहं जिणं थुणामि। १४ पंडिओ धम्मणिट्ठो भवइ। १५ साहुणो अप्पमाइणो होन्ति। १६ धम्मो सुहं पुसइ। १७ धओ वाउणा धुणेइ।

कृ धातुना रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	कुणइ, कुणए.	कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे.
म०	कुणसि, कुणसे.	कुणह, कुणित्था
उ०	कुणामि, कुणमि.	कुणामो, कुणमो, कुणिमो
		एवं मुमयोरपि.

पुनः

प्र०	करइ, करए.	करन्ति, करन्ते, करिरे.
म०	करसि, करसे.	करह, करित्था.
उ०	करामि, करमि.	करामो, करमो, करिमो.
		एवं मुमयोरपि

एकारपक्षे कुणेइ, करेइ इत्यादि.

४. गुण अने आदेशादि विधान पछी जां धातु स्वरान्त रहे छे. तो तेमांना अकारान्त सिवायना स्वरान्त धातुने विकल्पे अकारनो आगम थाय छे. अकारागमपक्षे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ, इत्यादि रूपाख्यान थाय छे.

शब्दो—पुल्लिंग.

भमर (भ्रमर) भमरो.
पुप्फरस (पुष्परस) फूलनुं सत्व.
अलि (अलि) भमरो.
पराग (पराग) फूलना रजकणो.
णिव (नृप) राजा.
कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.
जव (यव) जव, धान्यविशेष.
पंडिअ (पंडित) विद्वान
धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्मनी निष्ठावालो.
अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी.
देह (देह) शरीर.

कृ धातुना रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	कुणइ, कुणए.	कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे.
म०	कुणसि, कुणसे.	कुणह, कुणित्था
उ०	कुणामि, कुणमि.	कुणामो, कुणमो, कुणिमो
		एवं मुमयोरपि.

पुनः

प्र०	करइ, करए.	करन्ति, करन्ते, करिरे.
म०	करसि, करसे.	करह, करित्था.
उ०	करामि, करमि.	करामो, करमो, करिमो.
		एवं मुमयोरपि

एकारपक्षे कुणेइ, करेइ इत्यादि.

४. गुण अने आदेशादि विधान पछी जो धातु स्वरान्त रहे छे. तो तेमांना अकारान्त सिवायना स्वरान्त धातुने विकल्पे अकारनो आगम थाय छे. अकारागमपक्षे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ, इत्यादि रूपा-ख्यान थाय छे.

शब्दो—पुल्लिंग.

भमर (भ्रमर) भमरो.

पुप्फरस (पुष्परस) फूलनुं सत्व.

अलि (अलि) भमरो.

पराअ (पराग) फूलना रजकणो.

णिव (नृप) राजा.

कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.

जव (यव) जव, धान्यविशेष.

पंडिअ (पंडित) विद्वान्.

धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्मनी, निष्ठावालो.

अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी.

देह (देह) शरीर.

कृ धातुना रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	कुणइ, कुणए.	कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे.
म०	कुणसि, कुणसे.	कुणह, कुणित्था
उ०	कुणामि, कुणमि.	कुणामो, कुणमो, कुणिमो
		एवं मुमयोरपि.

पुनः

प्र०	करइ, करए.	करन्ति, करन्ते, करिरे.
म०	करसि, करसे.	करह, करित्था.
उ०	करामि, करमि.	करामो, करमो, करिमो.
		एवं मुमयोरपि

एकारपक्षे कुणेइ, करेइ इत्यादि.

४. गुण अने आदेशादि विधान पछी जो धातु स्वरान्त रहे छे. तो तेमांना अकारान्त सिवायना स्वरान्त धातुने विकल्पे अकारनो आगम थाय छे. अकारागमपक्षे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ, इत्यादि रूपा-ख्यान थाय छे.

शब्दो—पुंल्लिंग.

भमर (भ्रमर) भमरो.

पुप्फरस (पुष्परस) फूलनुं सत्व.

अलि (अलि) भमरो.

पराअ (पराग) फूलना रजकणो.

णिव (नृप) राजा.

कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.

जव (यव) जव, धान्यविशेष.

पंडिअ (पंडित) विद्वान

धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्मनी, निष्ठावालो.

अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी.

देह (देह) शरीर.

अग्गि (अग्नि) अग्नि.
भविअजण(भव्यजन) लायक-माणस
संसार (संसार) भवभ्रमण
दुग्गुण (दुर्गुण) अवगुण, दोष.
वाणिअ (वणिज्) वेपारी, वाणीओ.
आवण (आपण) दुकान, बजार.
बोह (बोध) उपदेश.
बम्हण (ब्राह्मण) ब्राह्मण.
जिण (जिन) तीर्थकर.
पलाय (दे०) चोर.
धअ (ध्वज) ध्वजा, पताका.
किंकर (किङ्कर) नोकर, चाकर.
केआर (केदार) खेतर, वासनुं बीड.
वावार (व्यापार) उद्योग.
वाउ (वायु) वायरो.
तेण, थेण (स्तेन) चोर, लुटारो.
गिहत्थ (गृहस्थ) गृहस्थ, साहु-कार.
रह (रथ) रथ.
कुसल (कुशल) डाह्यो माणस, चतुर.
किसीवल (कृषीवल) खेडुत.

वाक्यो—

१ भमरो पुप्फरसं पिअइ । २ तुमं गिरिणो सिहरम्मि चिट्ठसि । ३ अहं साहुस्स गुणे चिणामि । ४ अली पराअं चेइ । ५ णिवो अरी जयइ । ६ तुब्भे कोहसत्तुं जिणित्था । ७ अहं भविअजणे मग्गं णेमि । ८ तुमं संसाराउ बीहसि । ९ अम्हे दुग्गुणाहिन्तो भामो । १० तुमं वाणिअस्स आवणाओ किणसि । ११ वयं मुणीणं बोहं सुणामु । १२ बम्हणा अग्गिम्मि जवा हुणन्ति । १३ अहं जिणं थुणामि । १४ पंडिओ धम्मणिट्ठो भवइ । १५ साहुणो अप्पसाहगा होन्ति । १६ धम्मो देहं पुणाइ । १७ धओ वाउणा धुणेइ ।

कृ धातुना रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	कुणइ, कुणए.	कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे.
म०	कुणसि, कुणसे.	कुणह, कुणित्था
उ०	कुणामि, कुणमि.	कुणामो, कुणमो, कुणिमो
		एवं मुमयोरपि.

पुनः

प्र०	करइ, करए.	करन्ति, करन्ते, करिरे.
म०	करसि, करसे.	करह, करित्था.
उ०	करामि, करमि.	करामो, करमो, करिमो.
		एवं मुमयोरपि

एकारपक्षे कुणेइ, करेइ इत्यादि.

४. गुण अने आदेशादि विधान पछी जो धातु स्वरान्त रहे छे. तो तेमांना अकारान्त सिवायना स्वरान्त धातुने विकल्पे अकारनो आगम थाय छे. अकारागमपक्षे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ, इत्यादि रूपा-न्तर थाय छे.

शब्दो—पुंल्लिंग.

भमर (भ्रमर) भमरो.

पुप्फरस (पुष्परस) फूलनुं सत्व.

अलि (अलि) भमरो.

पराग (पराग) फूलना रजकणो.

णिव (नृप) राजा.

कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.

जव (यव) जव, धान्यविशेष.

पंडिअ (पंडित) विद्वान

धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्मनी, निष्ठावालो.

अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी.

देह (देह) शरीर.

अग्गि (अग्नि) अग्नि.
भविअजण (भव्यजन) लायक-माणस
संसार (संसार) भवभ्रमण
दुग्गुण (दुर्गुण) अवगुण, दोष.
वाणिअ (वणिज्) वेपारी, वाणीओ.
आवण (आपण) दुकान, बजार.
बोह (बोध) उपदेश.
बम्हण (ब्राह्मण) ब्राह्मण.
जिण (जिन) तीर्थंकर.
पलाय (दे०) चोर.
धअ (ध्वज) ध्वजा, पताका.
किंकर (किङ्कर) नोकर, चाकर.
केआर (केदार) खेतर, घासनुं बीड.
वावार (व्यापार) उद्योग.
वाउ (वायु) वायरो.
तेण, थेण (स्तेन) चोर, लुटारो.
गिहत्थ (गृहस्थ) गृहस्थ, साहु-कार.
रह (रथ) रथ.
कुसल (कुशल) डाह्यो माणस, चतुर.
किसीवल (कृषीवल) खेडूत.

वाक्यो—

१ भमरो पुप्फरसं पिअइ । २ तुमं गिरिणो सिहरम्मि चिट्ठसि । ३ अहं साहुस्स गुणे चिणामि । ४ अली पराअं चेइ । ५ गावो अरी जयइ । ६ तुब्भे कोहसत्तुं जिणित्था । ७ अहं भविअजणे मग्गं सोमि । ८ तुमं संसाराउ बीहसि । ९ अम्हे दुग्गुणाहिन्तो भामो । १० तुमं वाणिअस्स आव-णाओ किणसि । ११ वयं मुणीणं बोहं सुणामु । १२ बम्ह-णा अग्गिम्मि जवा हुणन्ति । १३ अहं जिणं थुणामि । १४ पंडिओ धम्मणिट्ठो भवइ । १५ साहुणो अप्पसाहगा होन्ति । १६ भमो देहं पुणाइ । १७ धओ वाउणा धुणेइ ।

१८किसीवलो केआरम्भि जवे लुणइ। १९.कुसलो धम्मस्स वावारं कुणइ। २० तेणो गिहत्थस्स रहं हरेइ।

१ नोकर राजाथी डरे छे. २ वेपारी हाथीओ खरीदे छे. ३ तमे गुरुनो बोध सांभलो छो. ४ अमे दुकाने उभा रहिए छीए. ५ चोर व्यापारीनी दुकानेथी (धन) चोरे छे. ६ ऋषिओ योग्य माणसोने धर्ममार्गे लई जाय छे. ७ तुं राजानी स्तुति करे छे. ८ अमे क्षत्रियो छीए. ९ तमे ब्राह्मणो छो. १० साधुओनो बोध भव्यजनोने पवित्र करे छे. ११ अमे धर्मनो उद्योग करीए छीए. १२ मुनिओनो बोध दुर्गुणोने हरे छे.

बोधपाठ ५ मो .

(नामविभक्ति—चालु.)

नपुंसकलिंगना प्रत्ययो.

	ए० व०	ब० व०
प्रथमा	म	णि, इं, इँ.
द्वितीया	,,	,, ,, ,,

तृतीया विभक्तिथी सप्तमी विभक्ति सुधी पुल्लिंग प्रमाणे.

संबोधन	० (लुक्)	प्रथमाप्रमाणे.

१ प्रथमा तथा द्वितीयाना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वनो ह्रस्वस्वर दीर्घ थाय छे.

२ इकारान्त अने उकारान्त शब्दोना प्रथमाना एकवचन 'म्' नो विकल्पे लोप थाय छे.

उदाहरण —

नेत्तशब्दनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	नेत्तं	नेत्ताणि, नेत्ताइं, नेत्ताइँ.
सं०	हे नेत्त	,, ,, ,,
द्वि०	नेत्तं	,, ,, ,,
तृ०	नेत्तेण इत्यादि. अनुक्तरूपं सर्वं पुल्लिंग जिण शब्दवत्.	

अच्छि शब्दनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	अच्छिं, अच्छि.[1]	अच्छीणि, अच्छीइं, अच्छीइँ.
सं०	हे अच्छि	,, ,, ,,
द्वि०	अच्छिं	,, ,, ,,
तृ०	अच्छिणा इत्यादि पुल्लिंग इसि शब्दवत्.	

महु शब्दनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	महुं, महु.[1]	महूणि, महूइं, महूइँ.
सं०	हे महु	,, ,, ,,
द्वि०	महुं	,, ,, ,,
तृ०	महुणा इत्यादि पुल्लिंग गुरु शब्दवत्.	

---

१ नपुंसकलिंगना इकारान्त तथा उकारान्त शब्दना प्रथमा एकवचनना केटलाकने मते सानुनासिक रूप थाय छे. जेमके अच्छिं महुं.

शब्दो (नपुंसकलिंग)

वयण (वचन) शब्द, वाणी.
सर (सरस्) तलाव.
जल (जल) पाणी.
धणु (धनुः) धनुष.
वण (वन) जंगल.
दहि (दधि) दही.
ओअण (ओदन) भात.
दंसण (दर्शन) दर्शन, जोवुं.
धण (धन) द्रव्य, दोलत.
असंगय (दे०) वस्त्र.
वत्थ (वस्त्र) कपडा.
तेअ (तेजः) प्रकाश.
सीअ (शीत) ठंडी, टाढ.
सत्थ (शास्त्र) आगम, प्रवचन.
पाउरण (दे०) कवच,
सवण (श्रवण) श्रवण, सांभलवुं.
सिर (शिरस्) मस्तक, माथुं.
णेत्त (नेत्र) आख.
रअ (रजस्) रेती, धूल, रजकण.
अच्छि (अक्षि) नेत्र, आख.
ओसह (औषध) ओसड़, दवा.
मण (मनस्) अंतःकरण, हृदय
सुह (सुख) शाति, आनन्द.
दुह (दुःख) क्लेश, अशाति.
पुव्वकम्म (पूर्वकर्म) पूर्व भवना कर्म.
सच्च (सत्य) साचुं,
अवलिअ (दे०) खोटुं, मिथ्या,
हिअअ (हृदय) हृदय,

विशेषणो.

हिअ (हित) शुभ,
मिअ (मित) परिमित,
महुर (मधुर) मीठुं,
अप्प (अल्प) थोडुं,

अव्ययो.

सह (सह) साथे,
सया (सदा) हमेशा,
बहिं (बहिस्) बहार,
कयावि (कदापि) कोई पण वखते
अहुणा (अधुना) हमणा,

धातुओ.

भुञ्ज (भुज्) खावुं, भोगववुं ।
अस (अस्) थवुं. होवुं.

३. छए वचनमां प्रत्यय सहित अस् धातुनो विकल्पे अत्थि एवो आदेश थाय छे.

४. मध्यम पुरुषना एकवचनमां अने उत्तमपुरुषना बन्ने वचनमां अस् धातु लोपाय छे; अने अवशिष्ट रहेला उत्तम पुरुषना प्रत्ययोमां व्यंजन, अने स्वरनी वचे ह् उमेराय छे. जेमके-अस्+सि, अस्+मि, अस्+मो, अस्+मनां रूपो अनुक्रमे सि, म्हि, म्हो, तथा म्ह थाय छे.

वाक्यो.

१ तुमं कुसलोऽसि । २ अहं धम्मसिट्ठो म्हि । ३ अम्हे समणा म्हो (म्ह) । ४ तुमं खत्तिओ अत्थि । ५ तुम्हे वाणिआ अत्थि । ६ भविअजणा वीरस्स वयणाइं सुणेन्ति । ७ तुम्हे सरम्मि जलं पिएह । ८ णिवो धणुणा सरं खिवेइ । ९ णिवस्स सरं वणम्मि पडेइ । १० साहुणो दंसणं हियअं पुणेइ । ११ वाणिओ धणेणं अलंकाराणि किणेइ । १२ भाणू तेएणा सीअं हरेइ । १३ सत्थस्स सवणम्मि सिरं धुणेइ । १४ धम्मे सुहमत्थि । १५ सिसू दहिणा सह ओअणाइं भुञ्जइ । १६ वाउणा णेत्तम्मि रअं पडेइ । १७ अग्गिणो ओसहं कुणेइ । १८ भविअजणो मणम्मि जिणस्स दंसणमिच्छेइ । १९ जणो सुहं वा दुहं पुव्वकम्मेहिं लहेइ । २० पंडिआ सयाहिअं मिअं महुरं वयणं वएन्ति । २१ तुम्हे सच्चं वएह । २२ वयमवलिअं कयावि ण वएमो ।

---

१ अमे वनमां मुनिओनां दर्शन करीए छीए. २ अमे

वस्त्रनो उद्योग करीए छीए. ३ मीठां वचनो हृदयना दुःख-ने हरे छे. ४ चोरो वनमां वस्त्रो चोरी जाय छे. ५ कंजुसो धनना लोभथी दुःख पामे छे. ६ अमे ऋषिओ छीए. ७ तमे मुनिओ छो. ८ हुं ब्राह्मण छुं. ९ तमे गाममां शास्त्र सांभलो छो. १० पाणी तलावमांथी बहार जाय छे. ११ आंखना दुःखथी मस्तक कंपे छे, १२ अमे आंखनुं ओसड करीए छीए. १३ तमे अमने मनथी चाहो छो. १४ डाह्या माणसो हित मित अने सत्य बोले छे. १५ व्यापारीओ कुशल छे. १६ तुं व्यापारी छे.

बोधपाठ ६ ठो.

१ प्रेरवुं, योजवुं के करावबुं ए अर्थमां के स्वार्थमां धातु अने कालबोधकादि प्रत्ययनी वच्चे संस्कृतमां जेम णि प्रत्यय आवे छे, तेम प्राकृतमां 'णि' ने स्थाने अ, ए, आव अने आवे ए चार आदेश थाय छे. धातुनो आदि अक्षर यदि गुरु होयतो 'अवि' प्रत्यय विशेष लागे छे.

२ णिस्थानीय 'अ' अने 'ए' नां पूर्वे धातुना आदि अकारनो आकार * थाय छे. उदाहरण—पाढइ, पाढेइ, पढावइ, पढावेइ' इत्यादि. कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ, इत्यादि. सुज्जइ, सुज्जेइ, सुज्जावइ, सुज्जावेइ,

३ भ्रम् धातुनी पछी णि नो आड आदेश विकल्पे

* वली केटलाएकने मते आवे आदेशनी पूर्वे पण धातुना आदि अकारनो आकार थाय छे।

थाय छे. जेमके— भमाडइ, भमाडेइ, इत्यादि. पक्षे भामइ, भामेइ, भमावइ, भमावेइ इत्यादि.

ण्यन्त धातुओ.

* भमाड (भ्रम्+णि) भमाववुं, र खडाववुं.

दाव } दंस } (दृश्+णि) देखाडवुं,

दूम (दू+णि) संतापवुं, दुःखी करवुं,

सिह (स्पृह्+णि) इच्छवुं,

राव (रंज्+णि) रंजन करवुं,

णासव (नश्+णि) नाशकराववुं.

जव (या+णि) वखत काढवो. ढील करवी.

शब्दो (पुल्लिंग).

सारहि (सारथि) रथ हांकनार, कोचमेन.

अट्ठ (अर्थ) शब्दनो वाच्य,

काल (काल) समय,

वित्थर (विस्तार) खुलासावार,

विवाह (विवाह) लग्न प्रसंग.

णाइजण (ज्ञातिजन) नातिला.

नपुंसकलिंग.

कज्ज (कार्य) काम काज,

कम्म (कर्म) शुभाशुभनेरकार, आवरण,

दाण (दान) दान, देवुं,

आलस्स (आलस्य) आलस, सुस्ती,

आरणाल—न० दे०—कमल,

विशेषनाम.

जिणदास (जिनदास) एक । उत्तरज्झयण (उत्तराध्य-

* — आवा चिह्नवाला रूपो प्राय विकल्पेज थाय छे तेथी पक्षे धातुना मूलरूपने णिजर्थीय प्रत्यय लगाडी यथानियम साधना करी लेवी. केटला [illegible] धातुने णिजर्थीय प्रत्यय लागी शके छे. तेथी तेवां रूपो [illegible] लगाडी [illegible] करवां.

माणसनुं नाम.	यन) जिनागममाथी एक सूत्र नुं नाम,
हत्थिणाउर (हस्तिनापुर) एक शहेरनुं नाम, दिल्ही,	

वाक्यो.

१ सारही वणम्मि रहं भमाडइ। २ तुमं गामम्मि अम्हे भामेसि । ३ णिवो किंकरस्स कज्जं दंसइ। ४ अहं जिणदासं हत्थिणाउरस्स मग्गं दावेमि । ५ तुमं भविअजणे सत्थस्स अत्थं दंससि। ६ अहम्मो किलेसेण हिय'अ दूमइ। ७ अली आरणाल-पुप्फाओ पराअं सिहइ। ८ तुब्भे बोहेणं समणोवासए रावह । ९ जिणो भविअजणाणं कम्माणि णासवइ। १० किविणो दाणम्मि कालं जवइ। ११ उवज्झाओ सिस्साण सत्थं पाढेइ। १२ तुब्भे अम्हे उत्तरज्झयणं पाढवेह। १३ णिवो धणुणा सत्तुं बीहावेइ। १४ पंडिओ वित्थरेण सत्थं सुणावेइ । १५ मुणिणो बोहेणं धम्मं करावेन्ति। १६ गिहत्था विवाहम्मि णाइजणे भुञ्जावन्ति।

१ तमे लोभथी अमने भमाडो छो. २ तमे हमेशां हितनो मार्ग बतावो छो. ३ मुनिओ कदापि अधर्मनो रस्तो बतावता नथी. ४ राजाओ लोभथी माणसोने संतापे छे. ५ भव्यजनो मोक्षनी स्पृहा राखे छे. ६ सारथि राजाने रंजन करे छे. ७ अमे राजाना दुश्मनोने नसाडीए छीए ८ नोकर आलसथी वखत कहाडे छे. ९ पंडितो छोकरांने शीखवे छे. १० व्यापारीओ धनवडे वस्त्रो खरीदावे छे. ११ गुरुओ अमने शास्त्र संभलावे छे.

उपसर्गो.

उपसर्ग धातुनी पूर्वे रही घणुं करी धातुना असल अर्थमां कंई न्यूनाधिक करी विशेष अर्थ बतावे छे. तेवा केटलाएक उपसर्गो नीचे आपेला छे:—

१ **अइ(अति)**—हद बहार, उल्लंघन, उत्कर्ष, अतिशय. **अइगच्छइ** —ते हद बहार जाय छे. **अइसेइ**—ते उत्कर्ष मेलवे छे.

२ **अहि(अधि)**— उपर, अधिकार. **अहिगच्छइ** - ते उपर थई जाय छे, अथवा जाणी जाय छे. **अहिकरेइ**—ते अधिकार भोगवे छे.

३ **अणु(अनु)**— पाछल, सरखुं, समीप. **अणुगच्छइ**— ते पाछल अथवा समीप जाय छे, अथवा तेने अनुसरे छे.

४ **अहि (भि) (अभि)**— तरफ, पासे, वारंवार. **अभिगच्छइ** —— ते तरफ जाय छे, पासे जाय छे, अथवा वारंवार जाय छे.

५ **अव-ओ (अव)**—नीचे, निश्चय. **अवतरइ**—ते नीचे उतरे छे. **अवसेइ**—ते निश्चय करे छे.

६ **आ (आ)**— हद, अवधि, अभिव्याप्ति, थोडुं, उलटापणुं. **आगच्छइ** – ते उलटी गति करे छे, आवे छे. **साएइ**– ते थोडुं चाखे छे. **आमोक्खं गच्छइ**–मोक्ष सुधी के मोक्षने व्यापी जाय छे.

७ **उद् (उत्)**— उंचे उदय. विशेष. **उप्पडइ**– ते उंचे चडे छे. कुदे छे. **उदेइ**–ते उदय पामे छे.

८ **उव, ओ, ऊ, (उप)**—पासे. समीप. **उवगच्छइ**– ते पासे जाय छे.

९ **णि (नि)**—आदेश, नीचे. **णियुजइ**—ते हुकम करे छे. **णिसीयइ**– ते नीचे बेसे छे.

१० **परा (परा)**—उलटापणुं, पाछुं. **पराजयइ**–(जीत थी उलटुं पडवुं) ते हारे छे.

११ **पडि (प्रति)** —सामे, उलटुं. **पडिभासइ**– [illegible]

१२ **प(प्र)**—आगल , प्रारम्भ, उत्कर्ष. **पगच्छइ**—ते आगल जाय छे, जवानो प्रारम्भ करे छे, उत्कृष्ट गति करे छे.

१३ **वि (वि)**—विशेष, विरह, विहार. **विकरेइ**—ते विशेषकृति (विकार) करे छे. **विसिलिसइ**—ते वियोग पामे छे. **विहरइ**—ते विहार करे छे.

१४ **णिर् (निः)** —विना, बहार, दूर. **णिग्गच्छइ**—ते बहार निकले छे. **णिखिवइ**— ते दूर फेंके छे.

१५ **दुर् (दुः)**— दुष्ट रीते, दुःखे करी. **दुक्करेइ**—ते दुष्ट रीते करे छे. **दुस्साहइ**—ते दुःखे करी साधे छे.

१६ **सं (सम्)**—साथे, संगति. सारी रीते, संहार. **संगच्छन्ति** तेओ एकठा थइ जाय छे; संगत घटित थाय छे, सारी रीते जाय छे. **संहरइ**—ते संहार करे छे.

बोधपाठ ७ मो.

(नाम विभक्ति—चालु.)

*स्त्रीलिंगना प्रत्ययो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्रथमा	०	०, ओ, उ.
द्वितीया	म्	०, ओ, उ.

---

* स्त्रीलिंग बोधक आप्, ईप् आदि प्रत्ययो प्राकृतमां प्रायः संस्कृतनी पेठे ज थाय छे. जे कंई फेर छे ते नीचे बतावाय छे—

१ अणादि प्रत्यय निमित्त ई संस्कृतमां नित्य थाय छे, ते प्राकृतमां विकल्पे थाय छे ने पक्षे आ थाय छे. जेमके— पासवी, पासवा।

२ अजाति वाचक स्त्रीलिंग विशेषण थकी संस्कृतमां ई नथी थतो, त्यां पण प्राकृतमां विकल्पे ई थाय छे, जेमके— नीली, नीला. हसमाणी, हसमाणा, इमी, इमा ।

तृतीया	अ, आ, इ, ए.	हि, हिं, हिँ.
पंचमी	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, अ, आ, इ, ए.	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो.
षष्ठी	अ, आ, इ, ए.	ण, णं.
सप्तमी	,, ,, ,,	सु, सुं.
संबोधन	०	०, ओ, उ.

१ विभक्ति प्रत्ययोनी पूर्वे स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य ह्रस्वनो दीर्घ थाय छे.

२ द्वितीयाना एकवचन म् नी पूर्वे स्त्रीलिंगमां अन्त्य दीर्घनो ह्रस्व थाय छे.

३ आकारान्त स्त्रीलिंग नाम थकी तृतीया. पंचमी, षष्ठी अने सप्तमीना एकवचनना प्रत्ययो पैकी आ प्रत्यय थतो नथी.

४ संबोधनना एकवचनमां स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य आ नो विकल्पे ए, इ अने उ नो विकल्पे दीर्घ, अने ई तथा ऊ नो नित्य ह्रस्व थाय छे.

५ ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दो थकी प्रथमानां बन्ने वचनो अने द्वितीयाना बहुवचनमां एक आ प्रत्यय वधारे थाय छे.

उदाहरण— माला शब्दनां रूपो.

---

६ प्रथमा द्वितीयाना एकवचन अने षष्ठीना बहुवचन सिवायना विभक्ति प्रत्ययोने योगे किं. यत् अने तत् शब्द थकी स्त्रीलिंगमां ई विकल्पे थाय छे, जे संस्कृतमां नथी थतो. जेमके [illegible] कीओ. काओ, इत्यादि।

७ छाया अने हरिद्रा शब्द थकी प्राकृतमां ई विकल्पे थाय छे, जे संस्कृतमां नथी थतो. जेमके — छाही. छाया. हलद्दी [illegible]।

८ गोणादि स्त्रीलिंग नामो पण [illegible] थाय छे।

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	माला.	मालाओ, मालाउ, माला.
द्वि०	मालं.	,, ,, ,,
तृ०	मालाअ, मालाइ, मालाए.	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ.
पं०	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो.	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो, मालासुन्तो.
ष०	मालाअ, मालाइ, मालाए.	मालाण, मालाणं.
स०	,, ,, ,,	मालासु, मालासुं.
सं०	हे माले, माला.	मालाओ, मालाउ, माला.

आकारान्त स्त्रीलिंग सर्व शब्दो मालावत्.

बुद्धि शब्दनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र.	बुद्धी.	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी.
द्वि०	बुद्धिं.	,, ,, ,,
तृ०	बुद्धीअ, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीए.	बुद्धीहि, बुद्धीहिं, बुद्धीहिँ.
पं०	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो.	बुद्धीत्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो, बुद्धीसुन्तो.
ष०	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए.	बुद्धीण, बुद्धीणं.
स०	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए.	बुद्धीसु, बुद्धीसुं.

धातुओ.

धर (धृ) धरवुं, धारण करवुं. साह (साध्) साधवुं
सह सहन करवुं आ+गच्छ(आ+गम्) आववुं

वाक्यो

१ वणिआ सिरम्मि मालं धरेइ। २ मुणी छुहं पिवासं वा सहेइ । ३ पंडिओ बुद्धीअ परिक्खं कुणइ । ४ देवीओ इत्थीणं परिसाए चिट्ठन्ति । ५ जिणाणं वाणीआ जणाणं हिअं पकरेइ । ६ कुसलो खमाए कोहं जयइ । ७ णीईए रीई जणं मुत्तीआ मग्गं णेइ। ८ धिई लोहस्स वित्थरं णासवइ । ९ गुरूणं किवा सिस्साणं हिअं साहेइ । १० तुमं सुहुमाए दिट्ठीए कज्जं कुणसि। ११ अम्हे गुरूहिं सह पीईए वसामो। १२ तुब्भे परिसासु धम्मं वयह। १३ मुणओ सभाए णीईअ बोहं कुणन्ति । १४उत्तरज्झयणम्मि गाहाओ अत्थि । १५ धिइत्तो मणम्मि पमोओ हवइ। १६ तुब्भे सत्थस्स आवत्तिं कुणह । १७ पलायो पाउरणं धरेइ ।

---

१ अमे बुद्धिथी शास्त्र जाणीए छीए. २ स्त्रीओ धीरजथी काम करे छे. ३ तीर्थंकरनी वाणी न्यायनो रस्तो बतावे छे. ४ गुरुनी प्रीति शास्त्रनो बोध करावे छे. ५ बारीक दृष्टि शास्त्रनी रीति बतावे छे. ६ राजानी नीति जनोनुं सुख साधे छे. ७ नीतिनो बोध हृदयने पवित्र करे छे. ८ तीर्थंकरनी कृपा जनोनुं हित साधे छे. ९ क्षमाथी माणस हमेश जीत मेलवे छे. १० तमे शास्त्रनी गाथाओ भणो छो. ११ अमे सभामां बोध सांभलीए छीए. १२ परिषदमां स्त्रीओ पण आवे छे. १३ भूख अने तरस मनने संतापे छे.

बोधपाठ ८ मो.

(धातुविभक्ति—चालु.)

*आज्ञार्थ अने विध्यर्थकालना प्रत्ययो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	उ.	न्तु.
म०	सु, हि.	ह.
उ०	मु.	मो.

१. अकारान्त धातुथकी मध्यम पुरुषना एकवचनना प्रत्ययो सु अने हिना विकल्पे एज्जसु, एज्जहि, एज्जे अने लुक् आदेश थाय छे.

उदाहरण— गच्छ (गम्) धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	गच्छउ.	गच्छन्तु
म०	गच्छसु, गच्छहि, +गच्छेज्जसु, गच्छेज्जहि. गच्छेज्जे, गच्छ.	गच्छह.
उ०	गच्छमु, ×गच्छामु, गच्छिमु.	गच्छमो, गच्छामो, गच्छिमो

एकारपक्षे गच्छेउ इत्यादि.

---

* प्राकृतना आज्ञार्थ तथा विध्यर्थ बन्नेमां मात्र एटलोज भेद छे, के आज्ञार्थना विकल्पे ज प्रत्यय लागे छे. तेने बदले विध्यर्थना ज्ज प्रत्यय लागे छे. जेम आज्ञार्थना गच्छिज्ज, विध्यर्थना गच्छिज्जा.

+ [illegible]

× [illegible]

हो (भू) धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	होउ.	होन्तु.
म०	होसु, होहि.	होह.
उ०	होमु.	होमो.

णयन्त कृ धातुनां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	कारउ.	कारन्तु.
म०	कारसु, कारहि.	कारह.
उ०	कारमु.	कारमो.

पक्षे कारेउ, कारवउ, कारवेउ इत्यादि.

भमाड (भ्रम्+णि)नां रूपो.

	ए० व०	ब० व०
प्र०	भमाडउ.	भमाडन्तु.
म०	भमाडसु, भमाडहि.	भमाडह.
उ०	भमाडमु.	भमाडमो.

एकारपक्षे भमाडेइ इत्यादि.

आदेशाभावपक्षे भामइ इत्यादि.

शब्दो (पुल्लिंग).

मयण (मदन) मदन, काम विकार.

ताअ (तात) जनक, बाप.

भूवइ (भूपति) राजा.

सज्झाय(स्वाध्याय) पुनरावर्त्तन, स्वाध्याय-

उवस्सय (उपाश्रय) धर्मस्थानक

दोस (दोष) अवगुण.

विणेअ (विनेय) विनीत शिष्य.

संतोस(संतोष) तृष्णानो अभाव

अज्झवसाअ (अध्यवसाय) परिणामनो भाव.

नपुंसकलिंग.

अंतरबल—अंदरनुं बल, मानसिक बल

पभाअ (प्रभात) प्रात.काल.

सामाइअ (सामायिक) सामायिक व्रत.

सुत्त (सूत्र) आगम सिद्धान्त.

कल्लाण (कल्याण) श्रेय:, मोक्ष.

अज्जव (आर्जव) मृदुता.

अइसरिअ (ऐश्वर्य) पराक्रम

कइअव (कैतव) कपट.

माण (मान) अभिमान.

विशेषण.

तरुण (तरुण) जुवान, नवुं.

सावज्ज (सावद्य) दोष सहित.

सुह (शुभ) शुभ, श्रेष्ठ.

असुद्ध (अशुद्ध) शुद्ध नहि, मेलुं.

अव्ययो.

सीग्घं (शीघ्रं) उतावलथी.

मा (मा) नहि, निषेध.

वि (अपि) पण.

त्ति (इति) समाप्ति, एवी रीते.

धातुओ

परिहर (परि+हृ) परहरवुं. तजवुं, दूर करवुं.

सिक्ख (शिक्ष्) शीखवुं. [illegible]वुं.

गण्ह (ग्रह्) ग्रहण करवुं, लेवुं

चय (त्यज्) छोडवुं, तजवुं. मुकी देवुं.

प+णाम (प्र+नम्) नमवुं,

पवट्ट (दे०) सुवुं, शयन करवुं.

वाक्यो.

१ तरुणा अन्तरबलेण मयणं जयन्तु। २ सिसवो पभायम्मि ताअं पणवन्तु। ३ तुब्भे सामाइअं कुणेह। ४ भूवइणो णीईए जणाणं हिअं साहन्तु। ५ सिस्सो गुरूणो विणयं कुणउ। ६ तुमं सीग्घं सज्झायं कुणसु। ७ तुमं विणयं मा चयहि। ८ तुब्भे सावज्जमसच्चं वा मा वयह। ९ उवस्सयम्मि असुद्धेहिं वत्थेहिं मा आगच्छह। १० तुमं दोसे चयेज्जसु गुणे गण्हेज्जहि। ११ खमाइ कोहं सीग्घं परिहर। १२ उवज्झाओ विणेआ सुत्तं सिखावेउ। १३ सत्तूणं वि कल्लाणं होउ त्ति इच्छामि। १४ विणएणमज्जवेणं वा माणं णासवन्तु। १५ हियअम्मि संतोसं धरेह। १६ अहं लोहं ण कुणेमु। १७ वयं सुद्धेणमज्झवसाएणं हियअसुद्धिं कुणामो। १८ तुमं उवस्सयम्मि मा पवड्ढहि.

---

१ तमे सूत्रनो अर्थ भणावो. २ अमे स्वाध्याय करीए ३ भव्यजनो मोक्षमार्ग मेलवे. ४ मुनिओ अशुद्ध वस्त्र न ले. ५ तमे शरीरनी अशुद्धि दूर करो. ६ उपाश्रयमां सवारमां हमेश आवो. ७ सामायिकमां जुठुं न बोलो. ८ संतोषथी लोभने तजो. ९ विनीत शिष्यो अध्यवसायना बलथी हृदय शुद्ध करो. १० सभामां बुद्धिनी परीक्षा करो. ११ तमे भूख अने तरस सहन करो. १२ नीतिनो मार्ग कदी पण न छोडो. १३ शुभ अध्यवसायथी मन पवित्र करो.

बोधपाठ ९ मो.

(नामविभक्ति—चालु)

ऋकारान्तशब्दो.

१. पुल्लिंगमां संस्कृतना संज्ञावाचक ऋकारान्त शब्दोना अंत्य ऋकारनो प्राकृतमां उ अने अर थाय छे. जेमके- भ्रातृ नो भाउ, भाअर. पितृनो पिउ, पिअर इत्यादि.

२. पुल्लिंगमां संस्कृतना गुणक्रियावाचक ऋकारान्त शब्दोना अन्त्य ऋकारनो प्राकृतमां उ अने आर थाय छे. जेमके— भर्तृनो भत्तु, भत्तार. कर्तृनो कत्तु, कत्तार इत्यादि.

३. द्वितीयाना एकवचननो प्रत्यय लागतां ऋकारान्त शब्दोना ऋकारानो मात्र अर के आर ज थाय छे, पण उ थतो नथी.

४. आवी रीते बनेल अरन्त तथा आरान्त पुल्लिंग शब्दोनां रूपो जिणशब्दनी माफक थाय छे. अने उकारान्त पुल्लिंग शब्दोनां रूपो गुरुशब्दनी माफक थाय छे, मात्र प्रथमाना एकवचन तथा संबोधनना एकवचनमां नीचे प्रमाणे फेरफार थाय छे—

(क) प्रथमाना एकवचनना ओ प्रत्ययनो आ थाय छे, अने ते प्रत्यय लागतां शब्दना अन्त्य उकारनो लोप थाय छे. संबोधनना एकवचनमां पण ओ प्रत्ययने बदले अ प्रत्यय थाय छे, अने ते प्रत्यय लागतां उकारनो लोप थाय छे.

(ख) संबोधनना एकवचनमां अरवाला शब्दने छेडे ओ प्रत्ययने बदले अनुस्वार लागे छे.

उदाहरण– पिउ तथा पिअर शब्दोनां रूपो.

	एकवचन.
प्र०	पिआ, पिअरो.
द्वि०	पिअरं.
सं०	हे पिअरं, पिअ.

बाकीनी विभक्तिनां रूपो उपक्षमां गुरु शब्दनी माफक तथा अर पक्षमां जिण शब्दनी माफक थाय छे.

कत्तु तथा कत्तार शब्दोनां रूपो.

	एकवचन.
प्र०	कत्ता, कत्तारो.
द्वि०	कत्तारं
सं०	हे कत्त, कत्तारा, कत्तार, कत्तारो.

बाकीनी विभक्तिनां रूपो उपक्षमां गुरुशब्दनी माफक तथा आरपक्षमां जिण शब्दनी माफक थाय छे.

९ स्त्रीलिंगमां- (क) संस्कृतना स्वसृ, ननान्दृ, दुहितृ आदि शब्दोना अंत्य ऋकारनो आकार थाय छे, अने तेनां रूपो माला शब्दनी माफक थाय छे.

(ख) जननीवाचक मातृशब्दना अंत्य ऋकारनो आकार तथा इकार थाय छे, अने प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधनना एकवचन सिवाय बाकीना प्रत्ययो लागतां उकार पण थाय छे. तेनां रूपो आकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनी माफक थाय छे.

(ग) देवीवाचक मातृ शब्दना अंत्य ऋकारनो अरा थाय छे, अने तेना रूपो माला शब्दनी माफक थाय छे.

केटलाक उपयोगी अव्ययो.

मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ, इव — ए इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.

चेअ, चेअ, चिअ, च्च, णइ. — नक्की, निर्धारणा

किर, इर, हिर, किल -- संभावना, निश्चय.

एक्कसरिअं, झगिति, एण्हि, एत्ताहे — संप्रति अर्थमा.

बाहिं, बाहिरं-- बहार अर्थमा.

अज्ज (अद्य)- आज.

कहं (कथं)- केवी रीते.

अण्णहा. इतरहा- अन्यथा, नहितो .

जे (चेत)-- तो.जो.

अलाहि, अलं, माइं, मा, अण, णाइं, अकासि. — निषेधमा.नहि ए अर्थमा.

मोरउल्ला — वृथा, मुधा अर्थमा

दर-- — इषत्, थोडुं.

किणो — प्रश्नमा.

पि, वि — पण.

शणिअं (शनैः) — धीरे धीरे.

मणिअं (मनाक्) — थोडुं.

इत्थं, एवं — एवी रीते.

पुण (पुनः) — फरीने.

किन्तु — पण.

शब्दो.

पिअर, पिउ (पितृ) पु० पिता. बाप.

पुत्त (पुत्र) पु० दीकरो.

भाउजाया. भाउज्जा (भ्रातृजाया) स्त्री० [illegible].

गिह (गृह) न० घर. [illegible].

(ख) संबोधनना एकवचनमां अरवाला शब्दने छेडे ओ प्रत्ययने बदले अनुस्वार लागे छे.

उदाहरण- पिउ तथा पिअर शब्दोनां रूपो.

एकवचन.

प्र० पिआ, पिअरो.

द्वि० पिअरं.

सं० हे पिअरं, पिअ.

बाकीनी विभक्तिनां रूपो उपक्षमां गुरु शब्दनी माफक तथा अर पक्षमां जिण शब्दनी माफक थाय छे.

कत्तु तथा कत्तार शब्दोनां रूपो.

एकवचन.

प्र० कत्ता, कत्तारो.

द्वि० कत्तारं

सं० हे कत्त, कत्तारा, कत्तार, कत्तारो.

बाकीनी विभक्तिनां रूपो उपक्षमां गुरुशब्दनी माफक तथा आरपक्षमां जिण शब्दनी माफक थाय छे.

९ स्त्रीलिंगमां- (क) संस्कृतना स्वसृ, ननान्दृ, दुहितृ आदि शब्दोना अंत्य ऋकारनो आकार थाय छे, अने तेनां रूपो माला शब्दनी माफक थाय छे.

(ख) जननीवाचक मातृशब्दना अंत्य ऋकारनो आकार तथा इकार थाय छे, अने प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधनना एकवचन सिवाय बाकीना प्रत्ययो लागतां उकार पण थाय छे. तेनां रूपो आकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनी माफक थाय छे.

(ग) देवीवाचक मातृ शब्दना अंत्य ऋकारनो अरा थाय छे, अने तेना रूपो माला शब्दनी माफक थाय छे.

केटलाक उपयोगी अव्ययो.

मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ, इव } ए इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.

अलाहि, अलं, माइं, मा, अण, णाइं, अकासि, } निषेधमां. नहि ए अर्थमा.

चेअ, चेअ, चिअ, च, णइ. नक्की, निर्धारणा

मोरउल्ला वृथा, मुधा अर्थमा.

दर-- इषत्, थोडुं.

किर, इर, हिर, किल --संभावना, निश्चय.

किणो प्रश्नमां.

पि, वि पण.

एक्कसरिअं, झगिति, एण्हिं, एत्ताहे } संप्रति अर्थमा.

सणिअं (शनैः) धीरे धीरे.

मणिअं (मनाक्) थोडुं.

इत्थं, एवं एवी रीते.

बाहिं, बाहिरं-- बहार अर्थमा.

पुण (पुनः) फरीने.

अज्ज (अद्य)-- आज.

किन्तु परंतु,

कहं (कथं)-- केवी रीते.

अण्णहा, इतरहा-- अन्यथा, नहितो.

चे (चेत्)-- तो, जो.

शब्दो.

पिअर, पिउ (पितृ) पु० पिता, बाप.

पुत्त (पुत्र) पु० दीकरो.

भाउजाया, भाउज्जा (भ्रातृजाया) स्त्री० भोजाइ.

गिह (गृह) न० घर, मंदिर.

ईसर (ईश्वर) पु० प्रभु, समर्थ.

लोअ (लोक) पु० दुनिआ.

कत्तु, कत्तार (कर्तृ) त्रि०—करनार

जीव (जीव) पु०-आत्मा, चेतन.

भाउ, भाअर (भ्रातृ) पु० भाई,

बल (बल) न०-सैन्य, बल, शक्ति

माआ, माउ, माइ (मातृ) स्त्री० माता, जननी.

उच्छंग (उत्संग) पु० खोलो, गोद.

जामाउ, जामाअर (जामातृ) पु० जमाई.

देवर (देवर) पु० देर, दियर, पतिनो नानो भाई.

माअरा (मातृ) स्त्री० माता, देवी.

अणणी. स्त्री०. (दे०) देराणी. (२) नणद. (३) फइबा.

णणंदा (ननान्दृ) स्त्री० नणंद.

खेअ (खेद) पु० परिश्रम, विषाद दिलगीरी.

णत्तुअ (नप्तृक) पु० दोहितरी-दीकरो.

भत्तिज्जअ (भ्रातृज) पु० भत्रिजो

धूया (पुत्री) स्त्री० दीकरी.

भगिणी (भगिनी) स्त्री० बहेन

पिउत्था, पिउसिआ (पितृ-स्वसा) स्त्री० फोई.

धातुओ.

जुज्झ (युध्) युद्ध करवुं, लडाई करवी.

णत्थि (नास्ति) न-अस्ति नथी.

कीड (क्रीड्) क्रीडा करवी, रमत करवी.

विशेष नामो.

मिगावइ (मृगावती) उदायन राजानी माता.

जयंती— उदायन राजानी फोइ, महावीरस्वामीनी मोटी श्राविका।

सहस्साणीय (सहस्रानीक) उदायनना दादा।

उदायण (उदायन) महावीरस्वामीना वखतमा कोशांबीनो राजा।

चेडग (चेटक) विशाला नगरीनो राजा, महावीरना मामा।

सयाणीय (शतानीक) उदायनना पिता।

वाक्यो.

१ पिआ पुत्तं पीईए रमावेइ । २ पिउणा सह पुत्तो कीडइ । ३ णत्थि ईसरो लोअस्स कत्तारो। ४ जीवो कम्माणं कत्ता अत्थि । ५ भाअराणं बलेणं णिवो जुज्झइ । ६ माआए उच्छंगे बालो चिट्ठइ । ७ माआओ पुत्तम्मि मिव जामायरम्मि वि पीइं धरन्ति । ८ देवरो भाउजायाए सह किलेसं कुणइ । ९ अलाहि भाअराए सह किलेसेणं । १० एवं पुण किणो कुणसि । ११ अहुणा चेअ पिउस्स गिहे गच्छइ । १२ एत्ताहे च्चिअ णणंदा आगच्छइ । १३ मोरउल्ला खेअं मा कुणसु । १४ माअराओ गिहत्तो बाहिं गच्छन्ति । १५ मियावईए हिर जयंती णणंदा । १६ उदायणो चेडगस्स णत्तुओ जयन्तीए किल भत्तिज्जओ अत्थि । १७ जयंती सहस्साणीयस्स धूया, सयाणीयस्स भगिणी, उदायणस्स पिउत्था अत्थि । १८ मियावई जयन्तीए भाउज्जा हवइ । १९ अण्णीए सह णाहं किलेसं कुणामि ।

---

१ अमे हमणां ज जइए छीए. २ पिता पुत्रने आजेज शीखवे. ३ माताओ दिकराओने शुं शीखवे छे. ४ तमे भाईओनी साथे क्लेश करोमा. ५ भाईओ सुखना कर्त्ता छे. ६ अमे आवीरीते सामायिक करीए छीए. ७ नहि तो छोकराओ विनय न करे. ८ अमे हमणां ज आवीए तो. ९ बालक फोईने घेर जाय छे. १० शुं दुनीआनो कर्त्ता छे?. ११ चेडगराजानुं सैन्य लडाई करे छे. १२ क्षत्रियो ब्राह्मणोनी साथे युद्ध न करो. १३ परन्तु नीतिना मार्गमां हमेश

रहो. १४ घरथी बहार जाय छे. १५ नोकरो भाईना पुत्र-ने रमाडे छे. १६ भाईनी स्त्रीओ नणंदनो विनय करे छे. १७ देर भोजाई ने नमे छे.

बोधपाठ १० मो.

केटलाएक कृदंत प्रत्ययो.

१. बे क्रियानो पूर्वापर संबंध दर्शाववा पूर्वकालीन क्रिया वाचक धातुने संबंधार्थकृदन्त बनाववा संस्कृतमां जेम 'त्त्वा' प्रत्यय लागे छे,तेम प्राकृतमां तेने बदले उं, इअ, ऊण, ऊणं, उआण, उआणं ए प्रत्ययो लागे छे: अने क्वचित् ज तुं, तूण, तूणं, तुआण, तुआणं ए प्रत्ययो थाय छे. जेम- * नेउं. नेइअ, नेऊण, नेऊणं, नेउआण, नेउआणं.

२. कोई पण धातुने उं प्रत्यय, अने क्वचित् ज तुं प्रत्यय लगाडवाथी हेत्वर्थकृदन्त थाय छे. जेम- 'सोउं' ×

३. उपर कहेला त्त्वा, तुम् तथा तव्य, + स्थानीय प्रत्य-योनी पूर्वे धातुना अन्त्य अकारनो 'इ' अने 'ए' थाय छे. जेम- पढिऊण, पढेऊण (पठित्वा) . पढिउं, पढेउं (पठितुं). पढिअव्वं, पढेअव्वं (पठितव्वं) .

४. धातुने 'न्त' अने 'माण' प्रत्यय लगाडवाथी वर्त्त-

---

* क्त्वा अने तुम् नी गणना अव्ययमां छे, तेथी तदन्त थकी विभक्ति थती नथी.

× गुणने माटे चोथा पाठनी बीजी कलम जुओ ।

+ तव्य, अनीय विगेरे भाव प्रत्ययो संस्कृत नियम प्रमाणे ज थाय छे।

मान कृदन्त थाय छे. जो स्त्रीलिंगे करवुं होय तो ई, न्ती, न्ता, माणी, माणा, प्रत्यय लागे छे. जेम- गच्छन्तो, गच्छमाणो (गच्छन्). गच्छाई, गच्छन्ती, गच्छमाणी (गच्छन्ती) एकार पक्षे गच्छेन्तो + इत्यादि ।

५. नीचेना आदेशो धातुने त्त्वा, तुम् अने तव्य प्रत्ययोने योगे ज थाय छे. कृ नो का, दृश् नो दट्ठ, ग्रह् नो घेत्; वच्नो वोत्; रुद्, भुज् ने मुच् ना अन्त्य वर्णनो त् थाय छे. जेम- घेत्तूणं, घेत्तुं, घेत्तव्वं. वोत्तूणं, भोत्तूण, मोत्तूण, दट्ठूण, काऊणं, इत्यादि ।

धातुओ.

णि+यच्छ (नि+यम्) नियममा लेवुं, कबजो करवो ।

प+वत्त (प्र+वृत्) वर्तवुं, प्रवृत्ति करवी ।

आ+यर (आ+चर्) आचरवुं, अनुष्ठान करवुं ।

प+या (प्र+या) प्रयाण करवुं ।

वांछ (वाञ्छ्) इच्छवुं ।

मुअ (मुच्) मुकवुं, छोडवुं ।

पास (दृश्) जोवुं ।

रुव, रोव (रुद्) रोवुं ।

सद्+दह (श्रद्+धा) श्रद्धवुं, आस्ता राखवी ।

झा (ध्यै) ध्याववुं, चितववुं ।

कुप्प (कुप्) कोप करवो, खीजववुं ।

खल (स्खल) अटकवुं, ठेस लागवी ।

लंब (लम्ब्) लांबुं करवुं, नीचे करवुं ।

अज्ज (अर्ज्) एकठुं करवुं, मेलववुं.

+ एकार माटे बीजा पाठनी त्रीजी कलम जुजो ।

शब्दो.

सज्जण (सज्जन) पु० लायक-माणस ।

अब्भुदअ (अभ्युदय) पु० चडती, उदय ।

सुकइ (सुकृति) पु० साराकृत्य करनार, भाग्यशाली ।

परमत्थ (परमार्थ) पु० परोपकार ।

परलोअ (परलोक) पु० आवतो भव ।

सिणाण (स्नान) न० न्हावुं ।

फल (फल) न० फळ ।

हत्थ (हस्त) पु० हाथ ।

परएस (परदेश) पु० देशावर ।

सुवण्ण (सुवर्ण) न० सोनुं ।

मुद्दिआ (मुद्रिका) स्त्री० महोर ।

सुबुद्धि (सुबुद्धि) स्त्री० सुबुद्धि ।

पायस (पायस) न० दुधपाक ।

पणीअ (प्रणीत) न० सरस ।

भोअण (भोजन) न० जमण ।

सगास (सकाश) पु० पासे, नजीक ।

पड्डय पुं० (दे०) पाडो; भेंसो ।

पद्धर त्रि० (दे०) पाधरुं; सिधु ।

इन्दिअ (इन्द्रिय) न० चक्षु आदि इन्द्रियो ।

तत्त (तत्त्व) न० पदार्थ, सार ।

बाला (बाला) स्त्री० बालिका, छोकरी ।

मेह (मेघ) पु० बादल, वरसाद ।

आवत्ति (आपत्ति) स्त्री० आपदा ।

धीर (धीर) पु० धैर्यवान् पुरुष ।

अट्टज्झाण (आर्त्तध्यान) न० माठुं ध्यान ।

गिहिणी (गृहिणी) स्त्री० धणीआणी ।

पइ (पति) पु० धणी, स्वामी ।

पमाअ (प्रमाद) पु० आलस्य, बेदरकारी ।

पअ (पद) न० पगलुं, पग ।

अंग (अङ्ग) न० आचारांगादि सूत्र, (२) शरीर अवयव ।

उवंग (उपाङ्ग) न० उववाइ आदि सूत्र ।

वागरण (व्याकरण) न० व्याकरण, भाषाशास्त्र ।

कव्व (काव्य) न० कविता ।

पयडि स्त्री० (दे०) मार्ग; रस्तो।
पऊह न० (दे०) घर; मकान।
साला (शाला) स्त्री० निशाळ, पाठशाला।
कसाअ (कषाय) पु० क्रोधादि कषाय।

वाक्यो.

१ सज्जणा लोअस्स अब्भुदअं काउं पवत्तन्ते। २ सुकइणो परमत्थं कुणन्ता परलोअस्स कज्जं साहन्ति। ३ सिणाणं काऊण भोअणं कुणइ। ४ सामाइअमायरिअ बाहिं गच्छइ। ५ हत्थम्मि फलं घेत्तूण परएसं पयाइ। ६ सुवण्णस्स मुद्दिअं घेत्तुं बालो करं लंबावेइ। ७ साहुस्स वअणाइं सुबुद्धीए घेत्तव्वाइं। ८ बालो माअरं वोत्तुमिच्छइ। ९ पायसं भोत्तूणमोअणं भोत्तुं वांछइ। १० साहुणा सया पणीअं पणीअं भोअणं ण कायव्वं। ११ जिणो कम्माणि मोत्तूण मोक्खं गच्छइ। १२ कसाअं मोत्तुं इंदिआणि णिग्गच्छइ। १३ धम्मस्स फलं सुहं दट्ठूण तत्तं सद्दहइ। १४ भोअणं कुणन्तो बाला मेहं दट्ठुं बाहिरं गच्छइ। १५ आवत्तीए विणरेहिं ण रोत्तव्वं। १६ अट्टज्झाणं झाएमाणी गिहिणी पइं कुप्पन्ती चिट्ठइ। १७ पमाएणं गच्छई इत्थी पए पए खलइ। १८ अंगं पढिऊण उवंगं पढेउं पवत्तइ। १९ पडुओ पहुराए पयडिए पऊहमागच्छइ।

---
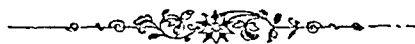
१ भव्य जनो धर्म आचरी मोक्षे जाय छे. २ पिता बालकोने भणाववा इच्छे छे. ३ उपाध्याय शास्त्रनो अर्थ कहेवा वांछे छे. ४ गाम जतो माणस रस्तामां उभो छे. ५ बापने जोतो दीकरो मार्गमां फरे छे. ६ मुनिओ भव्यजनो

ने बोध आपवा गाममां रहे छे. ७ भोजन करतो बालक वखत वीताडे छे. ८ तमारे शास्त्रना अर्थ ग्रहण करवा जोइए. ९ धणीना उपर खीजती स्त्री घरनुं काम करे छे. १० धन मेलववा व्यापारीओ उद्यम करे छे. ११ हुं गुरु पासे व्याकरण भणी काव्य भणुं छुं. १२ तमे गाममां जइ बहार आवो. १३ पुत्रने रमाडवा बाप वनमां जाय छे. १४ अमे बोध सांभली मनने रंजन करीए छीए. १५ अशुद्ध मार्ग छोडवा सत्य ग्रहण करे छे. १६ तमे सभामां बोलवा इच्छो छो.

बोधपाठ ११ मो.

(नाम विभक्ति चालु)

* अन्नन्त शब्दोनां रूपो.

१ संस्कृतमां जेने छेडे अन् छे एवा ब्रह्मन्, आत्मन्, राजन् आदि शब्दोना छेडाना अन् ने प्राकृतमां आण आदेश विकल्पे थायछे. तेनां रूपो जिण शब्दनी माफक थायछे. आण आदेश नथी थतो त्यारे अंत्य व्यंजननो लोप थइ ते शब्दो अकारांत बने छे. तेने अकारांत पुल्लिंगना ओ आदि सर्व प्रत्ययो लागेछे. एटले जिण शब्दनी माफक ज तेनां रूपो बनेछे, परंतु थोडा वधाराना प्रत्ययो लागेछे ते नीचे प्रमाणेः—

* जोके प्राकृतमा अन्त्य व्यंजननो लोप थाय छे. अथवा अंते स्वर उमेराय छे. तेथी कोइ शब्द व्यंजनान्त रहेवा पामतो नथी, तो पण साध्यमान दशानी अपेक्षाए अहिं अन्नन्तता लेवी.

वधाराना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	आ	णो
द्वि०	णं	णो
तृ०	णा,	×
पं०	णो	×
ष०	णो,	×
स०	×	×
सं०	आ	×

२ (प्रथमा, द्वितीया अने पंचमीना) णो प्रत्ययनी पूर्वे बम्ह आदि शब्दोना अन्त्य अनो आ थाय छे.

बम्ह (ब्रह्मन्) शब्दनां वधारानां रूपो.

प्र०	बम्हा	बम्हाणो
द्वि०	बम्हणं	बम्हाणो
तृ०	बम्हणा	×
पं०	बम्हाणो	×
ष०	बम्हणो	×
स०	×	×
सं०	×	बम्हाणो

नोंध-- बम्ह तथा बम्हाणनां रूपो जिण शब्द माफक पण थायछे. जुव-जुवाण आदि संस्कृतना अन्नंत शब्दोना रूपो बम्ह-बम्हाण माफक थाय छे.

३ आत्मन् शब्दथी तृतीयाना एकवचनमां णिआ, तथा णइआ प्रत्ययो वधारे छे.

अप्प * तथा अत्त *(आत्मन्) शब्दनां बधारानां रूपो.

प्र०	अप्पा, अत्ता	अप्पाणो, अत्ताणो.
द्वि०	अप्पणं, अत्तणं.	अप्पाणो, अत्ताणो.
तृ०	अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पणइआ. अत्तणा, अत्तणिआ, अत्तणइआ.	+
पं०	अप्पाणो, अत्ताणो.	+
ष०	अप्पणो, अत्तणो.	+
स०	+	+
सं०	+	अप्पाणो, अत्ताणो.

नोंध– अप्प, अत्त, अप्पाण, अत्ताणनां रूपो जिण शब्द माफक पण थाय ते.

४ (क) णो, णा, णं अने म्मि नी पूर्वे राजन् शब्दने 'राइ' एवो आदेश विकल्पे थाय छे.

(ख) तृतीयानो 'णा' अने पंचमी षष्ठीना 'णो' नो पूर्वे राजन् शब्दने विकल्पे 'रण्' एवो आदेश थाय छे.

(ग) तृतीया पंचमी षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचन नी पूर्वे राजन् शब्दने 'राई' आदेश विकल्पे थाय छे.

राअ (राजन्) शब्दनां बधारानां रूपो-

प्र०	राआ	राइणो, राआणो
द्वि०	राइणं	राइणो, राआणो.
तृ०	राइणा, रण्णा. राअणा.	राईहि. राईहिं, राईहिँ

---

* आत्मन शब्दना त्मनो विकल्पे प्प अने नियमावलिनी दशमी कलम प्रमाणे ह्रस्व थाय छे. पक्षे म् नो लोप अने अवशिष्ट तनुं द्वित्व थाय छे.

पं०	राइणो, रण्णो, राआणो.	राईहिन्तो, राईसुन्तो, राईत्तो, राईओ, राईउ
ष०	राइणो, रण्णो, राअणो.	राईणं, राइणं, राईण, राइण.
स०	राइम्मि	राईसु, राईसुं.
सं०	*	राइणो, राआणो.

नोंध-- राअ, राआण शब्दोनां रूपो जिणशब्द माफक पण थाय छे.

७ अन्नंत सिवायना व्यंजनान्त शब्दोना अन्त्य व्यंजननो लोप थतां छेडे जे स्वर रह्यो होय, तदनुसारे ते ते लिंगना रूपो बतावेल स्वरान्त विभक्तिना नियम प्रमाणे थाय छे. तेना माटे विशेष नियम नथी.

८ केटलाएकने मते भवत् अने भगवत् शब्दना अन्त्य तकारनो संबोधनना एकवचनमां अनुस्वार थाय छे. हे भवं, भयवं. हेमचंद्रने मते शौरसेनी भाषानो आ नियम छे.

शब्दो.

जुव, जुवाण (युवन्) पु० जुवान, तरुण पुरुष.

अद्ध, अद्धाण (अध्वन्) पु० मार्ग, रस्तो.

अप्प, अत्त, अप्पाण (आत्मन्) पु० आत्मा, पोते.

सिक्खा (शिक्षा) स्त्री० शिखामण.

गाव, गावाण (ग्रावन्) पु० पत्थर.

मुद्ध, मुद्धाण (मूर्धन्) पु० मस्तक.

णीरअ (नीरजः) वि० रज वगरनुं, निर्मळ.

उच्छ, उच्छाण (उक्षन्) पु० बळद.

* शौरसेनीमां राअं थाय छे.

राअ, राआण (राजन्) पु० भूपति, राजा.

पसाअ (प्रसाद) पु० महेरबानी, कृपा.

दीण (दीन) वि० गरीब, अनाश्रित.

स-साण (श्वन्) पु० कुतरो.

तडाअ (तडाग) पु० तलाव, सरोवर.

आएस (आदेश) पु० हुकम, फरमान.

अणाह (अनाथ) वि० अनाधार.

ठिअ (स्थित) वि० उभेलो.

सेणिअ (श्रेणिक) पु० विशेषनाम, एक राजानुं नाम.

पव्वअ (पर्वत) न० पहाड़.

उज्जाण (उद्यान) न० बगीचो.

इल्ल पु० (दे०) पटावालो; चपराशि.

पूस, पूसाण (पूषन्) पु० सूर्य.

पआस (प्रकाश) पु० अजवालुं.

अंधआर (अंधकार) पु० अंधारुं.

उज्जोअ (उद्योत) पु० प्रकाश.

वणप्फइ (वनस्पति) पु० लीलोतरी, औषधि.

समत्थ (समर्थ) वि० शक्त, पहोंचवालो.

पर (पर) वि० अन्य, बीजुं.

परोप्पर (परस्पर) अ० मांहोमाहे.

हेट्ठं (अधः) अ० हेठे, नीचे.

जाव (यावत्) अ० ज्यांसुधी.

ताव (तावत्) अ० त्यासुधी.

पाअ (पाद) पु० पग, चरण.

अवयासिणी स्त्री० (दे०) नासारज्जु.

ईस न० (दे०) खीलो.

इरमंदिर पु० (दे०) उंट.

धातुओ.

उव+एस (उप+दिश्) बोध आपवो.

चिंत (चिंत्) चितववुं, विचारवुं

वि+सिलेस (**वि+श्लिष्**) जुदुं करवुं.	**अच्छ** (**आस्**) बेसवुं.
णि+ओअ (**नि+युज्**) जोडवुं, गोठववुं.	**पूस** (**पुष्**) पोषवुं, पालवुं.
	परा+जय (**परा+जि**) पराजय करवो.

वाक्यो.

१ जुवाणो जुवाणेण सह जुज्झइ । २ अद्धाणम्मि चिट्ठन्तो साहू धम्ममुवएसइ । ३ बालो वि अप्पणो हिअं चिन्तेइ । ४ जिणो अप्पाणो कम्माणि विसिलेसइ । ५ भविअजणा अप्पणिआ धम्मं कुणन्ति । ६ सिस्सो अप्पम्मि गुरूणं सिक्खं धरेइ । ७ राइणो पसाओ वि दीणाणं सुहं साहेइ । ८ परोप्परं जुज्झन्ताणं राईणं रोसु किलेसो वड्ढइ । ९ साणो तडाअम्मि जलं पिअइ । १० तुम्भे रण्णो आएसं कुणन्ता कालं न जवह । ११ सेणिअस्स राअस्स वयणाइं सुणिऊण मुणी वयइ हे सेणिआ अप्पणा वि अणाहोसि । १२ हेट्ठं ठिअस्स जणस्स मुद्धम्मि पव्वआओ गावाणो पडन्ति ।१३ णीरअम्मि गावम्मि समणो अच्छइ । १४ सारही उच्छाणे रहम्मि णिओअइ । १५ पूसणो पआसो अंधआरं हरइ । १६ पूसाणो जणा उज्जोअं लहन्ते । १७ वणप्फइणो पूसिउं पूसा समत्थो अत्थि । १८ जणो अप्पाणस्स बलेणं जाव विवड्ढइ ताव नो परस्स बलेणं । १९ इल्लो इरमंदिरं अवयासिणीए ईसम्मि बंधइ ।

१ तरुण पुरुषोए गुरुनी शिखामण ग्रहण करीने न्यायमा-

गमां चालवुं. २ राजाए पोतानी गरीब प्रजा उपर महेर-
बानी राखवी. ३ कुतरो तलावे पाणी पीवा जाय छे. ४
बागमां रहेला अनाथमुनि श्रेणिकराजाने उपदेश आपे
छे. ५ निर्मल शिला उपर बलद बेसे छे. ६ सूर्यनो प्रकाश
अंधकारनो पराजय करे छे. ७ राजाना आदेशथी सारथी
रथ जोडे छे. ८ सूर्य पोताना प्रकाशथी वनस्पतिने खीलवे
छे. ९ [तेओ] मांहोमांहे लडे नहि तेवी रीते उपदेश
आपो. १० शिष्यो गुरुना चरणमां पोतानां मस्तक नमावे
छे. ११ झाडनी नीचे बेसता माणसने [ते] जुए छे.

बोधपाठ १२ मो.

भाव कर्म प्रत्ययो.

१. भाव अने कर्ममां संस्कृतमां जेम काल वाचक प्रत्यय
अने धातुनी वच्चे य प्रत्यय थाय छे, तेम प्राकृतमां य
ने स्थाने ईअ अने इज्ज थाय छे. जेम– पढीअइ, पढि-
ज्जइ.

२. चि, जि, श्रु, हु, स्तु, लू, पू, अने धू ए धातुओथी
भाव कर्मना य ने स्थाने विकल्पे 'व्व' आदेश अने
दीर्घ नो ह्रस्व थाय छे. जेम– चिव्वइ, जिव्वइ, सुव्वइ,
इत्यादि. पक्षे चिणीअइ, चिणिज्जइ, सुणीअइ,
सुणिज्जइ, इत्यादि.

३ नीचेनां धातुरूपो विकल्पे मात्र भावकर्ममां ज थाय छे,
अने त्यारे भावकर्मना 'य' नो लोप थाय छे.

धातुओ.
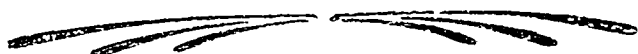
छुप्प (छुप्)--
दीस(दृश्)-- जोवुं,
वुच्च (वच्)—बोलवुं.
हम्म(हन्)—मारवुं,हणवुं.
खम्म(खन्)-खोदवुं. खणवुं.
दुब्भ(दुह्)-- दोहवुं.
वुब्भ(वह्)--वहन करवुं,लई जवुं, उपाडवुं.
लिब्भ(लिह्)- चाटवुं.
+ रुब्भ(रुध्) -रोकवुं,अटकाववुं.
डज्झ(दह्)—बलवुं, दाझवुं
बज्झ(बन्ध्)– बांधवुं
× हीर (हृ) हरवुं, चोरवुं
कीर (कृ)—करवुं
जीर (जॄ)जीर्ण थवुं

चिम्म (चि)—
तीर (तॄ)--तरवु, पार पामवुं.
णव्व } (ज्ञा)—जाणवुं,समजवुं.
णज्ज }
गम्म (गम्)—जवुं, चालवुं.
हस्स(हस्) हसवुं,मश्करी करवी.
भण्ण (भण्)- भणवुं, बोलवुं.
रुव्व (रुद्) रोवुं, आंसु खेरवा.
लब्भ (लभ्)—मेलववुं, पामवुं.
कत्थ (कथ्)—कहेवुं, बोलवुं.
भुज्ज(भुज्)खावुं,उपभोगमा लेवुं.
घेप्प (ग्रह्)—ग्रहण करवुं,स्वीकारवुं.
छिप्प (स्पृश्)—अडकवुं, स्पर्शवुं.

देवदत्तो पढमोद्देसं पढइ ए कर्त्तरि प्रयोगमा जेम कर्त्तामा प्रथमा अने कर्ममा द्वितीया विभक्ति थाय छे तेम 'देवदत्तेण पढमोद्देसो पढीअइ, पढिज्जइ ए कर्मणि प्रयोगमा कर्त्तामा तृतीया अने कर्ममा प्रथमा अने अकर्मक धातुनो भाव प्रयोग थाय छे त्यारे कर्त्तामा तृतीया थाय छे. जेम-देवदत्तेण होइअइ.

+ सं, अनु अने उप, उपसर्गथी पर रुध् धातुने रुज्झ आदेश थाय छे– संरुज्झइ, अणुरुज्झइ, उवरुज्झइ (संरुध्यते) इत्यादि.

× वि अने आ उपसर्ग सहित हृ धातुने भावकर्ममा वाहिप्प आदेश थाय छे जेमके— वाहिप्पइ (व्याह्रियते).

आढप्प(आ+रभ्)आरंभवुं., शरुआत करवी.

विढप्प (अर्ज्)—एकठुं करवुं.

सिप्प (स्निह्)--स्नेह प्रेम राखवो, चिकाश थवी.

सिप्प (सिच्)—सिचवुं.

४. भावकर्म प्रत्यय अने कर्मणिभूतकृदन्तना 'त' प्रत्ययनी पूर्वे प्रयोजकार्थक 'णि' ने स्थाने लोप अने 'आवि' आदेश थाय छे. ज्यारे लोप थाय छे. त्यारे धातुना आदि अकारनो आकार थाय छे. जेम- कारीअइ, करावीअइ, कारिज्जइ, कराविज्जइ (कार्यते इत्यर्थ.)

शब्दो.

तए (त्वया) (युष्मद्, तृतीयानुं एक वचन) ते

आगास (आकाश) न० आकाश.

चोर (चौर) पु० हेरु, लुटारो.

जीव (जीव) पु० जीव, आत्मा.

णई (नदी) स्त्री० नदी.

पवाह (प्रवाह) पु० प्रवाह, पोट.

सरल (सरल) वि० निष्कपटी, भोलो.

माया (माया) स्त्री० कपट.

णाण (ज्ञान) न० विज्ञान.

सुमय (स्वमत) न० पोताना मत.

चंडाल (चण्डाल) पु० नीचवर्ण.

पसु (पशु) पु० पशु, जानवर.

कफाड पु० (दे०) गुफा.

णिरिक्खण (निरीक्षण) न० अवलोकन.

मए (मया) (अस्मद्, तृतीयानुं एक वचन) में

सद्द (शब्द) पु० शब्द, ध्वनि.

सेट्ठि (श्रेष्ठि) पु० सेठ, साहुकार.

रज्जु (रज्जु) स्त्री० दोरडी.

धुत्त (धूर्त्त) पु० धुतारो, ठग.

संसारसाअर (संसारसागर)

पु० संसाररूप समुद्र.

रहस्स (रहस्य) न० गुप्त तत्त्व.

पडिसमय (प्रतिसमय) न० दरेक क्षणे.

खचोल पु० (दे०) वाघ.

तविंधण (तपइंधन) न० तपस्यारूपी इंधन.

दुज्जण (दुर्जन) पु० दुर्जन.

कम्हिअ पु० (दे०) माली.

वाक्यो.

१ अहुणा तुमं किणो ण दीससि । २ मए जिणस्स सत्थाणि सुव्वन्ति । ३ आगासम्मि मेहस्स सद्दो सुणीअइ । ४ णिवेण वणम्मि चोरो हम्मइ । ५ साहुणा सुहुमो वि जीवो ण हणिज्जइ । ६ चोरेण सेट्ठिस्स गिहाओ धणं हीरइ । ७ णईआ पवाहेण गामं गच्छन्तो णरो रुम्भइ । ८ अप्पा कम्मरज्जूहिं बज्झइ । ९ धुत्तेण सरलो मायाए बंधिज्जइ । १० मुणिणा अप्पं वि पावं ण कारिज्जइ । ११ णाणेणं संसारसाअरो तीरइ । १२ तए वअणस्स रहस्सं ण णव्वइ । १३ मए गुरुणो वअणाणि तत्तओ णज्जन्ति । १४ पावं कुणन्तो तुमं जिणेण पासीअसि । १५ समयं वोत्तूं मए आढप्पइ । १६ तए पडिसमयं कम्माणि विढप्पन्ति । १७ दीणस्स गिहाओ अप्पं वि धणं चोरेहिं मा हीरउ । १८ चंडालेहिं तुमं मा छिप्पसु । १९ तविंधणेहिं कम्माणि डज्झन्तु (डहिज्जन्तु वा) २० कफाडम्मि खचोलेण कम्हिओ हम्मइ ।

---

१ धर्म वडे अधर्म हणाय छे. २ दोरडीथी पशुओनी पेठे पापथी माणसो बंधाय छे. ३ सत्यना पंथमां दुर्जनोथी

सज्जनो रोकाता नथी. ४ साधुजनोथी सज्जनो स्तवाय छे. ५ साहुकारोनुं धन लुंटाराथी हराय छे. ६ आत्मानो शुद्धि सारु शास्त्रनां तत्त्वो एकठां कराय छे. ७ मस्तक उपर पाणी सिंचाय छे. ८ बोलता बोलता हसाय छे. ९ चालता चालता रोवाय छे. १० अवलोकनथी शास्त्रनुं रहस्य समजाय छे. ११ गुरुना बोधथी तत्त्व जणाय छे. १२ तमे साधुओना बोधथी दोराओ छो. १३ ब्राह्मणथी चंडाल स्पर्शातो नथी. १४ जुवान माणसथी नदी तराय छे. १५ दरेक समये तीर्थंकरोथी हुं देखाउं छुं. १६ प्रकाशथी अंधकार हराय छे.

बोधपाठ १३ मो.

(नाम विभक्ति चालु)

* सर्वनाम.

१. अदन्त सर्वादि शब्दो थकी अदन्त पुल्लिंगनाज प्रत्ययो आवे छे, पण प्रथमा तथा षष्ठीना बहुवचनमां अने सप्तमीना एकवचनमां विशेष छे ते आ प्रमाणे—

प्र०ब०व०— ए । ष०ब०व०— एसिं । स०ए०व० स्सिं, म्मि, त्थ, हिं.

उदाहरण—

	प्र०ब०व०	ष०ब०व०	स०ए०व०
सर्व—	सव्वे ।	सव्वेसिं ।	सव्वस्सिं, सव्वम्मि,

* सव्व, अराण, अराणयर, इयर, कइम, नम, इक्क–एग, सम, सिम, पुव्व, उत्तर, अवर, दाहिण–दक्खिण, अहर, अन्तर, आ सर्वादि शब्दो त्रणे लिंगमां छे.

	सव्वाण	सव्वत्थ, सव्वहिं ।
अन्य— अण्णे ।	अण्णेसिं	। अण्णस्सि, अण्णम्मि,
	अण्णाण	अण्णत्थ, अण्णहिं ।
कयर— कयरे ।	कयरेसिं	। कयरस्सि, कयरम्मि,
	कयराण	कयरत्थ, कयरहिं ।

बाकीनी विभक्तिओनां रूपो 'जिण' शब्दवत् .

२. किम्, यद् अने तद् शब्द थकी तृतीया, पंचमी, षष्ठी अने सप्तमीमां आ प्रमाणे विशेष छे:—

तृ०ए०व०	पं०ए०व०	ष०ए०व०	ष०ब०व०
इणा.	म्हा.	आस.	आस.

३. पंचमीना एकवचनमां किम् शब्द थकी इणो अने ईस अने तद् शब्द थकी 'ओ' वधारे थाय छे.

४. सप्तमीना एकवचनमां जो उपला त्रणे शब्दोनो वाच्य-काल होय तो आहे आला अने अइआ आदेश थाय छे.

५. तद् अने एतद् शब्दोथी प्रथमाना एकवचनमां ओ अने अ आदेश थाय छे. अने पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंगमां तद्, एतद् शब्दोना द् नो म् थाय छे.

६. तद्, एतद् अने इदम् शब्दोने षष्ठीना एकवचनना प्र-त्यय सहित से अने षष्ठीना बहुवचनना प्रत्यय सहित सिम् आदेश विकल्पे थाय छे.

७. किम् शब्दने सर्व विभक्तिओमां तथा त्र अने त्रस् प्रत्ययोनी पूर्वे क आदेश थाय छे, अने तद् तथा इदम् शब्दने त्रणे लिंगमां क्वचित् ण आदेश थाय छे.

उदाहरण—	किम्.	यद्.	तद्.
प्र०ए०	को.	जो.	सो, स.

तृ०ए०	किणा, केण.	जिणा, जेण.	तिणा, तेण, णिणा, णेण.
पं०ए०	कम्हा, किणो, कीस, कओ,-इ०	जम्हा, जाओ, -इ०	तो, तम्हा, ताओ-इ०
ष०ए०	कास, कस्स.	जास, सस्स.	तास,तस्स,से.
ष०ब०	कास, केसिं, काण-इ०	जास, जेसिं. जाण-इ०	तास, तेसिं, सिम,ताण-इ०
स०ए०	काहे, काला, कइआ, कस्सिं, कम्मि, कत्थ, कहिं.	जाहे, जाला, जइआ, जस्सिं, जम्मि, जत्थ, जहिं.	ताहे, ताला, तइआ, तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं.

बाकीनां रूपो 'सव्व' शब्दनी माफक थाय छे.

८. किम्, यद् अने तद् शब्द सिवाय सर्वादि शब्दोने स्त्रीलिंगमां 'आप्, थाय छे तेनां रूपो सव्वा इत्यादि मालावत् थाय छे. किम्, यद् अने तद् शब्द ने ज्यारे ईप् थाय छे. त्यारे षष्ठीना एकवचनमां स्सा, से अने डास आदेश विकल्पे थाय छे. जेम—कीस्सा, कीसे, कास. जिस्सा, जीसे, जास, तिस्सा, तीसे, तास,(तस्या इत्यर्थः). बाकीनां रूपो ईप् पक्षे वाणीवत्, आप्पक्षे मालावत् थाय छे.

९. किम् शब्दना स्त्रीलिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां अने षष्ठीना बहुवचनमां डी प्रत्यय लागतो नथी.

१०. नपुंसक लिंगमां किम् शब्द सिवाय सर्वादि शब्दोनां रूपो सव्वं, सव्वाणि—इत्यादि नेत्त शब्दवत्. किम् शब्दथी प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनना प्रत्ययनां

लोप थाय छे. किं, काणि इत्यादि. शेषं नेत्त शब्द-वत्.

शब्दो.

सव्व (सर्व) स० बधा, समस्त.
त (तद्) स० ते.
ज (यद्) स० जे.
क (किम्) स० कोण, शुं, प्रश्न.
पुरिस (पुरुष) पु० माणस.
वर (वर) वि० प्रधान, श्रेष्ठ.
अण्ण (अन्य) स० बीजो.
कअर (कतर) स० बेमानो एक-क्यो ?
इअर (इतर) स० अन्य, बीजो.
एग (एक) स० कोई, एक.
दो (द्वि) त्रि० बे.
भत्तु, भत्तार (भर्तृ) पु० पति, धणी.
णिन्दा (निन्दा) स्त्री० विकथा, अपवाद.
भविय (भव्य) वि० भव्य.
सेट्ठ (श्रेष्ठ) वि० उत्तमोत्तम.
आआर (आचार) पु० आचार.
अलमंजुल त्रि० (दे०) आलसु.
अच्छ न० (दे०) जल्दी; तरत.
अह न० (दे०) दुःख.

कारण (कारण) न० हेतु, कारण.
हेउ (हेतु) पु० कारण.
वेस (वेष) पु० पहेरवेस.
विकअ (विकृत) वि० विकार पामेल.
वेर (वैर) न० वेरभाव; दुश्मनाई.
कुडुंब (कुटुंब) न० बाल बच्चा.
णामहेयं (नामधेयं) न० नाम, संज्ञा.
गावी (गो) स्त्री० गाय.
सिर (शिरः) न० मस्तक, माथुं
कहा (कथा) स्त्री० कथा, वार्ता.
णयर (नगर) न० शहेर.
णिजवह (निजवध) पु० पोतानी घात.
चंड (चण्ड) वि० विकराल, भयंकर.
सयं (स्वयं) अ० पोते.
वअण (वदन) न० मुख.
मुह (मुख) न० मुख.

धातुओ.

सिज्झ (सिध्) सिद्ध थवुं.

छिन्द (छिद्) छेदवुं, कापवुं.

अव+राह (अप+राध्) अपराध करवो.

णिरिक्ख (निर्+ईक्ष्) जोवुं, तपासवुं.

उल्लस (उत्+लस्) प्रगट थवुं, प्रकाशवुं.

प+मोअ (प्र+मुद्) खुशी थवुं.

वाक्यो.

१ सव्वे भवियजीवा सिज्झन्ति । २ कम्हा ते पुरिसा तत्थ चिट्ठन्ति जम्हा गामस्स सव्वो वि जणो तेसिं मग्गं णिरिक्खइ । ३ को वभइ जिणधम्मो अण्णेहिन्तो धम्मेहिन्तो वरो णत्थि । ४ जो धम्मं कुणइ सो सुहं लहइ । ५ किणा कारणेण तुम्भे हसेऊण वयह । ६ जिणा हेउणा सव्वाणं इत्थीणं वेसो विकओ दीसइ । ७ कीस कारणाउ स तास सिराणि छिन्दइ । ८ एगे जणा णिजवहे वि असच्चं ण वयन्ति ।९तो तस्स मणम्मि वेरमुल्लसइ । १०कसिं गामम्मि सो कुडुंबेण वसइ। ११जम्मि गामम्मि णत्थि को वि चोरो। १२ तत्थ राआ को अत्थि, तास किं णामहेयं । १३ जाहे गावी दुब्भइ ताला (ताहे तइआ वा) स गिहे आगच्छइ। १४ जहिं सयं णिवो अवराहइ तहिं अण्णेसिं जणाणं का कहा । १५ कअरस्सिं णयरम्मि सिं जणाणं वासो हवइ । १६ अण्णत्थ कहिं सुहेण वयं वसेमो। १७स किस्सा इत्थीआ भत्तारो अत्थि ? । १८ जीसे वयणं पासिअ पमोअइ तिस्सा (तीसे वा) भत्तारो। १९ इअरेसिं णिन्दं मा कुणहि । २० केहिन्तो बीहइ ? जेसिं मुहं चंडं दीसइ ताणं दंसणत्तो

बीहइ। २१ जो अलमंजुलो हवइ सो अच्चं अहेण हणिज्जइ.

१ अमे सर्व मुनिओने नमीए छीए। २ तमे कोने घेर जाओ छो ?। ३ बीजा करतां तेमनो आचार श्रेष्ठ छे। ४ जेओ भणता नथी तेओ सुख पामता नथी। ५ शा माटे तेओ नरकमां जाय छे? ६ तेटला माटे तमे तेओने कहो. ७ बधानुं हित शेमां सचवाय छे ? ८ जेनुं मन धर्ममां आसक्त छे ते माणस आत्मानुं हित साधे छे. ९ जेमां तमे वसो छो, तेमां अमे रहीए छीए. १० सर्व दोषो कया माणसमां क्षय पामे छे. ११ बेमांथी कया माणसने तमे इच्छो छो ? १२ सर्व माणसोमां तीर्थंकर सर्वथी श्रेष्ठ छे. १३ सवारमां कोनुं मुख जोइ बहार नीकलो छो? १४ ते जेने जुवे छे तेने नमे छे. १५ तमे बीजाओथी डरीने चालो छो. १६ बधा माणसो आंखे जुवे छे, अने मनथी चिन्तवे छे. १७ आत्मानुं हित सर्वथी सधाय छे. १८ जेथी सुख थाय ते सदा करो.

बोधपाठ १४ मो.

(धातुविभक्ति अने कृदन्त)

भूतकाल अने कर्मणिभूतकृदन्त.

१. भूतकालना प्रथम मध्यम अने उत्तम पुरुषोना एकवचन अने बहुवचनना प्रत्ययो तरीके स्वरान्त धातुओ थकी सी, ही अने हीअ, अने व्यंजनान्त (संस्कृतावस्थापेक्षया)

धातुओ थकी एक 'ईअ' प्रत्यय थाय छे. जेमके– सो, तुमं, अहं, ते, तुब्भे, अम्हे वा. होसी, होही, होहीअ, गच्छीअ वा. (अभूत्, अभूः, अभूवम्, अगच्छदे-त्याद्यर्थः).

२. प्रथम, मध्यम अने उत्तम पुरुषोना एकवचन अने बहुवचनना प्रत्ययो सहित अस् धातु ने भूतकालमां आसि अने अहेसि आदेश थाय छे. सो, तुमं, अहं, ते, तुब्भे वयं वा, आसि, अहेसि (आसीदित्याद्यर्थः) ते, तुं, हुं, तेओ, तमो, अमो वा हता.

३. धातुने 'त' प्रत्यय लागवाथी कर्मणि भूतकृदन्त+ बने छे. जेम– सुअं (श्रुतं).

४. त प्रत्ययनी पूर्वे धातुना अन्त्य अकारनो इकार थाय छे. जेम– पढिअं, सुणिअं.

५. त प्रत्ययनी पूर्वे प्रयोजकार्थ 'णि' ने स्थाने लोप अने आवि आदेश थाय छे. ज्यारे लोप थाय छे त्यारे धातुना आदि अकारनो आकार थाय छे. जेम–कारिअं, कराविअं.

६. धातुनो आदि स्वर गुरु होय तो आविने बदले अवि आदेश थाय छे. जेम– सोसिअं, सोसविअं.

७. नीचेना 'त' प्रत्ययान्त शब्दो विकल्पे निपातथी सिद्ध थाय छे—

संस्कृत.	प्राकृत.	गुजराती.
आक्रान्तः	अप्फुण्णो	दबाव्युं.

+ कर्मणिभूत कृदन्त बन्या पछी जो ते कोईनुं विशेषण होय तो विशेष्यना विभक्ति वचन ग्रहण करे. जेम– सुअं वयणं, सुणा वयणाणा अत्यनाणं. जो विशेषण कोईनुं न होय तो प्रथमा आवे.

उत्कृष्टः	उक्कोसो	श्रेष्ठ.
अतिक्रान्तः	वोलीणो	उल्लंघेल.
विकसितः	वोसट्टो	विकास पामेल.
निपातितः	णिसुट्टो	पाडेलो.
प्रमुषितः } प्रमुष्टः	पम्हुट्टो	चोरेलो.
स्थापितं	णिमिअं	स्थापेलुं.
आस्वादितं	चक्खिअं	चाखेलुं.
पर्यस्तं	{ पल्लोट्टं पल्हत्थं	दूरमुकेलुं, फेंकेलुं.
स्पष्टं	फुडं	शुद्ध, चोक्खुं.
रुग्णः	लुग्गो	पीडित.
नष्टः	लिहक्को	नाश पामेल.
अर्जितं	विढत्तं	एकठुं करेल.
स्पृष्टं	छित्तं	अडकेलुं.
लूनं	लुअं	लण्युं, लणेलुं.
त्यक्तं	जढं	त्यजेलुं. छोडेलुं.
क्षिप्तं	ज्झोसिअं	मुकेलुं, छोडेलुं.
उद्वृत्तं	णिच्छूढं	पाछुं वलेलुं.
हेषितं	हसिमणं	खंखार्युं, घोडाए शब्द करेल.

पक्षे यथा नियम सिद्धि.

धातुओ

आ+लव (आ+लप्) आलाप सलाप, बोलवुं।

गुंज (गुञ्ज्) गुंजारव शब्द करवो।

आ+करिस (आ+कृष्) खेंचवुं, आकर्षवुं।

पीड (पीड्) पीडवुं, दुःख देवुं।
उट्ठ (उत्+स्था) उठवुं, उभा-थवुं।
प+यत् (प्र+यत्) प्रयत्न करवो।
उड्डे (उत्+डी) आकाशमां उडवुं।
दे (दा) देवुं, आपवुं।
ण्हा (स्ना) नहावुं, स्नान करवुं।
जिम्म (जिम्) खावुं, भोजन करवुं।

शब्दो.

अंतिअ (अन्तिक) न० नजीक, पासे.
गोवाल (गोपाल) पु० गोवालीओ.
सुगइ (सुगति) स्त्री० सारी गति.
यंत्तणा (यंत्रणा) स्त्री० पीलवानुं यंत्र.
सग्गइ (सद्गति) स्त्री० उंची गति, देवादि गति.
कामभोअ (कामभोग) पु० इंद्रियना विषय, भोग.
पंकय (पंकज) न० कमल.
ममभाव (ममभाव) पु० ममत्व.
इड्ढिमंत (ऋद्धिमत्) त्रि० वैभववाळो.
विआर (विकार) पु० विकार विकृति.
जुद्ध (युद्ध) न० लड़ाई.
विउल (विपुल) त्रि० घणुं.
जन्तु (जन्तु) पु० जीव, जंतु.
पक्खि (पक्षिन्) पुं० पक्षी.
धन्न (धान्य) न० कण, धान्य.
पासाअ (प्रासाद) पु० हवेली, मकान.
पच्चूह पु० (दे०) सूर्य.
उज्जोमिआ स्त्री० (दे०) किरण.
कंदोट्ट न० (दे०) कमल.
उज्जाविय त्रि० (दे०) विकसित थयेल.

विशेषनामो.

महावीर— चोवीसमा तीर्थकरनुं नाम.

राम— रामचन्द्र, सूर्य वंशना प्रसिद्ध राजा.

सीया (सीता)— रामचन्द्रनी धर्मपत्नी.

खंधक (स्कन्धक)— जैन शास्त्रमा प्रसिद्ध एक आचार्य.

पालक— स्कंधकनो वेरी, एक पापी ब्राह्मण.

रावण— लंकानो राजा.

अव्ययो

पुरा— आगल, पहेला.

जहा (यथा) जेम, जेवी रीते, जेवुं.

सपइ (सपदि) हमणा, अधुना.

तहा (तथा) तेम, तेवी रीते, तेवुं.

वाक्यो.

१ मए गुरुणो अन्तिए सत्थं पढिअं। २ तुमं धम्मं काउण अप्पाणं पुणीअ । ३ गोवालो धेणूओ वणम्मि णेसी । ४ आयरिओ मुणिणो संजममग्गं णेही । ५ तुमं पुरा जहा ववहारम्मि कुसलो होहीअ सपइ तहा णत्थि । ६ जाहे तुमं पुत्तेणं सह आलवीअ ताहे अहं उवस्सयं गच्छीअ । ७ किं देवदत्तो गेहे ण आसि? । ८ कम्हा माअराए सह बालो रुव्वीअ । ९ महावीरस्स सव्वेसिं सिस्साणं सुगई अहेसि। १० जदा कामभोआ लिहको ममभावो ज्झोसिआविआरा जीवस्स सुहं देन्ति । ११ तसिं गामम्मि मुणिणा धम्मस्स अब्भुदओ कारिओ। १२ पालको खंधकस्स सिस्से यंत्तणाए पीडीअ । १३ तेसिं विसुद्धभावेण सग्गई होहीअ । १४ रावणेण सह जुद्धे रामो जेही । १५ रावणो

रोमस्स इत्थि सीयं हरीअ। १६ सेट्ठिणा वावारम्मि विउलं धणं विढत्तं। १७ पाएण अफुण्णो जन्तू उड्डुं उणिउं पय-तीअ। १८ उड्डेन्तेण पक्खिणा पव्वओ वोलीणो। १९ वोसट्टं पंकयं गुंजन्तं भमरमाकरिसीअ। २० चंडालेण छित्तो बम्हणो ण्हाऊण जिमइ। २१ पम्हुच्छं धन्नं वाणी-ओ घणेण किणइ। २२ राइणा धम्मस्स पासाओ बंधावि-ओ। २३ पच्चूहस्स उज्जोमिआए कंदोट्टं उज्जावियं।

१ में मुनिओनो बोध सांभल्यो. २ तें शरीरनी पेठे धर्मनुं रक्षण कर्युं. ३ क्षत्रियो ब्राह्मणोनी साथे लड्या. ४ आगलना माणसो वैभववाला हता. ५ महावीरे धर्मनो घणोज अभ्युदय कर्यो. ६ तेणे संतसेवानुं फल मेलव्युं. ७ शेठे नोकरोने घणुं द्रव्य आप्युं. ८ अमे पण रस्तामां ते-ओनी साथे हता. ९ सर्वे जण साथे रहेता हता. १० अमे राजानी हवेलीमां बेठा. ११ तेओए घणुं धन एकठुं कर्युं. १२ व्यापारीओ पैसो मेलववाने परदेशमां गया. १३ सज्जन पुरुषो गुणथी सद्गतिमां गया. १४ हवेली साहुकारे घणा पैसाथी करावी.

बोधपाठ १५ मो.

(सर्वनाम विभक्ति—चालु)

एतद्, इदम् अने अदस् शब्दोनां रूपो.

१ प्रथमाना एकवचनना प्रत्यय सहित एतद् शब्दने त्रणे लिंगमां विकल्पे इणम् अने इणमो आदेश; इदम् ने

पुल्लिंगमां अयं, अने स्त्रीलिंगमां इमिआ, अने नपुंसकलिंगमां इदम्, इणम्, अने इणमो; अदस् शब्दने त्रणे लिंगमां विकल्पे अह आदेश थाय छे.

२ द्वितीयाना एकवचनना प्रत्यय सहित इदम् ने पुल्लिंगमां विकल्पे इणम्, नपुंसकलिंगमां इदम्, इणम् अने इणमो आदेश थाय छे.

३ तृतीयाना एकवचन तरीके एतद् अने इदम् शब्द थकी डिणा अने एतद् शब्द थकी पंचमीना एकवचन तरीके ताहे विकल्पे थाय छे.

४ त्तो, ताहे अने त्थनी पूर्वे एतद् शब्दना उद्वृत्त अ नो लोप थाय छे.

५. म्मि नी पूर्वे एतद् ना आद्य ए नो विकल्पे अ अने ई, अदस् शब्दने अअ अने इअ, इदम् शब्दने षष्ठीना एकवचन स्स अने सप्तमीना एकवचन स्सि नी पूर्वे अने क्वचित् तृतीया तथा सप्तमीना बहुवचनमां पण अ आदेश अने त्थ सहित इह आदेश थाय छे.

६. सर्वविभक्तिने योगे इदम् ने इम अने अदस्ने अमु आदेश थाय छे.

७. एतद् अने इदम् शब्दथी सप्तमीना एकवचनमां हिं प्रत्यय थतो नथी.

एतद् शब्दनां विशेषरूपो.

प्र०ए०व० एसो, एस*, इणम्, इणमो.

द्वि०ए०व० एअं.

तृ०ए०व० एइणा, एएण.

* १३ मा पाठनी पाचमी कलम जुओ.

पं०ए०व० एत्ताहे, एत्तो, एआओ–इत्यादि.
प०ए०व० एअस्स, से. +
ष० ब०व० एएसिं,+सिं,एआणं–इत्यादि.
स०ए०व० एअस्सि, एअम्मि, अअम्मि, ईअम्मि, एत्थ.
शेषं सव्वशब्दवत्.

इदम् शब्दनां विशेषरूपो.

प्र०ए०व० अअं, इमो.
द्वि०ए०व० इणं, इमं, णं.
तृ०ए०व० इमिणा, इमेण, णेण. ×
पं०ए०व० इमाओ, इत्यादि
ष०ए०व० अस्स, इमस्स, से.
ष०ब०व० इमेसिं, सिं, इमाणं, इत्यादि
स०ए०व० अस्सि, इमस्सि, इमम्मि, इह, इत्यादि.
शेषं सव्वशब्दवत्

अदस् शब्दनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०—	अह, अमू.	अमुणो-इ०
द्वि०—	अमुं.	अमुणो, अमू.
तृ०—	अमुणा.	अमूहिं-इ०
पं०—	अमूओ, अमूउ-इ०	अमूहिन्तो-इ०
ष०—	अमुणो, अमुस्स.	अमूण, अमूणं.
स०—	अअम्मि, इअम्मि, अमुम्मि, अमुस्सि-इ०	अमूसु, अमूसुं.

शेषं सव्वशब्दवत्.

+ स अने सिं माटे १३ मा पाठनी छठी कलम
× ण आदेश माटे १३ मा पाठनी सातमी कलम जुओ.

८. स्त्रीलिंगमां प्रथमाना एकवचन सिवाय एतद् ने एआ. इदम् ने इमा, इत्यादि आदन्त स्त्रीलिंगवत्. अदस् ने अमू इत्यादि ऊदन्त स्त्रीलिंगवत्. प्रथमाना एकवचनमां एतद्ना एसा, एस, इणम्, इणमो. इदम्ना इमिआ, इमा. अदस्ना अह, अमू. इति रूपाणि.

९. नपुंसकलिंगमां पण प्रथमाना एकवचन सिवाय एतद् ने एअ, इदम् ने इम थाय छे. तेनां रूपो नेत्तशब्दवत्. अदस् ने अमु, तेनां रूपो धणुशब्दवत्. प्रथमाना एकवचनमां एतद्ना एस, इणम्, इणमो, एअं; अदस्ना अह, अमुं; इदम्ना इदम्, इणम्, इणमो. इति रूपाणि. इदम् शब्दनां द्वितीयाना एकवचननां रूपो प्रथमाना एकवचन जेवां थाय छे.

शब्दो.

पत्त (पात्र) न० योग्य, अधिकारी, वासण.

सुकअ (सुकृत) न० सारां कृत्य.

सफल (सफल) वि० सार्थक.

माणुस्स (मानुष्य) न० मनुष्य-संबंधी, मनुष्यपणुं.

उन्नअ (उन्नत) वि० उच्च, चडतुं.

विआर (विचार) पु० मनोभाव.

मेत्ती (मैत्री) स्त्री० मित्रता; प्रेम.

जीविअ (जीवित) न० जीवितव्य, जींदगी.

जम्म (जन्म) न० जींदगी, उत्पत्ति.

गणिआ (गणिका) स्त्री० वेश्या.

साहज्ज (साहाय्य) न० मदद.

णरिन्द (नरेन्द्र) पु० राजा.

भव (भव) पु० जन्म, संसार.

परभव (परभव) पु० आवतो जन्म. बीजो भव.

लहु (लघु) वि० न्हानो.

महिला (महिला) स्त्री० स्त्री.
सच्चवाइ (सत्यवादिन्) पु० साचा बोलो.
पसंग (प्रसंग) पु० प्रस्ताव.
अहिअ (अधिक) वि० वधारे.
सुणिउण (सुनिपुण) वि० हुशीआर, चालाक.
दिण्ण (दत्त) वि० दीधेलुं, दीधुं.
कह (कथ्) धातु० कथन करवुं, कहेवुं।
ठाण (स्थान) न० ठेकाणुं.
बहु (बहु) वि० घणुं.
रज्ज (राज्य) न० राज्य.
कइ (कति) सं० केटला.
कंटअ (कंटक) पु० कांटो.
जणवअ (जनपद) पुं० देश.
पत्तल त्रि० (दे०) सुंदर.
परज्झ त्रि० (दे०) पराधीन.
अत्थारिअ पु० (दे०) नोकर.

विशेषनामो.

भत्तहरि– भर्तृहरि नामनो राजा।
कोणिअ– श्रेणिक राजानो पुत्र, कोणिक।
पिंगला– भर्तृहरिनी स्त्री।

अव्ययो.

खलु– निश्चय।
अइ (अति) बहु, घणी।
सुट्ठु (सुष्ठु) सारो।

वाक्यो.

१ एसो साहू इणं समणोवासअं किं वअइ । २ अयं जणो पत्तम्मि विउलं दाणं देइ । ३ अस्स जम्मं जीविअं अ सुकएण सफलं हवइ । ४ इमिणा खलु सुट्ठु माणुसं जम्मं लहिअं । ५ एएसिं हिअअम्मि उन्नआ विआरा अत्थि। ६ एत्थ को पुरिसो चिट्ठइ ? । ७ इमे एइणा सह मेत्तिं वह-

न्ति । ८ अह महिला सव्वम्मि कज्जम्मि सुणिउणा अत्थि । ९ अह जणो सया चेअ परमत्थस्स कज्जाणि कुणइ । १० अह फलं भत्तहरिणा पिंगलाए हत्थम्मि दिण्णं। ११ इमिआ गणिआ जुवाणाणं धणं हरइ । १२ अमू चमू कोणिअस्स रण्णो साहज्जं करेइ । १३ इमस्सिं जुद्धे कोणिओ णरिन्दो जयइ । १४ इहभवे कओ धम्मो परभवम्मि सुहं देइ । १५ इमो बालो से जणस्स लहू भाया हवइ । १६ एत्तो जणाओ तुमं ण सुहं लहीअ । १७ ईअम्मि ठाणे बहवो राआणो रज्जं कुणीअ । १८ अमुस्सिं गामम्मि कइ सच्चवाइणो हवन्ति ? । १९ एत्ताहे अहिअं किं णाम दुहं हवइ? । २० एएण पसंगेण णेण इणं कहिअं । २१ इमस्सिं मग्गे बहवो कंटआ हवन्ति । २२ असुणो दिट्ठी एअं पुरिसं णिरिक्खइ । २३ अयं पत्तट्ठोवि परज्झो अत्थारिओ किं चिंतेइ ? ।

१ आ माणसे धर्मना घणा काम कर्यां. २ एने तमे सत्यमार्ग बतावो. ३ एणे आ राजाना लश्करने नसाड्युं. ४ आनुं नाम धर्मसिंह छे. ५ एओए सघला धर्मनां शास्त्रो जोयां. ६ एमां बधी वातोनुं रहस्य आवे छे. ७ एनाथी बीजो कोण वधारे छे. ८ आथी अमे हमेशा खुशी थया. ९ आणे धर्म पुस्तको सारी रीते समजाव्यां. १० आ माणस घणो हुशीआर छे. ११ तमे आने वधारे पीडशो नहीं. १२ आ लोको सर्व कार्यमां कुशल छे. १३ आमणे घणा देशो जोया. १४ आ लोकोथी मनमां तमे डरशो नहि. १५ आमनी मैत्री व्यवहारमां बहु सारी छे. १६ आमां जे गुणो जोइए ते बधा छे. १७ आमनामां एक रीत घणी सारी छे.

बोधपाठ १६ मो.

(धातु विभक्ति—चालु)

भविष्यकालना प्रत्ययो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	हिइ, हिए.	हिन्ति, हिन्ते, हिरे.
म०	हिसि, हिसे.	हित्था, हिह.
उ०	हिमि, स्सामि, हामि, स्सं.	हिमो, स्सामो, हामो, हिमु, स्सामु, हामु, हिम, स्साम, हाम, हिस्सा, हित्था.

१. भविष्यकालना प्रत्ययोनी पूर्वे धातुना अन्त्य अकारना इकार अने एकार थाय छे.

उदाहरण— पढ (पठ्) धातुनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	पढिहिइ-ए.	पढिहिन्ति-इ०
म०	पढिहिसि-से.	पढिहित्था-इ०
उ०	पढिहिमि, पढिस्सामि, पढिहामि, पढिस्सं,	पढिहिमो-मु-म. पढिस्सामो-मु-म. पढिहामो-मु-म. पढिहिस्सा, पढिहित्था.

एकार पक्षे— पढेहिइ इत्यादि.

कर्मणि— पढीअहिइ इ०

प्रेरणा— पढावेहिइ इ०

हो (भू) धातुनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	होहिइ-ए.	होहिन्ति-न्ते.रे.

म० होहिसि-से. होहित्था, होहिह.

उ० { होहिमि, होहिमो-मु-म.
होस्सामि, होस्सामो-मु-म.
होहामि, होहामो-मु-म.
होस्सं, होहिस्सा, होहित्था. }

भावे— होइज्जहिइ इत्यादि.

प्रेरणा— होआवेहिइ इ०

२. नीचे बतावेला आदेशो मात्र भविष्यकालमां ज थाय छे. तेम थाय छे त्यारे भविष्यकालना प्रत्ययोमांनो 'हि' विकल्पे लोपाय छे, अने उत्तम पुरुषना एकवचन तरीके एक अनुस्वार वधारे थाय छे.

आदेश रूप धातुओ

सोच्छ (श्रु) सांभलवुं.	रोच्छ (रुद्) रोवुं, रडवुं.
वेच्छ (विद्) जाणवुं.	दच्छ (दृश्) जोवुं, देखवुं.
मोच्छ (मुच्) मुकवुं, छोडवुं.	वोच्छ (वच्) बोलवुं, कहेवुं.
भोच्छ (भुज्) खावुं, भोगववुं.	भेच्छ (भिद्) भेदवुं.
छेच्छ (छिद्) छेदवुं.	

उदाहरण— सोच्छिइ, सोच्छिहिइ (श्रोष्यति)इत्यादि.

उत्तमपुरुष—सोच्छं,सोच्छिमि,सोच्छिहिमि,सोच्छिस्सामि सोच्छिहामि, सोच्छिस्सं (श्रोष्यामीत्यर्थः)

३. कृ अने दा धातु थकी उत्तम पुरुषना एकवचन तरीके एक हं प्रत्यय वधारे थाय छे.

४ भविष्य अने भूतकालना प्रत्ययो ने योगे कृ धातुने का आदेश थाय छे.

उदाहरण—काहिइ, काहिन्ति. काहिसि, काहित्था. काहिह, काहं, काहिमि, कास्सामि, काहामि, कास्सं,

काहिमो, कास्सामो इत्यादि. एवं दाहिइ, दाहं, दाहिमि, दास्सामि, इत्यादि.

शब्दो.

महापुरिस (महापुरुष) पु० महात्मा पुरुष.

संग (सङ्ग) पु० सोबत, सहवास.

गहण (गहन) न० कठिन, आकरुं.

सुपत्त (सुपात्र) न० सत्पात्र

उचिअ (उचित) वि० योग्य, लायक.

सोरट्ठ (सौराष्ट्र) सोरठ देश.

अत्तवयण (आप्तवचन) न० प्रामाणिक वचन-

अज्झत्थ (अध्यात्म) न० आत्मतत्त्व संबंधी.

इट्ठ (इष्ट) वि० इच्छित, प्रिय.

अकज्ज (अकार्य) न० न करवा लायक काम.

संघ (संघ) पु० समुदाय.

ते (तव) (युष्मद्‌ना षष्ठीनुं एकवचन) तेनुं.

अग्ग (अग्र) न० आगल.

पाण (प्राण) पु० प्राण, जीवन.

णासिआ (नासिका) स्त्री० नाक.

जीहा (जिह्वा) स्त्री० जीभ.

कण्ण (कर्ण) पु० कान.

कयन्न (कदन्न) न० खराब भोजन.

दव्व (द्रव्य) न० द्रव्य.

मंस (मांस) न० मास.

मइरा (मदिरा) स्त्री० दारु, मद्य.

तप्परिणाम (तत्परिणाम) पु० तेनुं परिणाम.

मत्त (मात्र) वि० मात्र.

भयंअर (भयंकर) वि० भयभीत.

विरूव (विरूप) त्रि० विपरीत.

पहाव (प्रभाव) पु० प्रताप.

सअल (सकल) वि० सर्व, बधुं.

वच्छ (वृक्ष) पु० झाड.

पट्टइल्ल पु० (दे०) गामनो मुखी;

पटेल.

मच्चु (मृत्यु) पु० मृत्यु, मोत.

उदअ (उदय) पु० प्रादुर्भाव, चडती.

जम (यम) पु० परमाधामी, जम.

उज्जम पु० (दे०) उद्यम.

अड्ढिल्ल त्रि० (दे०) धनवान्.

पुच्छ (पृच्छ्) धा० पुछवुं, प्रश्न करवो.

चल (चल्) धा० चालवुं.

अव्ययो.

तहवि (तथापि) तो पण.

अईव (अतीव) अत्यन्त, घणुंज.

णिच्च (नित्य) हमेश, सदा.

एत्थ (अत्र) अहिं.

वाक्यो.

१ अयं जणो महापुरिसाणं संगेण महापुरिसो होहिइ । २ इमे साहूणं सगासे गहणाणि सत्थाणि पढिहिन्ति । ३ तुमं एत्थ ठाउण किं काहिसि । ४ ते सुपत्तम्मि उचिअमन्नं दाहिन्ति । ५ अहं गुरुणो दंसणं काउं सोरट्ठं गच्छिमि । ६ वयं हियअसुद्धिं काऊण अत्तवयणाणि सोच्छिहिमो । ७ अहं णिच्चं अज्झत्थसत्थाणि सोच्छं ।८ तुम्भे अग्गे गच्छन्ता इइं पुरिसं दच्छिहित्था । ९ जया सेट्ठिणो पुच्छिहिन्ते, तया अकाऊण कज्जं तुमं किं वोच्छिसि ? । १० अकज्जस्स परिणामे पावस्स उदअम्मि तुमं अईव रोच्छिहिसि तहवि ण कोवि मोच्छिइ। ११ तया तुमं पावस्स फलं वेच्छिहिसि जया जमा तेहत्थे, पाए, णासिअं,जीहं, कण्णे, छेच्छिहिन्ति। १२ जइ कअलं मंसं मइरं वा कया वि भोच्छिहिसि तया

तप्परिणामो भयंकरो होहिइ । १३ तुमं चेणीइपहे चलिहिसि तया तव अहं विउलं धणं दाहं । १४ अहम्मं कुणिहिसि चे विरूवं फलं लहिहिसि । १५ जाव धम्मं काहिसि करावेहिसि ताव सुहं समाहिं लहिहिसि । १६ एएसिं पहावेण सअलो किलेसो उवसमिहिइ । १७ इमे सव्वत्थ गामम्मि संघम्मि वा किलेसमुवसमावेहिन्ति । १८ अणेण एसो वच्छो ण भेच्छीअहिइ । १९ एस पट्टइल्लो उज्झसेण अहिल्लो होहिइ.

१तमे धर्मनुं कार्य क्यारे करशो ? २ जेने तमे मारो छो, ते तमने मारशे त्यारे तमे रोशो नहीं ? ३ मृत्यु आवशे तो तमने छोडशे नहीं. ४ पैसो के कुटुंब कंईपण साथे आवशे नहि. ५ जो धर्म कर्यो हशे तो तेज साथे आवशे. ६ कोई पण जंतुना प्राण लुंटशो नहीं. ७ कोईने छेदशो, भेदशो तो तमे छेदाशो, भेदाशो. ८ अमे पैसो मेलवी गरीबोने देशुं. ९ तमे पण सुपात्रमां आपशो ? १० अमे हमेश एमनी साथे चालशुं. ११ तेओ परमार्थना कार्यमां घणी मदद अपावशे. १२ कोईनुं पण चोरेलुं द्रव्य खरीदशो नहीं. १३ जेवुं करशो तेवुं पामशो. १४ साधुओ बोध आपशे अने श्रावको धर्मना कार्य करशे. १५ पाप करशो तो तेनो उदय थये विपरीत परिणाम जोशो. १६ पैसो मले तो खाइ खुशी थशो नहीं पण बीजाने खवरावशो. १६ धर्मनां शास्त्र सांभलशो तो आत्मानी शुद्धि थशे.

बोधपाठ १७ मो.

(नाम विभक्ति--चालु.)

* संख्यावाचकशब्दोनां रूपो.

१. संख्यावाचक शब्दो थकी त्रणे लिंगमां षष्ठीना बहुवचन तरीके ण्ह अने ण्हं प्रत्ययो आवे छे. बाकीना पूर्ववत्.

२. प्रथमा तथा द्वितीयाना बहुवचनना प्रत्ययो सहित द्विशब्दने दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो अने वे; त्रिशब्दने तिण्णि, चतुर् शब्दने चत्तारि, चउरो अने चत्तारो आदेश त्रणे लिंगमां थाय छे.

३. तृतीयादि विभक्तिओनी पूर्वे त्रिशब्दने ती, अने द्विशब्दने दो तथा वे आदेश त्रणे लिंगमां थाय छे.

४. तृतीया, पंचमी, अने सप्तमीना प्रत्ययो लागतां चउ शब्दनो उकार विकल्पे दीर्घ थाय छे.

उदाहरण—*द्विशब्दनां रूपो

प्र०— दुवे, ×दोण्णि, वेण्णि, दो, वे.
द्वि०— ,, ,, ,, ,, ,,
तृ०— दोहिं, वेहिं इत्यादि
पं०— दोहिन्तो, वेहिन्तो इ०
ष०— दोण्ह, दोण्हं, वेण्ह इत्यादि
स०— दोसु, वेसु इ०

---

* संख्यावाचक द्वि आदि शब्दो हमेश बहुवचनान्तज रहे छे-

× नियमावलिनी दशमी कलमथी ह्रस्वथाय छे त्यारे दुण्णि, विण्णि, एवा पण रूपो थाय छे.

त्रिशब्दनां रूपो

प्र०— तिण्णि.

द्वि०— तिण्णि.

तृ०— तीहिं, तीहि इ०

पं०— तीहिन्तो, तीसुन्तोइ इ०

ष०— +तिण्ह, तिण्हं.

स०— तीसु, तीसुं.

चउ (चतुर्) शब्दनां रूपो.

प्र०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि.

द्वि०— ,, ,, ,,

तृ०—चऊहिं, चउहिं. इत्यादि.

पं०—चऊहिन्तो. चउहिन्तो, इत्यादि.

ष०—चउण्ह, चउण्हं.

स०—चऊसु, चउसु. इत्यादि.

५. पंचथी अट्ठारस पर्यन्त संख्यावाचक शब्दो तथा कइ शब्दनां रूपोमां प्रथमा तथा द्वितीयाना प्रत्ययोनो संस्कृतनी पेठे लोप थाय छे; जेमके–प्र० पंच, द्वि०, पंच तृ० पंचहिं, पं० पंचहिन्तो, ष० पंचण्ह इ०, स० पंचसु इ०.

केटलाएक अव्ययो.

हु, खु निश्चय.

उअ (पश्यार्थमा) जो.

पाडिक्कं, पाडिएक्कं, पत्तेअं

प्रत्येक, दरेक, एकेक.

+ नियमावलिनी दशमी कलमथी ह्रस्व थाय छे.

चिर लांबा वखत सुधी.
अप्पणो-सयं स्वयं, पोते, पोतानी जाते
आम अभ्युपगम, स्वीकार.
ओ सूचना, पश्चात्ताप.
अम्मो आश्चर्य.
णवि वैपरीत्य.
हद्धी (हा धिक्) खेद् धिक्कार.
रे-अरे संबोधन, कलह
णवरं केवल अथवा एटलुं विशेष-

संख्यावाचकशब्दो

एग (एक) एक
दो, बे (द्वि) बे
ति [त्रि] त्रण
चउ (चतुर्) चार
पंच (पंचन्) पाच
छ [षट्] छ
सत्त (सप्त) सात.
अट्ठ (अष्टन्) आठ.
णव (नवन्) नव.
दस (दशन्) दश.
एकारस (एकादश) अगीयार.
बारस (द्वादश) बार.
तेरस (त्रयोदश) तेर.
चउद्दस (चतुर्दश) चौद.
पन्नरस (पंचदश) पन्नर.
सोलस (षोडश) सोल.
सत्तरस (सप्तदश) सत्तर.
अट्ठारस (अष्टादश) अढार.
एगुणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीस.
वीसा (विंशति) वीस.
सट्ठि (षष्टि) साठ.
सअ (शत) सो.
सहस्स (सहस्र) हजार.
लक्ख (लक्ष) लाख.

शब्दो.

वच्छर (वत्सर) पु० वरस.
मास (मास) पु० महीनो.
सावराह (सापराध) अपराध सहित.
पय (पद) न० पद.
लक्खमण— विशेषनाम, रामचन्द्र-जीना नाना भाई.

णिरवराह (**निरपराध**) वि० अपराध वगरनो.

सकंकण (**सकंकण**) वि० कंकण सहित.

सव्वघाइ (**सर्वघातिन्**) वि० सर्वनी घात करनार.

अज्झप्प (**अध्यात्म**) न० अध्यात्म, आत्मतत्त्वसंबंधी.

महव्वय (**महाव्रत**) न० साधुना पंचमहाव्रत.

जीवणिकाय (**जीवनिकाय**) पु० जीवसमुदाय.

विविह (**विविध**) वि० नाना प्रकार.

कारागिह (**कारागृह**) न० केदखानुं.

कम्माआण (**कर्मादान**) न० श्रावकने वर्जनीय आचार.

समप्पणीय (**समर्पनीय**) सोंपवा लायक.

अंगुलि (**अंगुलि**) स्त्री० आगली.

विणा (**विना**) अ० वगर.

करडा स्त्री० (दे०) भमरो.

विरह (**विरह**) पु० वियोग.

पक्ख (**पक्षन्**) पु० पांख.

रम्म (**रम्य**) वि० रमणीक.

दुहिआ (**दुःखिता**) स्त्री० दुखी स्त्री.

पहु (**प्रभु**) पु० समर्थ.

पत्त (**पात्र**) न० पातरु, लाकडानुं ठाम.

गइ (**गति**) स्त्री० नरक आदिनी गति.

किरिआ (**क्रिया**) स्त्री० अनुष्ठान.

जोणि (**योनि**) स्त्री० उत्पत्तिनुं स्थान.

बीभच्छ (**बीभत्स**) वि० निन्द्य.

रूवग (**रूपक**) न० रूपीआ.

विभाअ (**विभाग**) पु० जुदा जुदा भाग.

कमलावई वि० ना० कमलावती, आ नामनी एक सती.

मज्झ (**मध्य**) अ० माही.

पंखुडिआ स्त्री० (दे०) पांख.

जयइ स महा पुरिसो हवइ । २१ इह्वी सव्वोवि संसारो चऊहिं कसाएहिं जिओ । २२ इमेहिन्तो चउहिन्तो सव्वे वि बोहन्ति । २३ पंचहिं अंगुलीहिं हत्थो सोहइ । पाडिएक्कं विभाएण कज्जं समप्पणीयं । २५ जणो रूवगाणं सअं सहस्सं लक्खं वा लहइ तह वि ण संतूसइ । २६ स पन्नरसहिं कम्मा-आणेहिं णरए पडइ । २८ करडा दोहिं पंखुडिआहिं उड्डेइ.

१ अमे त्यां बे जणाने रमता दीठा. २ तमे त्रणे जण साथेज आवता हता. ३ पांच माणसो साथे चालतां वातो करतां जाय छे. ४ तेओ पोतानी साथे चार गायो लई जाय छे. ५ आ पैसा त्रण जणानो छे. ६ ज्यां पांच त्यां परमेश्वर छे. ७ पांच इन्द्रियोने जीती मनने कबजे करो. ८ मुनिओ पांच महाव्रत पाले छे. ९ बार मासनुं एक वरस अने एक वरस मां त्रणसे साठ दिवस छे. १० गाय चार पगे चाले छे. ११ माणस बे पगे चाले छे. १२ पक्षी बे पांख वडे आकाशमां उडे छे. १४ आ माणसना छ दीकरा अने सात दीकरीओ छे. १४ आ एकसो माणसने पाले छे. १५ एक युद्धमां आणे एक हजार माणसोने मार्या. १६ आ एक लाख रुपिया एकठा करी शेठ थयो. १७ आचारांगसूत्रना अढार हजार पद छे.

बोधपाठ १८ मो.

(धातु विभक्ति चालु)—

सर्वकालना साधारण प्रत्ययो.

१. वर्त्तमान, विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भूत, क्रियातिपत्ति अने भविष्यकालमां धातु थकी ज्ज अने ज्जा प्रत्ययो विकल्पे थाय छे.

२ ज्ज अने ज्जा नी पूर्वे धातुना अन्त्य अकारनो एकार थाय छे. कोई ठेकाणे इकार पण थाय छे. जेम--पढेज्ज, पढेज्जा (पठति, पठेत्, पठतु, अपठत्, अपठिष्यत्, पठिष्यतीत्याद्यर्थः)

३. अकारान्त सिवाय स्वरान्त धातुओने वर्त्तमान कालादिना इ आदि प्रत्ययोनी पहेला पण ज्ज अने ज्जा विकल्पे थाय छे. जेम--होज्जइ, होज्जाइ–इत्यादि.

उदाहरण—गच्छ (गम्) धातुनां रूपो.

प्र०—गच्छेज्ज, गच्छेज्जा.

म०— ,, ,,

उ०— ,, ,,

'णि' प्रयोगमां गच्छावेज्ज, गच्छावेज्जा.

पक्षे-गच्छइ, गच्छउ, गच्छीअ, गच्छिहिइ, इत्यादि.

हो (भू) धातुनां रूपो.

	एकवचन,	बहुवचन
प्र०—	होज्जइ, होज्जाइ.	होज्जन्ति, होज्जान्ति–इ०
म०—	होज्जसि, होज्जासि.	होज्जित्था, होज्जह–इ०
उ०—	होज्जमि, होज्जामि.	होज्जामो, होज्जिमो, होज्जेमो–इ०

एवं होज्जउ, होज्जीअ, होज्जहिइ, होज्जाहिइ–इत्यादि.

पक्षे–होज्ज, होज्जा, हवइ--इत्यादि.

धातुओ.

पसारि (प्र + सृ + णि) पसारवुं, लांबुं करवुं.

अणुजाण (अनु+ज्ञा) अनुमोदवुं. संमति आपवी.

अइवाअ (अति + पात्) हिंसा करवी.

शब्दो.

सुभिक्ख (**सुभिक्ष**) न० सुकाल।

मणोरह (**मनोरथ**) पु० विचारणा।

जरा (**जरा**) स्त्री० वृद्धावस्था।

अवत्था (**अवस्था**) स्त्री० वय, दशा।

माआपिअर (**मातापितर**) पु० माबाप।

पुव्विं (**पूर्वं**) अ० पहले।

परित्थी (**परस्त्री**) स्त्री० पारकी स्त्री।

पच्छा (**पश्चात्**) अ० पछी।

सावज्ज (**सावद्य**) वि० सदोष, पाप।

पाढग (**पाठक**) पु० भणावनार।

सुवुट्ठि (**सुवृष्टि**) स्त्री० सारो वरसाद।

तिव्व (**तीव्र**) वि० तीक्ष्ण।

मुसा (**मृषा**) स्त्री० जुठुं।

कुरुल त्रि० (दे०) चतुर।

अडणी स्त्री. (दे०) मार्ग; रस्तो।

कालग्ग त्रि० (दे०) ठग; धूर्त।

वाक्यो.

१ पाए पसारिअ गुरुणो अन्तिए न चिट्ठेज्जा। २ स तिव्वबुद्धीए गहणसत्थेसु णिउणो होज्जइ। ३ तुमं इमं पुरिसं कहिं णेज्जसि। ४ सो णिच्चं सच्चं वयणं वएज्जा-(वयइ) कयावि असच्चं ण वएज्जा। ५ ते पुव्विं एत्थ आगमिअ पच्छा तत्थ गच्छेज्जा (गच्छन्तु)। ६ इमे सव्वे वि पाढगस्स सगासे सामाइअं पढेज्ज (पठिष्यन्ति)। ७ अह जराए अवत्थाए धम्मसत्थम्मि कुसलो होज्जाहिइ (भविष्यति)। ८ जइ सुवुट्ठी होज्ज तया सुभिक्खं होज्जा (अभविष्यत्)। ९ इमो माआपिअराणं सुट्ठु विणयं कुणेज्ज (अकरोत्)। १० णो पावो अइवाएज्जा, णो मुसं वएज्जा, पभाअम्मि सु-

हमणोरहे चिन्तेज्जा। ११ धम्मस्स कज्जम्मि खणं वि पमाअं माकुणेज्ज (कुरु)। १२ सावज्जं ण करेज्जा ण करावेज्जा करन्तं वि णाणुजाणेज्जा। १३ कुसलो जणो अडणीए कालएण सह ण गच्छेज्जा।

१ मनुष्यनो जन्म पामी नीतिथी वर्त्तवुं. २ जे सामर्थ्य वालो हशे ते जीतशे. ३ रावण धर्मी हतो पण परस्त्रीनी इच्छाथी नरकमां पड्यो. ४ श्रीमहावीरस्वामीए मावापनी घणी सेवा करी. ५ गायो वनमां पर्वत उपर फरे छे. ६ महात्माओ सर्वनुं भलुं करवाने चाहे छे. ७ राजा गाम बहार फरी पाछो गाममां आव्यो. ८ सर्वने अनीतिने रस्ते जतां रोको. ९ गरीबोनुं खरा जीगरथी रक्षण करवुं. १० परस्त्रीना प्रसंगथी मनमां डरो ११ सवारना पहोरमां मावापने पगे लागवुं. १२ तीर्थंकरो संयम लीधा पहेला एक वरस लगी दान देता. १३ हुं परोपकार वगरना धर्मने स्वीकारतो नथी.

बोधपाठ १६ मो.

(नाम विभक्ति चालु.)

युष्मद् अने अस्मद्.

१. सर्व विभक्तिना एकवचन अने बहुवचनना प्रत्ययो सहित युष्मद् अने अस्मद् ने नीचेना आदेशो थाय छे:—

युष्मद् (तुं) शब्दनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०—	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह.	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुब्भ, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे.

द्वि०—	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह, तुमे, तुए.	वो, तुज्झ, तुब्भे, तुम्हे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झे, तुय्हे, उय्हे, भे.
तृ०—	भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ.	भे, तुब्भेहिं, उब्भेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं, तुज्झेहिं, तुम्हेहिं, उज्झेहिं.
पं०	तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तहिन्तो. तइ (तइत्तो, तईओ, तईउ, तइणो, तईहिन्तो,) तुव, तुम, तुह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, (दरेकनां छ रूपो थाय छे, जेमके-तुवा, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ.	तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुय्ह, उय्ह, उम्ह, (दरेकनां नव रूपो थाय छे, जेमके-तुब्भत्तो, तुब्भओ, तुब्भउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भेहिन्तो, तुब्भासुन्तो, तुब्भेसुन्तो.)
ष०	तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम तुमे तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उज्झ, उम्ह, तुय्ह, उय्ह,	तु, भे, वो, तुज्झ, तुम्ह, तुब्भ, तुज्झं, तुम्हं, तुब्भं, तुब्भाण-णं, तुज्झाण-णं, तुम्हाण-णं, तुवाण-णं, तुहाण--णं, तुमाण-णं, उम्हाण- णं,
स०	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुव, तुम, तुह, तुम्ह, तुब्भ, तुज्झ. (दरेकनां चार रूपो थाय	×तुसु-सुं, तुवेसु--सुं, तुमेसु--सुं, तुहेसु--सुं, तुब्भेसु-- सुं, तुम्हेसु--सुं, तुज्झेसु--सुं.

× केटलाकने मते तुवसु-सुं, तुमसु-सुं, अने केटलाक ने मते तुवासु-सुं, तुमासु- सुं इत्यादि पण थाय छे.

छे, जेमके— तुवम्मि,)
तुवस्सिं, तुवत्थ, तुवहिं.

अस्मद् (हुं) शब्दनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहअं.	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वअं, भे,
द्वि०	णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं.	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे.
तृ०	मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मआइ, णे.	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे.
पं०	मइ, (मइनां पांच रूपो थाय छे जेमके—मइणो, मईहिन्तो, मइत्तो, मईओ, मईउ,) मम, मह, मज्झ, (दरेकनां छ रूपो थाय छे, जेमके—ममा, ममाहि, ममाहिन्तो, ममत्तो, ममाओ, ममाउ.)	मम, अम्ह, (दरेकनां नव रूपो थाय छे, जेमके—ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि, ममाहिन्तो, ममेहिन्तो, ममासुन्तो, ममेसुन्तो,
ष०	मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं.	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण-णं, ममाण-णं, महाण-णं, मज्झाण-णं,

स० मइ, मि, ममाइ, मए, मे; अम्ह, मम, मह, मज्झ, (दरेकनां चार रूपो थाय छे, जेमके— अम्हत्थ, अम्हस्सि, अम्हम्मि, अम्हहिं.)

×अम्हेसु--सुं, ×ममेसु--सुं, महेसु--सुं, मज्झेसु--सुं,

शब्दो.

कुढार (कुठार) पु० कुहाडो.
कोसल्ल (कौशल्य) न० आरोग्य, कुशलता.
समूह (समूह) न० जत्थो, समुदाय.
अस्स (अश्व) पु० घोडो.
गअ (गज) पु० हाथी.
भअ (भय) न० बीक, भीति.
जोह (योध) पु० योद्धो, लडवैयो.
विस्सास (विश्वास) पु० भरोसो.
देव (देव) पु० देवता, देव.
किच्च (कृत्य) न० कार्य.
वरिस (वर्ष) न० वरस, संवत्सर.
दुद्दसा (दुर्दशा) स्त्री० दुर्दशा.
पुण्ण (पूर्ण) वि० पूरेपुरुं.
सामि (स्वामिन्) पु० मालिक, उपरि.
भर (भर) पु० जथ्थो.
मुत्त (मुक्त) वि० छुटो, मुक्त.
गव्व (गर्व) पु० अभिमान.
गरीअ (गरीयस्) पु० अतिशय गुरु, मोटुं.
सन्त (सत्) व०कृ० विद्यमान, छतुं.
णिसेह (निषेध) पु० ना, मना.
लेस (लेश) पु० थोडुं, अंश.
सत्ति (शक्ति) स्त्री० सत्ता, सामर्थ्य.
उज्जम (उद्यम) न० उद्यम.

× केटलाकने मते अम्हसु--सुं, ममसु-- सुं अने केटलाकने मते अम्हासु--सुं, ममासु--सु, इत्यादि पण थाय छे.

भत्ति (भक्ति) स्त्री० भक्ति, बहुमान.

कलयंदि त्रि० (दे०) प्रख्यात.

कलय पु० (दे०) सुवर्णकार. सोनी.

धातुओ.

भिन्द् (भिद्) भेदवुं, कापवुं.

आकारि (आ+कृ+णि) बोलाववुं, साद करवो.

उववज्ज (उप+पद्) उपजवुं, उत्पन्न थवुं.

वलग्ग (आ+रुह्) चडवुं, उपर बेसवुं.

णिरुन्ध (नि+रुध्) रोकवुं, अटकाववुं.

सक्क (शक्) शकवुं.

वाक्यो.

१ तुं कुढारेण वच्छं व्व दाणेणं पावं भिन्दसि । २ अस्सं गअं वा वलग्गन्तो तुमं सुट्ठु दीसइ। ३ अम्मि तुम्हाण वयणं विणा अन्नं किं वि दट्ठुं णेच्छामि । ४ परिसाए रिअन्तेण तए किमट्ठं हं आकारिज्जामि । ५महत्तो तुहं किंचि वि भयं णत्थि । ६ अहयं सव्वेसिं जीवाणं कोसल्लं वाञ्छामि । ७ सेज्जम्मि उववज्जन्तं देवमण्णे देवा पुच्छन्ति सामी पुव्वभवम्मि तुमए किं दाणं कअं किं किच्चं कअं जेण इमा इड्ढी तुमे लहिआ । ८ अम्हेहिं एगवरिसम्मि जाव धणं विढत्तं ताव तुम्हेहिं वरिससएण वि किं अज्जीअहिइ । ९ अम्हाणं तु धम्मस्स च्चेअ वावारो अत्थि । १० अहं सव्वेसिं कहेहिमि को वि कहेहिइ, तया अम्मि रोच्छं । ११ तुवम्मि मज्झ पुण्णो विस्सासो अत्थि । १२ तुह पसाआओ जत्थ जत्थ अम्हे गच्छामो तत्थ तत्थ परं सुहं लहेमो । १३ जो तुवं भत्तिभरेण थुणाइ सो ते किवं लहिअ दुहाओ मुत्तो हवइ। १४ तुज्झे मणम्मि अस्हे वाञ्छह तं वयं खलु जाणामो । १५ जोहसमुद्दम्मि पविसन्तं ममं णिरुन्धिउं को

समत्थो अत्थि ? । १६ तुज्झत्तो अहिओ सेट्ठो अण्णो को अत्थि ? । १७ कस्सि वि सुहकज्जे कया वि महणिसेहो णत्थि । १८ धम्ममग्गम्मि णो सया एगा चिअ रीई वट्टइ । १६ मज्झ मणम्मि णत्थि गव्वलेसो वि । २० महाणं मज्झे को गरीओ को वा जेहिइ तं ण जाणामो । २१ तुवाण सगासे कइण्हं पुरिसाणं बलमत्थि ? । २२ मए जइ तुम्ह पसाओ होहिइ तया तुब्भे मज्झं दंसणं किं ण दाहिह । २३ तुमं कलयंदी कलओ दीससि ।

१ अमे सर्वने देखीए छीए, पण अमने कोई देखतुं नथी. २ तमे हमणां आ गाममां शुं उद्योग करो छो. ३ तमारा उपर कोनो भरोसो नथी. ४ अमने जेटलुं साचुं जणाय छे, तेटलुं स्वीकारीए छीए. ५ तमारामां आलस्य नथी, तेथी तमे सर्वत्र जय पामो छो. ६ जो कंइ पण आलस्य रहेसे तो ते तमने भयंकर दुःख आपशे. ७ तेने तमे जेवुं तेवुं जाणशो मां, ते एक भयंकर दुश्मन छे. ८ कोण कहे छे के तमे विद्वान् नथी. ९ अमाराथी बनी शके ते अमे करीए छीए. १० तमे महावीरना शासनने सेवो तेथी तमारुं कल्याण थशे. ११ तमारामां पूर्ण अमारो विश्वास छे. १२ तमाराथी सर्वनुं हित सधाय छे. १३ आमारामां शुं ज्ञान छे ? अमारी तो अपूर्ण बुद्धि छे. १४ तमारुं हित साधवाने तमारी पासे शक्ति छे. १५ तमारी पासे जेटलुं आत्मबल छे, तेनाथी तमे शुं शुं न करी शको. १६ छते बले कांइ उद्यम न करो एज तमारी दुर्दशा छे.

बोधपाठ २० मो.

केटलाएक तद्धित प्रत्ययो.

१. 'तदस्यास्तीति' अर्थमां संस्कृतमां थता 'मतुप्' प्रत्ययने स्थाने प्रयोगानुसारे आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त, इत्त, इर अने मण आदेश थाय छे. जेम— आलु--स्नेहोऽस्यास्तीति णेहालू, दयालू, ईसालू, लज्जालू. इल्ल--शोभाऽस्यास्तीति सोहिल्लो. उल्ल—मांसोऽस्यास्तीति मंसुल्लो, दप्पुल्लो. आल--शब्दोऽस्यातीति सद्दालो, जडालो. वन्त-धणवन्तो, भत्तिवन्तो. मन्त--हणुमन्तो, सिरिमन्तो, पुण्णमन्तो. इत्त-- कव्वइत्तो, माणइत्तो. इर-- गव्विरो, रेहिरो. मण-- धणमणो. आदेश मतुप्नेज थाय छे तेथी धनमस्यातीति धणी इत्यत्र इन्ने नथी थता.

२. यद्, तद्, तथा एतद् शब्दने परिमाण अर्थमां इत्तिअ, एत्तिअ, इत्तिल तथा एद्दह प्रत्यय लागे छे, अने ते लागतां शब्दना आदि व्यंजन सिवायना बाकीना भागनो लोप थाय छे. किं तथा इदं शब्दने पहेला सिवायना बाकीना त्रण प्रत्ययो पूर्ववत् लागे छे. जेमके— जित्तिअं, जेत्तिअं, जित्तिलं, जेद्दहं, तित्तिअं, तेत्तिअं, तित्तिलं; तेद्दहं; इत्तिअं, एत्तिअं, इत्तिलं, एद्दहं, केत्तिअं, कित्तिलं, केद्दहं; एत्तिअं, इत्तिलं, एद्दहं.

३. भावार्थक त्व अने तल् प्रत्ययोने स्थाने इमा अने त्तण आदेश विकल्पे थाय छे. जेम--पीनस्य भावः पीणिमा, पीणत्तणं. पक्षे पीणत्तं, पीणआ.

४. तुल्यार्थक वत् प्रत्ययने स्थाने व्व आदेश थाय छे. जेम-- सा गयव्व गच्छइ, गजेन तुल्यं गयव्व. वत् प्रत्ययान्त अव्यय होवाथी विभक्ति न आवे.

५. पञ्चम्यर्थक तस् ने स्थाने त्तो अने ओ. सप्तम्यर्थक त्र ने स्थाने त्थ, हि अने ह आदेश थाय छे. जेम— सव्वत्तो, सव्वओ (सर्वतः). एगत्तो, एगओ (एकतः). अण्णत्तो, अण्णओ. कत्तो, कओ. जत्तो, जओ इत्यादि । त्र— कत्थ, कहि, कह (कुत्र) . जहि, जह, जत्थ (यत्र) . अण्णहि, अण्णह, अण्णत्थ इत्यादि.

६. संख्यावाचक शब्दथकी वार अर्थमां थता कृत्वस् प्रत्ययने स्थाने हुत्त आदेश थाय छे. जेम— शतवारमिति सयहुत्तं (शतकृत्वः) सोवार. तिहुत्तं (त्रिकृत्वः)--त्रणवार. धा प्रत्यये तु सत्तहा. तिहा इत्यादि; कृत्वस् प्रत्ययान्तनी पण अव्यय संज्ञा छे.

७. शील, धर्म अने साधु अर्थमां इर प्रत्यय थाय छे. तेमां शीलार्थमां धातुथकी थाय छे. जेम— हसनशीलः हसिरो, भ्रमणशीलः भमिरो, लज्जाशीलः लज्जिरो. उदा० इत्थी लज्जिरो इत्यादि.

८. तस्येदं ए अर्थमां केर प्रत्यय थाय छे. युष्माकमयमिति तुम्हकेरो (युष्मदीयः) , अम्हकेरो (अस्मदीयः) .

तुम्ह तथा अम्ह शब्दने इदं अर्थमां एच्चअ प्रत्यय विकल्पे लागे छे. जेमके— तुम्हेच्चअं, अम्हेच्चअं. पर तथा राअ शब्दने इदं अर्थमां क्क तथा इक्क प्रत्यय विकल्पे लागे छे. जेमके— पारिक्कं, पारक्कं, पारकेरं; रा-

इक्कं, राअक्कं, राअकेरं. सव्वंग तथा पह शब्दने इदं अर्थमां इअ अने अप्प शब्दने णअ प्रत्यय लागे छे. जेमके— सव्वंगिओ, पहिओ, अप्पणअं.

९. तत्र भव ए अर्थमां इल्ल, अने उल्ल प्रत्ययो थाय छे. जेम— ग्रामे भवः गामिल्लो, पुरिल्लो, हैठिल्लो (अधो भव इत्यर्थः) आत्मनि भवः अप्पुल्लो.

१०. स्वार्थमां क्ष, इल्ल अने उल्ल प्रत्ययो थाय छे. अने त्व तथा तल प्रत्ययान्त थकी स्वार्थमां बीजीवार त्व तथा तल् प्रत्ययो थाय छे. जेम— अ–पिञ्जरमेवं पिंजरअं. गगनमेव गयणअं. कोई ठेकाणे बे वार क्ष थाय छे. बहुएव बहुअअं. इल्ल–पल्लव एव पल्लविल्लो, पुराएव पुरिल्लो, उल्ल–मुखमेव मुहुल्लं, हत्था एव हत्थुल्ला इत्यादि. त्व-मृदुत्वमेव मिउत्तत्तं, मइत्तत्तं (मृदुत्वकमित्यर्थः) .

नव, एक्क तथा उपरि शब्दने स्वार्थमां ल्ल प्रत्यय लागे छे. जेमके— नवल्लो, एक्कल्लो, उपरिल्लो. मीस शब्दने स्वार्थमां डालिअ अने दीह शब्दने र प्रत्यय विकल्पे लागे छे. जेमके— मीसालिअं, पक्षे मीसंः दीहरं, पक्षे दीहं. विज्जु, पत्त, पीअ तथा अन्ध शब्दने स्वार्थमां ल प्रत्यय विकल्पे लागे छे. जेमके – विज्जुला, पत्तलं, पीअलं, अन्धलो, पक्षे विज्जू , पत्तं, पीअं, अन्धो.

११. एक्क शब्दने काल अर्थमां सि, सिअं, इआ प्रत्ययो विकल्पे लागे छे. जेमके— एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ; पक्षे एक्कआ.

शब्दो.

णेह (स्नेह) पु० प्रेम, प्रीति.
दया (दया) स्त्री० दया, अनुकंपा.
लज्जा (लज्जा) स्त्री० लाज, शरम.
ईसा (ईर्ष्या) स्त्री० अदेखाई.
समिद्धि (समृद्धि) स्त्री० वैभव, ऋद्धि.
कुलीण (कुलीन) वि० खानदान.
कुरूव (कुरूप) वि० कदरूपुं.
अलंकार (अलंकार) पु० घरेणा, दागीना.
विज्जा (विद्या) स्त्री० ज्ञान, भणतर.
सोहा (शोभा) स्त्री० शोभा, सुंदरता.
रसाल (रसाल) वि० रसयुक्त.
रस (रस) पु० स्वाद. (२) स्वाद युक्त प्रवाही पदार्थ.
पवण (पवन) पु० पवन. (२) ते नामनो एक राजा.
हणुमन्त (हनुमत्) पु० हनुमान, पवन राजानो पुत्र.
अअ (अज) पु० बकरो.
गामिल्ल (ग्राम्य) वि० गामडीओ.
पुरिल्ल (पूर्य) वि० शहेरी.
अप्पुल्ल (आत्मिक) वि० आत्मिक, आत्मसंबंधी.
आणंद (आनंद) पु० आनंद.
भत्त (भक्त) पु० सेवक, अनुचर.
सिरि (श्री) स्त्री० लक्ष्मी, पैसो. (२) शोभा, कांति.
वित्त (वित्त) न० पैसो, लक्ष्मी.
गव्व (गर्व) पु० मद, अभिमान.
आइच्च (आदित्य) पु० सूर्य.
किरण (किरण) पु० किरण.
मिउ (मृदु) वि० कोमल.
वल्लह (वल्लभ) वि० प्रिय, वत्सल.
उ (तु) अ० तो.
पिंजर (पिंजर) न० पांजरुं.
गयणअ (गगन) न० आकाश.
दिणअ (दिन) न० दिवस.
रत्तिआ (रात्रि) स्त्री० रात.
पल्लव (पल्लव) पु० पत्रनी टीसी.

भक्खण (भक्षण) न० खावुं.

पीणिमा (पीनत्वं) जाडाइ, पुष्टता.

गोवच्छ (गोवत्स) पु० वाछरडो.

किस (कृश) वि० पातलुं.

णिवट्ट (नि+वृत्त) वि० निवर्त्युं.

भमिर (भ्रमिष्णु) वि० भमवाना स्वभाववालो.

केरिस (कीदृश) वि० केवो, केना जेवो.

जग (जगत्) न० दुनिआ.

विजअ (विजय) पु० विजय.

धुवं (ध्रुवं) अ० निश्चय.

सहिरत्तणं (सहिष्णुता) पु० सहन शीलता.

धातुओ.

परिभंस (परि+भ्रंश्) भ्रष्ट थवुं.

आच्छाअ (आ+छद्+णि) ढांकवुं. दबाववुं.

रंज (रंज्) रक्त थवुं, रंजन करवुं.

कंप (कम्प्) ध्रुजवुं, कंपवुं.

वाक्यो.

१ जो णेहालू सो दयालू वा लज्जालू हवइ । २ ईसालुणो मणं परस्स समिद्धिं दट्ठूण सया सयमेव तवइ । ३ सा कुलीणा इत्थी अकज्जम्मि लज्जालुआ अत्थि । ४ कुरूवोवि वत्थालंकारं विणा वि विज्जाए सोहिल्लो दीसइ । ५ रेरे रसालफलमोअसि किं रसं णो । ६ पवणस्स पुत्तो हणुमन्तो रामस्स भत्तो अहेसि । ७ सिरिमन्ता वि जइ वित्तेण परमत्थं ण कुणिज्जा तया अहेसि का रूहा । ८ गव्विरो जणो गव्वेण विणअत्तो परिभंसइ । ९ मण

सअहुत्तं तस्स कहिअं तह वि माणइत्तो स जणो ण मणइ। १० अहो इमस्स अअस्स जव भक्खणेण पीणिमा!। ११ अस्स दीणस्स गोवच्छस्स उ किसत्तमज्ज वि ण णिवट्टं। १२ एगत्तो धम्मिणो धम्मोवएसं कुणन्ति, अन्नओ अहम्मिणो अहम्मं कुणन्ति, एत्थ को जे हिइ। १३ जहि वाणिआ वसन्ति तहि तस्स गिहमत्थि। १४ अयं भमिरो बालो अम्हकेरं वयणं ण मणइ। १५ स गामिल्लो जणो पुरिल्लजणाण कहाए किं जाणइ?। १६ अप्पुल्लो आणंदो जाव ण जाणिज्जइ, ताव अन्नेसु विसयसुहेसु जणा रंजन्ति। १७ पिंजरअम्मि ठिओ पक्खी गयणअम्मि उड्डेउमिच्छइ। १८ सावया दिणअम्मि भुंजन्ति, रत्तिआए कयावि ण भोत्तव्वं। १९ पभाअम्मि आइच्चकिरणे हिं तरूणो पल्लविल्ला सोहन्ते। २० स हत्थुल्लेहिं मुहुल्लमाच्छाएऊण भयाओ कंपइ। २१ अहो अस्स हियअस्स केरिसं मिउत्तत्तं अणेण स जगवल्लहो होहीअ। २२ धणवंताणं गेहेसु पंडिआ वि किंकरत्त्वचिट्ठन्ति २३ पाणस्स पहणे जाओवि इमो अकज्जं न कुणइ।

---

१ बुद्धिमान् माणस सर्व स्थले विजय पामे छे. २ दयालुमाणस सर्व जनने वल्लभ लागे छे. ३ तेनुं मुख हमेश आनंदी देखाय छे. ४ तेना भाईओ घणा पैसावाला छे. ५ शहेरी लोको डाह्या अने विद्वान् होय छे. ६ एक तरफ सहन शीलता देखाय छे, त्यारे बीजी तरफ क्रोधरूप अग्नि पसरी रह्यो छे. ७ धनवान् करतां विद्यावान् माणस श्रेष्ठ छे. ८ धर्मी जनो नीतिना मार्गने कदी पण मुकता नथी. ९ ते सर्व जन्तुओने आत्मवत् जुए छे. १० ते परदाराने

माता अने बहेननी पेठे माने छे. ११ अमे गामडीआनी साथे वसीए छीए. १२ ज्यां कोई मना न करे त्यां अमे वसीए छीए. १३ गुरुभक्तिवान् माणस आत्मिक आनन्द मेलवे छे.

बोधपाठ २१ मो.

१. द्वि शब्द तथा नि उपसर्गना इनो प्रायः उ थाय छे. *
जेमके—

द्विमात्रः	दुमत्तो ।	द्विरेखः	दुरेहो ।
द्व्यादिः	दुआइ ।	द्विवचनम्	दुवयणं ।
द्विविधः	दुविहो ।	निमज्जति	णुमज्जइ ।
		निमग्नः	णुमन्नो ।

२. उप उपसर्गनो विकल्पे ऊ तथा ओ थाय छे. जेमके—

उपहसितम्	ऊहसिअं,	ओहसिअं,	उवहसिअं ।
उपाध्यायः	ऊज्झाओ,	ओज्झाओ,	उवज्झाओ ।
उपवासः	ऊआसो,	ओआसो,	उववासो ।

३. अव तथा अप उपसर्गनो अने विकल्पार्थक वाला उत अव्ययनो प्रायः विकल्पे ओ थाय छे × जेमके—

---

* क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके—

द्विगुणः दुउणो, विउणो । द्वितीयः दुइओ विइओ.

क्वचित् नथी थतो. जेमके— द्विओ (द्विजः)

× क्वचित नथी थतो. जेमके—

अवगतं अवगयं । अपशब्दः अवसद्दो । उतरविः उअरवी.

अवतरति ओअरइ, अवयरइ ।
अवकाशः ओआसो, अवयासो।
अपसरति ओसरइ, अवसरइ।
अपसारितम् ओसारिअं, अवसारिअं।
उतवनम् ओवणं, उअवणं ।
उतघनः ओघणो, उअघणो ।

४. पद् थकी पर अपिना अनो विकल्पे, अने इतिना इनो नित्ये लोप थाय छे; अने स्वरथकी पर होयतो इतिना तनुं द्वित्व थाय छे. जेमके—

तमपि तंपि, तमवि । किमिति किंति।
किमपि किंपि, किमवि। यमिति जंति ।
केनापि केणापि, केणावि । दृष्टमिति दिट्ठंति ।
कथमपि कहंपि, कहमवि । युक्तमिति जुत्तंति ।
तथेति तहत्ति । प्रिय इति पिओत्ति ।
झगिति झत्ति । पुरुष इति पुरिसोत्ति ।

५. वाक्यनी शरुआतमां इतिना तिमांना इनो अ थाय छे. जेमके— इअ जंपि आवसाणे.

६. मय प्रत्ययना आदि अनो विकल्पे अइ थाय छे. जेमके—

विषमयः विसमइओ, विसमओ.

७. कोइपण अव्ययना आदि आकारनो विकल्पे अ थाय छे. जेमके—

यथा जह, जहा । वा व, वा ।
तथा तह, तहा । हा ह, हा ।
अथवा अहव, अहवा ।

८. मात्र प्रत्ययना आकारनो विकल्पे एकार थाय छे. जेमके—

एतावान्मात्रम्— एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं ।

९. तीय, अनीय तथा कृदन्तमां थयेला य प्रत्ययना यकारनो विकल्पे ज्ज थाय छे. जेमके—

करणीयम्-करणिज्जं, करणीअं । पेया-पेज्जा, पेआ ।

द्वितीयः-विइज्जो, बीओ ।

१० वृषादि धातुना ऋवर्णने अरि आदेश थाय छे. जेमके—

वृष्— वरिस । मृष्— मरिस ।

कृष्— करिस । हृष्— हरिस ।

११. रुषादि धातुना उपान्त्य स्वरनो दीर्घ थाय छे. जेमके—

रुष्— रूस । दुष्— दूस ।

तुष्— तूस । पुष्— पूस ।

सुष्— सूस । शिष्— सीस ।

१२. धातुओमां क्वचित् एक स्वरने स्थाने बीजो स्वर विकल्पे थाय छे* जेमके—

हवइ, हिवइ । धावइ, धुवइ ।

चिणइ, चुणइ । रुवइ, रोवइ ।

सद्दहणं, सद्दहाणं ।

१३. शकादि धातुओना अन्त्य वर्णनुं द्वित्व थाय छे. जेमके—

शक्— सक्क । सिव्— सिव्व ।

* क्वचित् नित्य थाय छे. जेमके— देइ. लेइ. विहेइ. नासइ ।

जिम्—	जिम्म।	स्फुट्—	फुट्ट, फुड।
लग्—	लग्ग।	चल्—	चल्ल, पक्षे चल।
मग्—	मग्ग।	प्र+मिल्—	पमिल्ल, पक्षे पमील।
कुप्—	कुप्प।	नि+मिल्—	निमिल्ल, पक्षे निमील।
नश्—	नस्स।		
अट्—	अट्ट।	सम्+मिल्—	संमिल्ल, पक्षे संमील।
लुट्—	लोट्ट।		
तुट्—	तुट्ट।	उद्+मिल्—	उम्मिल्ल, पक्षे उम्मील।
नट्—	नट्ट।		

शब्दो.

जस (यशस्) पु० यश, कीर्ति.

जम्म (जन्मन्) पु० जन्म, उत्पत्ति स्थान.

पाउस (प्रावृष्) पु० चोमासुं.

सरअ(शरत्) पु० शरद ऋतु.

तरणि (तरणि) पु० सूर्य.

महिम (महिमन्) पु० स्त्री० गौरव.

अंजलि (अञ्जलि) पु० स्त्री० हथेली.

निहि (निधि) पु० स्त्री० भंडार.

नयण (नयन) पु० न० आंख.

वयण (वचन) पु० न० वचन.

गुण (गुण) पु० न० गुण.

देव (देव) पु० न० देव.

अच्छि (अक्षि) पु० स्त्री० न० आंख.

दाम (दामन्) न० माला.

सिर (शिरस्) न० माथुं.

नह (नभस्) न० आकाश.

सेय (श्रेयस्) न० श्रेय, सारुं.

वय (वयस्) न० उम्मर.

सुमण (सुमनस्) न० पुष्प.

सम्म (शर्मन्) न० सुख.

चम्म (चर्मन्) न० चामडी

निकिट्ठ (निकृष्ट) त्रि० अधम.

माहप्प (माहात्म्य) पु० न० माहात्म्य.

लुम्बी ( ) स्त्री० द्राक्ष विगेरे फलनी लुम.

संरम्भ (संरम्भ) पु० आटोप सूर्यना किरणोनो विस्तार.

दोवारिअ (दौवारिक) पु० द्वारपाल.

कयली (कदली) स्त्री० केल.

पहिअ (पथिक) त्रि० मुसाफर.

भसल ( ) पु० भमरो.

मिहुण (मिथुन) न० संयोग.

कंचणार (काञ्चनार) पु० कोविदार नामनुं झाड

लच्छी (लक्ष्मी) स्त्री० लक्ष्मी.

मालारी (मालाकारी) स्त्री० मालण.

लवली (लवली) स्त्री० लताविशेष.

केअई (केतकी) स्त्री० केतकी.

चीरी (चीरि) स्त्री० तमरुं.

उच्चिणिरी (उच्चेत्री) स्त्री० विणनारी.

धीवर (धीवर) पु० माछी.

बब्बर (बर्बर) त्रि० जंगली, मूर्ख.

मिलाण (म्लान) त्रि० करमाइ गएल.

दरवलिअ ( ) त्रि० भोगवाएल.

पुलइअ (पुलकित) त्रि० रोमाञ्चित थएल.

विलया (वनिता) स्त्री० स्त्री.

पयट्ट (प्रवृत्त) त्रि० प्रवृत्त थएल.

दक्खरस (द्राक्षारस) पु० द्राक्षनो रस.

पसविर (प्रसवशील) त्रि० उत्पादक.

उम्मीलण (उन्मीलन) त्रि० व्यक्त करनार.

लय (लय) पु० साम्यावस्था.

चुलुक्क (चौलुक्य) पु० चौलुक्य वंश.

जाइ (जाति) स्त्री० जाइना फूल.

विहि (विधि) पु० ब्रह्मा.

गिम्हसिरी (ग्रीष्मश्री) स्त्री० उन्हालानी ऋतुनी शोभा.

धातुओ.

वि-अस (वि-कस्) विकास पामवुं.

निअ (दृश्) जोवुं.

सुरह (सुरभ) ना० धा० सुगंधी करवुं.

अव्ययो.

तं— वाक्योपन्यासना अर्थमा.

पुणरुत्तं— फरीथीना अर्थमा.

हन्दि— विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, तथा सत्यना अर्थमा.

हन्द— ले ए अर्थमां.

वले— निर्धारण तथा निश्चयना अर्थमा.

णवरि— आनन्तर्यना अर्थमां.

वेव्वे— भय, वारण तथा विषादना अर्थमां.

वेव्व— आमंत्रणमा.

मामि }
हला } सखीना आमंत्रणमा.
हले }

हे— संमुखीकरण तथा सखीना आमंत्रणमां.

हुं— दान, प्रश्न तथा निवारणना अर्थमां.

रू— गर्हा, आक्षेप, विस्मय तथा सूचनाना अर्थमा.

थू— तिरस्कारना अर्थमा.

हरे— आक्षेप, संभाषण तथा रतिकलहना अर्थमा.

अव्वो— सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, तथा पश्चात्तापना अर्थमां.

अइ— संभावनाना अर्थमा.

वणे— निश्चय, विकल्प तथा अनुकंपाना अर्थमा.

मणे— विचार करवाना अर्थमां.

इहरा— अन्यथा.

इ }
जे } पाद पूरणमां
र }

गाथाओ.

लंबंतलुम्बि रंभारम्भियतोरणानिरुद्धसंरंभो ।
सरएवि पाउसम्मिव न जत्थ दीसइ फुडो तरणी ॥ १ ॥
जत्थ चुलुक्कनिवाणं परिमलजम्मो जसो कुसुमदामं ।
नहम् इव सव्वगओ दिसरमणीण सिराइँ सुरहेइ॥ २ ॥
सव्ववयाणं मज्झिमवयंव सुमणाण जाइसुमणं व ।
सम्माण मुत्तिसम्मंव पुहइनयराण जं सेयं ॥३॥
चम्मं जाण न अच्छी णाणं अच्छीइँ ताणवि मुणीण ।
विअसन्ति जत्थ नयणा किं पुण अन्नाण नयणाइं ? ॥ ४ ॥
गुरुणो वयणा वयणाइँ ताव महप्पम् अविय माहप्पो ।
ताव गुणाइंपि गुणा जाव न जस्सिं बुहे निअइ ॥ ५ ॥
हरिहरविहिणो देवा जत्थन्नाइँवि वसन्ति देवाइं ।
एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुरपुरीए ॥ ६ ॥
जत्थञ्जलिणा कणयं रयणाइँवि अञ्जलीइ देइ जणो ।
कणयनिही अक्खीणा रयणनिही अक्खया तहवि ॥ ७ ॥

कु० च० प्रथमे सर्गे २१–२७.

× × × × ×

तं निवपुच्छिअदोवारिएण भणिअं ति आम गिम्हसिरी
उगाहेइ सीअलाणवि कयलिवणे पेच्छ पुणरुत्तं ॥ ८ ॥
"हन्द विदेसो ! जीवइ हन्दि पिआ? हंन्दि किं पिआ मुक्का?।
हन्दि मरणं जम्मो गिम्हो हन्दि" लवन्ति इअ पहिआ ॥९॥
"हन्द महु हन्दि परिमलम् इमं"व्व भणिरेहि भसलमिहुणेहि
उअ सहइ कअणारो मउडो इव गिम्ह लच्छीए ॥ १० ॥
जणणिं मिव धूअंपिव नत्तिविअ भोअरं विव सहिव ।

मालारीओ सिणेहा नवकअ्रणकेअह्म् उवेन्ति ॥ ११ ॥
जेण अहुल्ला लवली वोलीणा णाइ वसन्तउउलच्छी ।
फुल्लं च धूलिकम्बं तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी ॥ १२ ॥
फुल्लच सुगन्धचिअ लयाण णोमालिआ वले रम्मा ।
जा किर मल्ली जा इर जवा वले ते मयणवाणा ॥ १३ ॥
सुत्ते जणम्मि जोहिर सद्दो चीरीण सुव्वए णवरि ।
गाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तस्स गिम्हसिरी ॥१४॥
पहिआ अलाहि गन्तुं अणदइआण कुसलाइँ इह णाइं ।
माइँ इह एथ हद्धी इअव्व चीरीहि उल्लविअं ॥ १५ ॥
समुद्दोट्ठि अम्मि भमरे वेव्वेत्ति भणेइ मल्लि उच्चिणिरी ।
वारणखेअभएहिं भणिउं वेव्वे वयंसेत्ति ॥ १६ ॥
वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद मामि रम जासि कत्थ हले ।
दे पसिअ किमसि रुट्ठा ? हुं गिण्हसु कणयभायणयं ॥१७॥
हुं तुह पिओ न आओ ? हुं किं तेणज्ज ? सो हु अन्न रओ ।
तुमयं खु माणइत्ता तस्स हु जुग्गा सि सा खु न तं ॥१८॥
सहि वव्वरो खु अह धीवरो हु एसो खु तुज्झ ऊ रमणो ।
ऊ इअ हसेइ लोओ इमम्मि ऊ किं मए भणिअं ॥ १९ ॥
ऊ अच्छरा मह सही थू रे निक्किट्ठ कलहसील अरे ।
दासो सि इमाइ हरे सढो सि ओ ओ किमसि दिट्ठो ॥२०॥
अव्वो नओ तुह पिओ अव्वो तम्मेसि कीस ? किं एसो ।
अव्वो अन्नासत्तो ? अव्वो तुज्झेरिसो माणो ! ॥ २१ ॥
अव्वो पिअस्स समओ ! अव्वो सो एइ रूसणो अव्वो ।
अव्वो कट्ठं ! अव्वो किं एसो सहि मए वरिओ ॥ २२ ॥
अइ एसि रहघराओ वणे मिलाणा सि दइअ दरवलिआ ।
सुणिमो वणे न मुणिमो तं न वणे कहइ नजम् अङ्ग ॥२३॥

दासो वणो न मुचइ मणो पिओ तुज्झ मुचइ स अम्मो ।
पत्तो खु अप्पणोच्चिअ तए सयं चेअ निउणाए ! ॥ २४ ॥
पाडिक्कं दइआओ ताण वयंसीओ पाडिएक्कं च ।
पत्तेअं मित्ताइं उअ एसो एइ भासन्तो ॥ २५ ॥
देक्ख तुहेसो दइओ कहम् इहरा पुलइआ सि दट्ठुम् इमं ।
भणिमो न वयम् इअरहा मुणिअम् इमं एक्कसरिअंति ॥२६॥
मा तम्म मोरउल्ला दरविअसिअ-बन्धुजीवकुसुमोट्ठि ।
अणुसोचसि धुत्तम् इमं सरलसहावे किणो रमणं ॥२७॥
वारविलयाइ एआ गिम्हंसुहं माणिउं पयट्टा जे ।
इअ जंबि तंपि लविराओ पिअन्ति र पिक्कदक्खरसं ॥२८॥

— कु० च० चतुर्थ सर्ग १--२१.

× × × × ×

अणाउम्मिल्लिअनाणोम्मीलणा हरिसपसविरा लोए ।
सुअजलम् ओज्झाया पवरिसन्तु वित्थरिअगुणभरिआ ॥२९॥
जो रूसइ नो तूसइ जेऊण मणं लयम्मि जो नेन्तो ।
मोत्तुं भवं विणीअं तं साहुजणं नमंसामि ॥ ३० ॥
उप्पाइअसद्दहणो असद्दहाणेवि देइ जो बोहिं ।
संसारनासिरो हं तं माहुं चिय विहेमि गुरुं ॥ ३१ ॥

—कु० च० सप्तमे सर्गे ६५–६७.

बोधपाठ २२ मो.

अवशिष्टविधि.

१. कारक, समास, तद्धित, इच्छादर्शक वगेरे प्रक्रिया अने अवशिष्ट कृदन्त–विधि सर्व संस्कृतवत् थाय छे. अर्थात् नाम. कर्म वगेरेमां प्रथमा- द्वितीयादि विभक्तिओ जेम संस्कृतमां आवे छे तेवीज रीते प्राकृतमां पण आवे छे. समास पण कर्मधारय– तत्पुरुष वगेरे योग्यता-मुजब संस्कृतनी पेठेज प्राकृतमां थाय छे. तद्धित तथा कृदन्तना जे नियमो आगल बताव्या छे, ते सिवायना तद्धित कृदन्तनां संस्कृत सिद्धरूपोनेज नियमावलिना नियमो लगाडवाथी प्राकृत रूपो सधाय छे.

कारक.

संस्कृत.		प्राकृत.
कुलालो घटं करोति	—	कुलालो घडं कुणइ ।
कुलालेन घटः क्रियते	—	कुलालेण घडो करिज्जइ ।
दण्डेन घटः क्रियते	—	दण्डेण घडो करीअइ ।
साधुभ्योऽन्नं ददाति	—	साहूणमन्नं देइ ।
पर्वतात् प्रस्तरःपतति	—	पव्वआओ पत्थरो पडइ ।
गृहस्थानामिदं धनम्	—	गिहत्थाणमिणं धणं ।
शिलायामास्ते	—	सिलाए अच्छइ ।
गृहे तिष्ठति	—	गिहे चिट्ठइ ।

समासोनां उदाहरणो.

अव्ययीभाव.

घटस्य समीपमुपघटम् । उवघडं दीवो अत्थि ।

सुखमनतिक्रम्य यथासुखम् । जहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह ।

तत्पुरुष.

जिनं श्रितो जिनश्रितः । जिणस्सिओ जिणभत्तो ।
धनेन क्रीतं धनक्रीतम् । धणकीअमिदं वत्थं ।
दानाय धनं दानधनम् । दाणधणं जाव विढत्तं ताव सफलं ।
पापाद् भयं पापभयम् । अस्स मणम्मि सया पावभयं वट्टइ ।
राज्ञः पुरुषो राजपुरुषः धर्मे कुशलो धर्मकुशलः } इमो राअपुरिसो खलु धम्मकुसलो अत्थि ।

द्वंद्व समास.

धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्च धर्मार्थकाममोक्षाः } धम्मत्थकाममोक्खा चत्तारि पुरिसत्था ।
हस्तौ च पादौ च तयोः समाहारः हस्तपादम् । } तस्स हत्थपाअं सुकुमालमत्थि ।

कर्मधारय—

नीलं च तदुत्पलं च नीलोत्पलम् । णीलुप्पलव्व तस्स मुहं ।
महांश्चासौ पुरुषश्च महापुरुषः । महापुरुसस्स चयणामवहा ण हवइ ।
मुखं चन्द्र इव मुखमेव वा चन्द्रः मुखचन्द्रः । जिणस्स मुहचन्दो सोहइ ।
न हिंसा अहिंसा । अहिंसा संजमो तवो ' ' ।

बहुव्रीहि—

बहु धनं यस्य स बहुधनः। * बहुधणो (बहूधणो) पुरिसः।

धर्मे बुद्धिर्यस्य स धर्मबुद्धिः। धम्मबुद्धी सव्वत्थ जयइ।

तद्धित—

दशरथस्यापत्यं दाशरथिः— दासरथी रामो सोमावई।

कुंकुमेन रक्तं कौंकुमम्— कोंकुमं वत्थं धरेइ।

मथुराया आगतो माथुरः— माहुरो संघो कहिं गच्छइ।

कवचानां समूहः कावचिकम्— रक्खगेहिं कावइअं रक्खीअइ।

फलमस्यास्तीति फली — इमो वच्छो फली अत्थि।

तुन्दिरस्यास्तीति तुन्दिलः — तुन्दिलो पुरिसो।

तपो विद्यतेऽस्य तपस्वी — सो साहू तवस्सी कहिज्जइ।

ईषदऽपरिसमाप्तः पटुः पटुदेश्यः — अयं बालो पडुदेस्सो।

मृत्तिकाया विकारो मृत्तिकामयो घटः — मट्टिआमयो घडो।

द्वारि नियुक्तो दौवारिकः — अंतरं रिएउं दौवारिअं पुच्छइ

न्यायमधीते वेद वा नैयायिकः—नेयाइओ पंडिओ।

लज्जा संजाताऽस्य लज्जितः —पावेण लज्जिओ पच्छा तवइ।

अतिशयेन लघु लघीयान्-लघिष्ठः —लहिट्ठो लहीओ वा।

---

* समासमां पूर्वपदनो अन्तिम स्वर ह्रस्वनो दीर्घ अने दीर्घनो ह्रस्व विकल्पे थाय छे।

आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति --पुत्तीयइ देवदत्तो ।
कलहं करोति कलहायते —कलहायइ ।
श्येन इवाचरति श्येनायते --सेणायइ कागो ।
द्वयोस्त्रयाणां वा संख्यापूरकः द्वितीयस्तृतीयः } बिईओ तईओ वा ।
शतवारानिति शतशः —सयसो सहस्ससो वा संसारे भमिओ ।

प्रक्रिया—

पक्तुमिच्छति पिपक्षतिः --सूओ ओयणं पिवक्खइ ।
गन्तुमिच्छति जिगमिषति --स गामं जिगमिसइ ।

कृदन्त—

करोतीति कर्त्ता-कारकः-कुलालो घडस्स कत्ता-कत्तारो-कारओ वा ।
ददातीति दाता-दायकः—दाआ, दायगो वा इमो जणो ।
तपति ज्वलति वा तपनः ज्वलनः } —तवणो जलणो वा अग्गी ।
कुंभं करोतीति कुंभकारः —कुंभआरो-कुंभारो वा ।
सर्वं कषतीति सा सर्वंकषा —सव्वंकसा नई ।
असहायः सहायः सम्पद्यमानस्तथाकरणं सहायीकरणम् } —सहाईकरणं ।
पचनं पाकः —पयणं, पाओ ।
पाकेन निर्वृत्तं पक्त्रिमं फलम् —पत्तिमं फलं ।
पच्यतेऽनेनेति पचनः --पयणो अग्गी ।
पच्यतेऽस्यामिति पचनी --पयणी थाली ।

दुःखेन क्रियते दुष्करः	—दुक्करं तवं ।
कर्त्तुमर्हं क्रियते वा कर्त्तव्यं-करणीयं	—कायव्वं करणीयं वा समणाणां ।
जीयते जेतुमर्हं वा जेयं ।	—जेयमिन्दियं ।
क्रियते तत्कृत्यं कार्यं वा	—किच्च-कज्जं वा ।
करणं कृतिः	—इमा सुकइणो कई-इत्यादि ।
स्थानं स्थितिः	—एगसागरोवमठिई पण्णत्ता ।

शब्दो

पक्खिय (पाक्षिक) त्रि. पाखीनुं

अबीअ (अद्वितीय) त्रि. एकाकी

पुव्वरत्तावरत्त (पूर्वरात्रापररात्रि) न. मधरात.

राईसर (राजेश्वर) पु. महाराज.

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) त्रि. परूपेल.

अणुव्वइय (अणुव्रतिक) त्रि. अणुव्रत युक्त.

सिक्खावइय (शिक्षाव्रतिक) त्रि. शिक्षाव्रतयुक्त.

दुवालस (द्वादश) त्रि. बार.

दूइज्जमाण( )त्रि. चालता छता.

अज्झत्थिय (अध्यवसित) न. अध्यवसाय; परिणाम.

हट्ठतुट्ठ (हृष्टतुष्ट) त्रि. संतुष्ट.

अणवयग्ग (अनवदग्र) त्रि. अनन्त.

संपेहेत्ता (संप्रेक्ष्य) अ. विचारकरी.

सद्दावेत्ता (शब्दापयित्वा) अ० बोलावीने.

वास (वर्ष) न. बरस.

भत्त (भक्त) न. टंक.

खिप्पामेव (क्षिप्रमेव) अ. सत्वर.

उदायन-कथा

तए णं से उदायणे राया अन्नया कयाइ पोसहसालाए पोसहिए एगे अबीए पक्खियं पोसहं सम्मं पडिजागरमाणे

विहरइ। तओ तस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जागरियं करेमाणस्स एयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था: 'धन्ना णं ते गामनगरा, जत्थ णं समणे वीरे विहरइ, धम्मं कहेइ; धन्ना णं ते राईसरपभिईओ, जे समणस्स महावीरस्स अन्तिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेन्ति, एवं पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं दुवालसविहं पडिवज्जन्ति, एवं मुण्डा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयन्ति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं दूइज्जमाणे इहेव वीयभए आगच्छेज्जा, ता णं अहम्मवि भगवओ अन्तिए मुण्डे भवित्ता जाव पव्वएज्जा'। तए णं भगवं उदायणस्स एयारूवं अज्झत्थियं जाणित्ता चम्पाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीयभए नयरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव विहरइ। तओ परिसा निग्गया उदायणे य। तए णं उदायणे महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा हट्ठतुट्ठे एवं वयासी:—'जं नवरं जेट्ठपुत्तं रज्जे अहिसिञ्चामि तओ णं तुब्भं अन्तिए पव्वयामि'। सामी भणइ:— 'अहासुहं मा पडिबन्धं करेह'। तओ णं उदायणे आभिओगियं हत्थिरयणं दुरूहित्ता सए गिहे आगए। तओ उदायणस्स एयारूवे अज्झत्थिए जाए:—'जइ णं अभिइं कुमारं रज्जे ठवित्ता पव्वयामि, तो अभिई रज्जे य रट्ठे य जाव जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए अणाइयं अणवयग्गं संसारकन्तारं अणुपरियट्टिस्सइ। तं सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठवित्ता पव्वइत्तए'। एवं संपेहेत्ता सोभणे तिहिकरणमुहुत्ते कोडुम्बियपुरिसे य सद्दावित्ता एवं वयासी 'खिप्पामेव केसिस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह। तओ

महिड्ढीए अभिसित्ते केसी कुमारे राया जाए जाव पसासेमाणे विहरइ'। तओ उदायणे राया केसिं रायं आपुच्छइ:-'अहण्णं देवाणुप्पिया संसारभउव्विग्गो पव्वयामि'। तओ केसी राया कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी:'खिप्पामेव उदायणस्स रन्नो महत्थं महरिहं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह'। तओ महया विभूईए अभिसित्ते सिबियारूढे भगवओ समीवे गन्तूण पव्वइए जाव बहूणि चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसमासद्धमासाईणि तवोकम्माणि कुव्वमाणे विहरइ।

\+ + + + +

तओ से उदायणे अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुण्डभावे तमट्ठं पत्ते जाव दुक्खपहीणेत्ति।

आदेशावलि

शब्द। आदेशो

नियमावलिना अपवाद रूप तथा विशेष नियमोथी सिद्ध थता शब्दो नीचे आपवामां आवे छे:—

अ=आ

समृद्धिः	सामिद्धी समिद्धी
प्रसिद्धिः	पासिद्धी पसिद्धी
प्रकटम्	पायडं पयडं
प्रतिपत्	पाडिवआ पडिवआ
प्रसुप्तः	पासुत्तो पसुत्तो
प्रतिसिद्धिः	पाडिसिद्धी पडिसिद्धी

सदृक्षः सारिच्छो सरिच्छो
मनस्वी माणंसी मणंसी
मनस्विनी माणंसिणी मणंसिणी
अभियाति आहिआइ अहिआइ
प्ररोहः पारोहो परोहो
प्रवासी पावासू पवासू
प्रतिस्पर्द्धी पाडिप्फद्धी पडिप्फद्धी
अस्पर्शः आफंसो
परकीयम् पारकेरं पारक्कं
प्रवचनम् पावयणं
चतुरन्तम् चाउरन्तं
दक्षिणः दाहिणो दक्खिणो
न पुनः न उणा, न उण.

अ=इ

स्वप्नः सिविणो सिमिणो
ईषत् ईसि
वेतसः वेडिसो
व्यलीकम् विलिअं
व्यजनम् विअणं
मृदङ्गः मुइंगो
कृपणः किविणो
उत्तमः उत्तिमो
मरिचम् मिरिअं
दत्तम् दिण्णं
पक्वम् पिक्कं .पक्कं

अङ्गारः इंगालो अंगारो
ललाटम् णिडालं णडालं
मध्यमः मज्झिमो
ककुभः कउहो
सप्तपर्णः छत्तिवण्णो छत्तवण्णो

अ= आइ

न पुनः न उणाइ, न उण
पुनः पुणाइ

अ=ई

हरः हीरो हरो

अ=उ

ध्वनिः भुणी
विष्वक् वीसुं
चन्द्रम् चुन्द्रं चन्द्रं
खण्डितः खुडिओ खण्डिओ.
गवयः गउओ गउआ.
प्रथमम् पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं.
अभिज्ञः अहिण्णू
सर्वज्ञः सव्वण्णू
कृतज्ञः कयण्णू
आगमज्ञः आगमण्णू

अ=ए

शय्या सेज्जा
सौन्दर्यम् सुन्देरं
कन्दुकम् गेन्दुअं

अत्र	एत्थ	
वल्ली	वेल्ली	वल्ली
उत्कर:	उक्केरो	उक्करो
पर्यन्त:	पेरन्तो	पज्जन्तो
आश्चर्यम	अच्छेरं	अच्छरिअं
	अच्छअरं,	अच्छरिज्जं,
	अच्छरीअं	
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं	बम्भचेरं
अन्त:पुरम्	अन्तेउरं	
अन्तश्चारी	अन्तेआरी	

अ=ओ

पद्मम्	पोम्मं	
नमस्कार:	नमोक्कारो	
परस्परम्	परोप्परं	
अर्पयति	ओप्पेइ	अप्पेइ
स्वपिति	सोवइ	सुवइ

आ=अ

उत्खातम्	उक्खयं	उक्खायं
चामर:	चमरो	चामरो
कालक:	कलओ	कालओ
स्थापित:	ठविओ	ठाविओ
प्राकृतम्	पययं	पाययं
तालवृन्तम	तलवेंटं	तालवेंटं
	तलवोंटं	तालवोंटं
हालिक:	हलिओ	हालिओ

नाराच: — नराओ — नाराओ
बलाका — बलया — बलाया
कुमार: — कुमरो — कुमारो
खादिरम् — खइरं — खाइरं
परिस्थापित: — परिठविओ — परिठाविओ
संस्थापित: — संठविओ — संठाविओ
महाराष्ट्रम् — मरहट्ठं
मांसम् — मंसं
पांसु: — पंसू
पांसन: — पंसणो
कांस्यम् — कंसं
कांसिक: — कंसिओ
वांशिक: — वंसिओ
पांडव: — पंडवो
सांसिद्धिक: — संसिद्धिओ
सांयात्रिक: — संजत्तिओ
श्यामाक: — सामओ
आचार्य: — आयरिओ,

आ=इ

सदा — सइ — सआ
निशाचर: — निसिअरो — निसाअरो
कूर्पास: — कुप्पिसो — कुप्पासो
आचार्य: — आइरिओ

आ=ई

स्त्यानम् — ठीणं; थीणं; थिण्णं

खल्वाट: खल्लीडो

आ=उ

सास्ना सुण्हा
स्तावकः थुवओ
आर्द्रम् उल्लं, अल्लं

आ=ऊ

आसार: ऊसारो आसारो
आर्या (श्वश्रूः) अज्जू

आ=ए

ग्राह्यम् गेज्झं
द्वारम् देरं, दुआरं, दारं, बारं
पारापत: पारेवओ पारावओ

आ=ओ

आर्द्रम् ओल्लं, अल्लं.
आली (पंक्तिः) ओली.

इ=ए

किंशुकम् केसुअं किंसुअं
मिरा मेरा

इ=अ

पन्थाः पहो
पृथिवी पुहई. पुढवी.
प्रतिश्रुत् पडंसुआ
मूषिक: मूसओ
हरिद्रा हलद्दी. हलद्दा
बिभीतक: बहेडओ

शिथिलम्	सढिलं,	सिढिलं
इङ्गुदम्	अंगुअं	इंगुअं
तित्तिरिः	तित्तिरो	

इ=ई

जिह्वा	जीहा
सिंहः	सीहो
त्रिंशत्	तीसा
विंशतिः	वीसा

इ=उ

प्रवासिकः	पावासुओ	
इक्षुः	उच्छू	
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो,	जहिट्ठिलो
द्विधाक्रियते	दुहाकिज्जइ	
द्विधाकृतम्	दुहाइअं	

इ=ओ

द्विधाक्रियते	दोहाकिज्जइ	
द्विधाकृतम्	दोहाइअं	
निर्झरः	ओज्झरो	निज्झरो

ई=अ

हरीतकी	हरडई

ई=आ

कश्मीराः	कम्हारा

ई=इ

पानीयम्	पाणिअं
अलीकम्	अलिअं

जीवति	जिअइ	
जीवतु	जिअउ	
व्रीडितम्	विलिअं	
करीषः	करिसो	
शिरीषः	सिरिसो	
द्वितीयम्	दुइअं	
तृतीयम्	तइअं	
गभीरम्	गहिरं	
उपनीतम्	उवणिअं	
आनीतम्	आणिअं	
प्रदीपितम्	पलिविअं	
अवसीदन्तम्	ओसिअन्तं	
प्रसीद	पसिअ	
गृहीतम्	गहिअं	
वल्मीकः	वम्मिओ	
तदानीम्	तआणिं	
	ई=उ	
जीर्णम्	जुण्णं	
	ई=ऊ	
हीनः	हूणो,	हीणो
विहीनः	विहूणो,	विहीणो
तीर्थम्	तूहं	तित्थं
	ई=ए	
पीयूषम्	पेऊसं	
आपीडः	आमेलो	

विभीतकः	बहेडश्रो
कीदृशः	केरिसो
ईदृशः	एरिसो
नीडम्	नेडं, नीडं
पीठम्	पेढं, पीढं

उ=श्र

मुकुलम्	मउलं
मुकुरम्	मउरं
मुकुटम्	मउडं
अगुरु	अगरुं
गुर्वी	गरुई
युधिष्ठिरः	जहिट्ठिलो जहुट्ठिलो
सौकुमार्यम्	सोअमल्लं
गुडूची	गलोई
उपरि	अवरिं उवरिं
गुरुकः	गरुश्रो गुरुओ

उ=आ

बाहुः(स्त्री०)	बाहा

उ=इ

भ्रुकुटिः	भिउडी
पुरुषः	पुरिसो
पौरुषम्	पउरिसं

उ=ई

क्षुतम्	छीअं

उ=ऊ

सुभगः — मूहवो सुहओ
मुसलम् — मूसलं मुसलं
उत्सुकः — ऊसुओ
उत्सवः — ऊसओ
उत्सिक्तः — ऊसित्तो
उत्सरति — ऊसरइ
उच्छुकः[1] — ऊसुओ
उच्छ्वसिति — ऊससइ

उ=ओ

कुतूहलम् — कोऊहलं, कुऊहलं, कोउहल्लं.

ऊ=अ

सूक्ष्मम् — सण्हं, सुण्हं
दुकूलम् — दुअल्लं, दुऊलं

ऊ=इ

नूपुरम् — निउरं, नूउरं

ऊ=ई

उद्व्यूढम् — उव्वीढं, उव्वूढं

ऊ=उ

भ्रूः — भुमया
हनूमान — हणुमन्तो
कण्डूयति — कण्डुअइ
वातूलः — वाउलो
मधूकम् — महुअं महूअं

[1] उच्छुकः सुखा पवनान उच्छुकः

ऊ=ए

नूपुरम्	नेउरं, नूउरं

ऊ=ओ

कूष्माण्डी	कोहण्डी कोहली
तूणीरम्	तोणीरं
कूर्परम्	कोप्परं
स्थूलम्	थोरं
ताम्बूलम्	तम्बोलं
गुडूची	गलोई
मूल्यम्	मोल्लं
स्थूणा	थोणा थूणा
तूणम्	तोणं तूणं

ऋ=अ

ऋणम्	अणं, रिणं.

ऋ=आ

कृशा	कासा किसा
मृदुकम्	माउक्कं मउअं
मृदुत्वम्	माउक्कं मउत्तणं

ऋ=इ

कृपा	किवा
हृदयम्	हिययं
मृष्टम्(रसे)	मिट्टं
दृष्टम्	दिट्टं
दृष्टिः	दिट्ठी
सृष्टम्	सिट्ठं

सृष्टिः	सिट्ठी
गृष्टिः	गिण्ठी
पृथ्वी	पिच्छी
भृगुः	भिऊ
भृङ्गः	भिंगो
भृङ्गारः	भिंगारो
शृङ्गारः	सिंगारो
शृगालः	सिआलो
घृणा	घिणा
घुसृणम्	घुसिणं
वृद्धकविः	विद्धकई
समृद्धिः	समिद्धी
ऋद्धिः	इद्धी, रिद्धी
गृद्धिः	गिद्धी
कृशः	किसो
कृशानुः	किसाणू
कृसरा	किसरा
कृच्छ्रम्	किच्छं
तृप्तम्	तिप्पं
कृषितः	किसिओ
नृपः	निवो
कृत्या	किच्चा
कृतिः	किई
धृतिः	धिई
कृपः	किवो

कृपणः — किविणो
कृपाणः — किवाणं
वृश्चिकः — विञ्चुओ
वृत्तम् — वित्तं
वृत्तिः — वित्ती
हृतम् — हिअं
व्याहृतम् — वाहित्तं
बृंहितः — बिंहिओ
वृषी — विसी
ऋषिः — इसी, रिसी
वितृष्णः — विइण्हो
स्पृहा — छिहा
सकृत् — सइ
उत्कृष्टम् — उक्किट्ठं
नृशंसः — निसंसो
पृष्ठम् — पिट्ठी — पट्ठी
मसृणम् — मसिणं — मसणं
मृगाङ्कः — मिअंको — मयंको
मृत्युः — मिच्चू — मच्चू
शृङ्गम् — सिंगं — संगं
धृष्टः — धिट्ठो — धट्ठो
मातृगृहम् — माइहरं
वृष्टः — विट्ठो
वृष्टिः — विट्ठी
पृथक् — पिहं

मृदङ्गः	मिइंगो
नप्तृकः	नत्तिओ
बृहस्पतिः	बिहप्फई
	बहप्फई
वृन्तम्	विण्टं

ऋ—उ

ऋतुः	उऊ,	रिऊ
परामृष्टः	परामुट्ठो	
स्पृष्टः	पुट्ठो	
प्रवृष्टः	पउट्ठो	
पृथिवी	पुहई	
प्रवृत्तिः	पउत्ती	
प्रावृट्	पाउसो	
प्रावृतः	पाउओ	
भृतिः	भुई	
प्रभृति	पहुडि	
प्राभृतम्	पाहुडं	
परभृतः	परहुओ	
निभृतम्	निहुअं	
निवृतम्	निउअं	
विवृतम्	विउअं	
संवृतम्	संवुअं	
वृत्तान्तः	वुत्तंतो	
निर्वृतम्	निव्वुअं	
निर्वृतिः	निव्वुई	

वृन्दम्	वुन्दं	
वृन्दावनः	वुन्दावणो	
वृद्धः	वुड्ढो	
वृद्धिः	वुड्ढी	
ऋषभः	उसहो,	रिसहो
मृणालम्	मुणालं	
ऋजुः	उज्जू,	रिज्जू
जामातृकः	जामाउओ	
मातृकः	माउओ	
मातृका	माउआ	
भ्रातृकः	भाउओ	
पितृकः	पिउओ	
पृथ्वी	पुहुवी	
निवृत्तम्	निवुत्तं,	निअत्तं
वृन्दारका	वुन्दारया	वन्दारया
वृषभः	उसहो,	वसहो
मातृमण्डलम्	माउमंडलं	
मातृगृहम्	माउहरं,	माइहरं
पितृगृहम्	पिउहरं	
मातृष्वसा	माउसिआ	
पितृष्वसा	पिउसिआ	
पितृवनम्	पिउवणं	
पितृपतिः	पिउवई	
मृषा	मुसा	
मृषावादः	मुसावाओ	

वृष्टः — वुट्ठो
वृष्टिः — वुट्ठी
पृथक् — पुहं
मृदङ्गः — मुइंगो
नप्तृकः — नत्तुओ
बृहस्पतिः — बुहप्फई, बहप्फई

ऋ=ऊ

मृषा — मूसा
मृषावादः — मूसावाओ

ऋ=ए

वृन्तम् — वेण्टं

ऋ=ओ

वृन्तम् — वोण्टं
मृषा — मोसा
मृषावादः — मोसावाओ

ऋ=हि

आहृतः — आहिओ

ऋ=अरि

दृप्तः — दरिओ

ऋ=रि

ऋणम् — रिणं, अणं
ऋजुः — रिज्जू, उज्जू
ऋषभः — रिसहो, उसहो
ऋषिः — रिसी, इसी
ऋतुः — रिऊ, उऊ

सदृशः	सरिसो
सदृक्षः	सरिच्छो
एतादृशः	एआरिसो
भवादृशः	भवारिसो
यादृशः	जारिसो
तादृशः	तारिसो
कीदृशः	केरिसो
ईदृशः	एरिसो
अन्यादृशः	अन्नारिसो
अस्मादृशः	अम्हारिसो
युष्मादृशः	तुम्हारिसो
सदृग्वर्णः	सरिवण्णो

ए=इ

वेदना	विअणा	वेअणा
चपेटा	चविडा	चवेडा
देवरः	दिअरो	देवरो
केसरम्	किसरं	केसरं

ए=ऊ

स्तेनः	थूणो,	थेणो

ऐ=इ

सैन्धवम्	सिन्धव	
शनैश्चरः	णिच्छरो	
सैन्यम्	सिन्नं,	सेन्नं

ए=अइ

सैन्यम्	सइन्नं

दैत्यः दइच्चो
दैन्यम् दइन्नो
ऐश्वर्यम् अइसरिअं
भैरवः भइरवो
वैजवनः वइजवणो
दैवतम् दइवअं
वैतालीयम् वइआलीअं
वैदेशः वइएसो
वैदेहः वइएहो
वैदर्भः वइदब्भो
वैश्वानरः वइस्साणरो
कैतवम् कइअवं
वैशाखः वइसाहो
वैशालः वइसालो
स्वैरम् सइरं
चैत्यम् चइत्तं, चेइअं
वैरम् वइरं, वेरं
कैलाशः कइलासो, केलासो
कैरवम् कइरवं, केरवं
वैश्रवणः वइसवणो, वेसवणो
वैशम्पायनः वइसंपायणो, वेसंपायणो
वैतालिकः वइआलिओ, वेआलिओ
वैशिकम् वइसिअं वेसिअं
चैत्रः चइत्तो, चेत्तो

दैवम्	दइवं,	देवं

ऐ=अअ

उच्चैः	उच्चअं
नीचैः	नीचअं

ऐ=ई

धैर्यम्	धीरं

ओ=अ

अन्योन्यम्	अन्नन्नं,	अन्नुन्नं
प्रकोष्ठः	पवट्ठो,	पउट्ठो
आतोद्यम्	आवज्जं,	आउज्जं
शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा
मनोहरम्	मणहरं,	मणोहरं
सरोरुहम्	सररुहं,	सरोरुहं

ओ=ऊ

सोच्छ्वासः	सूसासो

ओ=अउ

गो	गउओ, गउआ

ओ=आअ

गो	गाओ,

औ=आ

गौरवम्	गारवं,

औ=उ

सौन्दर्यम्	सुन्देरं, सुन्दरिअं
मौञ्जायनः	मुंजायणो
शौण्डः	सुण्डो

शौद्धोदनिः	सुद्धोअणी
दौवारिकः	दुवारिओ
सौगन्ध्यम्	सुगन्धत्तणं
पौलोमी	पुलोमी
सौवर्णिकः	सुवण्णिओ
कौक्षेयकम्	कुच्छेअयं

औ=ओ

कौक्षेयकम्	कोच्छेअयं

औ=अउ

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं
पौरः	पउरो
पौरजनः	पउरजणो
कौरवः	कउरवो
कौशलम्	कउसलं
पौरुषम्	पउरिसं
सौधम्	सउहं
गौडः	गउडो
मौलिः	मउली
मौनम्	मउणं
सौराः	सउरा
कौलाः	कउला
गौरवम्	गउरवं

औ=आवा

नौ	नावा

क्=ख्

कुब्जः	खुज्जो
कर्परम्	खप्परं
कीलकः	खीलक

क्=ग्

मरकतम्	मरगयं
मदकलः	मयगलो
कन्दुकम्	गेन्दुअं

क्=च

किरातः	चिलाओ

क=भ्

शीकरः	सीभरो

क्=म्

चन्द्रिका	चन्दिमा

क्=ह्

शीकरः	सीहरो
निकषः	निहसो
स्फटिकः	फलिहो
चिकुरः	चिहुरो

ख्=क्

शृङ्खलम्	संकलं

ग्=म्

पुन्नागानि	पुन्नामाइं
भागिनी	भामिणी

ग्=ल

छागः	छालो
छागी	छाली

च्=ल्ल् (वि०)

पिशाचः	पिसल्लो, पिसाहो.

च्=स् (वि०)

खचितः	खसिओ, खइओ

ज्=झ् (वि०)

जटिलः	झडिलो, जडिलो.

ट्=ड

सटा	सडा
शकटः	सयढो
कैटभः	केढवो

ट्=ल्

स्फटिकः	फलिहो

ट=ल् (वि०)

चपेटा	चवेला, चवेडा
पाटयति	फालेइ, फाडेइ

ठ्=ल्ल

अङ्कोठतैलतुप्पम्　　　अंकोल्लतेल्लतुप्पं

ठ्=ह्

पिठर:　　　पिहडो, पिढरो.

ण्=ल (वि०)

वेणु:　　　वेलू, वेणू.

त्=च् (वि०)

तुच्छम्　　　चुच्छं, छुच्छं, तुच्छं.

त्=छ् (वि०)

तुच्छम्　　　छुच्छं, चुच्छं, तुच्छं.

त्=ट्

तगर:　　　टगरो

त्रसर:　　　टसरो

तूबर:　　　टूबरो

त्=ड्

प्रतिपन्नम्　　　पडिवन्नं

प्रतिहास:　　　पडिहासो

प्रतिहार:　　　पडिहारो

प्रतिस्पर्द्धी　　　पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी

प्रतिसार:　　　पडिसारो

प्रतिनिवृत्तम्　　　पडिनियत्तं

प्रतिमा　　　पडिमा

प्रतिपद्‌ा	पडिवया
प्रतिकरोति	पडिकरेइ
प्रभृति	पहुडि
प्राभृतम्	पाहुडं
व्यापृतः	वावडो
पताका	पडाया
बिभीतकः	बहेडओ
हरीतकी	हरडई
मृतकम्	मडयं
सुकृतम्	सुकडं
आहृतम्	आहडं
अवहृतम्	अवहडं

त्=ण

गर्भितः	गब्भिणो
अतिमुक्तकम्	अणिउँतयं, अइमुत्तयं
ऋदितम्	रुण्णं

त्=र्

सप्ततिः	सत्तरी

त्=ल

अतसी	अलसी
सातवाहनः	सालवाहणो, सालाहणो,
पलितम्	पलिलं, पलिअं

त्=व् (वि.)

पीतलम्	पीवलं, पीअलं

त्=ह्

वितस्तिः	विहत्थी
वसतिः	वसही, वसई
भरतः	भरहो
कातरः	काहलो
मातुलिङ्गम्	माहुलिंग

थ्=ढ्

मेथिः	मेढी
शिथिरः	सिढिलो
शिथिलः	सिढिलो
प्रथमः	पढमो
निशीथः	निसीढो, निसीहो
पृथिवी	पुढवी. पुहवी.

थ्=ध् (वि०)

पृथक्	पिधं, पुधं, पिहं, पुहं

द्=ड्(वि०)

दशनम्	डसणं, दसणं.
दष्टः	डट्ठो, दट्ठो.
दग्धः	डड्ढो, दड्ढो.
दोला	डोला, दोला.
दण्डः	डण्डो, दण्डो.

दरः(भय)	डरो, दरो.
दाहः	डाहो, दाहो.
दम्भः	डंभो, दंभो.
दर्भः	डब्भो दब्भो
कदनम्	कडणं, कयणं.
दोहदः	डोहलो, दोहलो.
दशति	डसइ.
दहति	डहइ.

द्=ध्

दीप्यति	धिप्पति, दिप्पइ,

द्=र्

एकादश	एआरह
द्वादश	बारह
त्रयोदश	तेरह
गद्गदम्	गग्गरं
कदली	करली, कयली, केली.

द्=ल्

प्रदीप्यति	पलीवेइ
प्रदीप्तम्	पलित्तं.
दोहदः	दोहलो
कदम्बः	कलम्बो, कयम्बो.

द्=व्

कदर्थितः	कवट्टिओ

द्=ह्

ककुदम् ककुहं

ध्=ढ्

निषधः निसढो

औषधम् ओसढं, ओसहं.

न्=ण्ह् (वि०)

नापितः ण्हाविओ, नाविओ

न्=ल् (वि०)

निम्बः लिम्बो, निम्बो.

प्=फ्

पाटयति फालेइ, फाडेइ

परुषः फरुसो

परिघः फलिहो

परिखा फलिहा

पनसः फणसो

पारिभद्रः फालिहद्दो

प्=ब्

प्रभूतम् बहुत्तं

प्=म् (वि०)

नीपः नीमो, नीवो

आपीडः आमेलो, आवेडो

प्=र्

पापर्द्धिः पारद्धी.

ब्=भ्

बिसिनी भिसिणी

ब्=म् तथा य्

कबन्धः कमन्धो, कयन्धो.

ब्=म्

शबरः समरो

भ्=व्

कैटभः केढवो

म्=ढ्

विषमः विसढो, विसमो

म्=व्

मन्मथः वम्महो
अभिमन्युः अहिवन्नू, अहिमन्नू.

म्=स्

भ्रमरः भसलो, भमरो.

य्=त्

युष्मादृशः तुम्हारिसो.
युष्मदीयः तुम्हकेरो.

य्=ल

यष्टिः	लट्ठी

य्=ज्ज् (वि०)

उत्तरीयम्	उत्तरिज्जं, उत्तरीअं.

य्=ह्

छाया	छाहा
सच्छायम्	सच्छाहं, सच्छायं

य=आह् तथा व्

कतिपयम्	कइवाहं, कइअवं.

र्=ड्

किरिः	किडी
भेरः	भेडो

र्=डा (वि०)

पर्याणम्	पडायाणं, पल्लाणं

र्=ण्

करवीरः	कणवीरो

र्=ल्

हरिद्रा	हलिद्दी
दरिद्राति	दलिद्दाइ
दरिद्रः	दलिद्दो
दारिद्र्यम्	दालिद्दं
हरिद्रः	हलिद्दो

मुखरः	मुहलो
चरणः (पादः)	चलणो
वरुणः	वलुणो
करुणः	कलुणो
सत्कारः	सक्कालो
रुग्णः	लुक्को
अपद्वारम्	अवद्दालं
जठरम्	जढलं
बठरः	बढलो
निष्ठुरः	निट्ठुलो
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो
शिथिरः	सिढिलो
अङ्गारः	इंगालो
सुकुमारः	सोमालो
किरातः	चिलाओ
परिखा	फलिहा
परिघः	फलिहो
पारिभद्रः	फालिहद्दो
कातरः	काहलो

ल्=र्

स्थूलम्	थोरं

ल्=ण् (वि०)

लाहलः	णाहलो, लाहलो.
लाङ्गलम्	णङ्गलं, लंगलं.

लाङ्गूलम्	णंगूलं, लंगूलं.
ललाटम्	णिडालं, णडालं.

व्=म् (वि०)

स्वप्नः	सिमिणो, सिविणो.
नीवी	नीमी, नीवी.

श्=छ् (वि०)

शमी	छमी
शावः	छावो
शिरा	छिरा, सिरा.

श्=ह्

दशमुखः	दहमुहो, दसमुहो.
दशरथः	दहरहो, दसरहो.

ष्=ण्ह् (वि०)

स्नुषा	सुण्हा, सुसा

ष्=छ्

षष्ठः	छट्ठो
षष्ठिः	छट्ठी
षट्पदः	छप्पओ
षण्मुखः	छंमुहो

ष्=ह्

पाषाणः	पाहाणो, पासाणो.

स्=ह्

दिवसः	दिवहो, दिवसो.

स्=छ्

सुधा	छुहा
सप्तपर्णः	छत्तिवण्णो

जोडाक्षरोने नीचे प्रमाणे आदेश थायछे —

क् (वि०)

शक्तः	सक्को, सत्तो.
मुक्तः	मुक्को, मुत्तो.
दष्टः	डक्को, दट्टो.
रुग्णः	लुक्को, लुग्गो.
मृदुत्वम्	माउक्कं, मउत्तणं.

ख्

शुष्कम्	सुक्खं, सुक्कं.
स्कन्दः	खन्दो, कन्दो.
क्ष्वेटकः	खेडओ
क्ष्वोटकः	खोडओ
स्फोटकः	खोडओ
स्फेटकः	खेडओ
स्फेटिकः	खेडिओ
स्थाणुः	खाणू
स्तम्भः	खम्भो, थम्भो.

ग्

रक्तः	रग्गो, रत्तो.

ङ्

शुल्कम्	सुंगं, सुक्कं.

च्

कृत्तिः	किञ्ची
चत्वरम्	च्चरं
प्रत्यूषः	पच्चूहो, पच्चूसो

छ्

अक्षि	अच्छि
इक्षुः	उच्छू
लक्ष्मीः	लच्छी
कक्षः	कच्छो
क्षुतम्	छीअं
क्षीरम्	छीरं
सदृक्षः	सरिच्छो
वृक्षः	वच्छो
मक्षिका	मच्छिआ
क्षेत्रम्	छेत्तं
क्षुध्	छुहा
दक्षः	दच्छो
कुक्षिः	कुच्छी
वक्षः	वच्छं
क्षुण्णः	छुण्णो
कक्षा	कच्छा
क्षारः	छारो
कौक्षेयकम्	कुच्छेअयं
क्षुरः	छुरो

उक्षा	उच्छा
क्षतम्	छयं
सादृश्यम्	सारिच्छं
स्थगितम्	छइअं
क्षमा (पृथिवी)	छमा
ऋक्षम्	रिच्छं, रिक्खं.
क्षणः (उत्सवः)	छणो
सामर्थ्यम्	सामच्छं, सामत्थं
उत्सुकः	उच्छुओ, ऊसुओ.
उत्सवः	उच्छवो, ऊसवो.
स्पृहा	छिहा

ज् (वि०)

अभिमन्युः	अहिमज्जू
	अहिमन्नू

झ्

ध्वजः	झओ, धओ.

श्च्

वृश्चिकः	विञ्चुओ

ञ्च् (वि०)

अभिमन्युः	अहिमञ्चू
	अहिमन्नू

ट्

वृत्तः	वट्टो
प्रवृत्तः	पयट्टो

मृत्तिका	मट्टिआ
पत्तनम्	पट्टणं
कदर्थितः	कवट्टिओ
पर्यस्तः	पल्लट्टो

ट्

अस्थि	अट्ठी
विसंस्थुलम्	विसंठुलं.
स्त्यानम्	ठीणं, थीणं.
चतुर्थः	चउट्ठो
अर्थः	अट्ठो
स्तम्भः	ठम्भो, थम्भो.
स्तब्धः	ठड्ढो

ड्

गर्तः	गड्डो
गर्ता	गड्डा
सम्मर्दः	सम्मड्डो
वितर्दी	विअड्डी
विच्छर्दः	विच्छड्डो
च्छर्दी	छड्डी
कपर्दः	कवड्डो
मर्दितः	मड्डिओ
सम्मर्दितः	सम्मड्डिओ
गर्दभः	गड्डहो, गद्दहो.

ड्ढ्

स्तब्धः	ठड्ढो

दग्धः	दड्ढो
विदग्धः	विअड्ढो
वृद्धिः	वुड्ढी
वृद्धः	वुड्ढो
श्रद्धा	सड्ढा, सद्धा.
मूर्धा	मुड्ढा, मुद्धा.
अर्धम्	अड्ढं, अद्धं.

ण्

पंचाशत्	पण्णासा.
पंचदश	पण्णरह.
दत्तम्	दिण्णं.

ण्ट्

वृन्तम्	वेण्टं
तालवृन्तम्	तालवेण्टं

ण्ड्

कन्दरिका	कण्डलिआ
भिन्दिपालः	भिण्डिवालो

त्

समस्तः	समत्तो.
स्तम्बः	तम्बो.

थ्

स्तम्भः	थम्भो, ठम्भो.
स्तवः	थवो, तवो.

पर्यस्तः	पल्लत्थो, पल्लट्टो.
उत्साहः	उत्थारो, उच्छाहो.

ध्

आश्लिष्टः	आलिद्धो

न्तु (वि०)

मन्युः	मन्तू, मन्नू.

न्ध् (वि०)

चिह्नम्	चिन्धं, इन्धं, चिण्हं.

प्

भस्म	भप्पो, भस्सो.
आत्मा	अप्पा, अप्पाणो.

फ्

भीष्मः	भिप्फो.
श्लेष्मः	सेफो, सिलिम्हो.

भ्

विह्वलः	भिब्भलो, विब्भलो विहलो.
ऊर्ध्वम्	उब्भं, उद्धं.

म्ब्

ताम्रम्	तम्बं
आम्रम्	अम्बं

म्भ्

कश्मीराः	कम्भारा, कम्हारा.

दक्षिणः	दाहिणो, दक्खिणो.
तीर्थम्	तूहं, तित्थं,
कूष्माण्डी	कोहण्डी, कोहली.

नीचेना अक्षरो लोपाय छेः—

अ (वि)

अलावुः	लाऊ, अलाऊ.
अलावु	लाउं, अलाउं.
अरण्यम्	रण्णं, अरण्णं

ण्

तीक्ष्णम्	तिक्खं, तिण्हं.

त्र्

रात्रिः	राई, रत्ती.

म्

यमुना	जउँणा
चामुण्डा	चाउँण्डा
कामुकः	काउँओ
अतिमुक्तकम्	अणिउँतयं,
	अइमुन्तयं,
	अइमुत्तयं.

र्

चन्द्रः	चन्दो, चन्द्रो.
रुद्रः	रुद्दो, रुद्रो.
भद्रम्	भद्दं, भद्रं
समुद्रः	समुद्दो, समुद्रो.

द्रुहः	द्रुहो, द्रुहो.
धात्री	धाई, धत्ती, धारी.

श्

श्मश्रुः	मासू, मंसू, मस्सू.
श्मशानम्	मसाणं

श्च्

हरिश्चन्द्रः	हरिश्चन्दो

ह्

मध्याह्नः	मज्झन्नो, मज्झण्हो
दशार्हः	दसारो.

(०) अनुस्वार

विंशतिः	वीसा
त्रिंशत्	तीसा
संस्कृतम्	सक्कयं
संस्कारः	सक्कारो
मांसम्	मासं, मंसं.
मांसलम्	मासलं, मंसलं.
कांस्यम्	कासं, कंसं.
पांसुः	पासू, पंसू.
कथम्	कह, कहं.
एवम्	एव, एवं.
नूनम्	नूण, नूणं
इदानीम्	इआणि, इआणिं.
दानीं	दाणि, दाणिं.
किम्	कि, किं.

संमुखम्	समुहं, संमुहं.
किंशुकम्	केसुअं, किंसुअं.
सिंहः	सीहो, सिंघो.

अंत्य व्यंजनना नीचे प्रमाणे आदेश थाय छे:—

अ

शरत्	सरओ
भिषक्	भिसओ

स

दिक्	दिसा
प्रावृट्	पाउसो
दीर्घायुः	दीहाउसो, दीहाऊ.
अप्सराः	अच्छरसा, अच्छरा

ह

ककुभ्	कउहा
धनुः	धणुहं, धणू.
क्षुध्	छुहा

पदनी आदिमां रहेला स्वरनो पछी आवता सस्वर व्यंजन सहित नीचे प्रमाणे आदेश थाय छे:—

ए

स्थविरः	थेरो
विचकिलम्	वेइल्लं
अयस्कारः	एक्कारो
कदलम्	केलं, कयलं.
कदली	केली, कयली.

कर्णिकारः*	कण्णेरो, कण्णिआरो

ए

अयि	ऐ, अइ.

ओ

पूतरः	पोरो
बदरम्	बोरं
नवमालिका	नोमालिआ
नवफलिका	नोहलिआ
पूगफलम्	पोप्फलं
मयूखः	मोहो, मऊहो.
लवणम्	लोणं
चतुर्गुणः	चोग्गुणो, चउग्गुणो.
चतुर्थः	चोत्थो, चउत्थो.
चतुर्दश	चोद्दह, चउद्दह.
चतुर्वार.	चोव्वारो, चउव्वारो.
सुकुमारः	सोमालो, सुकुमालो.
कुतूहलम्	कोहलं, कोउहल्लं.
उदूखलः	ओहलो, उऊहलो.
उलूखलम्	ओक्खलं, उलूहलं.

उम

निषण्णः	णुमण्णो, णिसण्णो.

अंगु तथा आउ

प्रावरणम्	पंगुरणं, पाउरणं, पावरणं.

* इनो नन्तर व्यंजन सहित ए थाय छे.

नीचे आपेला शब्दोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:-

स्तोक	थोक्कं, थोवं, थेवं. पक्षे- थोअं.
दुहिता—	धूआ. पक्षे- दुहिआ.
भगिनी—	बहिणी, पक्षे- भइणी.
वृक्षः—	रुक्खो, पक्षे- वच्छो.
क्षिप्तम्—	छूढं, पक्षे- खित्तं.
उत्क्षिप्तम्—	उच्छूढं, पक्षे- उक्खित्तं
वनिता—	विलया, पक्षे- वणिआ
ईषत्—	कूर, पक्षे- ईसि.
स्त्री—	इत्थी, पक्षे- थी.
धृतिः—	दिही, पक्षे, घिई.
मार्जारः—	मंजरो, वंजरो, पक्षे- मज्जारो.
वैडूर्यम्—	वेरुलिअं, वेडुज्जं.
इदानीम्—	एण्हि, एत्ताहे, पक्षे- इआणिं.
पूर्वम्—	पुरिमं, पक्षे- पुव्वं.
त्रस्तम्—	हित्थं, तट्ठं, पक्षे, तत्थं.
बृहस्पतिः—	भयस्सई, भयप्फई, भयप्पई, पक्षे- बहस्सई, बहप्फई, बहप्पई, बिहस्सई, बिहप्फई, बिहप्पई, बुहस्सई, बुहप्फई, बुहप्पई,

मलिनम्—	मइलं, पक्षे- मलिणं
उभयम्—	अवहं
शुक्तिः—	सिप्पी, पक्षे- सुत्ती.
छुप्तः—	छिक्को, पक्षे- छुत्तो.
आरब्धः—	आढत्तो, पक्षे-आरद्धो.
पदातिः—	पाइक्को, पक्षे- पयाई.
दंष्ट्रा—	दाढा.
बहिस्—	बाहिं, बाहिरं.
अधस—	हेट्ठं
मातृष्वसा—	माउसिआ, माउच्छा.
पितृष्वसा—	पिउसिआ, पिउच्छा.
तिर्यक्—	तिरिच्छि.
गृहम्—	घरो.

नीचे आपेला शब्दोने अनुस्वार आगम थाय छे:—

वक्रम्	वंकं
त्र्यस्त्रम्	तंसं
अश्रु	अंसू
श्मश्रु	मंसू
पुच्छम्	पुंछं
गुच्छम्	गुंछं
मूर्धा	मुंढा
पर्शुः	पंसू
बुध्नम्	बुंधं
कर्कोटः	कंकोडो
कुड्मलम्	कुंपलं

दर्शनम्	दंसणं
वृश्चिकः	विंछिओ
गृष्टिः	गिंठी
मार्जारः	मंजारो
वयस्यः	वयंसो
मनस्वी	मणंसी
मनस्विनी	मणंसिणी
मनःशिला	मणंसिला
प्रतिश्रुत्	पडंसुआ
उपरि	अवरिं
अतिमुक्तकम्	अणिउँतयं, अइमुंतयं.

नीचे आपेला शब्दो ने (बतावेले ठकाणे) नीचे प्रमाणे स्वर उमेराय छेः—

अ

शार्ङ्गम्	सारंगं
क्ष्मा	छमा
श्लाघा	सलाहा
रत्नम्	रयणं
स्नेहः	सणेहो, नेहो.
अग्निः	अगणी, अग्गी.
प्लक्षः	पलक्खो
स्निग्धम्	सणिद्धं, सिणिद्धं, निद्धं.

इ

अर्हति	अरिहइ

अर्हा	अरिहा
गर्हा	गरिहा
बर्हः	बरिहो
श्रीः	सिरी
ह्री	हिरी·
ह्रीतः	हिरीओ
अह्रीकः	अहिरीओ
कृत्स्नः	कसिणो
क्रिया	किरिया
दिष्ट्या	दिट्ठिआ
नप्तः	नत्तिओ, नत्तो.
वज्रम्	वइरं, वज्जं.
स्यात्	सिआ
स्याद्वादः	सिआवाओ
भव्यः	भविओ
चैत्यम्	चेइअं
चौर्यम्	चोरिअं
स्थैर्यम्	थेरिअं
भार्या	भारिआ
गाम्भीर्यम्	गंभीरिअं.
	गहीरिअं.
आचार्यः	आयरिओ
सौन्दर्यम्	सुन्दरिअं
शौर्यम्	सोरिअं
वीर्यम्	वीरिअं

चर्यम्	चरिअं
सूर्यः	सूरिओ
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचरिअं
धैर्यम्	धीरिअं
स्वप्नः	सिविणो
स्निग्धम्	सिणिद्धं, सणिद्धं, निद्धं.
कृष्णः	कसिणो, कसणो, कण्हो.
अर्हन्	अरिहो, अरुहो, अरहो.

ई

ज्या	जीआ

उ

अर्हन्	अरुहो, अरहो, अरिहो.
पद्मम्	पउमं, पोम्मं.
छद्मम्	छउमं, छम्मं.
मूर्खः	मुरुक्खो, मुक्खो.
द्वारम्	दुवारं, वारं, दरं, दारं.
श्वःकृतम्	सुवेकयं
स्वे जनाः	सुवे जणा
सुघ्नम्	सुग्घं

नीचे आपेला शब्दोने नीचे बताव्या प्रमाणे द्वित्व थाय छे:-

दीर्घः	दिग्घो, दीहो.

कर्णिकार:	कणिआरो, कण्णिआरो.
तैलम्	तेल्लं
मंडूक	मंडूक्को
विचकिलम्	वेइल्लं
ऋजुः	उज्जू
व्रीडा	विड्डा
प्रभूतम्	बहुत्तं
स्रोतः	सोत्तं
प्रेम	पेम्मं
यौवनम्	जुव्वणं
सेवा	सेव्वा. सेवा.
नीडम्	नेड्डं, नीडं.
नखाः	नक्खा, नहा.
निहितः	निहित्तो, निहिओ.
व्याहृतः	वाहित्तो, वाहिओ.
मृदुकम्	माउक्कं, माउअं.
एकः	एक्को, एओ.
कुतूहलम्	कोउहल्लं. कोउहलं.
व्याकुलः	वाउल्लो, वाउलो.
स्थूलः	थुल्लो, थोरो.
हृतम्	हुत्तं, हुअं.
दैवम्	दइव्वं. दइवं.
तूष्णीकः	तुण्हिक्को. तुण्हिओ-
मूकः	मुक्को. मूओ.
स्थाणुः	खण्णू. खाणू.

स्त्यानम्	थिण्णं, थीणं.
अस्मदीयम्	अम्हक्केरं, अम्हकेरं.
चेव चेअ	च्चेअ, चेअ.
च्चिअ	च्चिअ, चिअ.

नीचे आपेला शब्दोने द्वित्व थतुं नथी:—

धृष्टद्युम्नः	धट्ठज्जुणो
दृप्तः	दरिओ

नीचे आपेला शब्दोमां व्यत्यय थाय छे:—

करेणूः	कणेरू
वाराणसी	वाणारसी
आलानः	आणालो
अचलपुरम्	अलचपुरं
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठं
ह्रदः	द्रहो
हरितालः	हलिआरो, हरिआलो
लघुकम्	हलुअं, लहुअं.
ललाटम्	णडालं, णलाडं

नीचे आपेल शब्दो निपात सिद्ध छे:—

गौः	गोणो, गावी.
गावः	गावीओ.
बलीवर्दः	बइल्लो
आपः	आऊ
पंचपंचाशत्	पंचावण्णा, पणपन्ना

त्रिपंचाशत्	तेवण्णा
त्रिचत्वारिंशत्	तेआलीसा
व्युत्सर्गः	विउसग्गो
व्युत्सर्जनम्	वोसिरणं
बहिर्मैथुनं वा	बहिद्धा
कार्यम्	णामुक्कसिअं
क्वचित्	कत्थइ
उद्वहति	मुव्वहइ
अपस्मारः	वम्हलो
उत्पलं	कन्दुट्टं
धिक् धिक्	छि छि, द्धि द्धि.
धिगस्तु	धिरत्थु
प्रतिस्पर्द्धी	पडिसिद्धी,
	पाडिसिद्धी.
स्थासकः	चच्चिक्कं
निलयः	निहेलणं
मघवान	मघोणो
साक्षी	सक्खिणो
जन्म	जम्मणं
महान	महन्तो
भवान	भवन्तो
आशीः	आसीसा
बृहत्तरम्	वड्डयरं
हिमोरः	भिमोरो
क्षुल्लकः	खुड्डओ

गायन:	घायणो
वट:	वढो
ककुदम्	ककुधं
अकाण्डम्	अत्थक्कं
लज्जावती	लज्जालुइणी
कुतूहलं	कड्डं
चुत:	मायन्दो
विष्णु:	भट्टिओ
श्मशानम्	करसी
असुरा:	अगया
खेलं	खेड्डं
पौष्पं रज:	तिंगिच्छि
दिनम	अल्लं
समर्थ:	पक्कलो
पंडक:	नेलच्छो
कर्पास:	पलही
बली	उजल्लो
ताम्बुलम्	झसुरं
पुंश्चली	छिछई
शाखा	साहुली. इत्यादि

धातुना आदेशो.

संस्कृत धातुओना प्राकृत आदेशो नीचे प्रमाणे थाय छे:-

(स्वरान्त धातुओ.)

ज्ञा— जाण, मुण. पक्षे- णा.

पा— पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट. पक्षे– पिअ.

स्था— ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प.

उद्+स्था— उट्ठ, उक्कुक्कुर.

स्ना— अब्भुत्त, पक्षे-ण्हा.

श्रद्+धा— सद्दह.

उद्+ध्मा— उद्धुमा.

उद्+वा— ओरुम्मा, वसुआ. पक्षे–उव्वा.

नि+द्रा— ओहीर, उंघ. पक्षे-निद्दा.

आ+घ्रा— आइग्घ. पक्षे–अग्घा.

निर्+मा— निम्माण, निम्मव.

प्र+स्था+णि— पट्ठव, पेण्डव. पक्षे-पट्ठाव.

वि+ज्ञा+णि—वोक्क, अवुक्क.पक्षे-विण्णव.

या+णि— जव. पक्षे. जाव.

क्षि— णिज्झर. पक्षे-झिज्ज.

क्री— किण.

वि+क्री— विक्के, विक्किण.

भी— भा, बीह

आ+ली— अल्ली.

नि+ली— णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ,
लुक्क, लिक्क ल्हिक्क, पक्षे-निलिज्ज.

वि+ली— विरा. पक्षे–विलिज्ज.

रु— रुंज, रुण्ट. पक्षे–रव.

श्रु— हण. पक्षे-सुण

धू— धुव. पक्षे–धुण.

भू— हो. हुव, हव. पक्षे-भव.

भू— हु (वि उपसर्ग वर्जीने)

,,— णिव्वड.(पृथक् तथा स्पष्टीकरण अर्थमां)

प्र+भू— पहुप्प (प्रभुत्व अर्थमां)

दू+णि— दूम.

सं+भू+णि— आसंघ, पक्षे- संभाव.

कृ— कुण, पक्षे- कर.

,,— णिआर. (एक आंखे जोवाना अर्थमां)

,,— णिट्ठुह. (निष्टंभ अर्थमां)

,,— संदाण. (अवष्टंभन अर्थमां)

,,— वावम्फ (श्रम अर्थमां)

,,— णिव्वोल(क्रोधथी मुख बगाडवा अर्थमां)

,,— पयल्ल.(ढीला थवा तथा लटकीजवाना अर्थमां)

,,— णीलुंछ. (पडवुं तथा कुदीजवुं अर्थमां)

,,— कम्म. (क्षौर कर्मना अर्थमां)

,,— गुलल (खुशामद करवाना अर्थमां)

स्मृ— झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह. पक्षे-सर.

वि+स्मृ— पम्हुस, विम्हर, वीसर.

व्या+हृ— कोक्क, पोक्क. पक्षे-वाहर.

प्र+सृ— पयल्ल, उवेल्ल. पक्षे पसर.

,, ,,— महमह. (गंध फेलाववाना अर्थमां)

निर्+सृ— णीहर, नील, धाड, वरहाड. पक्षे- नीसर.

जागृ— जग्ग. पक्षे-जागर.

व्या+पृ— आअड्ड. पक्षे-वावर.

सम्+वृ— साहर, साहट्ट, पक्षे-संवर.

आ+दृ— सन्नाम. पक्षे-आदर.

प्र+हृ— सार. पक्षे-पहर.

अव+तॄ— ओह, ओरस, पक्षे-ओअर.

नि+वृ+णि— णिहोड. पक्षे-निवार.

ध्यै— झा

गै— गा

सम्+ख्यै— संखा

म्लै— वा, पव्वाय, पक्षे- मिला,

व्यंजनान्त धातुओ

शक्— चय, तर, तीर, पार. पक्षे-सक्क.

फक्— थक्क.

श्लाघ— सलह.

खच्— वेअड, पक्षे-खच

पच्— सोल्ल, पउल. (पउल्ल) पक्षे—पय

मुच्— छड्ड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क, रेअव

णिल्लुञ्छ, धंसाड. पक्षे. मुअ.

„ — णिव्वल (दुःख ने छोड़वाना अर्थमा)

वंच्— वेहव.वेलव.जूरव,उमच्छ,पक्षे- वंच.

रच्— उग्गह,अवह.विडविड्ड.(ड) पक्षे- रय

समा+रच्— उवहत्थ. सारव, समार, केलाय.

पक्षे--समारय

सिच्— सिंच. सिम्प. पक्षे - सेअ

नि+रिच्+णि- ओलुंड उल्लुंड, पल्हत्थ. पक्षे--

विरेअ.

प्रच्छ्— पुच्छ.
गर्ज्— बुक्क. पक्षे--गज्ज.
,,— ढिक्क. (बलदनी गर्जनाना अर्थमा)
राज्— अग्घ, छज्ज, सह, रीर, रेह.पक्षे-
राय.
मस्ज्— आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प.पक्षे-
मज्ज.
पुंज्— आरोल, वमाल. पक्षे-पुंज
लस्ज्— जीह. पक्षे-लज्ज.
तिज्— ओसुक्क.
मृज्— उग्घुस, लुंछ पुंछ, पुंस, फुस, पुस,
लुह, हुल, रोसाण. पक्षे-मज्ज.
भंज्— वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड,
विर, पविरंज, करंज, नीरंज. पक्षे-
भंज.
व्रज्— वच्च.
अनु+व्रज्— पडिअग्ग, पक्षे- अणुवच्च
सृज्— सिर.
अर्ज्— विढव. पक्षे-- अज्ज.
युज्— जुंज, जुज्ज, जुप्प.
भुज्— भुंज, जिम्म, जेम, कम्म अण्ह
समाण, चमढ, चड्ड.
उद्+विज्— उव्विव.
उप+भुज्— कम्मव. पक्षे--उवहुंज
वीज्— वोज्ज..पक्षे--वीज.

रञ्ज्+णि— राव. पक्षे--रंज.

वेष्ट्— वेढ.

सम्+वेष्ट्-- संवेल्ल

उद्+वेष्ट्— उव्वेल्ल. पक्षे–उव्वेढ.

घट्— गढ. पक्षे–घड.

सम्+घट्— संगल. पक्षे–संघड.

स्फुट्— मुर. (हास्य करण होय तो)

घट्+णि— परिवाड. पक्षे–घड.

उद्+घट्+णि --उग्ग. पक्षे–उग्घाड

वेष्ट्+णि— परिआल. पक्षे–वेढ.

मंड्— चिंच, चिंचअ, चिंचिल्ल, रीड,
टिविडिक्क. पक्षे-मंड.

तुड्— तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड,
उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर. पक्षे-
तुड.

तड्+णि— आहोड, विहोड. पक्षे-ताड.

घूर्ण्— घुल, घोल. घुम्म, पहल्ल.

वि+वृत्— ढंस. पक्षे विवट्ट.

पत्+णि— णिहोड. पक्षे पाड

क्वथ्— अट्ट. पक्षे कढ

ग्रन्थ्— गण्ठ.

मन्थ्— घुसल, विरोल. पक्षे-मंथ.

कथ्— वज्जर, पज्जर. उप्पाल. पिसुण,
संघ. बोल्ल. चव. जम्प, सीस
साह. पक्षे कह

कथ्—	णिव्वर (दुःख कहेवाना अर्थमां)
रोमन्थ्+णि—	ओग्गाल, वग्गोल.पक्षे– रोमन्थ
मद्—	मच्च.
ह्लाद्—	अवअच्छ.
खाद्—	खा. (एकवचनमा)
नि+सद्—	णुमज्ज.
छिद्—	दुहाव, णिच्छल,णिज्झोड,णिव्वर णिल्लूर,लूर.पक्षे–छिन्द्.
आ+छिद्—	ओअन्द,उद्दाल,पक्षे–अच्छिन्द्.
मृद्—	मल,मढ,परिहट्ट,खड्डु,चड्डु,मड्डु, पन्नाड.
स्पन्द्	चुलुचुल, पक्षे– फन्द,
निर्+पद्—	निव्वल,पक्षे--निप्पज्ज
विसं+वद्—	विअट्ट,विलोट्ट,फंस,पक्षे-विसंवय.
शद्—	झड,पक्खोड.
सद्—	सड.
सम्+पद्—	संपज्ज.
आ+क्रन्द्—	णीहर,पक्षे--अक्कन्द.
खिद्—	जूर,विसूर,पक्षे--खिज्ज.
स्विद्—	सिज्ज.
ह्लाद्+णि—	अवअच्छ.
छद्+णि—	णुम,नूम,सन्नुम,ढक्क,ओम्वाल, पव्वाल,पक्षे--छाय.
रुध्—	उत्थंघ,रुम्भ,रुज्झ,पक्षे--रुन्ध.
नि+षिध्—	हक्क,पक्षे--निसेह.

क्रुध्——	जूर,पक्षे--कुज्झ.
गृध्—	गिज्झ.
सिध्—	सिज्झ.
जन्—	जा,जम्म.
तन्—	तड,तड्ड,तड्डव,विरल्ल,पक्षे--तण.
तृप्—	थिप्प.
उप+सृप्	अल्लिअ,पक्षे- उवसप्प.
सम्+तप्	झंख,पक्षे--संतप्प.
वि+आप्	ओअग्ग,पक्षे--वाव.
सम्+आप्	समाण,पक्षे- समाव.
क्षिप्—	गलत्थ.अड्डक्ख,सोल्ल,पेल्ल, णोल्ल,छुह,हुल.परी,घत्त,पक्षे- खिव.
उद्+क्षिप्——	गुलगुंछ,उत्थंघ.अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क.हक्खुव,पक्षे--उक्खिव.
आ+क्षिप्	णीरव,पक्षे- अक्खिव
स्वप्—	कमवस,लिस. लोट्ट.पक्षे-सुअ.
वेप——	आयम्ब,आयज्झ.पक्षे वेव.
वि+लप्	झंख,वडवड.पक्षे विलव
लिप्—	लिम्प.
गुप्——	विर,णड.पक्षे गुप्प.
कृप्+णि—	अवहाव.
प्र+दीप्—	तेअव, सन्दुम.सन्धुक्क,अब्भुत्त. पक्षे-पलीव.
क्लृप्+णि—	चिच्छोल्ल,पक्षे-कप्प.

अर्प्+णि—	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम. पक्षे-अप्प.
लुभ्—	संभाव. पक्षे- लुब्भ.
क्षुभ्—	खउर, पड्डुह. पक्षे- खुब्भ.
आ+रभ्—	आरंभ, आढव. पक्षे- आरभ.
उपा+लभ्—	झंख,पच्चार,वेलव.पक्षे-उवालम्भ.
जृम्भ्—	जम्भा.
नम्—	णिसुढ, पक्षे - णव (कर्ता भार थी दबायलो होय तो)
यम्—	जच्छ.
वि+श्रम्—	णिव्वा.पक्षे-वीसम
आ+क्रम्—	ओहाव,उत्थार, छुन्द.पक्षे- अक्कम,
भ्रम्—	टिरिटिल्ल, ढुण्ढुल्ल, ढण्ढल्ल, चक्कम्म,भम्मड, भमड, भमाड, तलअंट,झंट, झंप,भुम, गुम, फुम,फुस,ढुम,ढुस,परी,पर.पक्षे-भम.
गम्—	अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चड्ड,पच्छन्द, णिम्मह, णी,णीण,णीलुक्क, पदअ, रम्भ, परिअल्ल, बोल, परिअल, णिरिणास,णिवह, अवसेह, अवहर. पक्षे- गच्छ.
आ+गम्—	अहिपच्चुअ,पक्षे--आगच्छ.
सम्+गम्—	अब्भिड. पक्षे-- संगच्छ.
अभ्या+गम्—	उम्मत्थ. पक्षे--अब्भागच्छ.

प्रत्या+गम्— पलोट्ट. पक्षे—पच्चागच्छ.

शम्— पडिसा, परिसाम. पक्षे—सम.

रम्— संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिंच, कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल. पक्षे—रम.

कम्+णि— णिहुव. पक्षे—काम.

भ्रम्+णि— तालिअंट. तमाड. पक्षे—भाम, भमाड, भमावे.

उद्+नम्+णि—उत्थंघ, उल्लाल, गुलुगुंछ, उप्पेल. पक्षे—उन्नाव.

पूर्— अग्घाड, अग्घव, (उग्घव) उद्धुम, अंगुम, अहिरेम. पक्षे—पूर.

क्षर्— खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ.

त्वर्— तुवर, जअड.

,,— तूर. (त्यादि तथा शतृ प्रत्यय आगल होय तो)

,,— तुर. (त्यादिभिन्न प्रत्यय आगल होय तो)

मिश्र्+णि— वीसाल, मेलव. पक्षे—मिस्स.

उद्+छल्— उत्थल्ल.

वि+गल्— थिप्प, णिट्टुह. पक्षे विगल.

दल्— विसट्ट. पक्षे—दल.

वल्— वम्फ. पक्षे—वल.

धवल्+णि— दुम. पक्षे—धवल.

तुल्+णि— ओहाम. पक्षे—तुल.

उद्+धूल्+णि–गुण्ठ. पक्षे–उद्धूल.

दुल्+णि— रंखोल. पक्षे–दोल.

धाव्— धा. (एक वचनमां)

प्लव्+णि— ओम्वाल, पव्वाल. पक्षे–पाव.

भ्रंश्— फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल.
पक्षे–भंस.

नश्— णिरणास, णिवह, अवसेह,
पडिसा, सेह, अवहर. पक्षे–नस्स.

अव+काश्—ओवास.

सम्+दिश्— अप्पाह. पक्षे–संदिस.

दृश्— निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ,
अवयज्झ, वज्ज, सव्वव,
देक्ख, ओअक्ख, अवक्ख,
अवअक्ख, पुलोअ, पुलअ, निअ,
अवआस, पास.

स्पृश्— फास, फंस, फरिस, छिव, छिह,
आलुंख, आलिह.

प्र+विश्— रिअ. पक्षे–पविस.

प्र+मृश्— पम्हुस.

नश्+णि— विउड, नासव, हारव, विप्पगाल,
पलाव. पक्षे–नास.

दृश्+णि— दाव, दंस, दक्खव. पक्षे–दरिस.

वि+कोश्+णि—पक्खोड. पक्षे–विकोस.

प्रकाश्+णि— णुव्व. पक्षे–पयास.

प्र+मृष्— पम्हुस.

पिष्— णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड. पक्षे- पीस.

भष्— भुक्क, बुक्क. पक्षे- भस.

कृष्— कड्ढ, साअड्ढ, अंच, अणच्छ, अयंछ, आइंछ. पक्षे-करिस.

,,— अक्खोड. (म्यान माथी तलवार खेंचवाना अर्थमा)

गवेष् — ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त. पक्षे- गवेस.

श्लिष् — सामग्ग, अवयास, परिअन्त. पक्षे- सिलेस.

बुभुक्ष् — णीरव. पक्षे- बुहुक्ख.

म्रक्ष् — चोप्पड. पक्षे- मक्ख.

काङ्क्ष् — आह, अहिलंघ, अहिलंख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुम्प. पक्षे-कंख.

प्रति+ईक्ष्—सामय, विहीर, विरमाल. पक्षे- पडिक्ख.

तक्ष्— तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ. पक्षे- तक्ख.

वि+कस्— कोआस, वोसट्ट. पक्षे- विअस.

हस्— गुंज. पक्षे- हस.

आस्— अच्छ.

स्रंस्— ल्हस, डिम्भ. पक्षे- संस.

त्रस्— डर, वोज्ज, वज्ज. पक्षे- तस.

नि+अस्— णिम, णुम.

परि+अस्— पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ.
निर्+श्वस्— झंख. पक्षे– नीसस.
उद्+लस् — ऊसल, ऊसुंभ, णिल्लस, पुलआअ,
गुंजोल्ल, आरोअ. पक्षे– उल्लस.
भास् — भिस. पक्षे– भास.
ग्रस् — घिस. पक्षे– गस.
जुगुप्स् — झुण, दुगुच्छ, दुगुंछ. पक्षे–जुउच्छ.
अव+गाह्— ओवाह. पक्षे– ओगाह.
आ+रुह्— चड, वलग्ग. पक्षे– आरुह.
मुह्— गुम्म, गुम्मड. पक्षे– मुज्झ.
दह् — अहिऊल, आलुंख. पक्षे– डह.
ग्रह्— वल, गेण्ह, हर, पंग, निरुवार,
अहिपच्चुअ.
स्पृह्+णि — सिह.
आ+रुप्+णि—वल. पक्षे– आरोव.

परिशिष्ट

बोधपाठ १ लो.

शौरसेनी भाषा.

सामान्य नियमो.

१. अनादि असंयुक्त तकारनो शौरसेनीमां प्रायः दकार थाय छे. जेमके—पितरो–पिदरो.

क्वचित् प्रयोगानुसारे संयुक्त तकारनो पण दकार थाय छे. जेमके—

महन्तो—महन्दो. अंतेउरं— अन्देउरं.

निच्चिन्तो—निच्चिन्दो.

२. अनादि थ नो विकल्पे ध थाय छे. जेमके—

कथम्— कधं, कहं.

राजपथः—राजपधो, राजपहो.

३. र्यने स्थाने विकल्पे य्य थाय छे. जेमके—

आर्यः— अय्यो, अज्जो. पर्याकुलः—पय्याउलो, पज्जाउलो. सूर्यः—सुय्यो.

४. अकारान्त नामने पंचमीना एकवचनमां दु तथा दो प्रत्यय लागे छे. जेमके—

अय्यादु, अय्यादो.

५. नकारान्त शब्दथी संबोधनना एकवचननो लोप अने नकारनो अनुस्वार विकल्पे थाय छे. जेमके—

भो रायं! सुकम्मं!. पक्षे—भो राय! सुकम्म!

६. भवत् अने तेना जेवा भगवत् आदि शब्दोना अंत्य व्यंजननो प्रथमाना एकवचनमां अनुस्वार थाय छे. अने एकवचनना प्रत्ययनो लोप थाय छे. जेमके—

एदु भवं, समणे भगवं महावीरे, मघवं पागसासणे कयवं इत्यादि.

७. इन्प्रत्ययान्त शब्दोना नकारनो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे आकार थाय छे. जेमके—

भो कंचुइआ!. भो सुहिआ!. पक्षे—भो कंचुइ!. भो सुहि!.

८. अकार सिवाय स्वरांत धातु थकी वर्तमानादि कालमां प्रथम पुरुषना एकवचन तरीके दि प्रत्यय

अने अकारांत धातु थकी दि तथा दे प्रत्यय थाय छे जेमके—

नेदि, देदि, होदि, गच्छदि, गच्छदे, रमदि, रमदे.

९. मध्यम पुरुषना ह प्रत्यय तथा इह शब्दना हकारनो विकल्पे धकार थाय छे. जेमके—

भवथ-होध, होथ. इह-इध, इह.

१०. भविष्य कालमां त्रणे पुरुषमां प्राकृतना हिने स्थाने स्सि प्रत्यय लागे छे. जेमके—भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि.

११. भू धातुना हकारनो विकल्पे भकार थाय छे. जेमके—भवति-भोदि, होदि; भुवदि, हुवदि, भवदि, हवदि.

१२. संबंधार्थक क्त्वा प्रत्ययने स्थाने इय तथा दूण आदेश विकल्पे थाय छे. जेमके—भविय, भोदूण; हविय, होदूण; पढिय पढिदूण; रमिय रन्दूण. पक्षे-भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता.

१३. कृ तथा गम् धातुथी पर क्त्वा प्रत्ययने अडुअ आदेश विकल्पे थाय छे, अने ते थाय छे त्यारे धातुना आद्य व्यंजन सिवाय बाकीनो लोप थाय छे. जेमके—

कडुअ, गडुअ. पक्षे-करिय, करिदूण; गच्छिय, गच्छिदूण.

१४. अंत्य मकारथी पर णकार आगम विकल्पे थाय छे, इकार के एकार पर होय तो. जेमके—जुत्तमिणं, जुत्तणिणं; सरिसमिणं, सरिसणिणं; किमेदं, किणेदं; एवमेदं, एवणेदं.

१५. नीचे आपेला अव्ययो नीचे प्रमाणे शौरसेनीमां वपराय छे.

इदानीम्—दाणिं "दाणिं आणवेदु अय्यो"

तस्मात्— ता "ता अलं एदिणा माणेण"

एव— य्येव. "मो य्येव एसो"

ननु— णं. "णं भवं मे अग्गदो चलदि"

तावत्— दाव, ताव.

१६. नीचे आपेला अव्ययो खास शौरसेनीमांज वपराय छे.

हञ्जे— दासीना आमंत्रणमां.

हीमाणहे—विस्मय तथा निर्वेदना अर्थमां.

अम्महे— हर्षमां.

हीही— विदूषकने हर्ष थनावनो होय तेमां वपराय छे.

आ शिवाय बाकीनो सर्व विधि प्राकृतनी माफक शौरसेनीमां थाय छे.

शब्दो.

कदकज्ज(कृतकृत्य) त्रि०— सिद्धप्रयोजनवालो.

थाम(स्थामन) न०— पराक्रम.

अपुरव(अपूर्व) त्रि०— अपूर्व.

सुमरण(स्मरण) न०— स्मरण.

अज्जिद(अर्जित) त्रि०— मेळवेल.

सग्ग(स्वर्ग) न०— स्वर्गलोक.

अव्ययो.

हंहो— संबोधनना अर्थमां.

खु— निश्चित.

इय— इति.

गाथाओ.

तइ इन्दो निच्चिन्दो विहरदु अन्देउरम्मि सो दाव ।
इन्दस्स ताव मित्तं हवेम्मि महिस्सामिआ! तुमयं ॥१॥
हंहो मणस्सि रायं जं अव भयवंति विन्नवेदि भवं ।
रक्खिवज्जसु तेण तुमं जिणवइणा मेइणीमघवं! ॥२॥
अयणावत्ते सयले कदकज्जो तं खु धामसिरिणाह ।
जिणनाधसुमरणे इधम् अज्जिदइहलोअपरलोअ ॥३॥
तायध समग्गपुहविं तायह सग्गंपि भोदु तुह भद्दं ।
होदु जयस्सोत्तंसो तुह कित्तीए अपुरवाए ॥४॥
सत्तोइ अपुव्वाए होदूण हरिव्व हविय सेसोव्व ।
होत्ता भरहोव्व तुमं एगच्छत्तं कुणसु रज्जं ॥५॥
करियावणिउद्धारं गुरुभावं गडुय कडुय बलिबन्धं ।
गच्छिय लच्छिम् उविन्दो भोदि भवं भोदु इन्दसमो ॥६॥
अम्हेहि तुह पसंसा किज्जदि अन्नेहि किज्जदे न कहं ।
कित्ती रमिस्सिदि तुहा सग्गादु रसातलादोवि ॥७॥
दाणिं तुह तुट्ठा ता देम्मि वरं इअ तुमम्मि जुत्तम् इमं ।
जुत्तं णिमं खु मग्गसु इह किं णेदंति मा चिन्त ॥८॥
भणिओ निवो किम् एदं तिहुयणरज्जंपि तुम्हइ तुट्ठाए ।
तुज्झय्येव पसाया सुरीओ हवेन्ति भणन्ति ॥९॥
हीमाणहे देवि! तुमं सि दिट्ठा हीमाणहे हं चकिदो भवादो ।
णं अम्महे किं वि भणोपदेसं हीही भणन्ताविं समन्ति जेण ॥

कु. च. सप्तमे सर्गे ९३–१०२ --

बोधपाठ २ जो.

मागधी भाषा.

सामान्य नियमो.

१. रेफनो ल् अने असंयुक्त स् नो श् थाय छे. जेमके—

नरः— नले. सुतः— शुदे.
करः— कले. पुरुषः—(पुरिसो)पुलिशे.
हंसः— हंशे.

२. ग्रीष्म शब्द सिवाय संयुक्त ष् नो स् थाय छे. जेमके—

शुष्कम्—शुस्कं. विष्णुः—विस्नू.
कष्टम्— कस्टं.

३. ट्ट तथा ष्ठनो स्ट थायछे. जेमके—

पट्टः— पस्टे. सुष्ठु— शुस्टु.

४. स्थ तथा र्थनो स्त थाय छे. जेमके—

उपस्थितः—उवस्तिदे. अर्थपतिः—अस्तवदी.
सुस्थितः—शुस्तिदे. सार्थवाहः—शस्तवाहे.

५. ज, तथा द्य नो य थाय छे अने य नो य रहे छे. जेमके—

जानाति—याणदि. मद्यम्— मय्यं.
जनपदः—यणवदे. अद्य— अय्य.
अर्जुनः— अय्युणे. विद्याधरः— विय्याहले.
दुर्जनः— दुय्यणे. यानि— यादि.
वर्जितः —वय्यिदे. यानपात्रम्—याणवत्तं.

६. न्य, ण्य, ज्ञ तथा ञ्ज नो ञ्ञ थाय छे. जेमके—

अभिमन्युः—अहिमञ्ञू. प्रज्ञा—पञ्ञा. सर्वज्ञः—शव्वञ्ञे

अन्यः— अञ्ञे. अवज्ञा— अवञ्ञा
सामान्यम्—शामञ्ञं. अञ्जलिः— अञ्ञली
पुण्यवान्— पुञ्ञवन्ते. धनञ्जयः—धणञ्ञए.

७. (क) अनादि च्छ नो श्च थाय छे. जेमके—
उच्छलति—उश्चलदि. पिच्छिलः—पिश्चिले
पृच्छति— पुश्चदि.

(ख) लाक्षणिक च्छ नो पण श्च थाय छे जेम के—

सं०	प्रा०	मा०
तिर्यक् प्रेक्षते.	तिरिच्छि पेच्छइ.	तिरिश्चि पेस्कदि.

८. अनादि क्षनो जिह्वामूलीय ᳵक थाय छे. जेमके—
यक्षः— यᳵके. राक्षसः—लᳵकशे.

९. पुँल्लिङ्गमां अकारान्त नाम थकी प्रथमाना एक वचन तरीके ओ ने बदले ए प्रत्यय थाय छे. जेमके—
देवे, जिणे, कयरे, सव्वे.

१० अवर्णान्त नामथी पर षष्ठी एक वचनने आह अने बहुवचनने आहँ आदेश विकल्पे थाय छे जेमके—
जिणाह, जिणस्स. कम्माह, कम्मस्स. जिणाहँ, जिणाणं. कम्माहँ, कम्माणं.

११. अस्मद् शब्दने प्रथमाना एकवचन अने बहुवचनमां विभक्तिसहित हगे आदेश थाय छे. जेमके—
अहं क्षत्रियः—हगे खत्तिए. वयं पुरुषाः—हगे पुलिशा.

१२. व्रज् धातुना जकार नो ञ्ज थाय छे. जेम के—
व्रजति वञ्जदि.

१३. प्रेक्ष् तथा आचक्ष्ना क्ष्नो स्क् थाय छे. जेमके—
प्रेक्षते— पेस्कदि. आचक्षते— आचस्कदि.

१४. तिष्ठने स्थाने चिष्ठ थाय छे. जेमके—

तिष्ठति— चिष्टदि.

शौरसेनीना बधा नियमो मागधीने लागु पडे छे, अने बाकी प्राकृतनी माफक जाणवा.

शब्दो.

विघस्टण (विघट्टन) न०--अपनयन.

शलश्शदी (सरस्वती) स्त्री०--विद्यानी अधिष्ठात्री देवी.

विवय्यिदकशाअ (विवर्जितकषाय) त्रि० क्रोधादिरहित.

लहिद (रहित) त्रि०--शिवाय.

निशादपञ्ञ (निशातप्रज्ञ) त्रि०--कुशाग्र बुद्धिवालो.

यग (जगत्) न०--दुनिया.

श(स्व) त्रि०--पोतानुं.

पउदव्व (प्रयोक्तव्य) त्रि०--योजवा योग्य.

गाथाओ.

कधिदे शुभोवदेशे शलश्शदीए तदो अपस्खलिदे ।
भवकस्टगिम्हपदहग्गविघस्टणे शुस्टुमेवेच ॥१॥
अदिशुस्तिदं निविस्टे चदुस्तवग्गं विवय्यिदकशाए ।
शावय्ययोगलहिदे शाहू शाहदि अणञ्ञमणे ॥२॥
पुञ्ञे निशादपञ्ञे शुपञ्ञले यदि पयेण वञ्ञन्ते ।
शयलयगवश्चलत्तं गश्नन्ते लहदि पलमपदं ॥३॥
शपलविवस्कालहिदे पेस्कन्ते स्वचम् ओहदिस्टीए ।
मिदपिचम् आचस्कन्ते चिस्टदि मग्गम्मि मोस्कस्स ॥४॥
पढमस पधं पलिमा भत्ति पदाल जदि नदी जाइँ ।
नाणं दोण्हंपि इमं हिदेन्ति तुम्हा पउदव्वा ॥५॥

— [illegible] १-५.

बोधपाठ ३ जो.

पैशाची अने चूलिका पैशाची भाषा.

पैशाचीना सामान्य नियमो.

१. णकारनो नकार थाय छे. जेमके—

गुणगणाः गुनगनो.

२. दकारनो तकार थाय छे, अने तकारनो तकार ज रहे छे. जेमके—

मदनः	मतनो.	भगवती	भगवती.
सदनम्	सतनं.	भवतु	होतु.
दामोदरः	तामोतरो:	रमताम्	रमतु.
प्रदेशः	पतेसो.		

३. श् तथा ष् नो स् अने लकारनो ळकार थाय छे जेमके—

शोभनम्	सोभनं.	विषाणः	विसानो.
शशी	ससी.	शीलम्	सीळं.
वृषभः	विसभो.	जलम्	जळं.

४. टुनो विकल्पे तु थाय छे. जेमके—

कुटुम्बकम् कुतुम्बकं, कुटुम्बकं.

५. यादृश जेवा शब्दोमां दृने स्थाने ति आदेश थाय छे. जेमके—

यादृशः	यातिसो.	भवादृशः	भवातिसो.
तादृशः	तातिसो.	अन्यादृशः	अञ्ञातिसो.
कीदृशः	केतिसो.	युष्मादृशः	युम्हातिसो.
ईदृशः	एतिसो.	अस्मादृशः	अम्हातिसो.

६. हृदय शब्दना य नो प थाय छे. जेमके—

हृदयम् हितपं.

७ (क) ज्ञ, न्य तथा ण्य नो ञ्ञ थाय छे. जेमके—

प्रज्ञा पञ्ञा. विज्ञानम् विञ्ञानं.

संज्ञा सञ्ञा. कन्यका कञ्ञका.

सर्वज्ञः सव्वञ्ञो. अभिमन्युः अभिमञ्ञू.

ज्ञानम् ञ्ञानं. पुण्यम् पुञ्ञं.

(ख) राजन् शब्दना राज्ञः इत्यादि रूपोमांना ज्ञनो चिञ् आदेश विकल्पे थाय छे. जेमके—

राज्ञा राचिञ्ञा, रञ्ञा. राज्ञः राचिञ्ञो, रञ्ञो.

८. र्य, स्न तथा ष्ट ना अनुक्रमे रिय, सिन तथा सट आदेश क्वचित् थाय छे. जेमके—

भार्या भारिया. कष्टम् कसटं.

स्नातम् सिनातं.

९. अकारान्त नाम थकी पंचमीना एकवचन तरीके आतो तथा आतु प्रत्यय थायछे.

देशात्—तेवातो, तेवातु. त्वत्-तुमातो, तुमातु.

दूरात्—तूरातो, तूरातु. मत्—ममातो, ममातु.

१० तद् तथा इदम् शब्द ने तृतीयाना एकवचन ना प्रत्यय सहित पुंल्लिंग तथा नपुंसकलिंगमां नेन अने स्त्रीलिंगमां नाए आदेश थाय छे. जेमके—

तेन नेन. तया नाए.

अनेन अनया

११. प्राकृतना तिवादि प्रथम पुरुषना एकवचनना इ तथा ए ने स्थाने ति आदेश थाय छे. जेमके—

भवति भोति. ददाति तेति.
नयति नेति.

१२. अकारान्त धातुथी पर प्राकृतना इ तथा ए ने स्थाने अनुक्रमे ति तथा ते आदेश थायछे. जेमके—

लपति—लपति, लपते. गच्छति—गच्छति, गच्छते.
आस्ते—अच्छति, अच्छते. रमते—रमति, रमते.

१३. भविष्यकालमां प्रथमपुरुषना एकवचन तरीके एय्य प्रत्यय थाय छे. जेमके—

भविष्यति हुवेय्य.

१४. (क) भावकर्ममां थता क्य प्रत्ययने इय्य आदेश थाय छे. जेमके—

गीयते—गिय्यते. रम्यते—रमिय्यते.
दीयते—दिय्यते. पठ्यते—पढिय्यते.

(ख) कृ धातुने क्यप्रत्यय सहित कीर आदेश थाय छे. जेमके—

क्रियते कीरते.

१५. (क) संबन्धार्थक क्त्वाने स्थाने तून एवो आदेश थाय छे जेमके—मन्तून, रन्तून, हसितून, पढितून, कधितून.

(ख) ष्ट्वाने स्थाने द्धून, तथा त्थून आदेश थाय छे. जेमके—

नष्ट्वा—नद्धून, नत्थून. दृष्ट्वा—तद्धून, तत्थून.

आ शिवाय बाकीना शौरसेनी भाषाना बधा नियमो पैशाची भाषाने लागु पडे छे. मात्र नियमावालिनी २४ मी कलमथी ३१ मी कलम सुधीना व्यंजन लोप अने व्यंजन विकारना सामान्य नियमो अने तेना अप-

वादरूप विशेष आदेशो शौरसेनीने लागु पडे छे पण पैशाचीने लागु पडता नथी.

पैशाचीना शब्दो—

हितपक (हृदयक) न०—हृदय.

उज्झित (उज्झित) त्रि०--त्यक्त.

कतकपट (कृतकपट) त्रि०—जेणे कपट करेलुं छे एहवुं.

धातु.

वल (वल्)--पाछा आववुं वलवुं.

चू० पै० ना शब्दो.

अनालम्भ (अनारम्भ) त्रि०--आरंभ रहित.

लाच (राजन्)—राजा

पन्धु (बन्धु) पु०--बान्धव.

आलम्पित (आलम्बित) त्रि०- आश्रित.

चूलिका-पैशाचीना नियमो.

१. वर्गना त्रीजा अक्षर ने स्थाने प्रथम अक्षर अने चोथा अक्षरने स्थाने द्वितीय अक्षर थाय छे[1]. जेमके—

नगरम्	नकरं.	व्याघ्रः	वक्खो.
गिरितटम्	किरितटं.	निर्झरः	निच्छरो.
राजा	राचा.	झर्झरः	छच्छरो.

---

१. केटलाएक आचार्यने मते उपरनो नियम अनादि अक्षरने ज लागु पडे छे. आदिभूत तृतीय तथा चतुर्थनो अनुक्रमे प्रथम तथा द्वितीय अक्षर थतो नथी. जेमके—

गतिः	गती.	घर्मः	घम्मो.
जीमूतः	जीमूतो.	झर्झरः	झच्छरो.
डमरुकः	डमरुको.	ढक्का	ढक्का.
दामोदरः	दामोतरो.	बालकः	बालको.

जर्जरम्	चच्चरं.	गाढम्	काठं.
जीमूतः	चीमूतो.	ढक्का	ठक्का.
तडागम्	तटाकं.	षण्ढः	सण्ठो.
डमरुकः	टमरुको.	मधुरम्	मथुरं.
मदनः	मतनो.	बान्धवः	पन्थवो.
कन्दर्पः	कन्तप्पो.	धूलिः	थूली.
दामोदरः	तामोतरो.	रभसः	रफसो.
बालकः	पालको.	रम्भा	रम्फा.
मेघः	मेखो.	भगवती	फकवती.

२. र्‌नो ल्‌ विकल्पे थाय छे. जेमके—

गौरी—गोली, गोरी. चरणम्—चलनं, चरनं.

आ शिवाय बाकी बधुं पैशाची माफक जाणवुं.

पैशाचीनी गाथाओ.

पञ्ञान राचिञा गुनलिधिना रञ्ञा अनञ्ञपुञ्ञेन ।
चिन्तेतव्वं मतनातिवेरिनो किल विजेतव्वा ॥१॥
सुद्धाकसायहितपक्क-जित-करन-कुतुम्ब-चेसटो योगी ।
मुक्ककुटुम्बसिनेहो न वलति गन्तून मुक्खपतं ॥२॥
यन्ति कसाया नत्थून यन्ति नट्ठून सव्वकम्माइं ।
समसलिलसिनातानं उज्झितकतकपटभरियान ॥३॥
यति अरिहपरममन्तो पढिय्यते कीरते न जीववधो ।
यातिस तातिस जाती ततो जनो निव्वुतिं याति ॥४॥
अच्छति रन्ने सेलेवि अच्छते दूठतपं तपन्तोवि ।
ताव न लभेय्य मुक्खं याव न विसयान तूराता ॥५॥
तूरातु नेन वेप्पति मुत्तिसिरी नाइ योगकिरियाए ।
चत्तारिमंगलंपमुतिमन्तम् उक्खो समानेन ॥६॥

कु० च० अष्टमे सर्गे ६—११.

चूलिकापैशाचीनी गाथाओ

वन्थू सठासठेसुवि आलम्पितउपसमो अनालम्फो ।
सव्वज्जलाचचलने अनुझायन्तो हवति योगी ॥७॥
झच्छरडमरुकभेरीढक्काजीमूतगज्जिरघोसावि ।
बम्हनियोजितम् अप्पं जस्स न दोलिन्ति सो धञ्ञो ॥८॥

—कु० च० अष्टमे सर्गे १२—१३

बोधपाठ ४ थो.

अपभ्रंश भाषा.

सामान्य नियमो.

१. अपभ्रंशमां एक स्वरने बदले बीजो स्वर प्राय: थायछे. जेमके—

वचन—	वेण,	वीण.	
कृत्य—	कच्चु,	काच.	
बाहु—	बाह,	बाहा,	बाहु.
पृष्ठ—	पुट्ठि,	पिट्ठि,	पट्ठि.
तृण—	तणु,	तिणु,	तृणु.
सुकृत—	सुकिदु.	सुकिओ,	सुकृदु.
क्लिन्न—	किन्नओ.	किलिन्नओ.	
रेखा—	लिह,	लेह,	लीह.
गौरी—	गउरि.	गोरि.	

२. विभक्तिनी पूर्वे नामना अंत्य दीर्घ स्वरनो ह्रस्व अने [illegible]

[illegible]

ह्रस्व स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे. जेमके—

श्यामलः— सामला, सामल.

दीर्घः— दीहा, दीह.

स्वर्णरेखा— सुवण्णरेह, सुवण्णारेहा.

निद्रया— निद्दए, निद्दाए.

३. अनादि, असंयुक्त तथा स्वरथी पर क्‌नो ग्, ख्‌नो घ्, त्‌नो द्, थ्‌नो ध्, प्‌नो ब्, फ्‌नो भ्, थाय छे. जेमके—

विक्षोभकर–विच्छोहगर. शपथ—सबध.

सुख— सुघ. सफल— सभल.

कथित— कधिद.

४. अनादि तथा असंयुक्त म्‌नो वँ विकल्पे थाय छे. जेमके—

कमल— कवँल, कमल.

भ्रमर— भवँर, भमर.

५. (क) सयुंक्त र्‌नो विकल्पे लोप थायछे. जेमके—

प्रिय— पिय, प्रिय.

(ख) क्वचित् संस्कृतमां रेफ न होय तोपण अपभ्रंशमां आवे छे. जेमके— व्यास–व्रास, वास.

६. प्राकृतमां थयेल म्हनो अपभ्रंशमां म्भ् विकल्पे थाय छे.जेमके—

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश
ग्रीष्म—	गिम्ह.	गिम्भ, गिम्ह.
श्लेष्म—	सिम्ह.	सिम्भ, सिम्ह.
ब्रह्म—	बम्ह.	बम्भ, बम्ह.

७. अनादि तथा असंयुक्त य तथा वनो लोप थायछे;

अने तेने बदले आगला स्वरनो अनुक्रमे ए तथा ओ थाय छे. जेमके—

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश
वचन—	वयण,	वेण.
शयन—	सयण,	सेण.
नयन—	नयण,	नेण.
नवनीत—	नवणीअ,	नोणीअ.

तद्धित प्रत्ययो.

८. पुल्लिंग तथा नपुंसक लिंग वाचक नामने स्वार्थमां अ, अड, उल्ल, अडअ, उल्लअ तथा उल्लडअ प्रत्यय लागे छे. जेमके—

दृष्ट— दिट्ठअ. हृदय— हिअडअ.
दोष— दोसड. चूड— चूडुल्लअ.
कुट— कुडुल्ल. बल— बलुल्लडअ.

९. नामने संबंधार्थमां केर अने तण प्रत्यय लागे छे. जेमके—

जसुकेरु ( ), अम्हहं तणु ( ).

१०. युष्मद् तथा अस्मद् शब्दने संबंधार्थमां आर प्रत्यय लागे छे. जेमके—

त्वदीय— तुहार. मदीय— महार.
युष्मदीय— तुम्हार. अस्मदीय—अम्हार.

११. नामने भाव अर्थमां प्पण तथा त्तण प्रत्यय लागे छे. जेमके—

गुरुत्व— वड्डप्पण, वड्डुत्तण.

भद्रत्व— भद्दप्पण, भद्दत्तण.

पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग.

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा—	उ, ओ, ०(लुक्)	०(लुक्)
द्वितीया—	उ, ०(लुक्)	०(लुक्)
तृतीया—	एण, एणं, एं.	एहिं, हिं.
पंचमी—	हु, हे.	हुं.
षष्ठी—	सु, स्सु, हो, ०(लुक्).	हं, ०(लुक्).
सप्तमी—	इ, ए.	हिं
संबोधन—	उ, ओ, ०(लुक्).	हो, ०(लुक्).

जिण शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	जिणु, जिणो, जिण, जिणा.	जिण, जिणा.
द्वि०	जिणु, जिण, जिणा.	जिण, जिणा.
तृ०	जिणेण, जिणेणं जिणें	जिणेहिं, जिणाहिं, जिणहिं.
पं०	जिणहु, जिणाहु, जिणहे, जिणाहे.	जिणहुं, जिणाहुं.
ष०	जिणासु, जिणसु, जिणस्सु, जिणाहो, जिणहो, जिण, जिणा.	जिणाहं, जिणहं, जिण, जिणा.
स०	जिणि, जिणे.	जिणाहिं, जिणहिं.
सं०	जिणु, जिणो, जिण, जिणा.	जिणहो, जिणाहो, जिण, जिणा.

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोनां रूपो जिण शब्द माफक जाणवां.

इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो

	ए०	ब०
प्र०	०(लुक्)	०(लुक्)
द्वि०	०(लुक्)	०(लुक्)
तृ०	एं, सु, ण, णं.	हिं.
पं०	हे.	हुं.
ष०	०(लुक्)	हुं, हं.
स०	हि	हुं, हिं.
सं०	०(लुक्)	हो, ०(लुक्)

इसि शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	इसि, इसी.	इसि, इसी.
द्वि०	इसि, इसी.	इसि, इसी.
तृ०	इसिएं, इसीएं, इसिं, इसीं, इसिण, इसिणं, इसीण, इसीणं.	इसिहिं, इसीहिं.
पं०	इसिहे, इसीहे.	इसिहुं, इसीहुं.
ष०	इसि, इसी.	इसिहुं, इसीहुं, इसिहं, इसीहं.
स०	इसिहि, इसीहि.	इसिहिं, इसीहिं, इसिहुं, इसीहुं.
सं०	इसि, इसी.	इसिहो, इसीहो, इसि, इसी.

इकारान्त पुल्लिंग शब्दोनां रूपो इसि माफक जाणवां.

गुरु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	गुरु, गुरू.	गुरु, गुरू.
द्वि०	गुरु, गुरू.	गुरु, गुरू.
तृ०	गुरुणं, गुरूणं, गुरुं, गुरूं, गुरुणा, गुरुणं, गुरूणा, गुरूणां,	गुरुहिं, गुरूहिं.
पं०	गुरुहे, गुरूहे.	गुरुहुं, गुरूहुं
ष०	गुरु, गुरू.	गुरुहुं, गुरूहुं, गुरुहं, गुरूहं.
स०	गुरुहि, गुरूहि.	गुरुहिं, गुरूहिं, गुरुहुं, गुरूहुं.
सं०	गुरु, गुरू.	गुरुहो, गुरूहो, गुरु, गुरू.

उकारान्त पुल्लिंग शब्दोनां रूपो गुरु शब्द माफक जाणवां.

अकारान्तनपुंसकलिंग शब्दोना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	उ, ० (लुक्)	इं.
द्वि०	उ, ० (लुक्)	इं.
सं०	उ, ० (लुक्)	हो, इं.

बाकीना प्रत्ययो अकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवा.

नेत्त शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	नेत्तु, नेत्त, नेत्ता.	नेत्तइं, नेत्ताइं.
द्वि०	नेत्तु, नेत्त, नेत्ता.	नेत्तइं, नेत्ताइं.
सं०	नेत्तु, नेत्त, नेत्ता.	नेत्तहो, नेत्ताहो, नेत्तइं, नेत्ताइं.

बाकीनां रूपो अकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां ।

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोनां रूपो नेत्तशब्दनी माफक जाणवां.

इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंगना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	० (लुक्)	इं.
द्वि०	० (लुक्)	इं.
सं०	० (लुक्)	हो, इं.

बाकीना प्रत्ययो इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां.

अच्छि शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	अच्छि. अच्छी.	अच्छिइं, अच्छीइं.
द्वि०	अच्छि, अच्छी.	अच्छिइं, अच्छीइं.
सं०	अच्छि, अच्छी.	अच्छिहो, अच्छीहो, अच्छिइं, अच्छीइं.

बाकीनां रूपो इकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां ।

इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दनां रूपो अच्छि शब्द माफक जाणवां.

धणु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	धणु, धणू.	धणुइं, धणूइं.
द्वि०	धणु, धणू.	धणुइं, धणूइं.

सं० धणु, धणू. धणुहो, धणूहो, धणुइं, धणूइं.

बाकीनां रूपो उकारान्त पुलिंगनी माफक जाणवां.

उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोनां रूपो धणु शब्द माफक जाणवां.

जेने छेडे कनो उद्वृत्त अ होय एवा शब्दोने नपुंसक लिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां शून्य तथा उने बदले मात्र उं प्रत्यय लागे छे. जेमके—

नेत्तअ (नेत्रक) शब्द.

प्र० द्वि० नेत्तउं. नेत्तअइं, नेत्तआइं.

बाकीनां रूपो नेत्त शब्द माफक जाणवां.

अच्छिअ (अक्षिक) शब्द.

प्र० द्वि० अच्छिउं. अच्छिअइं, अच्छिआइं.

धणुअ (धनुष्क) शब्द.

प्र०–द्वि० धणुउं. धणुअइं, धणुआइं.

बोधपाठ ५ मो.

अपभ्रंश भाषा—चालु.

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्दो.

स्त्रीलिंगना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	०(लुक्)	उ, ओ.
द्वि०	०(लुक्)	उ, ओ.
तृ०	ए	हिं.
पं०	हे	हु.
ष०	हे, ०(लुक्)	हु, ०(लुक्)
स०	हि	हिं.
सं०	०(लुक्)	हो, ०(लुक्)

१. स्त्रीलिंगवाचक नामने स्वार्थमां ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय लागे छे. जेमके—

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली =मालुल्ली, माला+अडिआ=मालडिआ, माला+उल्लिआ= मालुल्लिआ. माला+उल्लडिआ=मालुल्लडिआ.

मालडिआ (माला) शब्दनां रूपो-

	ए०	व०
प्र०	मालडिआ, मालडिअ.	मालडिआउ, मालडिअउ, मलडिआओ, मालडिअओ.

द्वि० मालडिआ, मालडिअ. मालडिआउ, मालडिअउ,
मालडिआओ, मालडिअओ.
तृ० मालडिआए, मालडिअए. मालडिआहिं, मालडिअहिं.
पं० मालडिआहे, मालडिअहे. मालडिआहु, मालडिअहु.
ष० मालडिआहे, मालडिअहे, मालडिआ, मालडिअ,
मालडिआ, मालडिअ. मालडिआहु, मालडिअहु.
स० मालडिआहि. मालडिअहि. मालडिआहिं, मालडिअहिं.
सं० मालडिआ, मालडिअ. मालडिआहो, मालडिअहो,
मालडिआ, मालडिअ.

आकारान्त स्त्रीलिंगशब्दोनां रूपो मालडिआ शब्द माफक जाणवां.

बुद्धि शब्दनां रूपो.

	ए०	व०
प्र०	बुद्धि, बुद्धी.	बुद्धिउ, बुद्धिओ, बुद्धीउ, बुद्धीओ.
द्वि०	बुद्धि, बुद्धी.	बुद्धिउ, बुद्धीउ, बुद्धिओ, बुद्धीओ.
तृ०	बुद्धिए, बुद्धीए.	बुद्धिहिं, बुद्धीहिं.
पं०	बुद्धिहे, बुद्धीहे.	बुद्धिहु, बुद्धीहु.
ष०	बुद्धिहे, बुद्धीहे, बुद्धि, बुद्धी.	बुद्धिहु, बुद्धीहु, बुद्धि, बुद्धी.
स०	बुद्धिहि, बुद्धीहि.	बुद्धिहिं, बुद्धीहिं.

सं०	बुद्धि, बुद्धी.	बुद्धिहो, बुद्धीहो, बुद्धि, बुद्धी.

इकारान्त स्त्रीलिंगशब्दोनां रूपो बुद्धि शब्द माफक जाणवां.

कुडुल्ली शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	कुडुल्ली, कुडुल्लि.	कुडुल्लीउ, कुडुल्लिउ, कुडुल्लीओ कुडुल्लिओ.
द्वि०	,,	,,

बाकीनां रूपो बुद्धि शब्दनी माफक जाणवां.

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो कुडुल्ली शब्द माफक जाणवां.

धेणु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	धेणु, धेणू.	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ
द्वि०	धेणु, धेणू.	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ
तृ०	धेणुए, धेणूए.	धेणुहिं, धेणूहिं.
पं०	धेणुहे, धेणूहे.	धेणुहु, धेणूहु.
ष०	धेणुहे, धेणूहे, धेणु, धेणू.	धेणुहु, धेणूहु, धेणु, धेणू.
स०	धेणुहि, धेणूहि.	धेणुहिं, धेणूहिं
सं०	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो, धेणु, धेणू.

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो धेणु शब्द माफक जाणवां

चमू शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	चमू, चमु.	चमूउ, चमुउ, चमूओ, चमुओ.
द्वि०	,,	,,

बाकीनां रूपो धेणु शब्दनी माफक जाणवां.

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो चमू शब्द माफक जाणवां.

सर्वनाम शब्दो.

अकारान्त सर्वादि शब्दोनां रूपो सामान्य रीते जिण शब्दनी माफक थाय छे; खास फेरफार थाय छे, ते नीचे प्रमाणे छे:—

१. इदम् शब्दने आय आदेश थाय छे अने सर्व शब्दने साह तथा किम् शब्दने कवण तथा काइं[1] आदेश विकल्पे थाय छे.

२. अकारान्त सर्वादि शब्दोने पंचमीना एकवचनमां हां तथा सप्तमीना एकवचनमां हिं प्रत्यय लागे छे. जेमके-सव्वहां, सव्वाहां; सव्वहिं, सव्वाहिं. बाकीनां रूपो जिण शब्द माफक जाणवां.

३. यद् तथा तद् ने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे ध्रुं तथा त्रं आदेश विकल्पे थाय छे.

४. किम् शब्दने पंचमीना एकवचनमां विभक्तिसहित किहे आदेश विकल्पे थाय छे. पक्षे काहां, कहां.

५. एतद् तथा अदस् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना

१ काइं शब्दना रूपो इकारान्त माफक जाणवा.

बहुवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे एइ तथा ओइ आदेश थाय छे.

६. एतद् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित पुल्लिंगमां एहो, स्त्रीलिंगमां एह तथा नपुंसकलिंगमां एहु आदेश थाय छे.

७. यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां षष्ठीना एकवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे, जहे, तहे तथा कहे आदेश थाय छे.

८. इदम् शब्दने नपुंसक लिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित इमु आदेश थाय छे.

नोंध—स्त्रीलिंगमां सर्वादि शब्दोने ई तथा आ प्रत्यय लागवाथी सव्वी तथा सव्वा बनशे, अने तेनां रूपो कुडुल्ली तथा मालडिआ माफक जाणवां.

तुम्ह (युष्मद्) नां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	तुहुं.	तुम्हइं, तुम्हे.
द्वि०	पइं, तइं.	तुम्हइं, तुम्हे.
तृ०	पइं, तइं.	तुम्हेहिं.
पं०	तउ, तुज्झ, तुध्र.	तुम्हहं.
ष०	तउ, तुज्झ, तुध्र.	तुम्हहं.
स०	पइं, तइं.	तुम्हासु.

अम्ह (अस्मद्)नां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	हउं.	अम्हइं, अम्हे.

द्वि० मइं.	अम्हइं, अम्हे.
तृ० मइं.	अम्हेहिं.
पं० महु, मज्झु.	अम्हहं.
ष० महु, मज्झु.	अम्हहं.
स० मइं.	अम्हासु.

शब्दना आदेशो.

२. नीचे आपेला संस्कृत शब्दोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

आपद्—आवइ.	अवस्कन्द्—दडवड.
विपद्—विवइ.	मूढ—नालिअ, वढ.
संपद्—संपइ.	यादृश—जइस, जेह.
वर्त्म—विच्च.	तादृश—तइस, तेह.
कौतुक—कोड्ड.	कीदृश—कइस, केह.
क्रीडा—खेड्ड.	ईदृश—अइस, एह.
दृष्टि—द्रेहि.	यावत्—जाम, जाउं, जामहिं, जेवड. पक्षे जेत्तुल.
नवाक्षत—नवख.	तावत्—ताम, ताउं, तामहिं, तेवड. पक्षे तेत्तुल.
हेआले—हेल्लि.	इयत्—एवड, पक्षे एत्तुल.
भय—द्रवक्क.	कियत्—केवड, पक्षे केत्तुल,
असाधारण—सड्डल.	एतावत्—एत्तुल.
गाढ—निच्चट्ट.	परस्पर—अवरोप्पर.
अद्भुत—ढक्करि.	अन्यादृश—अन्नाइस, अवराइस.

आत्मीय--अप्पण. उत्थानोपवेशन--उट्टबईस.

शब्दो.

धम्मक्खर (धर्माक्षर) न० धर्मनुं रहस्य.

खाणि (खनि) पुं० खाण.

कयकिच्च (कृतकृत्य) त्रि० परम पुरुषार्थ साध्यो छे जेणे एवो पुरुष.

दाव ( ) पु० आग्रह.

अथिर (अस्थिर) त्रि० नाश न पामे एवुं.

घुण्ट ( ) पुं० घुंटडो.

विहव (विभव) पुं० वैभव.

धातुओ.

जोअ (द्युत्)—जोवुं.

पिच्छ (दृश्)--जोवुं.

तडप्फड ( ) तडफडवुं.

अव्ययो.

निरु ( ) अ० निश्चित.

निरुत्तउ ( ) अ० निश्चित.

गाथाओ.

जो जहां होतउ सो तहां होतउ, सत्तुवि मित्तुवि किहे
विहु आवउ ।
जहिंवि हु तहिंवि हु मग्गेलीणा, एक्कए दिट्ठिहि दोन्निवि
जोअहु ॥१॥
कासुवि जासुवि तासुवि पुरिसहो, कहेवि हु जहेवि हु
तहेवि हु नारिहे ।

त्रं हिंतु वयणु चविज्जइ थोवउं थ्रं परिणमइँउ समत्त-
पयारेहिं ॥२॥

तं बोल्लिअइ जु सच्चु पर इमु धम्मक्खरु जाणि ।
एहो परमत्था एहु सिवु एह सुहरयणाइं खाणि ॥३॥
एइ सुसावग ओइ मुणि, पिच्छइ नवहिं नवाइं ।
आयहो जम्महो एहुफलु नायइं विसय सुहाइं ॥४॥
साहुवि लोउ तडप्फडइ सव्वुवि परिहउ जाणु ।
कवणुवि एहु न चिन्तवइ कावि जं निव्वाणु ॥५॥
सव्वहो कासुवि उवरि तुहुं एहु चिन्तणु निम्मोह ।
तुम्हे म नियडहु भवगहणि तुम्हइं सुहिया होह ॥६॥
तुम्हे निक्खउ अप्पु जिम्वँ तुम्हइं जिम्वँ अप्पाणु ।
पइं अणुसासउं पसमु करि तइं नेउं अक्खउ ठाणु ॥७॥
पइं करिअव्वी जीवदय तइं बोल्लेवउ सच्चु ।
पइं सुहु तइं कल्लाण तउ तउ होहिमि कयकिच्चु ॥८॥
सेवेअव्वा साहु पर तुम्हेहिं इह जम्मम्मि ।
तुज्झु समत्तणु तुअ खम तउ संजमु चिन्तेमि ॥९॥
कलिमलु तुज्झु पणासिही तउ वचेही पावु ।
मुक्खुवि तुअ न दूरि ठिउ करि धम्मक्खरि हावु ॥१०॥
तुम्हहं मुक्खु न दूरि ठिअ जइ संजमु तुम्हासु ।
हउं तुम्ह बन्धवु इअ भणिवि एहु जम्पहु सव्वेसु ॥११॥
अम्हे निन्दउ कोवि जणु अम्हइं वण्णउ कोवि ।
अम्हे निन्दहुं कंवि नवि नम्हइं वण्णहुं कंवि ॥१२॥
मइं मिल्लेवा भवगहणु मइं थिर एही बुद्धि ।
मत्था हत्थउ सुगुरु मइं पावउं अप्पहो सुद्धि ॥१३॥
अम्हेहिं केणवि विहिवसिण एहु मणुअत्तणुपत्तु ।

मज्झु अदूरे होउ सिवु महु दच्चउ मिच्छत्तु ॥१४॥
अम्हहं मोह परोहु गउ संजमु हुउ अम्हासु ।
विसय न लोलिम महु करहि म करहि इअ वीमासु ॥१५॥

—कु० च० अष्टमे सर्गे ३९–४०.

× × × × × × ×

कायकुडुल्ली निरु अथिर जीवियडउ चलु एहु ।
ए जाणिवि भवदोसडा असुहउ भावु चएहु ॥१६॥
ते धन्ना कन्नुल्लडा हिअउल्ला ति कयत्थ ।
जे खणि खणिवि नवुल्लडअ घुण्टहिं धरहिं सुअत्थ ॥१७॥
पइट्ठी कन्नि जिणागमहो वत्तडिआवि हु जासु ।
अम्हारउँ तुम्हारउँ वि एहु ममत्तु न तासु ॥१८॥
जीवु जित्तुलु जिअइ जियलोइ जइ तित्तुलु दमु करइ ।
गणइ विहवु एत्तुलु न केत्तुलु तो इत्तहे नाणु लहि जाइ
लोइ तेत्तहि निरुत्तउ ॥१९॥

—कु० च० अष्टमे सर्गे ७२–७५.

बोधपाठ ६९ मो.

(अपभ्रंश भाषा चालु)

धातुओ.

१. वर्तमानकालना प्राकृत तथा शौरसेनी करतां विशेष प्रत्ययो नीचे प्रमाणे छे:—

	ए०	ब०
प्र०	×	हिं.
म०	हि	हु.
उ०	उं	हुं.

२. आज्ञार्थमां प्राकृत उपरांत मध्यम पुरुषना एकवचनमां इ, उ तथा ए प्रत्यय विशेष लागे छे.

३. भविष्यकालमां प्राकृतना हि ने स्थाने स विकल्पे लागे छे.

४. नीचे आपेला संस्कृत धातुओने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

व्रज्—वुञ्.	तक्ष्—छोल्ल.
भू—हुच.	दृश्—प्रस्स.
ब्रू—ब्रुव.	ग्रह—गृण्ह.

कृदंतो

५. कृ धातुने कर्ममां वर्तमान कालना उत्तम पुरुषना एकवचनमां प्रत्यय सहित कीसु आदेश विकल्पे थाय छे. पक्षे किज्जउं (क्रिये).

६. तव्य प्रत्यय ने इएव्वउं, एव्वउं तथा एवा आदेश थाय छे. जेमके—

कर्तव्यम्—करिएव्वउं, करेव्वउं, करेवा.

७. क्त्वा प्रत्ययने इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि तथा एविणु आदेश थाय छे.

८. गम् धातुथी एप्पिणु तथा एप्पिना एकारनो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—गम्प्पिणु, गमेप्पिणु; गम्प्पि, गमेप्पि.

९. तुम् प्रत्ययने एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु, एवं अण, अणहं तथा अणहिं आदेश थाय छे.

१०. धातुथकी कर्ता अर्थमां अणअ प्रत्यय थाय छे. जेमके—मारणअ.

११ नीचे आपेला कृदन्तने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

विषण्ण—वुन्न. रम्य—रवण्ण.

उक्त—वुत्त.

अव्ययोना आदेशो.

१२. नीचे आपेला अव्ययोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

कथम्—किम, किवँ, केम, केवँ, किध, किह.

यथा—जिम, जिवँ, जेम, जेवँ, जिध, जिह.

तथा—तिम, तिवँ, तेम, तेवँ, तिध, तिह.

मनाक्—मणाउं.

यावत्—जाम, जाउं, जामहिं.

तावत्—ताम, ताउं, तामहिं.

किल—किर.

दिवा—दिवे.

अथवा—अहवइ.

यत्र—जेत्थु, जत्तु, जेत्तहे.
तत्र—तेत्थु, तत्तु, तेत्तहे.
कुत्र—केत्थु, केत्तहे.
अत्र—एत्थु, एत्तहे.
सर्वत्र—सव्वेत्तहे.
परत्र—परेत्तहे.
एतर्हि—एएत्तहे, एतेत्तहे.
प्रायशः—प्राउ, प्राइव,
प्राइम्व, पग्गिम्व.
अन्यथा—अनु, पक्षे अन्नह.
कुतः—कउ, कहन्तिहु.
ततः—तो.
तदा—तो.
एवम्—एम्व.
परम्—पर.
समम्—समाणु.
ध्रुवम्—ध्रुवु.
मा—मं.

सह—सहुं.
नहि—नाहिं.
पश्चात—पच्छइ.
एवमेव—एम्वइ.
एव—जि.
इदानीम्—एम्वहिं.
प्रत्युत—पच्चलिउ.
इतः—एत्तहे.
शीघ्रम्—वहिल्लु.
पुनः—पुणु.
विना—विणु.
अवश्यम्—अवसें, अवस.
एकशः—एक्कसि.
इव—जणि, जणु, नं, नउ, नाइ,
नावइ.
पृथक् पृथक्—जुअं जुअ.
यदि—छुडु.
माभैषीः—मब्भीसी.

१३. घइं, खाइं, इत्यादि पादपूरणार्थक निपातो अपभ्रंशमां कोइ कोइ ठेकाणे वपराय छे.

१४. केहिं, तेहिं, रेसि, रेसिं, तणेण ए पांच निपात तादर्थ्य चतुर्थीना अर्थमां वपराय छे.

१५. हुहुरु आदि शब्दानुकरणमां अने घुग्घादि चेष्टानुकरणमां वपराय छे.

शब्दो.

आलडी (आलि) स्त्री० परस्त्री आदिनी प्रार्थनारूप अनर्थ.
निच्छअ (निश्चय) पुं० शंका रहित.
पहाण (प्रधान) न० मुख्य.
बम्भ (ब्रह्म) न० शील.
संतोसामअ (संतोषामृत) न० संतोषरूपी अमृत.
दुक्कयकम्म (दुष्कृतकर्म) न० नठारां कर्मो.
पच्छइताव (पश्चात्ताप) पुं० परतावो.
कसरक्क (कसरक्क) पुं० जमती वखते करवामां आवतो एक जातनो अवाज.
पावद्दह (पापह्रद) पुं० पापरूपी तलाव.
मक्कड (मर्कट) पुं० वांदरो.
परिग्गह (परिग्रह) पुं० वस्तुओनो संग्रह.
अलिअ (अलीक) न० कूड भाषण.
तुरिअ (त्वरित) त्रि० उत्सुक.
अणाउलअ (अनाकुलक) त्रि० आकुल नहि तेवुं.
अच्चप्पतअ ( ) न० सत्य.
झाण (ध्यान) न० ध्यान.
निम्ममत्त (निर्ममत्व) न० ममत्व रहित.
भल्लत्तण (भद्रत्व) न० भद्रता, भलाई.
सामाइअ (सामायिक) न० सामायिक व्रत.

धातुओ.

जोअ (द्युत) जोवुं

अव्ययो.

इणपरि ( ) अ० आ रीते.
निरानिउ ( ) अ० निश्चित.

गाथाओ.

रे मण करसि कि आलडो विसयां अच्छहु दूरि ।
करणइं अच्छहं कन्धिअइं कडुउं सिवफलु भूरि ॥१॥
इणपरि अप्पउ सिक्खविसु तुहं अक्खहुं परमत्थु ।
सुमरि जिणागम धम्मु करि संजमु वच्चु पसत्थु ॥२॥
संजम लीणहो मोक्खसुहु निच्छइं होसइ तासु ।
पिय वलि कीसु भणन्ति अउ णाइं पहुच्चहिं जासु ॥३॥
सच्चइं वयणाइं जो चुवइ उवसमु वुसइ पहाणु ।
परमदि सत्तुवि मित्तु जिस्वँ सो गुन्हइ निव्वाणु ॥४॥

- कु० च० अष्टमे सर्गे ४१-४४

× × × × ×

धम्मु अणाव्वाइसु चरइ जो अणवराइमचित्तु ।
पाइव पावइ तहिं जि भवि सो निव्वाणु पवित्तु ॥५॥
पाइस्व भवि सुहु दुल्लहउं पगिरस्व जण सुहलुद्ध ।
तं संतोसामएणं विणु पाउ पमग्गहिं मुद्ध ॥६॥
रयणत्तउ फुडु अणुसरहु अन्नह मुत्ति कहंति ।
भण्डइ लब्भहिं पउर धण अनु कि नहउ पडन्ति ॥७॥
कउ वढ भमिअइ भवगहणि? मुक्ख कहन्तिउँ होइ ।
एहु जाणेवउं जइ मणसि तो जिण आगम जोइ ॥८॥
चंचल संपय ध्रुवु मरणु सच्चुवि एम्व भणेइ ।
मिलिवि समाणु महामुणिहिं पर संजमु न करेइ ॥९॥
मकरि मणाउवि मणु विरसु म करि दुकयकम्मु ।
वायारम्भुवि मा करहिं जइ किर इच्छसि सम्मु ॥१०॥
तित्थिवि अच्छउ अहव वणि अहवइ निअगेहेवि ।

दिवेदिवे करइ जु जीवदय सो सिज्झइ सव्वोवि ॥११॥
तवें सहुं संजमु नाहिं जसु एस्वइ गस्वइ जु दीह ।
पच्छइ तावु न जो करइ तासु फुसिज्जइ लीह ॥१२॥
सिज्झउ सो नरु एम्वहिं जि एत्तहि माणुस जम्मि ।
जो पडिकूलिवि कूव करइ पच्चल्लिउ गयधम्मि ॥१३॥
जइ संसारहो विचि ठिउ वुन्नउ वुत्तु सो एहु ।
पवणवहिल्लउं अप्पणउ मणु वढ सुथिरु करेहु ॥१४॥
निअमविहूणा रत्तिहिवि खाहिं जि कसरक्केहिं ।
हुहुरु पडन्ति ति पावद्रहि भमडहिं भवलक्खेहिं ॥१५॥
तव परिपालणि जसु मणु वि मक्कड घुग्घिउ देइ ।
आहर जाहर भवगहेणि सो घरं नहु पास्वेइ ॥१६॥
सग्गहो केहिं करि जीवदय दमु करि मोक्खहो रेसि ।
कहि कसु रेसिं तुहुं अवर कम्मारम्भ करेसि ॥१७॥
कसु तेहिं परिगहु अलिउ कासु तणेण कहेसु ।
जसु विणु पुणु अवमें न सिवु अवस तमु इक्कसिलेसु ॥१८॥

—कु० च० अष्टमे सर्ग ५८–७१

× × × × ×

भल्लत्तणु जइ महमि भल्लप्पणु पसेण ।
जइ करिएव्वउं पसमु विजउ तो करेव्वउं करणहं ॥१९॥
जइ अ करेवा करणविजउ तो मणु निचलु धरहु ।
निचलु मणु पुणु धरहु करिउ जउ रागदोसहं ॥२०॥
तह विजउ करहि रागाइअहं अविचलु सामाइउं करिवि ।
अविचलु सामाइउं करहि निम्ममत्तु निम्मन्तु करवि ॥२१॥
अन्तु करेप्पि निरानिउ कोहहो अन्तुकरेप्पिणु सव्वह
माणहो ।

अन्तु करेविणु मायाजालहो अन्तु करेवि नियत्तसु
लोहहो ॥२२॥
जइ चएवं मणमि संसारु मिवसुक्ख भुञ्जणा तुरिउ।
तो किर संगु मुंचणहिं करि मणु।
तह सुह गुरु सेवणहं निम्ममत्तु अइ दढु करेविणु ॥२३॥
चित्तु करेवि अणाउलउं वयणु करेप्पि अचप्पलउं।
कम्मु करेप्पिणु निम्मलउं झाणु पजुञ्जसु निच्चलउं ॥२४॥
जमणु गमेप्पि गमेप्पिणु जन्हवि गम्पि मरस्सइ भम्पि-
णु नर्मद।
लोउअजाणउ जं जलि वुड्डइ नं परसु किं नीरइं सिवस-
र्मद ॥२५॥

--कु० च० अट्ठमो सर्गो ७६-८०.

प्रशस्ति

गीति-

इमिआ रइआ माला, गिँरिरसँणिँहिणहंमि अम्मि वरिसम्मि
मंडणपुरम्मि कच्छे गुलाबसीसेणं मुणिरयणेणं ॥१॥
संसोहिअ पुण लिहिआ एगाँसुँत्तरंएंगुणवीसाए।
पोस सुकिलपढमाए झालावाडोमेरडागामम्मि ॥२॥

इति श्री प्राकृत-पाठमाला समाप्ता.

---

१ नोट- झालावाडप्रदेशान्तर्गते उमरडाख्यग्रामे इत्यर्थः

बोधपाठमां आवेलां प्राकृत वाक्योनो गुजराती तथा गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद.

बोधपाठ २ जो.

(प्राकृत वाक्योनो गुजराती अनुवाद).

१ तीर्थंकरो मोक्षे जाय छे. २ आचार्य स्वर्गे जाय छे. ३ तुं अवसर जाणे छे. ४ उपाध्याय मोक्षमार्ग कहे छे. ५ अमे महावीरस्वामीना गुणो जाणीए छीए. ६ माणस गुणोथी प्रमोद मेलवे छे. ७ अमे धर्म वडे वधीए छीए. ८ तमे साधुनो धर्म पालो छो. ९ कृपणो लोभने लीधे नरकमां पडे छे. १० क्षत्रिय लोकोने दुःखमांथी बचावे छे. ११ तमे अधर्ममांथी अमने बचावो छो. १२ हुं धर्मना पंथमां रहुं छुं. १३ तुं गृहस्थाश्रममां रहे छे. १४ क्रोधथी अथवा लोभथी अमे बोलता नथी. १५ तुं श्रावकोना नियमो भणे छे.

(गुजरातीनां प्राकृत वाक्यो).

१ अम्हे धमस्स पहे गच्छामो। २ तुब्भे वीरस्स धम्मं वुज्झह। ३ कोहेण जणो णरअं लहइ। ४ अहं तुम्हे वयामि। ५ तुब्भे मोक्खस्स मग्गं गच्छित्था। ६ तुब्भे ण पढह। ७ तुमं अहम्मेण णरए पडसि। ८ किविणो धम्मं ण रक्खइ। ९ किलेसेण कोहो वड्ढइ। १० आग-

रिओ समणधम्मं रक्खइ । ११ वयं खत्तिआणं धम्मं बुज्झामु । १२ जणा धम्मेण पमोअं लहन्ते । १३ तुम्भे पत्थावं वुज्झित्था ।

बोधपाठ ३ जो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ गुरुओ शिष्योनी मुक्ति इच्छे छे. २ तुं गुरुनो विनय इच्छे छे. ३ ऋषिओ विषयभोगोमां आसक्त थता नथी. ४ ऋषिओ झाडना मूले (मूल पासे) वसे छे. ५ साधुओ संयमथी आनन्दरूपी बगीचामां विचरे छे. ६ मुनिनुं रहेठाण पर्वत उपर श्रेष्ठ छे. ७ मुनि गुरुने नमे छे. ८ अज्ञानी क्रोधाग्निथी तपे छे. ९ शत्रुओ बाण फेंके छे. १० बालक (बे) हाथमां लाडवो लइ जाय छे. ११ हाथी पगो वडे वृक्षो फेंके छे. १२ हाथीओ पर्वतना शिखर उपर क्रीडा करे छे. १३ सूर्य ग्रीष्ममां तपे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे रिसी णविमो । २ भाणू गिरिणो सिहरम्मि तवइ । ३ तुम्भे मोक्खएसु गिज्झह । ४ तुमं गिरिस्स सिहरम्मि चरसि । ५ अम्हे इसीणं पहे रमेम । ६ हत्थी तरुणो खिवन्ति । ७ वयं भोअम्मि ण गिज्झिमो । ८ साहवो संजमं वहन्ति ।

बोधपाठ ४ थो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ भमरो फूलनुं सत्त्व पीए छे. २ तुं पर्वतना शिखर

उपर उभो छे. ३ हुं साधुना गुणोनो संचय करुं छुं. ४ भमरो पराग एकठो करे छे. ५ राजा शत्रुओने जीते छे. ६ तमे क्रोध रूपी शत्रुने जीतो छो. ७ हुं भव्य जनोने मार्गे लइ जाउं छुं. ८ तुं संसारथी बीए छे. ९ अमे दुर्गुणोथी बीए छीए. १० तुं वेपारीनी दुकानेथी खरीदे छे. ११ अमे मुनिओनां बोधने सांभलीए छीए. १२ ब्राह्मणो अग्निमां जव होमे छे. १३ हुं तीर्थंकरनी स्तुति करुं छुं. १४ पंडित धर्मनिष्ठ होय छे. १५ साधुओ आत्मसाधक होय छे. १६ धर्म देहने पवित्र करे छे. १७ पताका पवनथी कंपे छे. १८ खेडुत खेतरमां जव लणे छे. १९ चतुर माणस धर्मनो उद्योग करे छे. २० चोर साहुकारनो रथ चोरी जाय छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ किंकरा णिवत्तो बीहइ । २ वाणिओ हत्थिणो किणइ । ३ तुम्भे गुरूणो बोहं सुणित्था । ४ अम्हे आवणे चिट्ठामु । ५ तेणो वाणिअस्स आवणाओ (धणं) हरइ । ६ रिसओ भविअजणे धम्ममग्गे णेन्ति । ७ तुमं णिंव थुणसि । ८ वयं खत्तिआ होमु । ९ तुम्भे बम्हणा होह । १० साहूणं बोहो भव्वजणे पुणइ । ११ वयं धम्मस्स वावारं कुणेम । १२ मुणीणं बोहो दुग्गुणे हरेइ ।

बोधपाठ ५ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ तुं चतुर छे. २ हुं धर्मनिष्ठ छुं. ३ अमे साधुओ

छीए. ४ तुं क्षत्रिय छे. ५ तमे वेपारी छो. ६ भव्यजनो महावीरस्वामीनां वचनो सांभले छे. ७ तमे तलावमां पाणी पीओ छो ८ राजा धनुष वडे बाण फेंके छे. ९. राजानुं बाण जंगलमां पडे छे. १० साधुनुं दर्शन हृदयने पवित्र करे छे. ११ वेपारी धनवडे वस्त्रो खरीदे छे. १२ सूर्य प्रकाश वडे टाढने दूर करे छे. १३ शास्त्रना श्रवण वखते साधुं धुणे छे. १४ धर्मथी सुख छे. १५ बालक दहिं साथे भात खाय छे. १६ पवनथी आंखमां रजकण पडे छे. १७ ते आंखनी दवा करे छे. १८ भव्यजन मनमां तीर्थंकरनुं दर्शन इच्छे छे. १९. संसारमां सुख अथवा दुःख पूर्वभवनां कर्मो अनुसार भोगवे छे. २० पंडितो सदा हित, मित तथा मधुर वचन बोले छे. २१ तमे साचुं बोलो छो. २२ अमे जुठुं कोइ पण वखते बोलता नथी.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे वणम्मि मुणीण दंसणं कुणेमो । २ वयं वत्थस्स वावारं करामु । ३ महुराइं वयणाइं हिययस्स दुहं हरन्ति । ४ तेणा वणम्मि वत्थाइं हरन्ति । ५ किविणा धणस्स लोहेण दुहं लहन्ति । ६ अम्हे रिसउ म्हो । ७ तुब्भे मुणी अत्थि । ८ अहं वम्हणो म्हि । ९. तुब्भे गामम्मि सत्थं सुणेह । १० जलं सराओ बहि गच्छइ । ११ णेत्तस्स दुहाउ सिरं धुणइ । १२ वयं णेत्तस्स ओसहं कुणिमो । १३ तुब्भे अम्हे मणेणं इच्छह । १४ कुसला जणा हिअं मिअं सच्चं (अ) वयंति । १५ वाणिआ कुसला अत्थि । १६ तुमं वाणिओ सि ।

बोधपाठ ६ ठ्ठो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ सारथी वनमां रथने भमावे छे. २ तुं गाममां अमने भमावे छे. ३ राजा नोकरने काम देखाडे छे. ४ हुं जिनदासने हस्तिनापुरनो मार्ग देखाडुं छुं. ५ तुं भव्य जनोने शास्त्रनो अर्थ देखाडे छे. ६ अधर्म कंकाश (करावी) हृदयने संतापे छे. ७ भमरो पुष्पमांथी पराग (लेवा) इच्छे छे. ८ तमे बोध वडे श्रावकोने रंजन करो छो. ९ तीर्थंकर भव्यजनोना कर्मोनो नाश करे छे. १० कृपण दान करवामां ढील करे छे. ११ उपाध्याय शिष्योने शास्त्र भणावे छे. १२ तमे अमने उत्तराध्ययन भणावो छो. १३ राजा धनुष वडे शत्रुने बीवडावे छे. १४ पंडित विस्तारथी शास्त्र संभलावे छे. १५. मुनिओ बोध वडे धर्म करावे छे. १६ साहुकारो विवाहमां ज्ञातिजनोने जमाडे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुब्भे लोहेणं अम्हे भमाडेह । २ तुब्भे सया हिअमग्गं दंसित्था । ३ मुणिणो कयावि अहम्मस्स मग्गं ण दावेन्ति । ४ णिवा लोहेण जणे दमन्ति । ५ भविअ-जणा मोक्खं सिहिरे । ६ सारही णिवं रावइ । ७ वयं णिवस्स अरिणो णासवेम । ८ किंकरा आलस्सेण कालं खवइ । ९ पंडिआ पाले पाढेन्ति । १० वाणिआ धणेणं गाइं किणावेन्ति । ११ गुरवो अम्हे सत्थं सुणावन्ति ।

बोधपाठ ७ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ वनिता माथामां फुलनी माला धारण करे छे. २ मुनि भूखने तथा तरसने सहन करे छे. ३ पंडित बुद्धिनी परीक्षा करे छे. ४ देवांगनाओ स्त्रीओनी परिषद्मां उभी रहे छे. ५ तीर्थंकरनी वाणी लोकोनुं कल्याण करे छे. ६ चतुर माणस क्षमा वडे क्रोधने जीते छे. ७ नीति द्वारा आचार माणसने मोक्षमार्गे लइ जाय छे. ८ धीरज लोभना विस्तारनो नाश करे छे. ९ गुरुओनी कृपा शिष्योनुं हित साधे छे. १० तुं सूक्ष्म दृष्टिथी काम करे छे. ११ अमे गुरुओ साथे प्रेमथी वसीए छीए. १२ तमे परिषदोमां धर्म कहो छो. १३ मुनिओ सभामां नीतिनो बोध करे छे. १४ उत्तराध्ययनसूत्रमां गाथाओ छे. १५ धीरजथी मनमां प्रमोद थाय छे. १६ तमे शास्त्रनुं पुनरावर्तन करो छो. १७ चोर वस्त्रने धरे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे बुद्धीइ सत्थं बुज्झामु । २ इत्थीओ धिईआ कज्जं कुणन्ति । ३ जिणस्स वाणी णीइपहं दावेइ । ४ गुरुणो पीई सत्थस्स बोहं करावेइ । ५ सुहुमा दिट्ठी सत्थस्स रीइं दंसेइ । ६ णिवस्स णीई जणाणं सुहं साहेइ ।७ णीईए बोहो हियअं पुणाइ । ८ जिणस्स किवा जणाणं हिअं साहेइ। ९ खमाइ जणो सया जिणाइ । १० तुब्भे सत्थस्स गाहाओ पढह । ११ वयं सभाए बोहं सुणिमु । १२ परिसाए इत्थीओ (वि) आगच्छन्ते । १३ छुहा पिवासा अ मणं दूमिरे ।

बोधपाठ ८ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ जुवानो मानसिक बल वडे काम (विकार) ने जीते. २ बालको प्रातःकालमां बापने नमे. ३ तमे सामायिक करो. ४ राजाओ नीति द्वारा लोकोनुं हित साधे. ५ शिष्य गुरुनो विनय करे. ६ तुं उतावलथी पुनरावर्तन कर. ७ तुं विनयने न छोडतो. ८ तमे दोषसहित अथवा असत्य (वचन) न बोलता. ९ उपाश्रयमां अशुद्ध कपडां पहेरीने न आवता. १० तुं दोषने त्याग (अने) गुणने ग्रहण कर. ११ क्षमां वडे क्रोधने जल्दी तज. १२ उपाध्याय विनीत शिष्योने सूत्र भणावे १३. शत्रुओनुं पण कल्याण थाओ एम इच्छुं छुं. १४ विनयथी अथवा मृदुताथी अभिमाननो नाश करे. १५ हृदयमां संतोष राखो. १६ हुं कंजुसाइ नहि करुं. १७ अमे शुद्ध अध्यवसायथी हृदयशुद्धी करीए. १८ तुं धर्मस्थानकमां शयन नहि कर.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुम्भे सुत्तस्स अट्ठं पढावेह। २ वयं सज्झायं कुणिमो। ३ भविअजणा मोक्खमग्गं लहन्तु। ४ मुणिणो असुद्धं वत्थं ण गेण्हेज्जा। ५ तुम्भे देहस्स असुद्धिं परिहरह। ६ (तुम्भे) पभायम्मि सया उवस्सयम्मि आगच्छह। ७ (तुम्भे) सामाइअम्मि असच्चं मा वयह। ८ (तुम्भे) संतोसेण लोहं चयह। ९ विणेआ अज्झवसाअवलेणं हियअसुद्धिं कुणिज्जाह। १० सभाए वुड्ढीए परिक्खं कुणह। ११ तुम्भे छुहं पिवासं अ सहेह। १२ (तुम्भे) णीइए पहं कयावि मा चयह। १३ (तुम्भे) सुहेणं अज्झवसाएणं मणं पुणेह।

बोधपाठ ९ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

पिता पुत्रने प्रीतिथी रमाडे छे. २ पिता साथे पुत्र क्रीडा करे छे. ३ नथी ईश्वर लोकनो कर्ता. ४ जीव कर्मोनो कर्ता छे. ५ भाग्योना बलथी राजा युद्ध करे छे. ६ माताना खोलामां बालक ऊभो छे. ७ माताओ पुत्रोनी पेठे जमाई प्रति पण प्रीति राखे छे. ८ दियर भोजाइनी साथे कंकाश करे छे. ९ माता साथे कंकाश न कर. १० एवी रीते फरी फरीने शुं करे छे? ११ (ते) हमणां ज पिताने घेर जाय छे. १२ हमणां ज नणंद आवे छे. १३ (तुं) वृथा खेद मा कर. १४ माताओ घरमांथी बहार जाय छे. १५ मृगावतीनी नणंद जयंती नणंद थाय छे. १६ उदायन चेटकनो दोहितरो तथा जयंतीनो नणंदनो भत्रीजो थाय छे. १७ जयंती सहस्रानीकनी पुत्री, शतानीकनी बहेन तथा उदायननी फोई थाय छे. १८ मृगावती जयन्तीनी भोजाइ थाय छे. १९ हुं देराणी साथे क्लेश नथी करतो.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे अहुणा चेअ गच्छामु । २ पिआ अज्जचिअ पुत्तं सिक्खेज्जा ३ माआओ पुत्ते किणो सिक्खन्ति । ४ तुम्भे भाऊहिं सह किलेसं माइ कुणह । ५ भाअरा सुहस्स कत्तारा अत्थि । ६ वयं इत्थं सामाइअं कुणेमो । ७ अन्नहा पुत्ता विणयं ण करेज्जा । ८ अम्हे अहुणाच्च आगच्छिमो चे । ९ बालो पिउत्थाए गिहं गच्छइ । १० लोअस्स कत्ता अत्थि किणो ? । ११ चेडगस्स चमू जुज्झइ । १२ खत्तिआ बम्ह-

णेहिं सह मा जुज्झन्तु, १३ किन्तु सया णीइपहे चिट्ठन्तु। १४(स) गिहाओ बहिं गच्छइ। १५ किंकरा भाअरस्स पुत्ते रमावेन्ति। १६ भाउज्जाओ णणंदाए विणयं कुणन्ति। १७ देवरो भाउज्जायाए णवइ।

बोधपाठ १० मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ सज्जनो लोकोने अभ्युदय करवा प्रवृत्ति करे छे. २ भाग्यशाली पुरुषो परमार्थ करतां परलोकनुं कार्य साधे छे. ३ (ते) स्नान करीने भोजन करे छे. ४ (ते) सामायिक करीने बहार जाय छे. ५ (ते) हाथमां फल लइने परदेश प्रति प्रयाण करे छे. ६ सुवर्णनी मुद्रिका लेवा बालक हाथ लंबावे छे. ७ साधुनां वचनो सद्बुद्धिवडे ग्रहण करवां. ८ बालक माताने कहेवा इच्छे छे. ९ (ते) दूधपाक जमीने भात जमवा इच्छे छे. १० साधुए हम्मेश सरस सरस भोजन न करवुं. ११ तीर्थंकर कर्मो मुकीने मोक्षे जाय छे. १२ (ते) कषायने शमाववा इंद्रियोनुं नियमन करे छे. १३ धर्मनुं फल-सुख जोइने तत्त्व प्रति आस्था राखे छे. १४ भोजन करती वाला वरसादने जोवा बहार जाय छे. १५ आपत्तिमां पण पुरुषोए न रडवुं. १६ मारुं ध्यान करती गृहिणी पति उपर क्रोधे भराती उभी छे. १७ प्रमादथी जती स्त्री पगले पगले ठोकर खाय छे. १८ अंग भणी उपांग भणवा प्रवृत्ति करे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ सव्वजणा धम्ममायरिऊण सुग्गइं गच्छन्ति। २

पिआ पुत्ते पाढविउं वांछइ । ३ उवज्झाओ सत्थस्स अट्ठं कहिउं वांछइ । ४ गामं गच्छमाणो जणो मग्गे चिट्ठइ । ५ पिअरं पासंतो पुत्तो पहे चरइ । ६ मुणी भविअजणे बोहेउं गामम्मि वसन्ति । ७ भुंजमाणो बालो कालं जवइ । ८ तुम्भेहिं सत्थस्स अट्ठा घेत्तव्वा । ९ पइं कुप्पमाणा इत्थी गिहस्स कज्जं कुणइ । १० वाणिआ धणमज्जिउं वावारं करन्ति । ११ अहं गुरुसगासे वागरणं पढिऊण कव्वं सिक्खामि । १२ तुम्भे गामम्मि गच्छित्ता वहिमागच्छह । १३ पिआ पुत्तं रमावेउं वणम्मि गच्छइ । १४ अम्हे धम्मं सुणिऊण मणं रावेमो । १५ असुद्धमग्गं मोत्तुं सच्चं गेण्हइ । १६ तुम्भे परिसाए वोत्तुं वांछह ।

बोधपाठ ११ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ जुवान जुवान साथे लडे छे. २ रस्तामां उभेला साधु धर्मनो उपदेश करे छे. ३ बालक पण पोतानुं हित विचारे छे. ४ तीर्थंकर आत्माथकी कर्मोने जुदा करे छे. ५ भव्यजनो पोतानी मेले धर्म करे छे. ६ शिष्य पोतानामां गुरुओनी शिक्षा धारे छे. ७ राजानी कृपा पण अनाश्रितोनुं सुख साधे छे. ८ परस्पर लडतां राजाओनां मनमां क्लेश वधे छे. ९ कुतरो तलावमां पाणी पीए छे. १० तमे राजानुं फरमान बजावतां ढील करता नथी. ११ श्रेणिकराजानां वचनो सांभलीने मुनि कहे छे के हे श्रेणिक! तुं पोते पण अनाथ छो. १२ नीचे उभेला माणसना माथा उपर पर्वत परथी पत्थराओ पडे छे. १३ निर्मल शिला उपर साधु बेसे

छे. १४ सारथी बलदोने रथमां जोडे छे. १५ सूर्यनो प्रकाश अंधकारने दूर करे छे. १६ सूर्य पासेथी लोको प्रकाश मेलवे छे. १७ वनस्पतिओने पोषवा सूर्य समर्थ छे. १८ माणस पोताना बलथी जेटलो वधे छे तेटलो बीजाना बलथी वधतो नथी. १९

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ जुवाणेहिं गुरुस्स सिक्खं गिण्हिऊण णीइपहे गच्छियव्वं । २ रण्णा अप्पणो दीणजणेसु किवा कायव्वा । ३ साणो तडाअम्मि जलं पाउं गच्छइ । ४ उज्जाणम्मि ठिओ अणाहिमुणी सेणिअराअमुवएसइ । ५ उच्छाणो णीरअम्मि गावाणम्मि अच्छइ । ६ पूसणो पआसो अंधआरं पराजयइ ७ रण्णो आएसेण सारही रहं णिओअइ । ८ पूसा अप्पणो पआसेणं वणप्फइं पूसइ । ९ (ते) परोप्परं ण जुज्झिज्जा तहा उवएसइ ।१० सिस्सा गुरुणो पासम्मि अप्पणो मुद्धाणं णावावेन्ति । ११ तरुणो हेट्ठं अच्छमाणं जणं (सो) पासइ।

बोधपाठ १२ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ हमणां तुं केम देखातो नथी?. २ माराथी जैनशास्त्रो संभलाय छे. ३ आकाशमां मेघनो ध्वनि संभलाय छे. ४ राजाथी जंगलमां चोर हणाय छे. ५ साधुथी सूक्ष्म पण जीव हणातो नथी. ६ चोरथी साहुकारना घरमांथी धन हराय छे. ७ नदीना प्रवाहथी गाममां जतो माणस अटकावाय छे. ८ आत्मा कर्म रूपी रज्जुथी बंधाय छे. ९ धुता-

राथी भोलो माणस कपट वडे वंचाय छे. १० मुनिथी नर्जीवुं [illegible] जातुं. ११ ज्ञानथी संसारसागर तराय छे. १२ तेनाथी वचननुं रहस्य नथी समजातुं. १३ माराथी गुरुनां वचनो वस्तुतः समजाय छे. १४ पाप करतो तुं तीर्थंकरथी जोवाय छे. १५ स्वमत कहेवा माराथी आरंभाय छे. १६ तेनाथी दरेक क्षणे कर्मो एकठां कराय छे. १७ अनाश्रितना घरमांथी थोडुं पण धन चोरोथी मा चोराओ. १८ चंडालोथी तुं रखे अडकानो. १९ तपस्यारूपी इन्धनथी कर्मो बली जाओ.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ धम्मेणं अहम्मो हम्मइ । २ रज्जूए पसवो विव पावेण जणा बज्झन्ति । ३ सच्चस्स पहम्मि दुज्जणेहिं सज्जणा ण रुब्भन्ति । ४ साहुजणेहिं सज्जणा थुव्वन्ति । ५ सेट्ठीणं धणं तेणेहिं हीरइ । ६ अप्पणो बुद्धीए सत्थस्स तत्ताणि विढप्पन्ति । ७ मुद्धाणम्मि जलं सिप्पइ । ८ वग्धन्तेहिं वग्घन्तेहिं हस्सइ । ९ गच्छन्तेहिं गच्छन्तेहिं रूव्वइ । १० णिरिक्खणेणं सत्थस्स रहस्सं णज्जइ । ११ गुरुणो बोहेणं तत्तं णव्वइ । १२ तुब्भे साहूणं बोहेणं णेइज्जह । १३ वम्हणेणं चंडालो ण छिप्पइ । १४ जुवाणेणं णाई णीरइ । १५ पडिक्कमणं अहं जिणेहिं दीसामि । १६ पआसेणं अंधआरो हीरइ ।

बोधपाठ १३ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ बधा भव्यजीवो सिद्ध थाय छे. २ शामाटे ते

पुरुषो त्यां उभा छे? जेटला माटे गामना बधांये लोको तेमनो मार्ग जुए छे. ३ कोण कहे छे के जैनधर्म बीजा बधा धर्मो करतां उत्तम नथी. ४ जे धर्म करे छे ते सुख पामे छे. ५ शा कारणथी तमे हसीने बोलो छो?. ६ जे हेतुथी बधी स्त्रीओनो पहेरवेश विकार पामेलो देखाय छे. ७ शा कारणोने लइने ते तेमना माथाओ कापे छे?. ८ केटलाएक लोको पोतानो वध थाय छतांये असत्य बोलता नथी. ९ तेटलामाटे तेना मनमां वेर प्रगटे छे. १० कया गाममां ते कुटुम्ब साथे रहे छे. ११ जे गाममां नथी कोई पण चोर. १२ त्यां राजा कोण छे? तेनुं नाम शुं छे?. १३ ज्यारे गाय दोहे छे त्यारे ते बेर आवे छे. १४ ज्यां राजा पोते अपराध करे छे, त्यां बीजा लोकोनी शी वात ?. १५बेमांथी क्या गाममां ते लोकोनुं रहेठाण थवानुं छे. १६बीजे क्यां सुखथी अमे रहीए. १७ ते कयी स्त्रीनो भरथार छे?. १८ जेनुं मुख जोइने खुशी थाय छे तेनो भरथार. १९ बीजाओनी निन्दा न कर. २० (ते) कोनाथी बीए छे? जेमनुं मुख भयंकर जुए छे तेमने जोईने बीए छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे सव्वे मुणी णविमो । २ तुम्भे कस्स गिहं गच्छह । ३. अण्णेहिन्तो तेसिमाआरो वरो अत्थि । ४ जे ण पढन्ति ण ते सुहं लहन्ति । ५ किणा ते णरअम्मि गच्छन्ति । ६ तम्हा तुम्भे ते कहह । ७ सव्वेसिं हिअं कत्थ रक्खिज्जइ । ८ जास मणं धम्मम्मि रमइ सो जणो अप्पणो हिअं साहेइ । ९ जत्थ तुम्भे वसह तत्थ अम्हे वसामो । १० कम्मिं जणम्मि

सव्वे दोसा णसीयन्ति । ११ तुब्भे दोसु कअरं जणं वांछह । १२ सव्वेसु जणेसु जिणो सेट्ठो अत्थि । १३ पभायम्मि कास मुहं णिरिक्खिऊण घर्हि णिगच्छइ । १४ सो जं णिरिक्खइ तं णवइ । १५ तुब्भे इअरेहिन्तो वीहिऊण गच्छह १६ सव्वे जणा णेत्तेण णिरिक्खन्ति मणेणं य चिन्तन्ति । १७ सव्वेहिं अप्पाणस्स हिअं साहिज्जइ । १८ जेणं सुहं होज्जा तं सया कुणह ।

बोधपाठ १४ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ हुं गुरुनी पासे शास्त्र भण्यो. २ तें धर्म करीने आत्माने पवित्र कर्यो. ३ गोवालीओ गायोने वनमां लइ गयो. ४ आचार्य मुनिओने संयम मार्गे लइ गया. ५ तुं पहेलां व्यवहारमां जेवो चतुर हतो हमणां तेवो नथी. ६ ज्यारे तुं पुत्र साथे बोलतो हतो त्यारे हुं उपाश्रये गयो. ७ शुं देवदत्त घरमां न हतो?. ८ शामाटे माता साथे बालक रड्यो?. ९ महावीरस्वामीना बधा शिष्योनी सद्गति थई. १० तजेला कामभोगो, नाश पामेलुं ममत्व, छोडेला विषयो जीवने सुख आपे छे. ११ ते गाममां मुनिए धर्मनो अभ्युदय कराव्यो. १२ पालके स्कन्धकना शिष्योने घाणीमां पील्या. १३ तेमनी विशुद्ध भावे करीने सद्गति थई. १४ रावण साथेना युद्धमां रामचन्द्रजी जीत्या. १५ रावण रामचन्द्रजीनी पत्नी सीताने हरी गयो. १६ शेठे व्यापारमां घणुं धन एकठुं कर्युं. १७ पगथी दबाएला जीवडाए ऊँचे उठवा प्रयास कर्यो. १८ उडता पक्षीए पर्वत उल्लंघ्यो. १९ विकसेला कमले गुंजता भमराने आकर्ष्यो. २० चंडालथी

अभडाएलो ब्राह्मण न्हाईने जमे छे. २१ चोरेलुं धान्य वेपारी धनवडे खरीदे छे. २२ राजाए धर्मनुं मकान बंधाव्युं.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ मए मुणीणं बोहो सुणिओ। २ तए देहो पिव धम्मो रक्खिओ। ३ खत्तिओ बम्हणेहिं सह जुज्झीअ। ४ जणा पुरा इड्ढिमन्ता अहेसि। ५ सिरि महावीरो धम्मस्स विउलमब्भुदओ करीअ। ६ सो साहुसेवाए फलं लहीअ (तेण......लहिअं) । ७ सेट्ठी किंकराणं विउलं धणं देसी। ८ अम्हे वि पहे तेहिं सह आसि। ९ सव्वे जणा सह वसीअ। १० अम्हे रण्णो पासाए अच्छीअ। ११ तेहिं विउलं धणमज्जिअं। १२ वाणिआ धणमज्जिउं परएसं गच्छीअ। १३ सज्जणा गुणेहिं सग्गइं गआ। १४ सेट्ठिणा विउलधणेण पासाओ कराविओ।

बोधपाठ १५ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ ए साधु आ श्रावकने शुं कहे छे?. २ आ माणस पात्रे घणुं दान करे छे. ३ आनां जन्म तथा जींदगी सुकृत वडे सफल थाय छे. ४ आणे खरेखर सारो मनुष्य जन्म मेलव्यो. ५.एमना हृदयमां उन्नत विचारो छे. ६ अहिं कयो पुरुष उभो छे? ७ एओ पेलानी साथे मैत्री राखे छे. ८ पेली स्त्री सर्व कार्यमां निपुण छे. ९ पेलो माणस सदा य परमार्थना कार्यो करे छे. १० पेलुं फल भर्तृहरिए पिंगलाना हाथमां आप्युं हतुं ११ आ गणिका जुवानोनुं धन हरी ले छे. १२ पेलुं लश्कर कोणिक राजाने साहाय्य करे छे. १३ आ

भवमां करेलो धर्म परभवमां सुख आपे छे. १४ आ युद्धमां कोणिकराजा जीते छे. १५ आ बालक ते माणसनो न्हानो भाई थाय छे. १६ ए माणस तरफथी तुं सुख न पाम्यो. १७ आ ठेकाणे घणा राजाओए राज्य कर्यां १८ पेला गाममां केटला सत्यवादीओ छे? १९. एनाथी वधारे बीजुं शुं दुःख होय? २० ए प्रसंगे एणे आ कह्युं. २१ आ मार्गमां घणा कांटा होय छे. २२ पेलानी दृष्टि (नजर) ए पुरुषने जुए छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ इमिणा जणेण धम्मस्स बहूणि कज्जाणि कडाणि । २ तुम्भे एअं सच्चपहं दावेह । ३ एएण अस्स णरिंदस्स धम्मे णासविओ । ४ अस्स णामहेयं धम्मसिंह त्ति अत्थि। ५ एएहिं सव्वेसिं धम्माणं सत्थाणि णिरिक्खआणि। ६ इमस्सि सव्वेसिं रहस्स मागच्छइ ।७ एत्ताहे अण्णो को अहिओ अत्थि । ८ इमिणा अम्हे सया पमोइआ । ९ णेण धम्मसत्थाणि सुट्ठु बोहिआणि । १० इमो जणो अहिओ सुणिउणो अत्थि। ११ तुम्भे इमं अहिअं मा पीडह। १२ इमे लोआ सव्वेसु कज्जेसु कुसला अत्थि । १३ अमूहिं बहवो जणावआ दिट्ठा। १४ इमेहिन्तो तुम्भे मणम्मि मा बीहह। १५ अमूहिं सह मेत्ती ववहारम्मि अइ सुट्ठु अत्थि । १६ जे गुणा (आवस्सआ) ते सव्वेवि अस्सिं अत्थि। १७ अमूसु एगा रीई अइसुट्ठु अत्थि ।

बोधपाठ १६ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ आ माणस महापुरुषोना संगथी महापुरुष थशे. २ एओ साधुओनी पासे कठिन शास्त्रो भणशे. ३ तुं अहिं उभो रहीने शुं करशे? ४ तेओ सुपात्रे उचित अन्न आपशे. ५ हुं गुरुना दर्शन करवा सोरठ जइश. ६ अमे हृदय शुद्धि करीने आप्तवचनो सांभलीशुं. ७ हुं नित्य अध्यात्म शास्त्रो सांभलीश. ८ तमे आगल जतां इष्ट पुरुषने जोशो. ९ ज्यारे शेठ पूछशे त्यारे काम कर्या विना तुं शुं कहेशे? १० अकार्यना परिणामे पापनो प्रादुर्भाव थतां तुं घणो रडीश तोपण कोइ छोडावशे नहिं. ११ त्यारे तुं पापनुं फल जाणशे, ज्यारे जमो त्हारा हाथ, पग, नाक, जीभ तथा कान कापशे. १२ जो तुं कुत्सित भोजन, मांस अथवा दारू कोइ पण वखते खाशे तो तेनुं परिणाम भयंकर आवशे. १३ तुं जो नीतिमार्गे चालशे तो त्हने हुं घणुं धन आपीश. १४ अधर्म करशे तो विपरीत फल पामशे. १५ जेटलो धर्म करशे करावशे तेटलां सुख शांति मेलवशे. १६ एना प्रतापथी बधो कंकास शमी जशे. १७ एओ सर्वत्र गाममां अथवा संघमां कंकाशने शमावशे. १८ आनाथी एं आड भेदाशे नहीं. १९ आ पटेल उद्यमवडे धनवान् थाय छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुब्भे धम्मस्स कज्जं कया करिहित्था? । २ तुब्भे जं हणह, सो तुम्हे हणिहिइ तया तुब्भे किं ण मन्निहिह? । ३ मच्चू आगच्छिहिइ चे तुब्भे ण मोच्छिहिह । ४ कुट्टं

भवमां करेलो धर्म परभवमां सुख आपे छे. १४ आ युद्धमां कोणिकराजा जीते छे. १५ आ बालक ते माणसनो न्हानो भाई थाय छे. १६ ए माणस तरफथी तुं सुख न पाम्यो. १७ आ ठेकाणे घणा राजाओए राज्य कर्यां १८ पेला गाममां केटला सत्यवादीओ छे? १९. एनाथी वधारे बीजुं शुं दुःख होय? २० ए प्रसंगे एणे आ कह्युं. २१ आ मार्गमां घणा कांटा होय छे. २२ पेलानी दृष्टि (नजर) ए पुरुषने जुए छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ इमिणा जणेण धम्मस्स वहूणि कज्जाणि कआणि । २ तुब्भे एअं सच्चपहं दावेह । ३ एएण अस्स णरिंदस्स चमू णासविआ । ४ अस्स णामहेयं धम्मसिंह त्ति अत्थि । ५ एएहिं सव्वेसिं धम्माणं सत्थाणि णिरिक्खिआणि । ६ इमस्सिं सव्वेसिं रहस्सं माग‌च्छइ ।७ एत्ताहे अण्णो को अहिओ अत्थि । ८ इमिणा अम्हे सया पमोइआ । ९ णेण धम्मसत्थाणि सुट्ठु बोहिआणि । १० इमो जणो अहिओ सुणिउणो अत्थि । ११ तुब्भे इमं अहिअं मा पीडह । १२ इमे लोआ सव्वेसु कज्जेसु कुसला अत्थि । १३ अमूहिं बहवो जणवआ दिट्ठा । १४ इमेहिन्तो तुब्भे मणम्मि मा बीहइ । १५ अमूहिं सह मेत्ती ववहारम्मि अइ सुट्ठु अत्थि । १६ जे गुणा (आवस्सआ) ते सव्वेवि अस्सिं अत्थि । १७ अमूसु एगा रीई अइसुट्ठु अत्थि ।

बोधपाठ १६ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ आ माणस महापुरुषोना संगथी महापुरुष थशे. २ एओ साधुओनी पासे कठिन शास्त्रो भणशे. ३ तुं अहिं उभो रहीने शुं करशे? ४ तेओ सुपात्रे उचित अन्न आपशे. ५ हुं गुरुना दर्शन करवा सोरठ जइश. ६ अमे हृदय शुद्धि करीने आप्तवचनो सांभलीशुं. ७ हुं नित्य अध्यात्म शास्त्रो सांभलीश. ८ तमे आगल जतां इष्ट पुरुषने जोशो. ९ ज्यारे शेठ पूछशे त्यारे काम कर्या विना तुं शुं कहेशे? १० अकार्यना परिणामे पापनो प्रादुर्भाव थतां तुं घणो रडीश तोपण कोइ छोडावशे नहि. ११ त्यारे तुं पापनुं फल जाणशे, ज्यारे जमो त्हारा हाथ, पग, नाक, जीभ तथा कान कापशे. १२ जो तुं कुत्सित भोजन, मांस अथवा दारू कोइ पण वखते खाशे तो तेनुं परिणाम भयंकर आवशे. १३ तुं जो नीतिमार्गे चालशे तो त्हने हुं घणुं धन आपीश. १४ अधर्म करशे तो विपरीत फल पामशे. १५ जेटलो धर्म करशे करावशे तेटलां सुख शांति मेलवशे. १६ एना प्रतापथी बधो कंकास शमी जशे. १७ एओ सर्वत्र गाममां अथवा संघमां कंकासने शमावशे. १८ आनाथी ए झाड भेदाशे नहीं. १९ आ पटेल उद्यमवडे धनवान् थाय छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुम्भे धम्मस्स कज्जं कया करिहित्था? । २ तुम्भे जं हणह, सो तुम्हे हणिहिइ तया तुम्भे किं ण रुविहिह? । ३ मच्चू आगच्छिहिइ चे तुम्भे ण मोच्छिहिइ । ४ कुटुंबं

भणं वा किंचिवि सह ण आगच्छिहिइ । ५ धम्मो कुणिओ च्चे सोच्चेअ सहागच्छिहिइ । ६ कस्स वि जंतुणो पाणा मा हरिहिइ । ७कंवि छेच्छिहिइ भेच्छिहिइ चे तुब्भे छिन्दिज्जिहिइ भिन्दिज्जिहिइ । ८अम्हे धणमज्जिऊण दीणजणे दाहामो । ९ तुब्भे वि सुपुत्तम्मि दाहित्था ? । १० वयं सया एएहिं सह चलिहामु । ११ ते परमत्थस्स कज्जे अईव साहज्जं दावेहिन्ति । १२ (तुब्भे) कस्स वि हरिअं दव्वं मा किणिहिइ । १३ जहा करिहित्था तहा लहिहित्था । १४ साहवो उवएसिहिन्ति समणोवासआ अधम्मकज्जाणि करिहिन्ति । १५ पावं करिहिइ चे तस्सोदअम्मि विरूवं तप्परिणामं दच्छिहित्था । १६ धणं लहिअं चे भोअणमत्तेण मा पमोअह किन्तु अणणे भोआवेहित्था । १७ धम्मसत्थाणि सुणिहित्था चे अप्पणो सुद्धी होहिइ ।

बोधपाठ १७ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ जो ! बे ब्राह्मणो अहिं उभा छे. २ बे पांख वडे पक्षी उडे छे. ३ पुरुषोने बे हाथ, बे पग अने एक मोढुं होय छे. ४ आनी बे आंखो तथा बे कानो रमणीय छे. ५ आ राजा अपराधी तेमज निरपराधी बन्नेने दंडे छे. ६ चंडाले कमलावतीना बे हाथ कंकण सहित कापी नाख्या. ७ बे हाथ विना ते घणी दुःखी थइ. ८ राम अने लक्ष्मण बे भाइओमां घणी प्रीति हती. ९ ते लांबा वखत सुधी नरकादि चार गतिमां विविध योनिओमां भम्यो. १० दश सोथी हजार थाय छे. ११ अरे ! ते आत्मा बीभत्स कार्य करीनेज कारा-

गृहमां पड्यो. १२ पांच पुरुषो जे कहे ते साचुं. १३ अरे! केम आ अकार्य कर्युं. १४ बेमांथी कोइ एक बीजानो विरह सहन करवाने समर्थ नथी. १५ साधुओनी पासे त्रण पात्र होय छे. १६ आ तो त्रण लाडुओ मोढामां नाखे छे. १७ त्रण पुरुषोथी आ (माणस) जंगलमां मरायो. १८ चार गतिओ, चार कषायो, चार सर्व घाती कर्मो छे. १९ जे क्रिया चार गतिओ साधे छे, ते अध्यात्म क्रिया नथी. २० जे चार कषायोने जीते छे, ते महापुरुष थाय छे. २१ हा धिक्! आखोये संसार चार कषायोथी जीतायो छे. २२ आ चारथी बधांये बीए छे. २३ पांच आंगली वडे हाथ शोभे छे. २४ दरेकने विभाग करीने कार्य सोंपवुं. २५ माणस सो, हजार, लाख रूपीआ मेळवे छे तोपण संतोष पामतो नथी. २६ ते पंदर कर्मादान करीने नरकमां पड्यो. २७ कागडाओ बे पांखवडे उडे छे.

गु० प्रा० वाक्यो.

१ अम्हे तत्थ दुवे जणा रममाणा पासीअ। २ तुम्भे तिण्णि जणा सह चेअ आगच्छीअ। ३ पंच जणा सह चलमाणा आलवमाणा गच्छन्ति। ४ ते अप्पणा सह चत्तारि गावीओ णेन्ति। ५ इणं धणं तिण्हं जणाणमत्थि। ६ जत्थ पंच जणा तत्थ परमप्पा अत्थि। ७ पंच इंदिआणि जेऊण मणं णियच्छइ। ८ मुणी पंचमहव्वयाइं पालेन्ति। ९ बारसण्हं मासाणमेगो वच्छरो, एगम्मि वच्छरे अ तीणि सआणि सट्ठीओ दिणाणि अत्थि। १० गावी चऊहिं पाएहिं चलइ। ११ णरो दोहिं पाएहिं चलइ। १२ पक्खी दोहिं पक्खेहिमागासे उड्डेइ। १३ अस्स जणस्स द्

पुत्ता सत्त दुहिआओ अ अत्थि। १४ अयं एगं सयं णराणां पालेइ। १५इमेण एगम्मि जुद्धम्मि णराणमेगसहस्सं मारिअं। १६ अयं लक्खरूवगाणि अज्जिऊण सेट्ठी होहीअ। १७ आयारंगसुत्तस्स अट्ठारससहस्साणि पयाणमत्थि। १३ चतुर पुरुष रस्तामां धूर्त्तनी साथे जतो नथी.

बोधपाठ १८ मो.

प्रा० गु० अनुवाद.

१ पग पसारीने गुरुनी नजीक न उभा रहेवुं. २ ते तीव्र बुद्धिवडे कठिनशास्त्रोमां निपुण थायछे. ३ तुं आ पुरुषने क्यां लइ जायछे? ४ ते नित्य सत्य वचन बोले छे, कदापि असत्य बोलतो नथी. ५तेओ पहेला अहिं आवीने पछी त्यां जाय. ६ आ बधांये पाठकनी पासे सामायिक भणशे. ७ ए वृद्धावस्थामां धर्मशास्त्रमां चतुर थशे. ८ जो सुवृष्टि थशे तो सुकाल थशे. ९ एणे मापापनो सारो विनय कर्यो. १० प्राणीओनी हिंसा न करवी, जुठुं न बोलवुं, प्रभातमां शुभ मनोरथोनुं चिन्तन करवुं. ११ धर्मना कार्यमां एक क्षण पण प्रमाद न कर. १२ पाप न करवुं, न करावबुं, अने कोइ करतो होय तो तेमां संमति न आपवी. १३ चतुर पुरुष रस्तामां धूर्त्तनी साथे जतो नथी.

गु० प्रा० वाक्यो.

१ माणुस्सं जम्मं लहिअ णीईए वट्टियव्वं। २ जो समत्थो होहिइ सो जेहिइ। ३ रावणो धम्मी अहेसि तह वि परित्थीए इच्छाए णरयम्मि पडिओ। ४ सिरि महावीरो माआपिअराणं अईव सेवां कुणीअ। ५ गावीओ

वणम्मि पव्वअम्मि चरन्ति। ६ महप्पाणो सव्वेसिं सुहं करिउं इच्छन्ति। ७ राआ गामस्स बहिं चरिअ पुणो गामम्मि आगच्छीअ। ८ अणीईए मग्गम्मि गच्छमाणे सव्व जणे णिरुन्धह। ९ दीणजणा सुद्धहियएण रक्खियव्वा। १० परित्थीए पसंगत्तो मणम्मि बीहेज्ज। ११ पभाअम्मि माआपिअरे पणवेज्जा। १२ तित्थअरा संजमगहणत्तो पुव्विं एगं वच्छरं दाणं दाहीअ। १३ अहं परमत्थेण रहिअं धम्मं ण मणामि।

बोधपाठ १६ मो.

प्रा० गु० अनुवाद.

१ तुं कुहाडावडे वृक्षनी पेठे दानवडे पापने भेदे छे. २ घोडा अथवा हाथी उपर बेठेलो तुं सारो देखाय छे. ३ हुं तमारा मुख सिवाय बीजुं कंइ पण जोवा इच्छतो नथी. ४परिषदमां जतां तेणे हुं शामाटे बोलावाउं छुं. ५मारा तरफथी त्हने किंचित् पण भय नथी. ६ हुं बधा जीवोनी क्षेमकुशलता इच्छुं छुं.७ शय्यामां उत्पन्न थतां देवने बीजा देवो पूछे छे के स्वामी! पूर्वभवमां तमे शेनुं दान कर्युं, शुं कृत्य कर्युं, जेथी आऋद्धि तमे प्राप्त करी. ८ अमाराथी एक वरसमां जेटलुं धन मेलवायुं तेटलुं तमाराथी सो वरसे पण मेलवाशे शुं?. ९ अमारो तो धर्मनोज व्यापार छे. १०. हुं बधाने कहीश, म्हने कोइ पण कहेशे तो हुं रडीश. ११ तारामां म्हारो पूर्ण विश्वास छे. १२ तारी कृपाथी ज्यां ज्यां अमे जइए छीए त्यां त्यां घणुं सुख मेलवीए छीए. १३ जे त्हारी भक्तिवडे स्तुति करे छे, ते त्हारी कृपा मेलवीने दुःखथी मुक्त थाय छे. १४ तमे मनमां अमारी वांछना

करो छो, ते अमे खरेखर जाणीए छीए. १५ योद्धाना समूहमां प्रवेश करता म्हने रोकवाने कोण समर्थ छे? १६ त्हाराथी म्होटो शेठ बीजो कोण छे? १७ कोइ पण शुभ कार्यमां कदापि म्हारी ना नथी. १८ धर्ममार्गमां अमारी सदा एक ज रीति होय छे. १९ म्हारा मनमां लेश पण गर्व नथी. २० अमारामां कोण म्होटो अथवा कोण जीतशे ते अमे जाणता नथी. २१ तमारी पासे केटला पुरुषोनुं बल छे? २२ म्हारा उपर जो तमारी कृपा थशे तो तमे म्हने शुं दर्शन नहि आपो ? . २३ तुं प्रख्यात सोनी देखे छे.

शु० प्रा० वाक्यो.

१ मो सव्वे पासामो किन्तु कोवि अम्हे ण पासइ। २ तुम्ह संपइ अस्सिं गामम्मि किं वावारं कुणह ?। ३ तुहेसु कास विस्सासो णत्थि ?। ४ अम्हं जाव सच्चं णव्वइ ताव भणिमो। ५ तुवेसुं आलस्सं णत्थि तो भे सव्वत्थ जिणेह। ६ जइ किंचिवि आलस्सं होहिइ तया तं तुम्हाणं भयंअरं दुहं दाहिइ। ७ तुज्झे तं जहातहा ण जाणह सो एगो भयंअरो अरी अत्थि। ८ को वयइ जं तुम्हे पंडिआ णत्थि। ९ अम्हेहिं जं करिउं सक्कं तं मे कुणिमो। १० तुम्ह सिरिमहावीरस्स सासणमाराहेह तो तुम्हाणं कल्लाणं होहिइ। ११ तुहेसु अम्हं पुण्णो विस्सासो अत्थि। १२ तुब्भेहिं सव्वेसिं हिअं साहिज्जइ। १३ अम्हाणं किं णाणं, अम्हं उ अप्पा बुद्धी अत्थि। १४ तुब्भाणं हिअं साहिउं तुम्हाणं सगासे सत्ती अत्थि। १५ तुमाणमंतिए जाव अत्तबलमत्थि तेण तुम्ह किंकिं करिउं ण सक्कह। १६ संते बले ण किंचि उज्जमं कुणह तं चेअ तुहाणं दुद्दसा।

बोधपाठ २० मो.

प्रा ० गु ० अनुवाद .

१ जे स्नेहाल होय छे ते दयालु अथवा लज्जाशील थायछे . २ ईर्ष्याखोरनुं मन. पारकी समृद्धि जोईने सदा पोतानी मेलेज तपेछे . ३ ते कुलीन स्त्री अकार्यमां लज्जाशील रहे छे . ४ कदरूपो पण वस्त्रालंकार सिवाय पण विद्या वडे शोभितो देखाय छे . ५ हे रसाल फल! तुं शामाटे रस छोडतो नथी ? ६ पवन राजानो पुत्र हनुमान् रामचंद्रजीनो भक्त हतो . ७ श्रीमन्तो पण जो धन वडे परमार्थ न करे तो पछी बीजानी शी वात ? ८ गर्विष्ठ माणस गर्वने लीधे विनय-थी भ्रष्ट थायछे . ९ म्हें सो वार त्हेने कह्युं तोपण अभिमानी माणस मानतो नथी. १० अहो! जव खावाने लीधे आ बकरानी केवी पुष्टता छे!. ११ आ गरीब वाछरडानी कृश-ता– दुर्बलता आज सुधी पण न मटी . १२ एक तरफथी धर्मीओ धर्मोपदेश करेछे , बीजी तरफथी अधर्मीओ अधर्म करेछे, एमां कोण जीतशे ? . १३ ज्यां वाणीआओ रहेछे त्यां तेनुं घर छे . १४ आ रखडेल बालक अमारुं वचन मानतो नथी . १५ ते गामडीओ माणस शहेरी लोकोनी वातमां शुं जाणे? १६ आत्मिक आनन्दने ज्यां सुधी जाणता नथी , त्यां सुधी बीजा विषयसुखोमां लोको आसक्त रहेछे . १७ पांजरामां रहेलुं पक्षी आकाशमां उड-वा इच्छे छे . १८ श्रावको दिवसमां जमेछे ; रात्रिए कदापि न जमवुं . १९ प्रभातमां सूर्यना किरणोवडे पल्लवित थए-ला वृक्षो शोभेछे . २० ते हाथ वडे मुखने ढांकी ने भयथी कंपेछे . २१ अरे एना हृदयनी केवी मृदुता , एथी ते दुनी-

आने प्रिय थयो . २२ धनवानोना घर आगल पंडितो पण नोकर पेठे उभा रहे छे . २३ प्राणनो नाश थाय तो पण आ अकार्य करता नथी.

गु० प्रा० वाक्यो .

१ बुद्धिमंन्तो जणो सव्वत्थ विजअं लहइ । २ दयालू जणो सव्वेसिं जणाणं वल्लहो होइ । ३ तस्स मुहुल्लं सया आणंदिल्लो दीसइ । ४ तस्स भाअरा अईव सिरिमन्ता अत्थि । ५ पुरिल्ला जणा णिउणा पंडिआ अ हवन्ति । ६ एगओ सहिरत्तणं दीसइ अण्णत्तो कोहग्गी पसरिओ अत्थि । ७ धणवन्तेहिन्तो विज्जावंतो जणो सेट्ठो अत्थि। ८ धम्मिणो जणा णीईए पहं कया वि ण मुअन्ति । ९ सो सव्वे जन्तुणो अप्पव्व पासइ । १० स परित्थि माउव्व भइणीव्वअ मणइ । ११ अम्हे गामिल्लेहिं सह वसामु। १२ जत्थ कोवि णिसेहं ण कुणइ तत्थ अम्हे वसामो। १३ गुरुभत्तिमंतो जणो अप्पुल्लमाणंदं लहइ ।

बोधपाठ २१ मो.

प्रा० गु० अनुवाद.

(नगर वर्णन)

१ लटकती लुमोवाला केलना झाडथी बंधाएल तोरणोने लीधे जेना किरणोनो विस्तार अटकाववामां आव्यो छे एवो सूर्य वरसादऋतुनी माफक शरदूऋतुमां पण ज्यां देखातो नथी.(२) ज्यां चौलुक्यवंशना मूलराज आदि राजाओनुं सर्वत्र व्यापीरहेलुं सुवासथी उत्पन्न थएलुं यश आकाशने सुगंधि बनावती फुलनी मालानी पेठे दिग्रमणी-

ओना मस्तकने सुरभि बनावे छे, अर्थात् लोकना प्रांत भाग सुधी यश पसरी रह्युं छे. (३) सर्व अवस्थाओमां जेम मध्यम (युवा) अवस्था, सर्व जातनां फूलोमां जेम जाइनां फूल, सर्व सुखोमां जेम मुक्ति सुख श्रेयस्कर छे तेम पृथ्वी उपरनां सर्व नगरोमां जे नगर श्रेष्ठ छे. (४) जेने चर्मचक्षु नथी किन्तु ज्ञानचक्षु छे, एवा मुनिओनां नेत्रो पण जे नगरने जोवामाटे विकसित थाय छे त्यारे बीजाना नेत्रोनी शुं वात करवी! (५) जे नगरमांना विद्वानोने जोया नथी त्यांसुधी बृहस्पतिनां वचनो वचनरूप छे, माहात्म्य माहात्म्यरूप छे अने गुणो गुणरूप छे. अर्थात् बृहस्पति करतां पण जबरा विद्वानो त्यां रहे छे. (६) जे नगरमां हरि हर ब्रह्मा तेमज बीजा पण सूर्य नाग वगेरे देवो वसे छे. एना महिमाथी सुरपुरी-अलकानो महिमा उतरी गयो छे. (७) ज्यांना माणसो याचकोने सोनुं अने रत्नो अंजलि भरीने आपे छे. तो पण तेमनो सुवर्णनिधि अने रत्ननिधि अक्षीण रहे छे.

ग्रीष्मऋतु--वर्णन.

(८) अथ राजाए पुछेल द्वारपाले एम कह्युं के हा. उद्यानमां ग्रीष्मऋतुनी शोभा (देखावा लागी छे). हे राजन् कदली वनमां उष्ण पण शीतल प्रतीत थाय छे ते आप फरीवार जुओ. (९) 'अमने विदेशमां जवुं पडे ए खेदनी वात छे, प्रिया जीवे छे के नहीं? अरेरे शुं प्रियाने पण अमे मुकी दीधी, नक्की तेनुं मृत्यु थशे, खरेखर ग्रीष्मऋतु यमरूप छे' एम मुसाफरो लव्या करे छे. १० "मद्य ल्यो आ सुगंध ल्यो" एम बोलता होय नी एवा भमरा अने

भमरीओथी ग्रीष्मऋतुनी लक्ष्मीना मुगट जेवो सोना वर्णो फुल शोभे छे,हे राजन् ते जुओ.(११) मालणो माता-नी पेठे,पुत्रीनी पेठे, पौत्रीनी पेठे, बेननी पेठे के सखिनी पेठे स्नेहभावथी नवी कांचनकेतकीनी पासे जाय छे. १२ लव-लीनामना छोडवा फुल्या वगरना छे तेथी वसंतऋतुनी लक्ष्मी चाली गइ (जणाय छे) धूलिकदंब फुल्युं छे तेथी ग्रीष्मऋतुनी शोभा स्पष्ट थाय छे. १३ लताओमां नवमा-लिका नक्की फुलेली सुगंधी घनेली अने रमणिक छे, तेमज जे मल्ली अने जपा छे ते तो खरेखर तमने मदनना बाण रूप (जणाशे). (१४) माणसो सुता पछी जे तमरांनो शब्द संभलाय छे ते केवल तेना शब्दने बाने वसंत पछी ग्रीष्मऋतुनी लक्ष्मी आवी चुकी छे एम गाय छे. (१५) हे मुसाफरो! आगल न वधो, पत्नी विनाना पुरुषोने आ वनमां जवुं कुशल रूप नथी माटे आ वनमां न आवो. एम खेद सहित तमरांओए कह्युं होय नी तेम जणाय छे. (१६) हे सखि! एम कहीने मल्लिकाना फूल वीणनारी (स्त्री) भमरो सन्मुख आव्ये थके भमराने अटकाववानो खेद अने भयने लीधे वेव्वे वेव्वे—एम कहेवा लागी. (१७) हे सखि! उभी रहे, हे सखि! बेश; हे सखि! तु रम, हे सखि! तु जाय छे क्यां ? हे सखि! तुं प्रसन्न था, शामाटे गुस्से थइ छो; ले आ सुवर्णपात्र. (१८) केम हजी तारो पति न आव्यो ? सांभल्युं ? आजे तेनुं शुं प्रयोजन छे ? ते खरेखर बीजी कोई स्त्रीमां आसक्त थयो छे. हुं धारुंछुं के तुं अभिमानी छो. मानुं छुं के तेने योग्य तेज छे, तुं नहीं. (१९) हे सखि! शुं ते मूर्ख छे के धीवर–माछी छे ? अहो! आ पासे उभो तारो निन्द्य पति. आवी रीते दोष बतावीने

लोको तारा पतिनी हांसी करे छे.शुं में कह्युं के आनी हांसी थाय छे?(२०)अहो! अप्सरा मारी सखी छे.रे पापी अधम! अरे कजीआखोर! तुं मारी सखीनो गुलाम छो. ओ! तुं शठ छो. अरेरे तारुं मोढुं क्यां जोयुं. (२१) हुं सूचवुं छुं के तारो प्रिय नम्यो. अरे तुं शामाटे खेद करे छे? शुं आ पासे उभेलो अन्यमां आसक्त छे? अहो तारो आटलो बधो मान छे! (२२) अहो आनंद! पतिने आववानो समय थयो छे(जो) ते मारा पति आवे छे.हुं बीहुं छुं कारण के ते क्रोधी छे. अरेरे कष्ट अने खेदनी वात छे. हे सखि! शुं ए मने वर्यो छे? (२३) हुं धारूं छुं के तुं रतिघरमांथी आवे छे,अने पतिथी उपभुक्त थइ थकी म्लान देखाय छे.भले जाणिये के न जाणिये,पण एटलुं तो चोक्कस के ते कंइ नथी के जे तारूं अंग कहीं न आपे! (२४) हुं मानुं छुं के तारो पति दास-गुलाम दयापात्र छे माटे तेने मुकवो न जोइए.आश्चर्य छे के पोतानी मेले आवेला ते पतिने तारा जेवी निपुण स्त्री पोतानी जाते मुकी द्ये.

२५ हे सखि! जो जो दरेक पत्नीनी दरेक सखी अने दरेक मित्रनी साथे भाषण करतो आ तारो पति आवे छे. (२६) जो आ तारो पति; ते शिवाय एने जोइने तुं रोमाञ्चित केम थाय? अमे खात्री कर्या विना बोलता नथी. आ तो हम-णांज अमे जाण्युं. (२७) अर्ध विकसित बन्धुजीव-जपाना फूल जेवा छे होठ जेना एवी हे सखि! तुं फोकट खेद मा धर. हे सरलस्वभावी! ए धुतारा पतिनो शुं शोच करे छे? (२८) ग्रीष्मऋतुनुं सुख माणवाने प्रवृत्त थएली आ गणि-काओ उपर प्रमाणे यद्वा तद्वा लवारो करती पाकेली द्राखनो रस पीए छे.

२९ अप्रगट ज्ञानने प्रगटावनारा, लोकमां आनंद पसरावनारा, विस्तृत गुणथी भरेला उपाध्यायो श्रुतजलने वरसावो. ३० जे भवबन्धनथी छुटवाने मनने वश करी तेने साम्य अवस्थामां लइ जतां नथी रोष करता तेम नथी एकदम खुशी थता, एवा विनीत साधुवर्गने हुं नमस्कार करुं छुं.

(३१) जे अश्रद्धालुमां पण श्रद्धा उत्पन्न करे छे, अने धर्मनी प्राप्ति करावे छे तेवा साधुनेज संसारनो नाश करवाने इच्छनारो हुं गुरु तरीके मानुं छुं.

बोधपाठ २२ मो.

प्राकृत कथानो गुजराती अनुवाद.

अथ कोइ एक वखते ते उदायन राजा पौषधशालामां पौषध करेल एकला अद्वितीय पाखीना पौषधनुं सम्यक्प्रकारे पालन करता थका विचरे छे. तेवामां आगली रात अने पाछली रातना अंतराल (मध्यरात्र) समयमां जागरिका करता ते राजाने एवा प्रकारनो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के " धन्य छे ते गाम नगरने के ज्यां श्रमण भगवान् महावीर प्रभु विचरे छे अने धर्मकथा करे छे; धन्य छे ते राज प्रभृति पुरुषोने के जे श्रमण भगवंत महावीर प्रभुनी पासे केवलिपरूप्यो धर्म सांभले छे,तेमजपांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत रूप बार प्रकारनो श्रावकधर्म स्वीकारे छे, एमज दीक्षित थइने आगार धर्ममांथी अणगार धर्मनी प्रव्रज्या ले छे " तो जो कदाच श्रमण भगवंत महावीरस्वामी अनुक्रमे विहार करतां २ आंहि वीत-

पछी केशिराजाए हजुरी माणसोने बोलावी एम कह्युं के " उदायनराजाना घणा डवडबावाला, म्होटाने छाजे तेवा दीक्षा महोत्सवनी जल्दी तैयारी करो " त्यार पछी घणी विभूतिथी अभिषेक कर्यो. शिबिकामां बेसीने महावीर भगवंतनी पासे जइने उदायन राजाए प्रव्रज्या लीधी. यावत् घणा उपवास छठ अट्टम चार पांच उपवास, मासखमण, अर्द्धमासखमण आदि तपश्चर्या करता थका विचरे छे.

त्यार पछी ते उदायनअणगार घणा वरससुधी श्रमण प्रव्रज्या पालीने साठ भक्तनो (एक मासनो) संथारो करी जे कार्य माटे दीक्षा लीधी हती ते कार्य सिद्ध कर्युं. यावत् सर्व दुःखनो अंत करी मोक्ष पहोंच्या.

बोधपाठ १ लो.

शो० गु० अनुवाद.

(१) त्यार पछी ते प्रसिद्ध इन्द्र निश्चिन्त थयो थको भले अंतःपुरमां रहे. हे पृथ्वीपते! तुं हवे इन्द्रनो मित्र थयो छे. (२) हे मनस्विन् राजन्! तुं 'भगवान मारुं रक्षण कर' एम कहीने जेने विनवे छे. ते जिनेन्द्र प्रभुथी हे पृथ्वीना इन्द्र! तारुं रक्षण थाओ. (३) हे पराक्रमलक्ष्मीना नाथ! आ जगतमां जिनेंद्र भगवाननुं स्मरण कर्ये थके हे आलोक अने परलोक बन्ने लोकने सफल करनार! आखा आर्यावर्तमां तुं कृतकृत्य थयो छो. (४) हे राजन्! समग्र पृथ्वीनुं पालन कर. स्वर्गनुं पण रक्षण कर. तारूं कल्याण थाओ. तारी अपूर्व कीर्तिथी जगतनो मुगट बनो. (५) हे राजन्! अपूर्व

शक्ति वडे तुं इंद्रना जेवो शेषना जेवो के भरत चक्रवर्तीना जेवो थइने एकल छत्रं राज्य कर. (६) पृथ्वीनो उद्धार करीने, गुरु भाव (गौरव) मेलवीने, बलि (बलवान शत्रु) नुं बंधन करीने लक्ष्मी पासे जइने तुं उपेन्द्र थाय छे, अथवा इन्द्र समान था. (७)हे राजन् ! अमारा जेवा तारी प्रशंसा करे छे तो पछी बीजा केम न करे? तारी कीर्ति आ पृथ्वी उपर थइने ठेठ स्वर्ग सुधी रमण करशे. (८) हे राजन्! हमणा भगवती तुष्टमान थएली छे 'माटे वरदान आपुं छुं' एम तारा प्रत्ये तेनुं कहेवुं युक्त छे तेमज 'माग माग' एम कहेवुं पण उचितज छे. आ प्रसंगे 'एमां शुं' एम उपेक्षा न कर. (९) राजा कहेवा लाग्यो हे भगवति! तमे तुष्टमान थया एटले आ त्रण भुवननुं राज्य पण कंइ बिसातमां नथी केमके तमारा प्रसादथीज देवीओ पण दासी तरीके बोलावाय छे. (१०) हे श्रुत देवते! देवि! आश्चर्य थाय छे के मने तारा दर्शन थया. हवे हुं संसार—भव भ्रमणथी चकित थइ गयो छुं; माटे हे देवि! हर्ष सहित कंइ पण उपदेश मने आप के जेथी 'ही ही' शब्दनो पोकार करता विदूषको पण शांत थइ जाय.

बोधपाठ २ मो.

मा० गु० अनुवाद

(१) त्यार पछी सरस्वतीए भव दुःख रूप ग्रीष्मताप ने उडाडी देवामां सारा मेघना जेवो अस्खलित शुभ उपदेश देवा मांडयो. (२) कषाय वर्जित, सावद्य योग रहित, एक परमात्मानी साथे मने जोडनार साधु अत्यन्त

स्वास्थ्य पूर्वक धर्मध्यानमां तत्पर थाय छे तो चतुर्थवर्ग-निर्वाणपदनी साधना करे छे. (३) पुण्यशाली, तीक्ष्णबुद्धि वालो, सरल स्वभावी, साधुने पंथे विचरतो सज्जन आखा जगत्नुं वत्सलपणुं मेलवतो परमपद-मोक्षने मेलवे छे. (४) स्वपरनी विवक्षा—भेदभाव रहित अर्थात् शत्रु मित्रमां समभाव राखतो सर्वने करुणा दृष्टिथी जोतो परिमित अने मिष्ट वचन बोलतो माणस मोक्षना मार्गमां स्थिर थाय छे. (५) एनो वध करुं अने एनी भक्ति करुं एवी जेनी बुद्धि छे ते बन्नेना तरफ आत्मभावनी बुद्धि राखवी जोइए- अर्थात् घातक के भक्त बन्ने मारा समान ज छे एम मानवुं.

बोधपाठ ३ जो.

पं० गु० अनुवाद.

(१) प्राज्ञ पुरुषोना नायक, गुणनिधान, अनुपम पुण्यशालि राजाए मदन आदि आन्तर शत्रुओने चोक्कस जितवा एम चिंतववुं जोइए. (२) शुद्ध अने कषाय रहित जेनुं हृदय छे अने इंद्रिय रूप कुटुम्बनी चेष्टा जेणे जीती छे, कुटुम्ब स्नेहथी जे मुक्त थएल छे एवो योगी मोक्ष पदने पामीने त्यांथी पाछो वलतो नथी. (३) शम-शान्ति रूप पाणीमां स्नान करेल, अने कृत्रिम कपटरूप स्त्रीनो त्याग करनारना कषायो अने सर्व कर्मो नष्ट थइ चाल्या जाय छे. (४) जो परमेष्ठि मंत्रनो पाठ कराय अने जीवनो वध न कराय तो जेवी तेवी जातनो पण माणस निर्वाण पदने पामे छे. (५) गमे तो जंगलमां बेसे, गमे तो पर्वत उपर बेसे, भले

आकरी तपस्या पण करे, पण ज्यां सुधी विषयथी दूर नहीं थाय त्यां सुधी मोक्ष मेलवशे नहीं. (६) चत्तारि मंगलं इत्यादि मंत्रनी उद्घोषणा करतां तेणे योगक्रियानी पेठे दूर रहेली पण मोक्ष लक्ष्मी ग्रहण करी छे अर्थात् स्वाधीन करी छे. (७)

सर्वज्ञराज–जिनेन्द्रना चरणने ध्यावतो योगी शठ अने अशठ बन्नेनो बन्धु, उपशमनो आश्रय करनार अने आरंभरहित होय छे. (८) झर्झर, डमरुक, भेरी, ढक्कादि वाजिंत्रो अने मेघनो गंभीर शब्द परमात्मामां लीन थएल जेना आत्माने चलायमान नथी करतो ते धन्यवादने योग्य छे.

बोधपाठ ५ मो.

अप० गु० अनुवाद.

सरस्वतीनो राजाने उपदेश.

(१) जे जेमांथी थतुं हो ते तेमांथी थाओ, शत्रु हो के मित्र हो, क्यांथी पण आवो, जे ते मार्गमां–गमे ते पंथमां लीन हो तथापि ते बन्ने तरफ एकज दृष्टिथी–समदृष्टिथी जो. (२) कोइ पण जे ते पुरुष, कोइ पण जे ते स्त्री अर्थात् गमे ते पुरुष के गमे ते स्त्री हो तेने ते हित वचन कहेवुं के जे बधी रीते रुचिकर थाय. (३) 'जे परम सत्य होय ते बोलवुं' ए धर्मनुं रहस्य तुं जाण. एज परमार्थ, एज कल्याण अने एज सुख अने रत्ननी खाण छे. (४) जो आ सुश्रावको अने आ मुनिओ तप तपी रह्या छे. आ जन्मनुं एज फल छे. विषयसुख ए तेनुं फल नथी. (५) सर्वलोको प्रयत्न

करी रह्या छे तेम बधा पण पंडितो छे. एम हे राजन् तुं जाण. परन्तु तेमांनो कोइ पण एम नथी विचारतो के निर्वाणनुं शुं स्वरूप छे?.

(६) (श्रुतदेवी कुमारपालने कहे छे के आ नीचेनो उपदेश सर्वने कही संभलावजे) हे निर्मोह! तुं सर्व कोइना उपर आ चिन्तव अर्थात् सर्वने कहे के तमे संसाररूप अटवीमां पडो नहि किन्तु तमे सुखी थाओ. (७) तेमज आत्मानी पेठे तमने जोइने अने तमारी माफक आत्माने जोइने अर्थात् समभाव राखीने तने अक्षय स्थान प्रत्ये लइ जवाने तनेज शिखामण दउं छुं के "तुं समभाव राख." (८) तारे जीवदया पालवी. तारे साचुं बोलवुं. तेथी तारामां सुख अने कल्याण थशे तेथी (तुं) कृतकृत्य थइश. (९) आ जींदगीमां केवल तमारे साधुओनी सेवा करवी. (एज) तारुं सम्यक्त्व (एज) तारी क्षमा, (एज) तारो, संयम हुं मानुं छुं. (१०) धर्माक्षर—धर्मसिद्धान्तमां आग्रह राख. (एथी) कलिरूप मल तारी पासेथी नष्ट थशे, पाप चाल्युं जशे, मोक्ष पण ताराथी दूर नहीं रहे. (११) जो तमारामां संयम होय तो तमारो मोक्ष दूर नथी रहेल. 'हुं तमारो बान्धव छुं' एम कहीने सर्वने आ कहे. (१२) कोइ पण माणस अमने निन्दो के कोइ पण अमारी स्तुति करो. अमे तो कोइने पण नहि निन्दीए तेमज कोइने पण नहि स्तवीए (१३) 'मारे गहन संसार मुकवो' एवी मति मारामां स्थिर थाओ. सुगुरु मारे माथे हाथ मुको के (जेथी) आत्मानी शुद्धि मेलवुं.(१४) अमे कोइ पण विधिने वशे आ मनुष्यपणुं मेलव्युं. मोक्ष माराथी अदूर हो. मिथ्यात्व मारी पासेथी

भागी जाओ. (१५) मोहनो अंकुर अमारी पासेथी चाल्यो गयो. अमारामां संयम उत्पन्न थयो. विषयो मने लंपट नहि करे, एम विश्वास न राख.

(१६) काया झुंपडी नक्की अस्थिर छे. आ जींदगी चंचल छे. ए बन्ने संसारना दोषोने जाणीने अशुभ भावने तजी दे. (१७) ते कानने धन्य छे, ते हृदय कृतार्थ छे के जे क्षणे क्षणे नव नवा शास्त्रना पदार्थो सांभले छे अने धारण करे छे. (१८) जेना कानमां जिन आगमनी वात पेठी तेने 'अमारुं ने तमारुं' एवुं ममत्व रहेतुं नथी. (१९) जीव जेटलो वखत जीवलोकमां जीवे छे तेटलो वखत जो दमन करे अने आटला वैभवने न कंइ अर्थात तुच्छ गणे तो आ भवमांज ज्ञान प्राप्त करी ते लोकमां—मोक्षमां नक्की जाय.

बोधपाठ ६ मो.

अप० गु० अनुवाद.

(१) रे मन! शामाटे तुं परस्त्रीनी प्रार्थना करे छे? रे विषयो! तमे दूर जइने बेसो. हे इंद्रियो! तमे नियन्त्रित थइने बेसो केमके हुं पुष्कल मोक्षनुं फल (मारी तरफ) खेचुं छुं-मेलवुं छुं. (२) एवी रीते आत्माने शीखव. जिन आगमने संभार. धर्मनुं अनुष्ठान कर. प्रशस्त संयमप्रत्ये जा. तारो परमार्थ अमे कहीए छीए. (३) हे प्रिय! 'हुं तमारी पूजा करुं' एम बोलती वनिताओ संयम लीन थएल जे पुरुषने चलावी शक्ती नथी ते पुरुषने चोक्कस मोक्षनुं सुख मलशे. (४) जे सत्य वचन बोले छे, प्रधान-श्रेष्ट उपशम भावने पामे छे, शत्रुने पण मित्र समान जुए छे, ते माणस निर्वाणपदने ग्रहण करे छे.

(५) जेनुं चित्त बीजाना जेवुं चपल नथी एवो जे माणस लोकोत्तर ब्रह्मचर्य पाले छे, ते माणस प्राये तेज भवमां पवित्र निर्वाण पद पामे छे.(६) संसारमां प्राये सुख दुर्लभछे. माणसो घणे भागे सुखमां लुब्ध थएल छे.मुग्धज्ञान–विकल मनुष्यो प्राये संतोष रूप अमृतनुं पान कर्या विना ते सुखने शोधे छे. (७) ज्ञान दर्शन चारित्र रुपी त्रण रत्नने चोक्खीरीते अनुसरो;अन्यथा मुक्ति क्यांथी होय! भाण्ड–करिआणा वगेरे वस्तु होय तो घणुं धन मले अन्यथा शुं आकाशमांथी पडे? (८) गहन संसारमां शाथी भमाय छे अने मोक्ष शाथी थाय? ए जाणवाने हे मूढ! जो इच्छतो हो तो जिन आगम जो. (९) संपत् चंचल छे अने मरण निश्चे छे एम बधाए कहे छे, पण महामुनिओनी साथे मलीने कोइ संयम पालतो नथी. (१०) मनने जरी पण विषय लम्पट न कर. दुष्कृत्य कर्म पण न कर. वचननो आरंभ पण न कर.जो निश्चे मुक्ति सुख इच्छतो हो तो.(११) वनमां जइने बेसे अथवा घरमां बेसे के तीर्थ स्थले बेसे पण जे माणस दररोज जीवदया पाले छे ते सर्वे सिद्धिपद पामे छे. (१२) जेने तपश्चर्यानी साथे संयम नथी किन्तु संयम विना एमने एम जे दिवसो गुमावे छे अने तेना माटे जे पस्तावो करतो नथी तेनी साधुवर्गमां गणना थती नथी अर्थात् साधुपणानी तेनी रेखा भुंसाइ जाय छे. (१३) जे मनुष्य पुण्यहीन अने प्रतिकूल वर्तनार उपर पण दया राखे छे ते आ मनुष्य जन्ममां हमणांज सिद्धि मेलवो. (१४) जो संसारना मार्गमां रहेलो प्राणी खिन्न थाय छे तो में आ कह्युं छे के हे मूर्ख! पवन जेवी शीघ्र गतिवालुं पोतानुं मन स्थिर कर. (१५)

नियम वगरना जे माणसो 'कसर कसर' करतां राते पण खाय छे ते माणसो हु हु करतां पापरूप द्रहमां पडे छे अने लाखो भव (संसारमां) भमे छे. (१६) जेनुं मन तपनुं पालन करवामां वांदरानी घुग्घिका-चेष्टा (उत्सुक पणुं) आपे छे ते गहन संसारमां आवर जावरनी क्रिया नथी पामतो अर्थात् तेनी गत्यागति बंध थाय छे. (१७) स्वर्गने माटे जीवदया कर (पाल). मोक्षने माटे इंद्रिय दमन कर. तुं कहे के कोनामाटे बीजा कर्मनो आरंभ करे छे. (१८) कोना माटे परिग्रह अने कोना माटे जुठुं (बोले छे,) ते कहे. जेना विना वलि अवश्य मोक्ष न मले, ते आवश्यक मोक्षसाधन उपशमादिक एकवार पण ले (अंगीकार कर).

(१९) जो तुं कल्याण इच्छतो हो तो प्रशम-प्रकृष्ट शांतिथी कल्याण छे. जो प्रशम करवो होयतो करण-इंद्रियोनो विजय करवो जोइए. जो इंद्रियोनो विजय करवो होय तो निश्चल मनने धर. वली राग द्वेषनो विजय करीने निश्चल मन राख. तेमज अविचल सामायिक व्रत आवरीने रागादिनो विजय कर. निर्मल अममत्व भाव करीने अविचल सामायिक कर. (२०) निश्चे क्रोधनो अन्त करीने, सर्वथा माननो अंत करीने, माया जालनो अंत करीने, अने लोभनो अन्त करीने तुं निवृत्त था. (२१) जो संसारने छोडवा धारतो हो अने मोक्षसुख भोगववा उतावल होय तो चोक्कस पुत्र कलत्रादिनो संग मुकवाने, शुभ गुरुनी सेवना करवाने अने ममत्व रहित बनवाने मनने अति दृढ कर. (२२) चित्तने अनाकुल करवाने वचनने अचपल बनाववाने, काय निर्मल करवाने निश्चल

ध्यान—धर्मध्यानादिनो प्रयोग कर. (२३) जमुना नदीए जइने, गंगाए जइने, सरस्वतीए जइने अने नर्मदाए जइने, अजाण लोक पशुनी माफक जे पाणीमां डुबकी मारे छे, ते पाणी शुं मोक्षनुं सुख आपे छे?.

शब्द कोश

अ अ० (च) अने.
अअ पुं० (अज) बकरो.
अइ अ० (अति) बहु, घणुं.
अइ अ० संभावनाना अर्थमां.
अइ उप० (अति) हद बहार, उल्लंघन, उत्कर्ष, अतिशय.
अइच्छ दे०धा० जवुं, गमन करवुं.
अइवाअ धा० (अति+पात्) हिंसा करवी.
अइसरिअ न० (ऐश्वर्य) पराक्रम.
अईव अ० (अतीव) अत्यन्त, घणुज.
अकज्ज न० (अकार्य) न करवा लायक काम.
अकासि अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
अग्ग न० (अग्र) आगल.
अग्गि पुं० (अग्नि) अग्नि.
अच्छ धा० (आस्) बेसवु.
अच्छ न० (दे०) जल्दी, तरत.
अच्छि न० (अक्षि) नेत्र, आंख.
अच्छि पुं० स्त्री० न० (अक्षि) आंख.
अज्ज अ० (अद्य) आज
अज्ज धा० (अर्ज्) एकठुं करवुं, मेलववुं.
अज्जव न० (आर्जव) मृदुता.
अज्झत्थ न० (अध्यात्म) आत्मतत्त्व संबंधी.
अज्झत्थिय न० (अध्यवसित) अध्यवसाय, परिणाम.

अज्झप्प न० (अध्यात्म) अध्यात्म, आत्मतत्त्व संबन्धी.
अज्झवसाअ पुं० (अध्यवसाय) परिणाम.
अट्टज्झाण न० (आर्त्तध्यान) माठुं ध्यान.
अट्ठ पुं० (अर्थ) शब्दनो वाच्य.
अट्ठ सं० वा० (अष्टन्) आठ.
अट्ठारस सं० वा० (अष्टादश) अढार.
अडणी स्त्री० (दे०) मार्ग, रस्तो.
अण अ० निषेधमां, 'नहि' ए अर्थमां.
अणवयग्ग त्रि० (अनवदग्र) अनन्त.
अणाह वि० (अनाथ) अनाधार.
अणु उप० (अनु) पाछल, सरखुं, समीप.
अणुजाण धा० (अनु+ज्ञा) अनुमोदवुं, संमति आपवी.
अणुव्वग्ग त्रि० (अणुव्रतिक) अणुव्रतयुक्त।
अण्ण स० (अन्य) बीजो.
अण्णहा अ० अन्यथा, नहि तो.
अण्णी स्त्री० (दे०) देराणी [२] नणंद [३] फइबा.
अत्त पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते.
अत्तवयण न० (आप्तवचन) प्रामाणिक वचन.
अत्थरिअ पुं० (दे०) नोकर.
अद्ध पुं० (अध्वन्) मार्ग, रस्तो.
अद्धाण पुं० (अध्वन्) मार्ग, रस्तो.

अनालम्भ त्रि० (अनारम्भ) आरंभ रहित ।

अन्तरबल न० अन्दरनु बल, मानसिक बल.

अन्तिअ न० (अन्तिक) नजदीक, पासे.

अप्पणो अ० स्वयं, पोते, पोतानी जाते.

अप्प पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते.

अप्प त्रि० (अल्प) थोडु.

अप्पसाहग पुं० (आत्मसाधक) आत्मार्थी.

अप्पाण पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते.

अप्पुल्ल त्रि० (आत्मिक) आत्मिक. आत्म सम्बन्धी.

अबीअ त्रि० (अद्वितीय) एकाकी ।

अब्भुदअ पुं० (अभ्युदय) चडती, उदय.

अम्मो अ० आश्चर्य.

अम्हे स० (अस्मान्) अमने.

अम्हे स० (वयं) अमे, आपणे.

अरि पुं० (अरि) शत्रु, दुश्मन.

अरे अ० संबोधन, कलह.

अलमंजुल त्रि० (दे०) आलसु

अलं अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.

अलंकार पुं० (अलंकार) घरेणा, दागीना.

अलाहि अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.

अलि पुं० (अलि) भमरो.

अव उप० (अव) नीचे, निश्चय.

अवत्था स्त्री० (अवस्था) वय, दशा ।

अवयासिणी स्त्री० (दे०) नासारज्जु.

अवराह धा० (अप+राध्) अपराध करवो.

अवलिअ दे० खोटुं, मिथ्या.

अव्वो अ० सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, तथा पश्चात्तापना अर्थमां.

अस धा० (अस्) थवुं, होवुं.

असंगय दे० वस्त्र.

असुद्ध त्रि० (अशुद्ध) शुद्ध नहीं, मेलुं.

अस्स पुं० (अश्व) घोडो.

अह न० (दे०) दुःख.

अहम्म (अधर्म) पुं० धर्म विरुद्ध कर्तव्य.

अहं स० हुं.

अहिअल (दे०) गुस्सो.

अहिअ त्रि० (अधिक) वधारे.

अहि उप० (अधि) उपर, अधिकार.

अहि उप० (अभि) तरफ, पासे, वारंवार.

अहिल त्रि० (दे०) धनवान्.

अहुणा अ० (अधुना) हमणा.

अंग न० (अङ्ग) आचारांगादि सूत्र [२] शरीर अवयव.

अंगुलि स्त्री० (अंगुलि) आंगली.

अंजलि पुं० (अञ्जलि) हथेली.

अंधआर पुं० (अन्धकार) अंधारुं.

आआर पुं० (आचार) आचार.

आइच्च पुं० (आदित्य) सूर्य.

आ उप० (आ) हद, अवधि, अभिव्याप्ति, थोडुं, उलटापणुं.

आएस पुं० (आदेश) हुकम, फरमान.

आ+करिस धा० (आ+कृष्) खेंचवुं, आकर्षवुं.

आकारि धा० (आ+कृ+णि) बोलाववुं, साद करवो.

आ+गच्छ धा०(आ+गम्) आववुं.

आगास न० (आकाश) आकाश.

आच्छाअ धा० (आ+छद्+णि) ढांकवुं, दबाववुं.

आढप्प धा० (आ+रभ्) आरंभवु, शरूआत करवी.

आणंद पुं० (आनन्द) आनन्द.

आणंदाराम पुं०(आनन्दाराम) आनन्दरूप बगीचो.

आम अ० अभ्युपगम, स्वीकार.

आ+यर धा० (आ+चर्) आचरवुं, अनुष्ठान करवुं.

आयरिअ पुं० (आचार्य) साधुगणना नायक.

आरणाल न० दे० कमल.

आलम्पित त्रि० (आलम्बित) आश्रित.

आलव धा० (आ+लप्) आलाप संलाप, बोलवुं.

आलस्स न०(आलस्य) आलस,सुस्ती.

आवण पुं० (आपण) दुकान, बजार.

आवत्ति स्त्री० (आपत्ति) आपद.

आवत्ति स्त्री०(आवृत्ति) पुनरावर्त्तन.

इ अ० पादपूरणमा.

इअर स० (इतर) अन्य, बीजुं.

इच्छ धा० (इष्) इच्छा करवी, चाहवु.

इट्ठ वि० (इष्ट) इच्छित, प्रिय.

इड्ढिमन्त त्रि० (ऋद्धिमत्) वैभववालो

इतरहा अ०(इतरथा) अयन्था, नहितो

इत्थं अ० (इत्थं) एवी रीते.

इत्थी स्त्री० (स्त्री) अंगना, स्त्री.

इन्दिअ न० (इन्द्रिय) चक्षु आदि इन्द्रियो.

इर अ० संभावना, निश्चय.

इरमंदि पुं०(दे०) उंट.

इल्ल पुं० (दे०) पटावालो, चपराशी

इव अ० इवार्थक, सादृश्य, तुल्य, पेठे.

इसि पुं० (ऋषि) धर्मगुरु, साधु,मुनि.

इहरा अ० अन्यथा.

ईस न० (दे०) खीलो.

ईसर पुं० (ईश्वर) प्रभु,समर्थ.

ईसा स्त्री० (ईर्ष्या) अदेखाई.

उ (तु) अ० तो.

उअ अ० जो, नजर कर.

उचिअ वि० (उचित) योग्य, लायक.

उच्चिणिरी स्त्री० (उच्चेत्री) विणनारी.

उच्छ पुं० (उक्षन्) बलद.

उच्छंग पुं० (उत्संग) खोलो, गोद.

उच्छाण पुं० (उक्षन्) बलद.

उज्जम न० (उद्यम) उद्यम.

उज्जाविय त्रि०(दे०) विकसित थयेलं.

उज्जाण न० (उद्यान) बगीचो.

उज्जोमिआ स्त्री० (दे०) किरण.

उज्झस पुं० (दे०) उद्यम.

उज्झित. त्रि० (उज्झित) त्यक्त.

उज्झोअ पुं० (उद्योत) प्रकाश.

उट्ठ धा०(उत्+स्था) उठवुं, उभायवुं.

उड्डु धा० (उत्+डी) आकाशमां उडवुं.

उत्तरज्झयण न० (उत्तराध्ययन) एक सूत्रनुं नाम.

उद् उप० (उत्) ऊंचे, उदय, विशेष

उदअ पुं० (उद्गम) प्रादुर्भाव, नउली.

उदायण पुं० (उदायन) महावीरस्वामीना वखतनो कोशांबीनो राजा.

उन्नअ त्रि० (उन्नत) उच्च, चडतुं

उम्मीलण त्रि० (उन्मीलन) व्यक्त करनार.

उल्लस धा० (उत्+लस्) प्रगट थवु, प्रकाशवुं.

उव उप० (उप) पासे, समीप.

उवएस धा० (उप+दिश्) बोध आपवो.

उवंग न० (उपाङ्ग) उववाइ आदि सूत्र.

उवज्झाय पुं० (उपाध्याय) अध्यापक, शास्त्रशिक्षक.

उववज्ज धा० (उप+पद्) उपजवुं, उत्पन्न थवुं.

उवस्सय पुं० (उपाश्रय) धर्मस्थानक.

ऊ अ० गर्हा, आक्षेप, विस्मय तथा सूचनाना अर्थमां.

ऊ उप० (उप) पासे, समीप.

एकारस सं०वा० (एकादश) अगीयार.

एक्कसरिअं अ० संप्रति अर्थमां.

एग स० (एक) कोई; एक.

एग सं० वा० (एक) एक.

एगुणवीसा सं० वा० (एकोनविंशति) ओगणीस.

एण्हिं अ० संप्रति अर्थमां.

एत्ताहे अ० संप्रति अर्थमां.

एत्थ अ० (अत्र) अहिं.

एवं अ० एमज, एम.

ओ अ० सूचना, पश्चात्ताप.

ओअण न० (ओदन) भात

ओ उप० (अव) नीचे, निश्चय.

ओ उप० (उप) पासे, समीप.

ओसह न० (औषध) ओसड, दवा.

क स० (किम) कोण, शुं, प्रश्न.

कअर स० (कतर) बेमांनो एक.

कइ स० (कति) केटला.

कइअव न० (कैतव) कपट.

कज्ज न० (कार्य) काम काज.

कण्ण न० (कर्ण) कान.

कनकपट त्रि० (कृतकपट) जेणे कपट कर्युं छे एवुं.

कत्तार त्रि० (कर्तृ) करनार.

कत्तु त्रि० (कर्तृ) करनार.

कत्थ धा० (कथ्) कहेवु, बोलवुं.

कफाड पुं० (दे०) गुफा.

कमलावई स्त्री० कमलावती आ नामनी एक सती.

कम्म न० (कर्म) ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म.

कम्मआदाण न० (कर्मादान) श्रावकने वर्जनीय आचार.

कम्हिअ पुं० (दे०) माली.

कयन्न न० (कदन्न) खराब भोजन.

कयली स्त्री० (कदली) केल.

कयावि अ० (कदापि) कोई पण वखते.

कर पुं० (कर) हाथ.

करं धा० (कृ) करवुं.
करि पुं० (करि) हाथी.
करडा स्त्री० (दे०) भमरो.
कलय पुं० (दे०) सुवर्णकार, सोनी
कलयंदि त्रि० (दे०) प्रख्यात.
कल्लाण न० (कल्याण) श्रेय, मोक्ष.
कव्व न० (काव्य) कविता.
कसाअ पुं० (कषाय) क्रोधादि कषाय.
कह धा० (कथ्) कथन करवुं, कहेवुं.
कहं अ० (कथं) केवी रीते.
कहा स्त्री० (कथा) कथा, वार्ता.
कचणार पुं० (काञ्चनार) कोविदार नामनुं झाड
कंटअ पुं० (कंटक) काटो.
कंदोट्ट न० (दे०) कमल.
कंप धा० (कम्प्) धृजवुं. कंपवुं
कामभोअ पुं० (कामभोग) इन्द्रियना विषय भोग.
कारण न० (कारण) हेतु, कारण.
कारागिह न० (कारागृह) केदखानुं.
काल पुं० (काल) समय, वख्त
कालय त्रि० (दे०) ठग, धूर्त
किण धा० (क्री) खरीदवुं
किणो अ० प्रश्नमां.
किच्च न० (कृत्य) कार्य.
किन्तु अ० परन्तु.
किर अ० संभावना, निश्चय.
किरण पुं० (किरण) किरण.
किरिआ स्त्री० (क्रिया) अनुष्ठान
किल अ० संभावना निश्चय
किलेस पुं० (क्लेश) कंकास, दुःख.

किवा स्त्री० (कृपा) कृपा, महेरबानी.
किविण पुं० (कृपण) लोभी, कंजुस.
किस वि० (कृश) पातलुं.
किसीवल पुं० (कृषीवल) खेडुत.
किंकर पुं० (किङ्कर) नोकर, चाकर.
कीड धा० (क्रीड्) क्रीडा करवी, रमत करवी.
कीर धा० (कृ) करवुं.
कुडुंब न० (कुटुंब) बालबच्चा.
कुठार पुं० (कुठार) कुहाडो.
कुण धा० (कृ) करवुं.
कुप्प धा० (कुप्) कोप करवो, खीजवुं
कुरुल त्रि० (दे०) चतुर.
कुरूव वि० (कुरूप) कदरूपुं.
कुलीण वि० (कुलीन) खानदान.
कुसल पुं० (कुशल) डाह्यो माणस, चतुर.
केअई स्त्री० (केतकी) केतकी.
केआर पुं० (केदार) खेतर, घासनुं वीड.
केरिस वि० (कीदृश) केवो, केनाजेवो
कोणिअ पुं० श्रेणिक राजानो पुत्र, कोणिक.
कोसल्ल न० (कौशल्य) आरोग्य, कुशलता.
कोहग्गि पुं० (क्रोधाग्नि) क्रोधरूपी अग्नि.
कोहसत्तु पुं० (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.
खज्जोअ पुं० (दे०) दाम.

खत्तिअ पुं० (क्षत्रिय) क्षत्रियजाति पुरुष.
खम धा० (क्षम्) खमवुं, सहनता राखवी.
खमा स्त्री० (क्षमा) सहनशीलता.
खम्म धा० (खन्) खोदवुं, खणवुं.
खल धा० (स्खल्) अटकवुं, ठेस लागवी.
खलु अ० निश्चय.
खंधक पुं० (स्कन्धक) जैनशास्त्रमां प्रसिद्ध एक आचार्य.
खिप्पामेव अ० (क्षिप्रमेव) सत्वर.
खिव धा० (क्षिप्) फेंकवुं.
खु अ० निश्चय.
खेअ पुं० (खेद) परिश्रम, विषाद, दिलगिरि.
गअ पुं० (गज) हाथी.
गइ स्त्री० (गति) नरक आदिनी गति.
गच्छ धा० (गम्) जवुं, गमन करवुं.
गराह धा० (ग्रह्) ग्रहण करवुं, लेवुं.
गणिआ स्त्री० (गणिका) वेश्या.
गम्म धा० (गम्) जवुं, चालवुं.
गयण न० (गगन) आकाश.
गरीअ पुं० (गरीयस्) अतिशय, गुरु, मोटुं.
गव्व पुं० (गर्व) अभिमान.
गव्व पुं० (गर्व) मद, अभिमान.
गहण न० (गहन) कठिन, आकरुं.
गामिल्ल वि० (ग्राम्य) गामडीओ.
गाव पुं० (ग्रावन्) पत्थर.
गावाण पु० (ग्रावन्) पत्थर.
गावी स्त्री० (गो) गाय.
गाहा स्त्री० (गाथा) श्लोक.
गिज्झ धा० (गृध्) आसक्त थवुं, तल्लीन थवुं.
गिम्ह पुं (ग्रीष्म) गरमीनी ऋतु.
गिरि पुं० (गिरि) पर्वत
गिह न० (गृह) घर, मन्दिर.
गिहत्थ पुं० (गृहस्थ) गृहस्थ, शाहुकार.
गिहासम पुं० (गृहाश्रम) गृहस्थाश्रम
गिहिणी स्त्री० (गृहिणी) घरनी-आणी.
गुण पुं० न० (गुण) गुण.
गुण पुं० (गुण) गुण.
गुरु पु० (गुरु) धर्ममार्गने बताव-नार.
गुंज धा० (गुञ्ज्) गुंजारव शब्द करवो.
गोवच्छ पुं० (गोवत्स) वाछरडो.
गोवाल पुं० (गोपाल) गोवालीओ.
घेप्प धा० (ग्रह्) ग्रहणकरवुं, स्वी-कारवुं.
चउ सं० वा० (चतुर्) चार.
चउद्दस सं० वा० (चतुर्दश) चौद.
चमू स्त्री० (चमू) सैन्य, लश्कर.
चम्म न० (चर्मन्) चामडी.
चय धा० (त्यज्) छोडवुं तजवुं, मुकीदेवुं.
चर धा० (चर्) फरवुं, विचरवुं
चल धा० (चल्) चालवुं.

चिट्ठ धा० (**स्था**) उभा रहेवुं, स्थिर रहेवुं.

चिण धा० (**चि**) चणाववुं, गोठववुं, एकठुं करवुं.

चिम्म धा० (**चि**) वीणवुं.

चिंत धा०(**चित्**) चिंतववुं. विचारवुं.

चिर अ० लांबा वखत सुधी.

चुलुक्क पुं०(**चौलुक्य**) चौलुक्यवंश.

चे धा० (**चि**) चणाववुं, गोठववुं, एकठुं करवुं.

चे अ० (**चेत्**) यदि जो.

चेअ अ० नक्की, निर्धारण.

चेडग पुं० (**चेटक**) विशाला नगरीनो राजा, महावीरना मामा.

चोर पुं० (**चोर**) हरु, लुंटारो.

चंड वि० (**चण्ड**) विकराल, भयंकर.

चंडाल पुं० (**चण्डाल**) चंडाल.

च्च अ० नक्की. निर्धारण.

च्चिअ अ० नक्की. निर्धारण.

च्चेअ अ० नक्की. निर्धारण.

छ सं० वा० (**षट्**) छ.

छिन्द धा० (**छिन्द्**) छेदवुं. कापवुं.

छिप्प् धा० (**स्पृश्**) अडकवुं. स्पर्शवुं.

छुप्प धा० (**छुप्**) स्पर्श करवो.

छुहा स्त्री० (**क्षुधा**) भूख.

जग न० (**जगत्**) दुनिआ.

जण पुं० (**जन**) मनुष्य. माणस.

जणवअ पुं० (**जनपद**) देश.

जन्तु पुं० (**जन्तु**) जीव जन्तु.

जम पुं० (**यम**) परमाधार्मी. जम.

जम्म न० (**जन्मन्**) जन्म, उत्पत्ति.

जय धा० (**जि**) जीत मेलववी.

जयन्ती स्त्री० उदायनराजानी फोइ, महावीर स्वामीनी मोटी श्राविका.

जरा स्त्री० (**जरा**) वृद्धावस्था.

जल न० (**जल**) पाणी.

जव धा०(**या+गम**) वखत काढवो, ढील करवी.

जव पुं० (**यव**) जव, धान्यविशेष.

जस पुं० (**यशस्**) यश, कीर्ति.

जहा अ० (**यथा**) जेम. जेवीरीते, जेवुं.

जाइ स्त्री० (**जाति**) जाइनुं फूल.

जामाअर पुं० (**जामातृ**) जमाई.

जामाउ पुं० (**जामातृ**) जमाई.

जाव अ०(**यावत्**) ज्यां सुधी.

जिण पुं० (**जिन**) तीर्थङ्कर.

जिण धा० (**जि**) जीत मेलववी.

जिणदास पुं० (**जिनदास**) एक माणसनुं नाम.

जिम्म धा० (**जिम्**) खावुं, भोजन करवुं.

जीर धा० (**जॄ**) जीर्ण थवुं.

जीव पुं० (**जीव**) जीव, आत्मा.

जीवणिकाय पुं० (**जीवनिकाय**) जीव समुदाय.

जीविअ न० (**जीवित**) जीवितव्य, जिंदगी.

जीहा स्त्री० (**जिह्वा**) जीभ.

जुज्झ धा० (युध्) युद्ध करवुं, लड़ाई करवी.

जुद्ध न० (युद्ध) लड़ाई

जुव पुं० (युवन) जुवान तरुण पुरुष.

जुवाण पुं० (युवन्) जुवान, तरुण पुरुष.

जे अ० पादपूरणमां.

जोणि स्त्री० (योनि) उत्पत्तिनुं स्थान.

जोह पुं० (योध) योद्धो, लड़वैयो.

झगिति अ० संप्रति अर्थमा.

झा धा० (ध्यै) ध्याववुं, चिंतववु.

ठा धा० (स्था) उभा रहेवुं, स्थिर रहेवुं.

ठाण न० (स्थान) ठेकाणु.

ठिअ वि० (स्थित) उभेलो.

डज्झ धा० (दह्) बलवुं, दाझवुं.

णरअ पुं० (नरक) नरक, दुःख स्थान

ण अ० (न) नहो.

णइ अ० नक्की, निर्धारण.

णई स्त्री० (नदी) नदी.

णज्ज धा० (ज्ञा) जाणवुं, समजवुं.

णणंदा स्त्री० (ननान्दृ) नणन्द.

णतुअ पुं० (नप्तृ) दोहितरो, दीकरीनो दीकरो.

णत्थि धा० (नास्ति न+अस्ति) नथी.

णअर न० (नगर) शहेर.

णर पुं० (नर) माणस.

णरिन्द पुं० (नरेन्द्र) राजा.

णव धा० (नम्) पगे लागवुं, प्रणाम करवो.

णवर अ० केवल अथवा एटलुं विशेष.

णवरि अ० आनन्तर्यना अर्थमां.

णव सं० वा० (नवन्) नव.

णवि अ० वैपरीत्य.

णव्व धा० (ज्ञा) जाणवुं, समजवुं.

णाइजण पुं० (ज्ञातिजन) नातिला.

णाइं अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.

णाण न० (ज्ञान) विज्ञान.

णामहेय न० (नामधेय) नाम.

णासव धा० (नश्+णि) नाश करावबुं.

णासिआ स्त्री० (नासिका) नाक.

णि उप० (नि) आदेश नीचे.

णिओअ धा० (नि+युज) जोड़वुं, गोठववुं.

णिच्च अ० (नित्य) हमेश, सदा.

णिजवह पुं० (निजवध) पोतानी घात.

णिन्दा स्त्री० (निन्दा) निन्दा, अपवाद.

णियच्छ धा० (नि+यम्) नियममां लेवु, कवजो करवो.

णियम पुं० (नियम) कायदो, मर्यादा.

णिर् उप० (निः) विना, बहार, दूर.

णिरवराह त्रि० (निरपराध) अपराध वगरनो.

णिरिक्ख धा० [निर्+ईक्ष्] जोवुं, तपासवुं.

णिरिक्खण न० [निरीक्षण] अवलोकन.
णिरुन्ध धा० [नि+रुध्] रोकवुं
णिवट्ट वि० [नि+वृत्त] निवर्तुं.
णिव पुं० [नृप] राजा.
णिसेह पुं० [निषेध] ना, मना.
णीइ स्त्री० [नीति] न्यायमार्ग, नीति.
णीरअ वि० [नीरजः] रजवगरनुं, निर्मल
णे धा० [नी] दोरी जवुं, लई जवुं.
णेत्त न० [नेत्र] आंख.
णेह पुं० [स्नेह] प्रेम, प्रीति
ण्हा धा० [स्ना] नहावुं, स्नानकरवुं.
त स० [तद्] ते.
तए स० [त्वया] युष्मद्‌ना तृतीयानुं एकवचन. तें
तडाअ पुं० [तडाग] तलाव, सरोवर
तत्त न० [तत्त्व] पदार्थ, सार
तप्परिणाम पुं० [तत्परिणाम] तेनुं परिणाम.
तरणि पुं० [तरणि] सूर्य.
तरु पुं० [तरु] झाड.
तरुण वि० [तरुण] जुवान नवुं.
तव धा० [तप्] तपवुं, प्रकाशवुं.
तविंधण न० [तपइन्धन] तपस्यारूपी इन्धन
तहवि अ० [तथापि] तो पण.
तहा अ० [तथा] तेम, तेवीरीते. तेवुं.
तं अ० वाक्योपन्यासना अर्थमां.
ताअ पुं० [तात] जनक, बाप.
ताव अ० [तावत्] त्यांसुधी
ति अ० [इति] समाप्ति, एवी रीते.
ति सं० वा० [त्रि] त्रण.
तित्थअर पु० [तीर्थङ्कर] जैनशासननायक.
तिव्व त्रि० [तीव्र] तीक्ष्ण.
तीर धा० [तॄ] तरवुं, पार पामवुं.
तुब्भे स० [यूयं] तमे.
तुम स० [त्वं] तु.
तुम्हे स० [युष्मान्] तमने.
तेअ न० [तेजः] प्रकाश.
तेण पुं० [स्तेन] चोर, लुंटारो.
ते [तव] युष्मद्‌ना षष्ठीनुं एक वचन, तेनुं
तेरस सं० वा० [त्रयोदश] तेर.
थुण धा० [स्तु] स्तुति करवी.
थू अ० निरस्कारना अर्थमां.
दक्खरस पुं० [द्राक्षारस] द्राक्षनो रस
दया स्त्री० [दया] दया, अनुकम्पा.
दर अ० ईषत्, थोडुं.
दरवाजिअ त्रि० [दे०] भोगवाएल.
दव्व न० [द्रव्य] द्रव्य.
दस सं० वा० [दशन्] दश.
दहि न० [दधि] दहीं.
दंड धा० [दंड्] दंडवुं.
दंस धा० [दृश्+णि] देखाडवुं.
दंसण न० [दर्शन] दर्शन, जोवुं.
दाण न० [दान] दान देवुं.
दाम न० [दामन्] माला.
दाव धा० [दृश्+णि] देखाडवुं

दिट्ठि स्त्री० [दृष्टि] दृष्टि, नजर.
दिणअ न० [दिन] दिवस.
दिराण वि० [दत्त] दीधेलुं, दीधुं.
दीण वि० [दीन] गरीब, अनाश्रित.
दीस धा० [दृश्] जोवुं.
दुग्गुण पुं० [दुर्गुण] अवगुण, दोष.
दुज्जण पुं० [दुर्जन] दुर्जन.
दुद्दसा स्त्री० [दुर्दशा] दुर्दशा
दुब्भ धा० [दुह] दोहवुं.
दुर् उप० [दुः] दुष्टरीत, दुःखेकरी.
दुवालस सं० वा० [द्वादश] बार.
दुह न० [दुःख] क्लेश, अशान्ति.
दुहिआ स्त्री० [दुःखिता] दुखी स्त्री
दूइज्जमाण त्रि० [ ] चालतुं
दूम धा० [दु+णि] संतापवुं, दुःखी करवुं.
दे अ० संमुखीकरण तथा सखीना आमंत्रणमां.
दे धा० [दा] देवु, आपवु.
देव पुं० न० [देव] देव.
देवर पुं० [देवर] देर, दियर, पतिनो नानो भाई.
देवी स्त्री० [देवी] देवांगना.
देह पुं० [देह] शरीर
दो सं० वा० [द्वि] बे.
दोवारिअ पुं० [दौवारिक] द्वारपाल.
दोस पुं० [दोष] अवगुण.
धअ पुं० [ध्वज] ध्वजा, पताका.
धण न० [धन] द्रव्य, दोलत.
धणु न० [धनुः] धनुष.
धन्न न० [धान्य] कण, धान्य.
धम्म पुं० [धर्म] धर्म, न्यायमार्ग.
धम्मणिट्ठ पुं० [धर्मनिष्ठ] धर्मनी निष्ठावालो.
धर धा० [धृ] धरवुं, धारण करवुं.
धिइ स्त्री० [धृति] धीरज.
धीर पुं० [धीर] धैर्यवान् पुरुष.
धीवर पुं० [धीवर] माछी.
धुण धा० [धू] धुणवुं, कंपवुं.
धुत्त पुं० [धूर्त] धुतारो, ठग.
धुव धा० [धू] धुणावुं, कंपवुं.
धुवं अ० [ध्रुवं] निश्चय.
धूया स्त्री० [दुहितृ] दीकरी.
नयण पुं० न० [नयन] आंख.
नह न० [नभस्] आकाश.
निअ धा० [दृश्] जोवुं.
निक्किट्ठ त्रि० [निकृष्ट] अधम
निवास पुं० [निवास] रहेठाण.
निशादपन्न त्रि० [निशातप्रज्ञ] कुशाग्रबुद्धिवालो.
निहि पुं० स्त्री० [निधि] भंडार.
पअ न० [पद] पगलुं, पग.
पआस पुं० [प्रकाश] अजवालुं.
पइ पुं० [पति] धणी, स्वामी.
प उप० [प्र] आगल, प्रारंभ, उत्कर्ष.
पउद्व्व त्रि० [प्रयोक्तव्य] योजवा योग्य.
पऊढ न० (दे०) घर, मकान.
पक्ख पुं० (पक्षन्) पांख.
पक्खि पुं० (पक्षिन्) पक्षी.
पाक्खिय त्रि० (पाक्षिक) पाखीनुं

पच्चूह पुं० [दे०] सूर्य.
पच्छा अ० [पश्चात्] पछी.
पट्टइल्ल पुं० [दे०] गामनो मुखी, पटेल.
पड धा०[पत्] पडवुं.
पडि उप० [प्रति] सामे, उलटुं.
पडिसमय न० [प्रतिसमय] दरेक क्षणे.
पडुय पुं० [दे०] पासो, भेंसो.
पढ धा० [पठ्] भणवुं, पाठ करवो.
पणव धा० [प्र+नम्] नमवुं.
पणीअ न० [प्रणीत] सरस.
पत्त न० [पात्र] पातरुं, लाकडानुं ठाम.
पत्त न० [पात्र] योग्य, अधिकारी, ब्राम्हण.
पत्तड त्रि० [दे०] सुन्दर.
पत्तेअं अ० प्रत्येक, दरेक, एकेक.
पत्थाव पुं० [प्रस्ताव] अवसर.
पद्धर त्रि० [दे०] पाधरुं, सिधुं.
पन्नत्त त्रि० [प्रज्ञप्त] परूपेल.
पन्नरस सं० वा० [पंचदश] पन्नर
पभाअ न० [प्रभात] प्रातः काल.
पमाअ पुं० [प्रमाद] आलस्य, बेदरकारी.
पमोअ धा० [प्र+मुद्] खुशी थवुं.
पमोअ पुं [प्रमोद] खुशाली
पय न० [पद] पद.
पयट्ट त्रि० [प्रवृत्त] प्रवृत्त थएल.
पयडि स्त्री० [दे०] मार्ग, रस्तो.
पयट् धा० [प्र+यत्] प्रयत्न करवो.
पया धा० [प्र+या] प्रयाण करवुं.
पर वि० [पर] अन्य, बीजुं.
परएस पुं० [परदेश] देशावर.
परज्झ त्रि० [दे०] पराधीन.
परभव पुं० [परभव] आवतो भव, बीजो भव.
परमत्थ पु० [परमार्थ] परोपकार.
परलोअ पुं० [परलोक] आवतो भव.
परा उप० [परा] उलटापणुं, पाछु.
पराअ पुं० [पराग] फूलना रजकणो.
पराजय धा० [परा+जि] पराजय करवो.
परिक्खा स्त्री० [परीक्षा] परीक्षा.
परित्थी स्त्री० [परस्त्री] पारकी स्त्री.
परिभंस धा० [परि+भ्रंश्] भ्रष्ट थवुं.
परिहर धा० [परि+हृ] परहरवुं, तजवुं, दूर करवुं.
परोप्पर अ० [परस्पर] मांहोमाहे.
पलाय दे० चोर.
पल्लव पु० [पल्लव] पत्रनी टोसी.
पवड्ढ धा० [दे०] सुवुं, शयन.
पवण पु० [पवन] पवन. २ ते नामनो एक राजा
पवत्त धा० [प्र+वृत्] वर्तवुं, प्रवृत्ति करवी.
पव्वअ न० [पर्वत] पहाड़.
पवाह पुं० [प्रवाह] प्रवाह, पोट.
पसंग पुं० [प्रसंग] प्रस्ताव.
पसत्थ वि० [प्रशस्त] श्रेष्ठ, प्रशंसापात्र.
पसविर त्रि० [प्रसवशील] उत्पादक.
पसाअ पुं० [प्रसाद] मेहरबानी, कृपा.
पसारि धा० [प्र+सृ+णि] पसारवुं, लांबुं करवुं.
पसु पुं० [पशु] पशु, जानवर,

पह पुं [पथ] रस्तो, मार्ग, पंथ.
पहाव पुं० [प्रभाव] प्रताप.
पहिअ त्रि० [पथिक] मुसाफर.
पहु पुं० [प्रभु] समर्थ
पंकय न० [पंकज] कमल.
पंखुडिआ स्त्री० [दे०] पांख.
पंच सं० वा० [पंचन्] पांच.
पंडिअ पुं० [पंडित] विद्वान.
पाअ पुं० [पाद] पग
पाअ पु० [पाद] पग, चरण
पाउरण दे० कवच.
पाउस पुं० [प्रावृष्] चोमासुं
पाडिएक्कं अ० प्रत्येक, दरेक, हरेक.
पाडिक्कं अ० प्रत्येक, दरेक, एकेक
पाढग पुं० [पाठक] भणावनार.
पाण पुं० [प्राण] प्राण, जीवन
पायस न० [पायस] दुधपाक.
पालक वि० ना० स्कन्धकनो वेरी, एक पापी ब्राह्मण.
पास धा० [दृश्] जोवु.
पासाअ पुं० [प्रासाद] हवेली, मकान.
पिंगला वि० ना० भर्तृहरिनी स्त्री.
पिंजर न० [पिंजर] पांजरुं.
पि अ० पण.
पिअ धा० [पा] पीवुं.
पिअर पुं० [पितृ] पिता, बाप.
पिउ पुं० [पितृ] पिता, बाप.
पिउत्था स्त्री० [पितृस्वसा] फोई.
पिउसिआ स्त्री० [पितृस्वसा] फोई.
पिव अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
पिवासा स्त्री० [पिपासा] पाणीनी तरस, तृषा.
पीइ स्त्री० [प्रीति] प्रेम.
पीड धा० [पीड्] पीडवुं, दुःख देवुं.
पीणिमा स्त्री० [पीनत्व] जाडाइ, पुष्टता.
पुच्छ धा० [पृच्छ्] पुछवु, प्रश्न करवो.
पुण धा० [पू] पवित्र करवुं.
पुण अ० [पुनः] फरीने.
पुणरुत्तं अ० फरीथीना अर्थमा.
पुण्ण वि० [पूर्ण] पूरं पुरुं.
पुत्त पुं० [पुत्र] दीकरो.
पुप्फरस पु [पुष्परस] फूलनुं मध.
पुरा अ० आगल, पहेला.
पुरिल्ल वि० [पूर्व] आगेरी.
पुरिस पुं० [पुरुष] माणस.
पुलइअ त्रि० [पुलकित] रोमांचित थएल.
पुव्वकम्म न० [पूर्वकर्म] पूर्व भवना कर्म.
पुव्वरत्तावरत्त न० [पूर्वरात्र्यपररात्र] मधरात.
पुव्वि अ० [पूर्व] पहले.
पूस धा० [पुष्] पोषवुं, पालवुं.
पूस पुं० [पूषन्] सूर्य.
पूसाण पुं० [पूषन्] सूर्य.
फल न० [फल] फल.
बज्झ धा० [बन्ध्] बांधवुं.
बन्धु पुं० [बन्धु] बान्धव.
बम्हण पुं० [ब्राह्मण] ब्राह्मण.
बल [बल] न० सैन्य, बल, शक्ति.

बले अ० निर्धारण तथा निश्चयना अर्थमां.
बहिं अ० [बहिस्] बहार.
बहु वि० [बहु] घणुं.
बारस सं० वा० [द्वादश] बार.
बाल पुं० [बाल] बालक, अज्ञानी.
बाला स्त्री० [बाला] बालिका, छोकरी.
बाहिं अ० बहार अर्थमां.
बाहिरं अ० बहार अर्थमा.
बीभच्छ वि० [बीभत्स] निन्द्य.
बीह धा० [भी] डरवुं, बीवुं.
बुज्झ धा० [बुध्] जाणवुं, समजवुं.
बुद्धि स्त्री० [बुद्धि] मति.
बोह पुं० [बोध] उपदेश.
भअ न० [भय] बीक, भीति.
भक्खण न० [भक्षण] खावुं.
भगिणि स्त्री० [भगिनी] बहेन.
भण धा० [भण्] भणवुं, बोलवुं.
भत्त न० [भक्त] टंक.
भत्त पुं० [भक्त] सेवक, अनुचर.
भत्तहरि वि० ना० भर्तृहरि नामनो राजा.
भत्तार पुं [भर्तृ] पति, धणी.
भत्ति स्त्री० [भक्ति] भक्ति, बहुमान.
भत्तिज्जअ पुं० [भ्रातृज] भत्रिजो.
भत्तु पुं० [भर्तृ] पति, धणी.
भम धा० [भ्रम्] भमवुं, फरवु.
भमर पुं० [भ्रमर] भमरो.
भमाड धा० [भ्रम्+णि] भमाववु, रखडाववु.
भमिर वि० [भ्रमिष्णु] भमवाना स्वभाववालो.
भयंअर वि० [भयंकर] भयभीत.
भर पुं० [भर] जत्थो.
भव धा० [भू] होवु, थवु.
भव पु० [भव] जन्म, संसार.
भविअजण पुं० [भव्यजन] लायक माणस.
भविय वि० [भव्य] भव्य.
भसल पुं० [ ] भमरो.
भा धा० [भी] डरवुं, बीवु.
भाअर पुं० [भ्रातृ] भाई.
भाउ पुं० [भ्रातृ] भाई.
भाउजाया स्त्री० [भ्रातृजाया] भोजाइ.
भाउज्जा स्त्री० [भ्रातृजाया] भोजाइ.
भाणु पु० [भानु] सूर्य.
भिन्द धा० [भिद्] भेदवुं, कांपवु.
भुज्ज धा० [भुज्] खावु, उपभोगमां लेवुं.
भुञ्ज धा० [भुज] खावुं, भोगववुं.
भूवइ पुं० [भूपति] राजा.
भोअ पुं० [भोग] इंद्रियविषय.
भोअण न० [भोजन] जमण.
मंस न० [मांस] मांस.
मइरा स्त्री [मदिरा] दारु, मद्य.
मए [मया] (अस्मद्, तृतीयानुं एक वचन) में.
मग्ग पुं० [मार्ग] रस्तो.
मच्चु पुं० [मृत्यु] मृत्यु, मोत.

मज्झे अ० [मध्ये] मांही.
मण धा० (मन्) मानवुं,कल्पना करवुं.
मण न० [मनस्] अंतःकरण. हृदय.
मणिअं अ० [मनाक्] थोडुं.
मणे अ० विचार करवाना अर्थमां.
मणोरह पुं० [मनोरथ] विचारणा.
मत्त वि० [मात्र] मात्र.
ममभाव पुं० [ममभाव] ममत्व.
मयण पुं० [मदन] मदन, काम विकार.
महव्वय न० [महाव्रत] साधुनां पंचमहाव्रत.
महापुरिस पुं० [महापुरुष] महात्मा पुरुष
महावीर वि० ना० चोवीसमा तीर्थंकरनुं नाम.
महिम पुं० स्त्री० [महिमन्] गौरव.
महिला स्त्री० [महिला] स्त्री.
महुर वि० [मधुर] मीठुं
मा अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
मा अ० [मा] नहि, निषेध.
माअरा स्त्री० [मातृ] माता, देवी.
माआ स्त्री० [मातृ] माता, जननी.
माआपिअर पुं० [मातापितर] मा बाप.
माइ स्त्री० [मातृ] माता, जननी,
माइं अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
माउ स्त्री० [मातृ] माता, जननी.
माण न० [मान] अभिमान.
माणुस्स न० [मानुष्य] मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्यपणुं.

मामि अ० सखीना आमंत्रणमां.
माया स्त्री [माया] कपट.
मारि धा० [मृ+णि] मरावबुं.
मालारी स्त्री०[मालाकारी] मालण.
माला स्त्री० [माला] फूलनी माला, नवकारवाली.
मास पुं० [मास] महीनो.
माहप्प पुं० न० [माहात्म्य] माहात्म्य.
मिअ वि० [मित] परिमित.
मिउ वि० [मृदु] कोमल.
मियावई वि० ना० [मृगावती] उदायन राजानी माता.
मिलाण त्रि० [म्लान] करमाइ गएल.
मिव अ० उपमार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
मिहुण न० [मिथुन] संयोग.
मुअ धा० [मुच्] मुकवुं, छोड़वुं.
मुक्ख पुं० [मोक्ष] मुक्ति.
मुणि पुं [मुनि] मौनव्रतधारी साधु,यति.
मुत्त वि० [मुक्त] छुटो, मुक्त.
मुत्ति स्त्री० [मुक्ति] मोक्ष, कल्याण.
मुद्दिआ स्त्री० (मुद्रिका) महोर.
मुद्ध पुं० [मूर्धन्] मस्तक.
मुद्धाण पुं० [मूर्धन्] मस्तक.
मुसा स्त्री० [मृषा] जुठुं.
मुह न० [मुख] मुख.
मूल पुं० [मूल] आद्यभाग, आदि करण.
मेत्ती स्त्री० [मैत्री] मित्रता, प्रेम.
मेह पुं० [मेघ] वादल, वरसाद.
मोअअ पुं० [मोदक] लाडवो.

मोक्ख (मोक्ष) पुं० मुक्ति.
मोरउल्ला अ० वृथा, मुधा अर्थमां.
यंत्तणा स्त्री० (यंत्रणा) पीलवानुं यन्त्र
यय न० (जगत्) दुनिया.
य स० (यद्) जे.
रंज धा० (रञ्ज्) रक्त थवुं, रंजन करवुं.
र अ० पादपूरणमां.
रअ न० (रजस्) रेती, धूल, रजकण.
रक्ख धा० (रक्ष्) रक्षण करवुं, पालवुं, संभाल करवी.
रज्ज न० (राज्य) राज्य.
रज्जु स्त्री० (रज्जु) दोरडी.
रत्तिआ स्त्री० (रात्रि) रात.
रम धा० (रम्) रति पामवी, क्रीडा करवी, रमवुं.
रम्म वि० (रम्य) रमणीक.
रस पुं (रस) स्वाद, २ स्वादयुक्त प्रवाही पदार्थ.
रसाल वि० (रसाल) रसयुक्त.
रह पुं० (रथ) रथ.
रहस्स न० (रहस्य) गुप्ततत्त्व.
राअ पुं० (राजन्) भूपति, राजा.
राआण पुं० (राजन्) भूपति, राजा.
राईसर पुं० (राजेश्वर) महाराज.
राम वि० ना० रामचंद्र, सूर्यवंशना प्रसिद्ध राजा.
राव धा० (रंज्+णि) रंजन करवुं.
रावण वि० ना० लंकानो राजा.
रिसि पुं० (ऋषि) धर्मगुरु, साधु, मुनि.

रीइ स्त्री० (रीति) रस्तो, प्रकार, आचार.
रुन्भ धा० (रुध्) रोकवुं, अटकाववुं.
रुव धा० (रुद्) रोवुं.
रूवग न० (रूप्यक) रूपीआ.
रुव्व धा० (रुद्) रोवुं, आंसु खेरवां.
रे अ० संबोधन, कलह.
रोव धा० (रुद्) रोवुं
लंख धा० (लख्) लांबुं करवुं, नीचे करवुं.
लक्ख सं० वा० (लक्ष) लाख
लखमण वि० ना० रामचंद्रजीनां नाना भाई.
लच्छी स्त्री० (लक्ष्मी) लक्ष्मी.
लज्जा स्त्री० (लज्जा) लाज, शरम.
लब्भ धा० (लभ्) मेलववुं, पामवुं.
लय पुं० (लय) साम्यावस्था.
लवली स्त्री० (लवली) लताविशेष.
लह धा० (लभ्) पामवुं, मेलववुं
लहिद त्रि० (रहित) शिवाय.
लहु वि (लघु) न्हानो.
लाच पुं (राजन्) राजा
लिब्भ धा० (लिह्) चाटवुं.
लुण धा० (लू) लणवुं, कांपवुं, छेदवुं.
लुम्बी स्त्री० ( ) द्राक्ष विगेरे फलनी लुम.
लेस पुं० (लेश) थोडुं, अंश.
लोअ पुं० (लोक) दुनिया.
लोह पुं० (लोभ) लोभ, कंजुसाई.
व अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
वअण न० (वदन) मुख.

वच्छ पुं० (वृक्ष) झाड.
वच्छर पु० (वत्सर) वरस.
वट्ट धा० (वृत्) वर्तवुं, रहेवुं.
वड्ढ धा० (वृध्) वधवु.
वण न० (वन) जंगल.
वणप्फइ पुं० (वनस्पति) लीलोतरी, औषधि.
वणिआ स्त्री० (वनिता) स्त्री, रामा.
वणे अ० निश्चय, विकल्प तथा अनुकंपाना अर्थमा
वत्थ न० (वस्त्र) कपडुं.
वय धा० (वद्) बोलवु, कहेवुं.
वय न० (वयस्) उम्मर,
वयण न० (वचन) शब्द, वाणी.
वयण पुं० न० (वचन) वचन
वर वि० (वर) प्रधान, श्रेष्ट.
वरिस न० (वर्ष) वरस, संवत्सर
वल धा० (वल्) पाछा आववुं, वलवुं.
वलग्ग धा० (आ+रुह्) चडवुं, उपर बेसवुं.
वल्लह वि० (वल्लभ) प्रिय, वत्सल.
वव्वर त्रि० (वर्वर) जंगली, मूर्ख.
वस धा० (वस्) वसवु, रहेवुं
वह धा० (वह्) उपाडी जवुं
व्व अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
वांछ धा० (वाञ्छ्) इच्छवुं.
वा अ० अथवा,
वाउ पु० (वायु) वायरो.
वागरण न० (व्याकरण) व्याकरण, भाषाशास्त्र.
वाणिअ पुं०(वणिज)वेपारी,वाणीओ.
वावार पुं० (व्यापार) उद्योग.
वास न० (वर्ष) वरस.
वि अ० (अपि) पण.
वि अ० पण
वि उप० (उप) विशेष, विरह, विहार.
विअ अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
वि+अस धा० (वि+कस्) विकास पामवुं.
विआर पुं० विकार, विकृति
विआर पुं० (विचार) मनोभाव.
विउल त्रि० (विपुल) घणुं.
विकअ वि० (विकृत) विकार पामेल.
विघस्टण न० (विघट्टन) अपनयन.
विजअ पुं० (विजय) विजय.
विज्जा स्त्री० (विद्या) ज्ञान, भणतर.
विढप्प धा० (अर्ज्) एकठुं करवुं.
विणय पुं० (विनय) नम्रता, विवेक.
विणा अ० (विना) वगर.
विणेअ पुं० (विनेय) विनीत शिष्य.
वित्त न० (वित्त) पैसो, लक्ष्मी.
वित्थर पुं० (विस्तार) खुलासा वार.
विभाअ पुं (विभाग) जुदा जुदा भाग.
विरह पुं० (विरह) वियोग.
विरूव त्रि० (विरूप) विपरीत.
विलया स्त्री० (वनिता) स्त्री.
विव अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
विवज्जियकसाअ त्रि० (विवर्जितकषाय) क्रोधादि रहित
विवाह पु० (विवाह) लग्न प्रसंग.
विविह वि० (विविध) नानाप्रकार.

विसिलेस धा० (वि+श्लिष्) जुदुं करवुं.
विस्सास पुं० (विश्वास) भरोसो.
विहि पुं (विधि) ब्रह्मा.
वीर पुं० (वीर) महावीरस्वामी.
वीसा सं० वा० (विंशति) वीस
वुच्च धा० (वच्) बोलवु
वुब्भ धा०(वह्) वहन करवुं, लई जवुं, उपाडवुं.
वे सं० वा० (द्वि) बे.
वेर न० (वैर) वेरभाव, दुश्मनाई.
वेव्व अ० आमंत्रणमां.
वेव्वे अ० भयवारण तथा विषादना अर्थमां.
वेस पुं० (वेष) पहेरवेस.
श त्रि०(स्व) पोतानुं.
शलश्शदी स्त्री० (सरस्वती) विद्यानी अधिष्ठात्री देवी.
सं उप० (सम्) साथे, संगति, सारीरीते, संहार.
संअम पुं (संयम) संयम.
संग पुं० (सङ्ग) सोबत, सहवास.
संघ पुं० (संघ) समुदाय.
संजम पुं० (संयम) संयम.
संतोस पुं० (संतोष) तृष्णानो अभाव.
संपेहेत्ता अ० (संप्रेक्ष्य) विचार करी.
संरम्भ पुं० (संरम्भ) आटोप, सूर्यना किरणोनो बिस्तार.
संसार पुं० (संसार) जगत.
संसारसाअर पुं० (संसारसागर) संसारसमुद्र.
स पुं० (श्वन्) कुतरो.
सअ सं० वा० (शत) सो.
सअल वि० (सकल) सर्व, बधुं.
सकंकण वि० (सकंकण) कंकण सहित.
सक्क धा० (शक्) शकवुं.
सगास पु० (सकाश) पासे, नजीक.
सग्गइ स्त्री० (सद्गति) उंचीगति, देवादिगति.
सच्च न० (सत्य) साचुं.
सच्चवाइ पुं० (सत्यवादिन्)साचा बोलो.
सज्जण पुं० (सज्जन) लायक माणस.
सज्झाय पुं०(स्वाध्याय) पुनरावर्तन, स्वाध्याय.
सट्ठि सं० वा० (षष्ठि) साठ.
सणिअं अ० (शनैः) धीरे धीरे.
सत्त सं० वा० (सप्त) सात.
सत्तरस सं० वा० (सप्तदश) सत्तर.
सत्ति स्त्री० (शक्ति) सत्ता, सामर्थ्य.
सत्थ न० (शास्त्र) आगम, प्रवचन.
सद्द पुं० (शब्द) शब्द, ध्वनि.
सद्+दह धा० (श्रद्+धा) श्रद्धवुं, आस्ता राखवी.
सद्दावेत्ता अ० (शब्दापयित्वा) बोलावीने.
सन्त व० कृ० (सत्) विद्यमान, छतुं.
सपइ अ० (सपदि) हमणा, अधुना,

सफल वि० (सफल) सार्थक.
सभा स्त्री० (सभा) पर्षदा, सभा.
समतूस धा० (सम्+तुष्) संतोष पामवुं
समण पुं० (श्रमण) साधु.
समणोवासअ पुं० (श्रमणोपासक) साधुनी उपासना करनार, श्रावक.
समत्थ वि०(समर्थ) शक्त,पहोंचवालो.
समप्पणीय वि०(समर्पनीय) सोंपवा लायक.
समय न० (स्वमत) पोतानो मत.
समस्त वि० (समस्त) सघलुं, बधुं.
सम्म न० (शर्मन्) सुख.
समिद्धि स्त्री०(समृद्धि) वैभव, ऋद्धि.
समूह न० (समूह) जत्थो, समुदाय.
सयं अ० (स्वय) पोते.
सयं अ० स्वयं, पोते, पोतानी जाते.
सया अ० (सदा) हमेशा.
सयाणीय वि० ना० (शतानीक) उदायनना पिता.
सर न० (सरस्) तलाव.
सर पुं० (शर) बाण.
सरअ पुं० (शरत्) शरदऋतु.
सरल वि० (सरल) निष्कपट, भोलो.
सवण न० (श्रवण) श्रवण, सांभलवुं.
सव्व स० (सर्व) बधा, समस्त.
सव्वघाइ वि० (सर्वघातिन्) सर्वनी घात करनार.
सह अ० (सह) साथे.
सह धा० (सह्) सहन करवु.
सहस्स स० वा० (सहस्र) हजार.
सहस्साणीय वि० ना० (सहस्रानीक) उदायनना दादा.
सहिरत्तण पु० (सहिष्णुता) सहन शीलता.
साण पु० (श्वन्) कुतरो.
सामाइअ न० (सामायिक) सामयिकव्रत.
सामि पुं० (स्वामिन्) मालिक,उपरि.
सारहि पुं० (सारथि) रथ हांकनार, कोचमेन.
साला स्त्री० (शाला) निशाल, पाठशाला.
सावज्ज वि० (सावद्य) सदोष, पाप.
सावज्झ वि० (सावद्य) दोष सहित.
सावराह वि० (सापराध) अपराध सहित.
साह धा० (साध्) साधवुं.
साहज्ज न० (साहाय्य) मदद.
साहु पु (साधु) आत्मिक कार्यसाधक.
सिक्ख धा० (शिक्ष्) शीखववुं,भणाववुं.
सिक्खा स्त्री० (शिक्षा) शिखामण.
सिक्खावइय त्रि० (शिक्षाव्रतिक) शिक्षाव्रतयुक्त.
सिग्घं अ० (शीघ्रं) उतावलथी.
सिज्झ धा० (सिध्) सिद्धथवु.
सिणाण न० (स्नान) न्हावु.
सिप्प धा० (सिच्) सिंचवुं.
सिप्प धा० (स्निह्) स्नेह--प्रेम राखवो, चिकाश थवी.

सिर न० (**शिरः**) मस्तक, माथुं.
सिर न० (**शिरस्**) माथुं.
सिर न० (**शिरस्**) मस्तक, माथुं.
सिरि स्त्री० (**श्री**) लक्ष्मी, पैसो, २ शोभा, कान्ति.
सिसु पुं० (**शिशु**) बालक.
सिस्स पुं० (**शिष्य**) चेलो, अनुयायी.
सिह धा० (**स्पृह्+णि**) इच्छवु.
सिहर पुं० (**शिखर**) टोंच, टुक.
सीअ न० (**शीत**) ठंडी. टाढ.
सीया वि० ना० (**सीता**) रामचन्द्रनी धर्मपत्नी.
सीस पुं० (**शिष्य**) चेलो, अनुयायी.
सुकअ न० (**सुकृत**) सारां कृत्य.
सुकइ पुं०(**सुकृति**) साराकृत्य करनार, भाग्यशाली.
सुगइ स्त्री० (**सुगति**) सारी गति.
सुट्ठु अ० (**सुष्ठु**) सारो.
सुण धा० (**श्रु**) सांभलवु.
सुणिउण वि० (**सुनिपुण**) हुशियार, चालाक.
सुत्त न० (**सूत्र**) आगम, सिद्धान्त.
सुपत्त न० (**सुपात्र**) सत्पात्र.
सुबुद्धि स्त्री० (**सुबुद्धि**) सुबुद्धि.
सुभिक्ख न० (**सुभिक्ष**) सुकाल
सुमण न० (**सुमनस्**) पुष्प.
सुरह नामधा० (**सुरभ**) सुगंधी करवुं
सुवण्ण न० (**सुवर्ण**) सोनुं.
सुवुट्ठि स्त्री०(**सुवृष्टि**) सारो वरसाद.
सुह न० (**सुख**) शान्ति, आनन्द.
सुह वि० (**शुभ**) शुभ, श्रेष्ठ.
सुहुम वि० (**सूक्ष्म**) बारीक, झीणुं.
सेट्ठ वि० (**श्रेष्ठ**) उत्तमोत्तम.
सेट्ठि पुं० (**श्रेष्ठि**) सेठ, साहुकार.
सेणिअ पुं० (**श्रेणिक**) विशेष नाम, एक राजानुं नाम.
सेय न० (**श्रेयस्**) श्रेय, सारुं.
सोरट्ठ (**सौराष्ट्र**) सोरठदेश.
सोलस सं० वा० (**षोडश**) सोल.
सोह धा० (**शुभ्**) शोभवुं.
सोहा स्त्री० (**शोभा**) शोभा, सुन्दरता.
हट्ठतुट्ठ (**हृष्टतुष्ट**) संतुष्ट.
हण धा० (**श्रु**) सांभलवुं.
हणुमन्त पुं० (**हनुमत्**) हनुमान. पवनराजानो पुत्र.
हत्थ पुं० (**हस्त**) हाथ.
हत्थि पुं० (**हस्ती**) हाथी.
हत्थिणाउर वि० ना० (**हस्तिनापुर**) एक शहरनुं नाम.
हद्धी अ० (**हाधिक्**) खेद, धिक्कार.
हन्द अ० ले ए अर्थमां.
हन्दि अ० विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, तथा सत्यना अर्थमां.
हम्म धा० (**हन्**) मारवुं, हणवुं.
हर धा० (**हृ**) हरवुं, चोरवुं, लई जवु.
हरे अ० आक्षेप. संभाषण तथा रतिकलहना अर्थमां.
हला अ० सखीना आमन्त्रणमां.
हले अ० सखीना आमन्त्रणमां.
हव धा० (**भू**) होवुं, थवुं.
हस्स धा० (**हस**) हसवुं, मश्करी करवी,

हिअ वि० (हित) शुभ.
हितपक न० (हृदयक) हृदय.
हियअ न० (हृदय) हृदय.
हिर अ० संभावना, निश्चय.
हीर धा० (हृ) चोरवुं, हरवुं.
हुं अ० दान, प्रश्न तथा निवारणना अर्थमां.

हु अ० निश्चय.
हुण धा० (हु) हवन करवुं, हो
हेउ पुं० (हेतु) कारण.
हेट्ठं अ० (अधः) हेठे, नीचे.
हो धा० (भू) होवुं, थवुं.